'अेकला चलो रे'

अकेला चलो रे
[गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्राकी डायरी]

लेखिका
मनुबहन गांधी
अनुवादक
रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

— मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ३०००, १९५७

दो रुपये

अगस्त, १९५७

प्रस्तावना

सारा मानव-समाज अेक और अखण्ड होते हुअे भी अनेक आधारों पर अुसके अलग अलग समूह संगठित होते हैं। ये संगठित समूह विशाल मानव-समाजके अंग होते हैं, फिर भी बहुत बार अुनके बीच परस्पर संघर्ष हुअे बिना नही रहता। मानव-समाजके दो समूहोंके बीच जब कभी न्याय-अन्यायका प्रश्न खड़ा हुआ है, तब अन्यायके निवारणके लिअे दोनोंके बीच अुग्रमें अुग्र संघर्ष हुअे हैं।

मानव-जातिके अलग अलग समूह अन्यायके निवारणके लिअे हिंसाका अुपाय आजमाते आये हैं। परन्तु अनुभव यह हुआ कि हिंसासे कोओ अन्याय दूर नही होता, दूर होनेका भासमात्र कुछ समयके लिअे होता है; और अन्तमें दूसरे अनेक रूपोंमें अन्याय जारी रहता है या नये रूपमें फूट पडता है।

मनुष्यकी रचना ही कुछ अैसी है कि मानव-समाजके विभिन्न समूहोंके बीच मतभेद, श्रद्धाभेद और विरोधका रहना अनिवार्य-सा है। अिन भेदों या विरोधोंको शान्त किये बिना मानव-समाजका जीवन सुख-चैनसे बीत नहीं सकता। बल्कि यह कहना चाहिये कि भेदों या विरोधोंको शान्त करना भी मनुष्यका स्वभाव है। परन्तु अन्यायको दूर करने या भेदों अथवा विरोधोंको शान्त करनेके लिअे यदि हिंसाका ही अुपाय काममें लिया जाय, तो अुससे भेद या विरोध शान्त नही होते, और न अन्यायका ही निवारण होता है।

अिसलिअे मानव-जातिके सामने प्रश्न यह अुपस्थित हुआ है कि भेद या विरोधके शमनके लिअे और अन्यायके निवारणके लिअे हिंसाके अुपायके बदलेमें सचमुच काम दे सके अैसा कोओ दूसरा अुपाय है या नहीं?

अिसमें शंका नहीं कि व्यक्ति और व्यक्तिके बीच अथवा मानवोंके छोटे-छोटे समूहोंके बीच विरोधों या भेदोंके कारण अुत्पन्न होनेवाले संघर्षोंको शान्त करनेके लिअे हिंसाके बदले अहिंसा या प्रेमका अुपाय सफलता-

पूर्वक आजमानेके प्रयोग दुनियामें होते आये हैं। परन्तु मानव-जातिके अंग-रूप बड़े-बड़े समूहोंके बीचका विरोध शान्त करनेके लिअे असे प्रयोग बहुत अधिक नहीं हुअे हैं। गांधीजीने भेदों या विरोधोंको शान्त करने और अन्यायका निवारण करनेके खातिर अहिंसा अथवा प्रेमके अुपायको व्याव-हारिक रूप देनेके लिअे जीवनभर अखंड साधना की। हिन्दू समाजके अन्तर्गत विरोधोंका शमन करनेके लिअे और अंग्रेज जनता तथा भारतीय जनताके बीचके अन्यायमूलक संबंधमें निहित भेदोंको शान्त करनेके लिअे गांधीजीने अपने जीवन द्वारा अिस अुपायका सफल प्रयोग कर दिखाया। असा कहा जा सकता है कि मानव-जातिकी मूल अेकता सिद्ध करनेके लिअे जो प्रेम आवश्यक है अुस प्रेमके द्वारा विरोध शान्त करने अथवा अन्याय दूर करनेका मार्ग मानव-समाजको बताना ही अुनके जीवनका मुख्य कार्य था।

यह कार्य करते करते अुनके जीवनके अंतिम भागमें भारतीय प्रजाके दो अंगों — हिन्दू और मुस्लिम समाज — के बीच दीर्घकालसे चले आये विरोधने अुग्ररूप धारण किया, और अुसका भयंकर परिचय सर्व प्रथम बंगालमें और अुसके पूर्वी कोनेमें मिला।

गांधीजीने अपने जीवन-कार्यके प्रति वफादार रहकर अिस विरोधसे अुत्पन्न हुअी भयंकर परिस्थितिको दूर करनेके लिअे अहिंसक अर्थात् प्रेमका अुपाय आजमानेका बीड़ा अुठाया।

अुनके जीवनका यह अंतिम प्रयोग कितना और कैसा सफल हुआ, अिसकी चर्चा यहां जरूरी नहीं है। परन्तु अहिंसाकी कार्य-पद्धतिके भावी विकासकी दृष्टिसे अिस प्रयोगका बहुत बड़ा महत्त्व है। अतः अिस प्रयोगके दिनोंमें गांधीजी जैसा जीवन बिताते थे और जो महान पुरुषार्थ करते थे, अुसकी प्रतिदिनकी डायरी भावी पीढ़ियोंके लिअे सुरक्षित रहे, अिस बातको स्वयं गांधीजी भी महत्त्वपूर्ण मानते थे।

अिस कारणसे अुन्होंने आरम्भसे ही अपनी सेवाके लिअे और अपने भारी कामकाजमें मदद पहुंचानेके लिअे श्री मनुबहन गांधीको अपने साथ रखा था। गांधीजीने नोआखाली और अन्य स्थानोंकी अपनी दिनचर्याकी डायरी श्री मनुबहनसे आग्रहपूर्वक रखवाअी थी। अिस पुस्तकमें नोआ-खालीकी अुनकी पैदल यात्राका विवरण श्री मनुबहनकी डायरीके रूपमें संग्रह किया गया है।

अिस डायरीमें गांधीजीकी दिनचर्या, लोगोंसे और व्यक्तियोंसे काम लेनेका अुनका तरीका, और सबसे बढ़कर तो अपने कामके लिअे आवश्यक मनुष्योंको तालीम देनेकी अुनकी वज्रके समान कठोर होते हुअे भी फूलके समान कोमल पद्धति — जैसे अनेक रोचक अंग हैं। परन्तु जीवनके अंतिम भागमें गांधीजीने अपने स्वीकृत मिशनको सफल बनानेके लिअे अकेले हाथों जो प्रयोग किया था, अुसके विस्तृत विवरणका मानव-जातिके भावी विकासकी दृष्टिसे बहुत बड़ा महत्त्व है। अहिंसाकी कार्य-पद्धतिको सफल बनानेका प्रयोग करनेके अिच्छुक सब लोग अिस विवरणको अितनी सावधानी और अितनी चिन्तासे सुरक्षित रखनेवाली श्री मनुबहन गांधीके सदा ऋणी रहेंगे।

बम्बअी, ४–१–'५४ मोरारजी देसाअी

अनुक्रमणिका

अेकला चलो रे

[गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्राकी डायरी]

१
वह धन्य दिवस

अक्तूबर १९४६ में मुझे पारिवारिक कामसे अुदयपुर जाना पड़ा। अुतने समयमें देशमें नये-नये परिवर्तन हो गये। बंगालमें भयंकर दंगे छिड गये। अिसकी प्रतिक्रिया बिहारमें हुअी और बापूजीको बंगाल जाना पड़ा। अिस बीच अुन्होंने मुझे अुदयपुर यह पत्र लिखा :

२३–१०–'४६

चि॰ मनुडी,

तुम्हारा अुदयपुरका पत्र कल मिला। अब तो मानता हूं कि मैं अेक-दो दिनमें बंगाल जाअूंगा। अिससे पहले तुम आ गअी होती तो मुझे अच्छा लगता। परन्तु अब तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना; जिससे तुम सुखी होओ और सेवा करने लगो अुसीमें मुझे संतोष है।

अुमियाको सन्तोष हो तब तक वहीं रहना। तुम्हारा स्वास्थ्य वहां अच्छा हो जाना चाहिये। वहांके जलवायुकी तारीफ की जाती है।

बापूके आशीर्वाद

कलकत्ता चले जानेके बाद मैं कहां हूं अिसका ठीक पता न होनेसे बापूजीने मेरे पिताजीको पत्र लिखा :

कलकत्ता,
४–११–'४६

चि॰ जयसुखलाल,

चि॰ मनुका पत्र मिला है। अुसीके साथ तुम्हारा अुसे लिखा हुआ पत्र भी मिला। अुसकी मांग पर ये दोनों लौटा रहा हूं। मनुडी वहां पहुंची होगी या नहीं, अिसका यकीन न होनेसे तुम्हींको लिख रहा हूं। अुसे अलग लिखनेका समय नहीं है। यह पत्र लिखनेका भी नहीं है, अैसा कह सकता हूं। परन्तु लिखना पड रहा है।

*　　*　　*

मेरा यह पत्र तीन बारमें लिखा गया है। मुझे डर है कि यह अंतिम पत्र होगा। बिहारके किस्सेसे मनमें यह निश्चय हो गया है कि लोगोंका मानस न सुधरे तो मैं अुसका साक्षी नहीं रह सकूंगा। अभी भी मैं अर्ध-अुपवास जैसा ही कर रहा हूं। अिसका मुख्य कारण शरीर है। परन्तु बिहार मुझे अनशनकी ओर ले जायगा। परसों नोआखाली जाअूंगा। पत्र आजकल कम ही लिखता हूं। तुम्हें तो आज यहां आनेके बाद ही लिखा है। अिसलिअे अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है। लेकिन अब तो अिसे असंभव मानता हूं। भगवान करे वह व्याधिमुक्त हो और सुखी रहे। और तो जो कुछ होगा वह अखबारोंमें देखोगे।

बापूके आशीर्वाद

१ दिसम्बरको मैं महुवा पहुंची तब अपने पिताजीके नाम लिखा बापूजीका यह पत्र मैंने पढ़ा और अुसी रात रेडियो द्वारा खबर मिली कि बापूजीने अपने सभी साथियोंको अलग अलग गांवोंमें रख दिया है। पिताजीके पत्रमें यह पढ़कर कि 'अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है', मेरा हृदय घड़ी भरके लिअे भर आया। विचार आया कि बापूजी मुझे अपनी निजी सेवाके लिअे रखे तो? परन्तु शायद अब यह असंभव है। अगर पासके साथियोंको भी अलग कर दिया है, तो अितनी दूरसे मुझे भला क्यों बुलायेंगे?

अिस विचारमें नींद नहीं आअी। पिताजीको जगाया। अुनसे पूछा। वे बोले: "तुम लिखो तो सही, सेवा करनेकी तुम्हारी सच्ची भावना होगी तो जरूर सफल होगी।" अुनके शब्दोंसे मुझे और प्रोत्साहन मिला और रातके डेढ़ बजे मैंने बापूको पत्र लिखा। अुसमें स्पष्ट लिखा कि "यदि मुझे किसी गांवमें बैठानेका अिरादा हो तो मुझे वहां नहीं आना है; अैसा ही अिरादा हो तब तो यहां बैठकर जितना बनता है अुतना काम करती ही हूं। परन्तु आप अपनी व्यक्तिगत सेवा करने देनेकी शर्त पर आने दें तो ही मेरी अिच्छा वहां आनेकी है। मेरा प्रस्ताव आपको मंजूर हो तो मुझे तारसे खबर दें, ताकि आपकी पैदल यात्रा शुरू होनेसे पहले मैं वहां पहुंच सकूं। मैं वचन देती हूं कि अिसमें बड़ेसे बड़ा खतरा अुठानेके लिअे भी मैं तैयार रहूंगी।" वगैरा।

कौन जाने रातके डेढ बजे किस शुभ मुहूर्तमें मेरा पत्र लिखा गया कि मेरा प्रयत्न सफल हुआ। ता० ११-१२-'४६ की शामको दूसरे तारवालेको आता देखकर मनमें अत्यंत हर्षकी भावना दौड़ गअी। तार खोलने पर बापूजीका ही निकला। तार अिस प्रकार था:

Ramganj,

Jaysukhlal Gandhi,

Care/Shepherd Mahuva,

If you and Manu sincerely anxious for her to be with me at your risk you can bring her to be with me. Wire arrival Khadi Pratisthan, College Square, Calcutta.

Bapu

यह तार पढते ही मुझे खयाल हुआ कि पूज्य बा और मेरे माता-पिताके आशीर्वादका ही यह फल है। सर्वथा असंभव बातके सभव हो जाने पर जैसी भावनाका अनुभव होता है वैसी ही भावना मैंने अनुभव की, और अीश्वरके अहर्निश अुपकारसे हृदय धन्यता अनुभव करने लगा।

पिताजीने भावनगर तार देकर अपनी छुट्टी मजूर कराअी। अिस बीच मैंने बापूजीको जो पत्र लिखा था, अुसे मेरे नोआखाली पहुचने पर अुन्होंने 'जीवनभर संभाल रखने' का आदेश देकर मुझे वापस दे दिया। अुस पत्रमें मेरा लिखित निश्चय था, अिसीलिअे शायद संभालकर रखनेको कहा होगा। बापूजीको लिखे गये मेरे किसी अन्य पत्रको अिस तरह संभाल कर रखनेको अुन्होंने कभी नही कहा। मेरा वह लिखित निश्चय अिस प्रकार था:

महुवा,
१२-१२-'४६

परमपूज्य बापूकी सेवामें,

आपका तार कल शामको मिला। मुझे आपने अपनी निजी सेवा करनेका अमूल्य अवसर दिया, यह जानकर बहुत ही आनंद हुआ। पू० भाअी (मेरे पिताजी) ने भावनगरसे तार द्वारा १५ दिनकी छुट्टी मांगी है। वह मिल जायगी और जल्दीसे जल्दी २२-२३ तारीख

तक ये मुझे यहां छोड़ जायेंगे। वहां पहुंचनेसे पहले खादी प्रतिष्ठानको तारसे सूचना कर देंगे।

आपको अितना लम्बा तार देनेकी जरूरत तो नहीं थी। क्योंकि आपके अिस प्रवासमें अकेले रहना पसन्द करने पर भी मैंने और पू० भाअीने औमानदारीसे और यहां आनेके खतरेका पूरी तरह विचार करके ही अिस शर्त पर वहां आनेका निर्णय किया था कि आप मुझे अपनी निजी सेवा करने देना पसन्द करेंगे। यह ब्यौरा अुस पत्रमें लिखा ही था। अिसलिअे सिर्फ आनेकी ही अनुमति दे दी होती तो काम चल जाता।

आज मुझे आपका अेक वाक्य याद आता है। अेक बार जाहेता, कान्तावहन आदि मेरी सभी सहेलियां जानेवाली थीं; तब मैंने कहा था, 'बापू, अब तो मैं अकेली हो गअी।' तब आपने मुझसे कहा था, 'तुम और मैं अकेले ही रहेंगे। मैं जीता हूं तब तक तुम अकेली कैसी हो?' और फिर आपने गीताके 'आपूर्यमाणम् . . .' श्लोकका अर्थ समझाया था। वह दिन सचमुच आ गया। मैं तो औश्वरसे प्रार्थना करती हूं कि वह मुझे अन्त तक प्रामाणिकतासे आपकी सेवा करनेकी शक्ति दे।

आपका अेक पत्र (पूज्य भाअीके नामका) मिला है। मैं तो मूर्खा हूं ही। अिसमें शंका कहां है? समझदार होती तो अैसा होता ही क्यों? परन्तु मुझे लगता है कि औश्वर मूर्खोंका भी बेली होता है। अिस तरह मेरे लाडभरे नाम तो पड़े! परन्तु जो हुआ सो हुआ। आपको मुझे समझदार बनाना होगा। अब तो आपकी सेवाका लाभ मिलेगा, अिस आशामें सब कुछ भूल गअी हूं। सेवा करते करते कोअी छुरा भी भोंक देगा तो खुशीसे वह दुःख सह लूंगी। मेरा खयाल है कि मेरे आनेसे पहले आपकी पैदल यात्रा शुरू नहीं होगी। अुससे पहले पहुंच जानेकी मैं आशा रखती हूं। अधिक तो क्या लिखूं? आपकी तबीयत अच्छी होगी।

आपकी पुत्री मनुडीके
दण्डवत् प्रणाम

हम ता० १५–१२–’४६ के दिन कलकत्तेके लिअे रवाना हुअे। कलकत्तेसे नोआखाली जानेके लिअे हमारे साथ खादी प्रतिष्ठानसे अेक मार्गदर्शक आये। कलकत्तेसे काजीरखिल, जहा गांधी छावनीका मुख्य केन्द्र था, पहुंचनेमें २४ घंटे लगे। और सफर भी बहुत ही कठिन था। अन्तमें ता० १९–१२–’४६ को दोपहरके कोअी तीन बजे हम श्रीरामपुर पहुचे, जहां बापूजी ठहरे हुअे थे। यह धन्य दिवस जीवनके अेक सुनहले दिनके रूपमें हृदयमें अंकित हो गया।

२

आत्म-समर्पणकी दीक्षा

श्रीरामपुर,
१९–१२–’४६, गुरुवार

हम जब दोपहरके तीन बजेके करीब बापूजीके पास पहुचे, तब बापूजी अेक तख्ते पर बैठे अकेले ही चरखा चला रहे थे, और आसपास ‘आअी० अेन० अे०’ (आजाद हिन्द फौज) के कुछ लोग तथा कर्नल जीवनसिंहजी वगैरा बातें करते हुअे बापूजीसे प्रश्न पूछ रहे थे। वे सब बापूजीके साथ अिस काममें शरीक होना चाहते थे। सब बातोंमें तल्लीन थे।

हमने अुस झोंपडीमें प्रवेश किया। झोंपडीकी देहलीमें बापूजीकी बैठक कोअी चार फुट दूर थी। मैं वहांसे सीधी बापूजीको प्रणाम करने दौडी। बापूजीने अेक जोरकी धप लगाअी, कान पकड़ा, अुनकी प्रेमपूर्ण चपत गाल पर पडी और गाल खींचकर बोले, "आखिर आ पहुंची!" कर्नल साहबसे कहने लगे, "यह लडकी यहां मरनेकी तैयारी करके आअी है, अिसलिअे आप लोगोंके दो मिनट ले लिये! अब आप बात कहिये।"

पांच-सात मिनटमें वे सब चले गये। बादमें बापूजीने मेरे स्वास्थ्यके समाचार पूछे। मैंने पूछा, आपको कैसा लगता है? "जैसी की तैसी है, परन्तु लगता है वजन बढा होगा।"

अिसके बाद मेरे पिताजीसे बोले, "कब चले थे? रास्तेमें भीड़ तो नहीं थी? मनुडीका पत्र मिला था। यह दिल्ली आअी थी तब भी अपने

पास रहनेको मैंने खूब समझाया था। मगर अिसकी अिच्छा अुमियाके पास जानेकी हुअी। मेरे नाम अेक पत्र लिखकर छोड़ गअी। वह मुझे बहुत अच्छा लगा था। मैंने बहुत कुछ अिस बारेमें मनुको लिखा भी था। बादमें तो बंगाल आना हो गया। यहां तो करना या मरना है। अिसके लिअे मनुकी तैयारी होगी, अिसका मुझे विश्वास नहीं था। परन्तु अितनेमें मनुका पत्र मुझे मिला। अुस पत्रका तारमें जवाब मांगा था, अिसलिअे तार दिया। यहां अिसकी परीक्षा होगी। मैंने अिस हिन्दू-मुस्लिम-अेकताको यज्ञ कहा है। अिस यज्ञमें जरा भी मैल हो तो काम नहीं चल सकता। अिसलिअे मनुके मनमें जरा भी मैल होगा तो अिसका बुरा हाल होगा। यह सब तुम समझ लो, जिससे अब भी वापस जाना हो तो यह तुम्हारे साथ चली जाय। बादमें बुरा हाल होने पर जाय, अुसके बजाय अभी लौट जाना ज्यादा अच्छा है।"

अूपरकी बात कहनेके बाद मेरे सामने देखकर बापूजीने कहा, "जयसुखलालको मैंने जो कहा वह अच्छी तरह समझमें न आया हो तो अिनसे समझ लेना। यहां तुम्हारी कड़ी कसौटी होगी।"

यह बात यहीं रुक गअी। अितनेमें कुलरंजनबाबू लौट आये। अंधेरा हो रहा था, अिसलिअे बापूजीने भाअीको (अर्थात् मेरे पिताजीको) जानेके लिअे कहा। मेरा बिस्तर आया नहीं था। मुझे तो बापूजीने यहीं रहनेको कहा, क्योंकि मैं अुनके पास रहनेके लिअे ही आअी थी। भाअीसे बोले, "यहां तो यज्ञ चल रहा है। मैं तुम्हें यहां सोने या खानेकी अिजाजत नहीं दे सकता। अिसलिअे तुम काजीरखिल लौट जाओ। मनुका बिछौना भेज देना।"

मेरा बिस्तर नहीं आया था, अिसलिअे बापूजीने अेक शतरंजी निकाल दी। साढ़े नौ बजे वे सोये।

रातको ठीक १२॥ बजे मेरे सिर पर हाथ फेरकर बापूजीने मुझे जगाया। "मनुड़ी, जागती हो क्या? मुझे तुम्हारे साथ बातें करनी हैं। तुम अपना धर्म अच्छी तरह समझ लो और जयसुखलालसे बातें करके जो फैसला करना हो झट कर लो, क्योंकि अुसे भी ज्यादा छुट्टी नहीं है।"*

---

* यह बात विस्तारसे 'बापू – मेरी मां' के पृष्ठ ९ से १३ पर मिलेगी। नवजीवन प्रकाशन। कीमत ०–१०–०; डाकखर्च ०–३–०।

कल शामको मैं यहां आओी हूं। तबसे बापूजीकी जो बातें मैंने सुनी अुन परसे यह वर्णन करना सर्वथा असंभव है कि यहां अुनकी क्या स्थिति है, कैसा अद्भुत कार्य अुन्हें करना है और किस प्रकारकी कठिनाअियोंका सामना वे कर रहे हैं। बापूजीकी स्थिति पर लागू होनेवाला अखा भगतका यह भजन बड़ा मार्मिक है :

> अकल कला खेलत नर ज्ञानी !
> जैसे हि नाव हिरे फिरे दसों दिस,
> ध्रुवतारे पर रहत निसानी। अकल०
> चलन वलन अवनी पर वाकी,
> मनकी सुरत अकाश ठहरानी;
> तत्व-समास भयो है स्वतंतर,
> जैसे हिम होवत है पानी। अकल०
> छूपी आदि अन्त नहीं पाया,
> आओी न सकत जहां मन वानी;
> ता घर स्थिति भअी है जिनकी,
> कहि न जात अैसी अकथ कहानी। अकल०
> अजब खेल अद्भुत अनुपम है,
> जाकू है पहिचान पुरानी;
> गगन हि गेब भया नर बोले,
> अेहि अखा जानत कोओी ज्ञानी। अकल०

श्रीरामपुर,
२०-१२-'४६, शुक्रवार

फिर बापूजीने साढ़े तीन बजे मुझे प्रार्थनाके लिअे अुठाया। अुससे पहले बापूजी जाग गये थे। अुस दिनकी अपनी डायरीमें बापूजीने लिखा :

> "आज रातको १२-३० बजे अुठा, मनुको १२-४५ को जगाया। अुसके धर्मके बारेमें सब समझाया। जयसुखलालसे बातें करनेको भी कहा। अुसे निश्चय बदलना हो तो अभी बदल सकती है, परन्तु यज्ञमें बूंद पड़नेके बाद सभी खतरे अुठाने होंगे। वह टससे मस नहीं हुअी। जयसुखलालसे मेरी खातिर बात करेगी। परन्तु जयसुखलालने

तो सब कुछ अुसी पर छोड़ दिया है और छोड़ेगा। अिस प्रकार बातोंमें सवा बज गया और फिर कुछ देर सोकर तीन बजे प्रार्थनाके लिअे अुठा।"

अितनी बात बापूजीने अपने हाथसे अपनी डायरीमें लिखी और मेरे लिअे जो कुछ लिखा गया हो अुसकी नकल करके मेरे पिताजीको भेज देनेके लिअे कहा। अिसमें साढ़े तीन बज गये। प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें आजसे दोनों समय भजन और गीतापाठ करनेका मुझे आदेश दिया। प्रार्थनामें निर्मलबाबू और परशुरामजी थे।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे फिर रातकी बातों पर विचार करनेको कहा। मैंने अपना निश्चय कह सुनाया "जहां आप वहां मैं, मेरी यह अेक शर्त आपको मजूर हो तो फिर मैं किसी भी परीक्षाका और आपकी किसी भी शर्तका स्वागत करूंगी। भाअीने तो मुझे बचपनसे ही संपूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। मुझ पर कभी शकाकी नजर नहीं रखी। अिसलिअे आपको अुनकी अिच्छाकी अपेक्षा मेरी अिच्छा अधिक समझनी होगी।"

मैं बापूजीके लिअे गरम पानी करने गअी, अुस बीच अुन्होंने मेरे नाम चिट्ठी लिखी :

चि० मनुड़ी,

अपना वचन पालन करना। मुझसे अेक भी विचार छिपाना मत। जो बात पूछूं अुसका बिलकुल सच्चा अुत्तर देना। आज मैंने जो कदम अुठाया, वह खूब विचारपूर्वक अुठाया था। अुसका तुम्हारे मन पर जो असर हुआ हो वह मुझे लिख देना। मैं तो अपने सब विचार तुम्हें बताअूंगा ही, परन्तु अितना वचन मुझे अभी तुम्हारी ओरसे चाहिये। यह हृदयमें अंकित करके रख लेना कि मैं जो कुछ कहूंगा या चाहूंगा, अुसमें तुम्हारा भला ही मेरे सामने होगा।

बापू

(मैंने कहा, मुझे जो भी कठिनाअियां या कष्ट सहन करने पड़ेंगे वे मरते दम तक सहूंगी। मुझे आप पर संपूर्ण श्रद्धा और विश्वास है। आप जैसे-जैसे नोआखालीका भयंकर चित्र मेरे सामने रखते जाते हैं, वैसे वैसे मेरा मन दृढ़ होता जा रहा है। अिसलिअे बापूजीने

लिखा:) यदि अैसा ही हो तो मुझे कुछ पूछनेको नहीं रह जायगा, केवल समझनेको ही रहेगा। तुम्हारी श्रद्धा सचमुच ही यहां तक पहुंच गअी हो तो तुम सुरक्षित हो। तुम अिस महायज्ञमें पूरा भाग अदा करोगी, — सूखे हो तो भी। अिसे संभालकर रखना। समझमें न आये सो पूछ लेना।

बापू

साढ़े सात बजे बापूजी घूमने निकले। घूमते-घूमते बोले: "यह न समझना कि मैंने तुम्हें यहां केवल अपनी सेवाके लिअे ही बुलाया है। मेरी सेवा तो तुम करोगी ही। परन्तु जहां छोटीसी लड़की या वृद्ध स्त्री भी सुरक्षित नहीं, वहां तुम्हें, १६–१७ वर्षकी जवान लड़कीको, मैंने अपने पास रखा है। यदि कोअी गुण्डा तुम्हें तंग करे और तुम अुसका सामना बहादुरीके साथ कर सको अथवा सामना करते करते मर जाओ तो मैं खुशीसे नाचूंगा। तुम्हें बुलानेमें मेरा यह अेक प्रयोग भी है।"

नोआखालीमें कहीं-कहीं बांसके पुल पार करना पड़ते हैं। बापूजी जिस प्रदेशकी यात्रा करने जा रहे हैं, वहां अैसे पुल पार करना पड़ेंगे। अिस-लिअे वे अुन पर चलनेकी आदत डाल रहे हैं। अैसे पुलों पर वहांके बालक तो आसानीसे चल सकते हैं, परन्तु अनजान आदमी अगर चल न सके तो नीचे खाओमें ही गिरता है।

घूमकर आनेके बाद मैंने बापूके पैर धोये। मालिश की। मालिशमें बापूजी आधा घंटा सो गये थे। नहा लेनेके बाद दस बजे जब बापूजी भोजन कर रहे थे अुस समय मेरे पिताजी अंतिम विदा लेने आये। बापूने कहा: "मनुडी तो टससे मस नहीं होती। मैंने अुससे बहुत बातें कीं। अब तुम निश्चिन्त होकर जाओ। अिसकी चिन्ता न करना।"

पिताजीने कहा, "अब तो आप अिसे जब तक चाहे रख सकते हैं। और आपके पास रहे तो फिर मुझे चिन्ता ही क्या हो सकती है?"

बापू — मेरी धारणा है कि जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक अुसे जानेको नहीं कहूंगा। यह तंग आ जाय तो भले जा सकती है। परन्तु मेरा तो अभयदान है कि यह चाहे तो मुझे छोड़ सकती है, पर मैं अिसे नहीं छोड़ूंगा, सिवाय अिसके कि दोनोंमें से कोअी मर जाय। मरे तो भी क्या? शरीर अलग

होंगे, आत्मा तो अमर है। मेरी यह प्रबल अिच्छा है कि अिस लड़
जो छिपे हुअे गुण मैंने देखे हैं अुन्हें प्रकाशमें लाअू।

मेरे पिताजी साढ़े ग्यारह बजे महुवा जानेके लिअे रवाना हुअे।
साथका तमाम फालतू सामान अुनके साथ वापस भेज देनेकी सूचना बापू
की। तीन बजे कातते हुअे अुन्होंने मेरी डायरी सुनानेको कहा। मैंने व
"अपनी ही डायरी मैं नहीं सुनाअूगी।"

बापूने कहा "हमेशा अपनी भूल स्वयं ही स्वीकार करनेमें जि
श्रेष्ठता है अुतनी कागज पर लिखकर स्वीकार करनेमें या किसी औरके म
फत स्वीकार करनेमें नहीं। अिसलिअे तुम पढ़ो। अुससे मुझे पता ल
कि तुम मेरी बातोंको कितना समझी हो। बादमें मैं अुस पर अपनी सही
दूंगा। अिससे पढ़नेमें मेरा समय नहीं बिगड़ेगा, आंखोंकी शक्ति भी
जायगी। और तुम्हें तो अब मेरी जो भी सेवा हो सो करनी ही
अिसलिअे यह भी अेक सेवा ही है, अैसा मान कर मेरे सामने पढ़ जाओ

मैंने अपनी कलकी डायरी सुनाअी। बापूजीने कातकर अुसके नी
सही की।

चार बजे कुछ पत्र लिखवाये और कहा: "महादेव और प्रभासे
जो काम लिया है वही तुमसे लेना है।"

शामकी प्रार्थनाके बाद मैं अकेली बैठकर बापूजीने दिन भर जो गंभी
बातें कही थीं अुन पर शांतिसे विचार कर रही थी और सोच रही
कि मैं अिस बड़ी जिम्मेदारीको पूरा कर सकूंगी या नहीं?

बापू कहने लगे, "तुम अितनी गंभीर क्यों हो? अपनी मांसे कुछ
छिपाओगी तो पाप लगेगा। भले अच्छा विचार आये या बुरा, सब मु
कह देना।"

मैंने कहा, "आज आपने . . . को जो पत्र लिखायें, अुनमें अि
बात पर प्रकाश डाला है कि आप मुझसे किस प्रकार काम लेनेकी आ
रखते हैं और मुझ पर कैसी जिम्मेदारियां हैं। वे सब आशायें मैं पूरी क
सकूंगी और अुन जिम्मेदारियोंको निबाह सकूंगी या नहीं, अिसी प
अेकान्तमें बैठी विचार कर रही हूं।"

बापू — अिसकी चिन्ता हम किस लिअे करें? चिन्ता करनेसे काम नह
चलेगा। हां, हमारी भावना शुद्ध हो तो सफलता जरूर मिलेगी। हम स

काम अीश्वरको ही सौंपकर क्यों न करें? अुससे हार्दिक प्रार्थना करें तो अपने-आप वह शक्ति हममें आ ही जायगी। रामनाम रटें। राम पर पूरा भरोसा करके यह काम अुसे सौंप दो। छोटा बच्चा भूख लगने पर रो देता है तब मा अुसे दूध पिलाती है। परन्तु अपनी भूख मिटानेकी चिन्ता अुस बालकको नहीं होती, माको होती है। वैसे ही तुम कामकी चिन्ताका भार मन पर रखोगी तो निभ ही नहीं सकोगी। यह भार मुझ पर और अीश्वर पर छोड़कर वह जो भी शक्ति दे अुसके अनुसार काम करती रहो।

ग्रामकी सार्वजनिक प्रार्थनामें सबके सामने भजन गानेका पहला ही अवसर होनेसे मैं गाते समय कुछ काप रही थी। अिसका भी बापूजीने अच्छी तरह खयाल रखा और मुझसे कहा, "प्रार्थना केवल मुंहसे बोल जाने या गानेके लिअे नहीं है। प्रार्थनामें सच्ची भावना अुत्पन्न हो तो ही सुननेवालों पर अुसका भव्य प्रभाव पड़ता है। दो-चार दिन करोगी तो संकोच जाता रहेगा।"

रातको साढ़े आठ बजे बापूजीने बंगला वर्णमाला लिखी। मैंने डाकमें आये पत्र और अखबार पढ़कर सुनाये। आजसे बापूजीका सभी काम मैंने संभाल लिया है।

अीश्वरकी मुझ पर कितनी कृपा है? पूज्य बाकी भी अिस प्रकार अेकान्तमें सेवा करनेका मुझे अवसर मिला था। और आज दुनियाके अिस महापुरुषकी घोर तपश्चर्यामें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सत्यकी ही जय है, यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव कर रही हूं। अीश्वरसे प्रार्थना करती हू कि हे अीश्वर, तुझ पर मेरी अैसी ही श्रद्धा बनी रहने दे और मुझे मिल रही प्रसादीको पचाने योग्य बना।

(बापू, श्रीरामपुर, २०-१२-'४६)

(बापूजीने रातको साढ़े नौ बजे मेरी आजकी डायरी पढ़कर तुरंत ही अूपर लिखे अनुसार हस्ताक्षर कर दिये।)

३

काम संभाल लिया

श्रीरामपुर,
२१-१२-'४६, शनिवार

साढ़े तीन बजे, प्रार्थनासे कुछ समय पहले, अुठे। दातुन करते समय बापूजीने कुछ पत्र, जो मुझसे कल लिखवाये थे, सुने और मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये। अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लेकर निर्मलदाने प्रार्थना-प्रवचनकी जो रिपोर्ट तैयार की थी अुसे सुधारा। सारा समय अिसमें चला गया। सात बजे मोसबीका रस पीकर घूमने निकले। आज बहुत दूर तक घूमने गये थे। बापूजीके साथ मैं तथा प्रेस-रिपोर्टर थे। लगभग ४० मिनट तक घूमे। बीचमें अुन्होंने मेरी गीताकी पढ़ाअीके बारेमें पूछा। मैंने कहा, जेलसे छूटनेके बाद ठीक तरहसे मैंने गीताका अध्ययन नहीं किया। अपने-आप झूठे सच्चे अर्थ जरूर करती रही। दूसरोंसे गीताका अर्थ न करानेमें मेरी यह अिच्छा थी कि दूसरे लोग अन्य किसी विषयमें भले मेरे गुरु बनें, परन्तु मेरे गीताके अध्ययनके गुरु तो आप ही रहें। बापूजीको मेरी अिस बातसे दुःख हुआ। अुन्होंने मुझे समझाया :

"अिस अिच्छामें तुम्हारा झूठा मोह है। अच्छी बात सीखनेमें हजारों क्या लाखों गुरु भी हम क्यों न बनायें? और अेक छोटा बच्चा हो तो अुससे भी सीखें। अच्छी बात किसीसे सीखनेमें शर्म काहे की? परन्तु जब जागे तभी सवेरा मानना चाहिये। अब हम आजसे ही गीताका अध्ययन शुरू कर दें। अुच्चारणमें अधिक कुछ करनेकी जरूरत नहीं है। परन्तु गीताके अर्थ नहीं सीखे, यह मुझे बहुत खटकता है। तुम्हें हमेशा पांच श्लोकोंका अर्थ लिखना चाहिये। तुम जानती हो कि तीसरा अध्याय यज्ञका है। भगवान कहते हैं कि जो मनुष्य यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है। यह तो बड़ा महत्त्वपूर्ण वचन हुआ; क्योंकि चोरीका अन्न खाना कच्चा पारा खाने-जैसा है। कच्चा पारा हजम नहीं होता। वह

खा लिया जाय तो फूट निकलता है। अिसी तरह चोरीका अन्न खाया जाय तो वह फूट निकलेगा। यज्ञके बिना मनुष्य घडीभर भी रहे तो वह चोर ठहरता है। अिसलिअे यज्ञ हम सबको करना चाहिये। सद्भाग्यसे जिसका हृदय स्वस्थ है, शुद्ध है, अुसके लिअे यज्ञ सरल वस्तु है। और यज्ञके लिअे न धनकी आवश्यकता है, न बुद्धिकी और न पढ़ाओकी। यज्ञका अर्थ है कोओ भी परोपकारी कार्य। जिसका जीवन पूरी तरह यज्ञमय हो अुसके लिअे कहा जा सकता है कि वह चोरीका अन्न नहीं खाता। अतः यह कह सकते हैं कि जो थोड़ासा यज्ञ करता है वह कम चोर है। अिस प्रकार सूक्ष्मतासे देखा जाय तो थोड़ी-बहुत चोरी हम सब करते हैं। जब स्वार्थमात्रका त्याग कर दें तभी कहा जायगा कि पूरा यज्ञ किया है। स्वार्थका त्याग करनेका अर्थ है अहंता, मेरापन, छोड़ना। यह मेरा भाओ है और वह पराया है, यह मेरी बहन है और यह पराअी है, अैसा भाव मनमें रहना ही नहीं चाहिये। अैसा वही कर सकता है जो अपना सब कुछ कृष्णार्पण कर दे। अैसा व्यक्ति जो भी सेवा करता है, वह सब ओश्वरको बीचमें रखकर अुसके सेवककी हैसियतसे करता है। अैसे मनुष्य नित्य सुखी रहते हैं। अुनके लिअे सुख-दुःख अेकसे ही हैं। वे अपने शरीर, मन, बुद्धि सबका परमार्थके लिअे ही अुपयोग करते हैं। अैसा अुत्तम यज्ञ हम सब नहीं कर सकते। जब हमारे मनमें यह भावना हो कि संभव हो तो सारे जगतकी सेवा करें, तभी अैसा यज्ञ हो सकता है। तो अैसा कौनसा कार्य है जिससे यह भावना सिद्ध हो सकती है? अिस प्रश्नका विचार करें तो मालूम होगा कि कातना ही वह मुख्य कार्य है; और यह अेक ही सेवा अैसी है जिसे परमार्थकी दृष्टिसे असंख्य मनुष्य अेकसाथ अथवा चाहे जब कर सकते हैं। यह मेहनत जगतके लिअे, देशके लिअे की जा सकती है। और अिससे असंख्य गरीबोंका पेट भरता है। अंधे, गूंगे, बहरे, गरीब, अमीर, बच्चे, बूढ़े सब आसानीसे यह सेवा कर सकते हैं। और प्रत्येक तारके साथ रामनाम लिया जा सकता है। मैंने तो जबसे चरखेकी खोज हुअी तबसे यह अेक बात रट रखी है। तुम भी गीताके अैसे अर्थोंको कंठस्थ करके आचरणमें अुतारो, अिसलिअे मैं तुम्हें *गीताके अर्थ अिस तरह समझाना* चाहता हूं, केवल व्याकरणकी दृष्टिसे नहीं। यह तो मैं तुम्हें गीताके श्लोकोंका अर्थ कैसे समझाअूंगा अिस बातका अेक अुदाहरण दिया। और यज्ञका सच्चा अर्थ भी समझाया। यज्ञमें चरखा है और चरखेमें यज्ञ है।

यह सारी बात घर आये तब तक बापूजीने बहुत गंभीरतापूर्वक मुझे समझाओ। घर आकर कीचड़के पैर धोये और बापूजीने बंगाली वर्णमाला लिखी। अिस बीच मैंने बापूजीकी मालिश करनेकी और अुनके स्नानके लिअे पानी गरम करनेकी तैयारी की।

आठ बजे मालिश कराते समय बापूजी २० मिनट सो लिये। अुन्हें थकावट बहुत मालूम होती है। मालिश और स्नानके बाद भोजन करते हुअे सुहरावर्दी साहबके लिअे पत्र तैयार कराया। भोजनमें आठ औंस दूध, शाक तथा बार्ली (जौ) के बहुत आ जानेसे अुसे बाटकर रोटी बनानेको कहा था। परन्तु रोटी जैसी चाहिये वैसी बनती नहीं थी। अिसलिअे कलसे बार्लीको शाकके साथ ही कूकरमें रख देनेकी सूचना की।

यहां बापूजी जिस बुढियाके मेहमान बने हैं वह बहुत ही ममतालु और प्रेमल है, परन्तु मैं अुसकी भाषा नहीं समझती और वह मेरी नहीं समझती। अिशारेसे आग्रहपूर्वक मुझे खिलाती है।

आजसे मैंने भी बंगला सीखना शुरू किया है। बापूजी कहते हैं, "देखें, हम दोनोंमें से कौन पहला नम्बर लाता है।"

बापूजी अेक बजे आरामके लिअे लेटे। मैंने पैरोंमें घी मला। आराम लेते-लेते सुहरावर्दी साहबका पत्र जांच लिया। फिर मेरी डायरी देखी। वह अुन्हें पसन्द आओ। परन्तु अधिक समयके अभावमें थोड़ेमें लिखनेकी सूचना करके कहा, "मुख्य बात दर्ज कर ली जाय तो संक्षेपमें सब लिखना आ जाता है। मेरे लेखोंका अध्ययन करना। यज्ञकी बात समझके साथ लिखी गयी है।"

दो बजे बापू अुठ बैठे। कुल पंद्रह मिनट सोये। तीन बजे बिड़लाजीकी पेढीसे फल आये। अेक दर्जी भी आया। मेरे लिअे पंजाबी पोशाक सीनेको दी। सवा तीन बजे पेट और सिर पर मिट्टीकी पट्टी रखवाओ और अुसी समय श्रीकृष्ण सिन्हा (बिहार) के नाम मुझसे पत्र लिखवाया। अिस बीच कोओ पांच मिनट बापूजी अूंघते रहे। अिसके बाद मुलाकातें शुरू हुओं। जमान —अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, मेजर स्ट्राअिकर, डॉ॰ दासगुप्ता और तीन रिलीफ अफ़सर आये। अुनके साथ बापूजीने यह चर्चा की कि यात्रामें किस रास्तेसे जायें। मजिस्ट्रेट जमानके साथ निराश्रितोंसे किस प्रकार काम लिया जाय अिसकी बातें करते हुअे बापूजीने कहा, "सरकार काम करनेके

लिअे अुन्हें मजबूर नही कर सकती। वे खुद अपनी मरजीसे करें तो दूसरी बात है। असलमें यह काम अलग-अलग संस्थाओं द्वारा होना चाहिये।"

मुलाकातें पाच बजे तक चली। पाच बजे प्रार्थनामें गये। बरसातके कारण आनेवालोंकी संख्या बहुत नही थी। फिर भी ५०–६० भाअी-बहन तो जरूर होंगे। अभी लोगोंके मनसे डर गया नही है। मुसलमानोंको यह खबर लग जाय कि हिन्दू बापूजीका आसरा लेने गये हैं तो शायद वे मारेंगे, यह डर हिन्दुओंमें गहरा पैठ गया है।

प्रार्थनाके बाद सुशीलाबहन अपने गावसे आअी थी। अिसलिअे सारा समय अुनके साथ बातें करनेमें बिताया।

घूमकर लौटने पर बापूजीने दूध और अंगूर लिये। यहा खाखरा बनानेका कोअी साधन न होनेसे आज खाखरे नही बनाये। नारियलका सदेश बूढी मा बापूजीको जबरदस्ती दे गअी, अिसलिअे अुसका अेक टुकडा खाया।

बापूजीका कातना पूरा नहीं हुआ था, अिसलिअे रातको साढे आठसे नौ बजे तक काता। कुल तार १६० (दोहरे ८०) हुअे। बापूजीने अपनी डायरी लिखी; मेरी डायरी सोते-सोते सुनी। हस्ताक्षर सुबह करनेके लिअे गद्दीके पास रखनेकी सूचना की।

मैं अकेली बापूजीका बिस्तर कर रही थी। अितनेमें बाथरूमसे हाथ-मुह धोकर वे आये और मुझे चादर बिछानेमें मदद की। मैंने बहुत मना किया तो बोले, "अिसमें मैं सूक्ष्म गर्वका भाव देखता हूं। तुम मना करती हो सो प्रेमके कारण या यह सोचकर कि बापूको तकलीफ होगी। परन्तु तुम्हें और मुझे ये सब काम अेक-दूसरेकी मददसे पूरे करने हैं। अिसमें यदि तुम यह आग्रह रखो कि मैं अकेली ही सब करूंगी तो तुम जल्दी बीमार पड जाओगी और मेरी सेवा नही कर सकोगी। यह चादर बिछानेमें मुझ पर क्या जोर पड़ जायगा? अिसलिअे अब जो तुम्हें सूझे सो तुम करना और मुझे सूझे सो मैं किया करूंगा।"

बापूजीका चादर बिछानेका दृश्य अितना करुण था कि देखा नहीं जाता था। मुझे अेकदम विचार आया कि अिस समय यदि पूज्य बा होती तो? परन्तु बापूजीको चादर बिछानेसे रोकनेका मुझे साहस नही हुआ।

साढे नौ बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। आधा घंटा अखबार सुने। फिर मुझसे कहा कि सारा काम निबटा कर अुनके सोनेके समय मैं भी सो जाअू। काम न पूरा हो तो "अधूरा रखकर भी तुम्हें सो ही जाना चाहिये। नहीं तो जब तक तुम जागती रहोगी, तब तक मुझे चिन्ता बनी रहेगी। और मैं भी सो नहीं सकूगा।" अिस बातमें दो चिन्ताअे थी। अेक तो यह कि अधिक जागरण करके शरीर पर जोर डालकर काम करनेसे मेरे स्वास्थ्यको हानि पहुचेगी और दूसरी तथा बडी चिन्ता यह थी कि यह प्रदेश दूसरी ही तरहका है और खास करके जवान हिन्दू लड़कियोंके लिअे तो खतरनाक ही माना जाता है। अिसलिअे 'सावधान नर सदा सुखी' कहावतके अनुसार मैं भी बापूजी बिस्तर पर लेटे कि तुरत अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर प्रणाम करके सो गअी। यहा आये आज तीसरा दिन हुआ। आजसे सारा काम मैंने सभाल लिया, जिससे मनमें संतोष हुआ।

श्रीरामपुर,
२२–१२–'४६, रविवार

रातको बापूजी डेढ बजे जागे। मुझे जगाया। दीया और लिखनेका सामान देकर बापूजीने मुझे सो जानेको कहा। मैं सब सामग्री देकर सो गअी। अढाअी बजे फिर जगाया। अुन्होने कुछ पत्र लिखवाये थे, वे अुन्हें पढ़कर सुनाये। बापूजीने अुन पर हस्ताक्षर किये। आजकी डाकमें बापूजीने जो कुछ लिखाया वह बड़े महत्त्वका और हृदयद्रावक है। अेक पत्रमें लिखवाया:

> तुम्हारे दो पत्र मिले। . . . भाअी पर मेरी नजर जमी हुअी है। यदि मुझे अैसा लगा कि यहां मैं थोडा भी स्थिर हूं, तब तो . . . भाअी जैसे बहुतोंकी सेवाका अुपयोग कर सकूंगा। और मुझे वह अच्छा लगेगा। निर्भय बननेके बारेमें तुम जो लिखते हो वह वास्तविक है, फिर भी तुम्हारे मुहसे शोभा नही देता। अिस प्रकार जब हमारे जाने हुअे अपराधी आजाद घूमते हो, तब लोगोंको निर्भय बनना और रहना आना चाहिये। यह शिक्षा जब तक हम पचा नहीं लेते, तब तक पगु ही बने रहेंगे। यहाँ हिंसा-अहिंसाका भेद भूल जाओ। हिंसावादी भले बहादुरीकी हिंसा करके मरना सीखे। परन्तु अहिंसावादीको तो अैसे समय ही अहिंसाका प्रभाव जानना है। निर्बलकी अहिंसाको अहिंसाका

नाम देकर हम अिस शक्तिकी निन्दा करते हैं। अैसी अहिंसाको हम डरपोककी युक्ति कह सकते हैं। वह युक्ति हमने सीख ली! और अिसीलिअे मुझे अपने बारेमें यह भय पैदा हुआ है कि मैंने भी — भले अनजानमें — अहिंसाके बहाने या नाम पर कहीं डरपोककी यह युक्ति ही चलाना तो नहीं सीखा है और दूसरोंको सिखाया है! अतः मैं अपनी जांच करने और सच्ची परीक्षा देनेके लिअे यहां आया हूं। मेरे पास पुलिस वगैरा मौजूद हैं। और अब सिक्ख भाअी भी आ गये हैं। परशुराम और निर्मलबाबू तो हैं ही। परसों मनुडी आअी है। यह पत्र अुसीसे लिखवा रहा हूं। अिसीलिअे तो कहीं मैं बेफिक्र बनकर नहीं घूम रहा हूं? 'सुज्ञेषु किं बहुना'।

बापूके आशीर्वाद

दूसरा पत्र भी अैसा ही है; अुसमें नोआखालीका करुण चित्र आता है।

चि० . . .

तुम्हारा प्यारेलालके नाम भेजा हुआ पत्र मेरे पास सीधा आ गया। प्यारेलाल वगैरा तो अपने काममें लगे हुअे हैं। मौतके साथ खेल रहे हैं। अिसलिअे हम सब अेक जगह थे तब वे जो कुछ कर सकते और भेज सकते थे वह अब नहीं कर सकते। तुम्हारा पत्र काजीरखिल गया तो सतीशबाबूने मेरे पास भेज दिया। प्यारेलालको अिस पत्रका पता नहीं है। वे मेरे पास आते-जाते रहते हैं।

यह पत्र मैं सुबह तीन बजे लिखवा रहा हूं। दातुन-पानी तो चार बजे होगा। फिर प्रार्थना। अीश्वर निभायेगा तो निभ जाअूंगा। अितना करते हुअे भी मेरे स्वास्थ्यके बारेमें जरा भी चिन्ताका कारण नहीं है। शरीर काम देता है, फिर भी मेरी परीक्षा हो रही है। मेरी अहिंसा और सत्य दोनों मोती तौलनेके कांटेसे भी कहीं अूंचे कांटे पर चढ़े हुअे हैं, जो बालके सौवें भागके वजनकी भी परीक्षा कर सकता है। अहिंसा और सत्य तो अपूर्ण हो ही नहीं सकते। परन्तु मेरी, जो अिनका प्रतिनिधि बना हूं, अपूर्णता सिद्ध होनी होगी तो हो जायगी। और अगर वह सिद्ध हुअी तो अितनी आशा

जरूर रखता हू कि अीश्वर मुझे अुठा लेगा और किसी दूसरे शरीर द्वारा यह काम लेगा।

मुझे खेद है कि जो काम प्यारेलाल करते थे वह काम मैं खुद नही कर सकता और मेरे पास जो दो आदमी है अुनमे अिसका प्रबंध नही करा सका। परन्तु दोनों कुशल हैं, अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि मैं अिसका प्रबंध करा लूगा। अिसमें तुम्हारा पत्र प्रोत्साहन देगा। तीन-चार दिन हुअे जयसुखलाल चि० मनुको अुसकी अिच्छासे यहां छोड गये है। वह मेरे साथ मृत्युका भी आलिंगन करनेको तैयार थी। अिसलिअे मैंने अुसकी अपनी शर्त पर मनुको यहा आने दिया और अब यह पत्र लेटे लेटे आखें बन्द करके अुससे लिखवा रहा हू, जिससे मुझे कोअी कष्ट न हो। अिसी कोठरीमें सुचेता भी है। वह सो रही है। और मैं अपने पाट पर पडे पड़े धीमी आवाजमें मनुको लिखवा रहा हू। यहाका पाट अैसा है कि अिस पर तीन आदमी आरामसे सो सकते हैं। मैं अपना सारा काम अिस पाट पर ही करता हू। तुमने जो तार भेजा, अुसे निकम्मा समझो। यहा अतिशयोक्तिका पार नही है। यह भी नही कहा जा सकता कि लोग जान-बूझकर अतिशयोक्ति करते हैं। यहाके लोग जानते ही नही कि अतिशयोक्ति क्या होती है। जैसे हरी घास अुगती है वैसे ही मनुष्यकी कल्पना अुडती है। चारों ओर नारियल और सुपारीके बडे-बडे पेड़ खडे हैं। अुन्हीकी छायामें अनेक साग-भाजिया अुगती हैं। नदिया सब सिन्धु जैसी हैं। गगा, यमुना और ब्रह्मपुत्रा अपना पानी बगालकी खाडीमें अुडेलती हैं। मेरी सलाह है कि तुमने अभी तक तार भेजनेवालेको कोअी जवाब न दिया हो तो अब यह जवाब दो कि . सब बातोंका सबूत भेजो तो ही शायद केन्द्रीय सरकार कुछ कर सके, यद्यपि अुसे अिसका अधिकार नही है। तुम्हारे पास गाधी मौजूद है, वह तुम्हें न्याय न दे अैसा नही हो सकता। परतु वह तो सत्य और अहिंसाका पीर कहा जा सकता है, अिसलिअे सभव है तुम्हें निराशा अुत्पन्न हो। परन्तु यदि वह तुम्हें निराश कर देगा तो हम, जो अुसके हाथ नीचे तैयार हुअे हैं, कैसे संतोष दे सकेंगे?

यहा मामला कठिन है। सत्य कही ढूढे नही मिलता। अहिंसाके नाम पर हिंसा होती है। धर्मके नाम पर अधर्म हो रहा है। सत्य और

अहिंसाकी परीक्षा तो अिसके बीचमें ही हो सकती है न? मैं यह समझता हूं, जानता हूं, अिसीलिअे यहां पड़ा हूं। यहांसे मुझे बुलाना मत। कायर बनकर भागूं तो मेरा दुर्भाग्य। हिन्दुस्तानके अभी तक अैसे स्मशान मैं नहीं देखता। अिसीलिअे तो मुझे यहां करना है या यहां मरना है। कल रेडियोके समाचार आये कि . मेरे साथ बातचीत करने आ रहे हैं। सबोंको मिलकर क्या करना है? तुममें से जिसे कुछ पूछना हो वह पूछ सकता है।

* * *

मैं तो भट्ठीमें पड़ा हुआ हूं, अिसलिअे अुसमें क्या होता है और क्या सत्य है, अिसका सबूत अच्छी तरह दे सकता हूं। बिहार लीगकी रिपोर्ट देखी होगी। अुसके बारेमें मैंने को लिखा है। और तुम सबको मेरी राय बता देनेके लिअे . को भी लिखा है। यदि अिसमें आधा भी सत्य हो तो भयंकर है। मुझे जरा भी शंका नहीं कि अैसी निष्पक्ष जांच तुरन्त होनी चाहिये, जिसके विरुद्ध कोअी अंगुली न अुठा सके। अेक दिनका भी विलम्ब नहीं होना चाहिये। अिसमें जो सत्य हो अुसे स्वीकार करना चाहिये। बाकी जो स्वीकार न किया जा सके वह जांच करनेवाले न्यायाधीशके पास जाय। मुस्लिम लीगके मंत्रियोंसे भी बात करो। सुहरावर्दी साहबके साथ मैं जो पत्रव्यवहार कर रहा हूं वह पूरा नहीं हुआ है।

तुम्हारी कठिनाअी यहां बैठे हुअे भी जानता हूं, और समझता हूं। परन्तु कठिनाअी होते हुअे भी कुछ काम तो करने ही पड़ते हैं। . . . तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा, यह तो कैसे कहूं? काम करने लायक है, अैसा मान लेता हूं। आशा करता हूं अच्छा हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार अैसी नीरव शांतिमें पत्रोंमें लिखाअी गअी बातोंसे बापूजीकी हृदय-व्यथा आसानीसे समझी जा सकती है।

ठेठ चार बजे प्रार्थना हुअी।

४

डायरीका महत्त्व

२२ वी तारीखको पू० बाका मासिक श्राद्ध-दिवस होनेके कारण संपूर्ण गीता-पारायण हुआ। सुशीलाबहन थीं, अिसलिअे पाठ खूब सुन्दर हुआ। गीतापाठ हो रहा था अुसी समय प्यारेलालजी और मि० अिग्लाड (अेक अंग्रेज मित्र) अपने गावसे पैदल चलकर आ पहुचे।

प्रार्थनाके बाद अुन्होंने कहा कि दो बजे चलना शुरू किया था। परंतु रास्ता भूल जानेसे जरा देर हो गअी। मि० अिग्लाडकी अिच्छा प्रार्थनाका क्रम देखनेकी थी, अिसलिअे जल्दी रवाना हुअे थे। मि० अिग्लांडने बापूजीसे कुछ प्रश्न पूछे। अुन्हे भी बापूजीने शहद और गरम पानी पिलाया। अुनके चेहरेसे अैसा नही लगा कि अुन्हें शहदका पानी अच्छा लग रहा है। घंटेभर बापूजीने प्यारेलालजीसे ही बातें की। साढ़े छ बजे फलोका रस लेकर घूमने निकले। घूमते हुअे भी प्यारेलालजीसे ही बातें की। . .

घूमकर लौटनेके बाद मालिश, स्नान वगैराका नित्यके अनुसार कार्यक्रम रहा। मालिशमें बापूजी ठीक अेक घटा सोये। आज तो रात कोअी डेढ़ बजेसे जग गये थे, अिसलिअे खूब थकावट है।

भोजनमें जौ, साग, आठ औंस दूध और ग्रेपफ्रूट लिया। भोजनके पहले पनियाला जानेका कार्यक्रम वहाके कार्यकर्ताओंने तय किया था। परन्तु बापूजी जाना नही चाहते थे। अिसलिअे वहाके लोगोके लिअे लिखे सदेशमें न आ सकनेके लिअे बापूजीने माफी मांगी, और लोगोको मिल-जुलकर रहनेको, हिन्दुओंको छुआछूत निकाल देनेकी तथा प्रत्येक जातिके मनुष्य अेक ही शक्तिके बनाये हुअे हैं अिसलिअे परस्पर बधुभावसे व्यवहार करनेकी सलाह दी।

साढ़े चार बजे बापूजीने आराम करनेके लिअे लेटे-लेटे सुहरावर्दी साहबको पत्र लिखवाया। . मैंने पैरोंमें घी मला। डेढ़से दो तक सोये। दो बजे नारियलका पानी पिया। बादमें बापूजीने मालिशकी मेज पर बाहर धूपमें काता। आज ठड लग रही थी। कातते समय मेरी डायरी सुन ली। मुझे थोड़ेमें मुख्य बात लिखनेको कहा। मैंने कहा, "परन्तु आपका अेक *अेक शब्द याद रखकर लिखा जाय तो मेरे काम नहीं आयेगा?"*

वापूने कहा, "कदाचित् मैं मर जाअूं तो अुसमें मेरी विरासत जरूर ुरक्षित रहेगी। महादेवने अैसा ही किया था। अुसकी अिच्छा तो मेरी ोदमें मरनेकी थी और मेरी वातें लिखनेकी भी थी। अुसकी अेक ीव्र अिच्छा अीश्वरने पूरी कर दी। तुम भी मेरी जीवनकथा लिखनेकी ुधेड़बुनमें तो नही हो न?"*

मैंने कहा — मैं अैसी लेखिका बन जाअूं तो फिर क्या चाहिये?

वापू — तो मैं जिनसे वातें करूं, अुन सबके साथकी वातचीतकी नोंध ेना तुम्हें सीखना चाहिये। तुम्हारी लिखनेकी रफ्तार तो तेज है ही। परन्तु ाभी जगह तुम कैसे संभाल सकती हो? वैसे यह मुझे अच्छी लगनेवाली ोज है। अिससे तुम्हें बहुत बहुत सीखनेको मिलेगा।

मेरी तन्दुरुस्तीकी वात करते हुअे वापूजीने कहा, "मैं अिस समय ुम्हारी मांके रूपमें हूं। अिसलिअे तुम्हारी जो भी शिकायत हो वह खुले दिलसे तुम्हें मुझसे कह देनी चाहिये। मैं तुम्हारे जरिये अिस बातका साक्षी बनना चाहता हूं कि अेक पुरुष भी मा बनकर बेटीकी हर तरहकी गुत्थीको सुलझा सकता है।"

वापूजीने ठीक अेक घंटा कातते-कातते डायरी परसे मुझे बहुत कुछ समझाया। सवा तीन बजे सतीशबाबू और अुनकी पत्नी हेमप्रभादेवी (मां) आअीं।

अुनके साथ जो कुछ चल रहा है अुसके सम्बन्धमें बातें की। सात बजे मौन लिया। पौने पाच बजे वापूजीने शाक, दूध और फलोंमें दो संतरे लिये। प्रार्थनाके बाद घूमे। घूमते-घूमते मि० अिग्लाडके साथ बातें की, और अुन्हें विदा किया। साढ़े छ. बजे लौटकर गरम पानी और शहद लिया। फिर अखबारोंके लिअे भेजा जानेवाला प्रार्थना-प्रवचन सुधारने बैठे। अिस बीच मैंने वापूजीका सूत दुवटा किया। दुवटा करने पर ८० तार हुअे, अर्थात् आज वापूजीने अेक घंटेमें १६० तार काते। बिस्तर किया। साढ़े आठ बजे वापूजी बिस्तरमें लेटे। बिस्तर पर पड़े-पड़े बंगलाका पाठ

* यह बात विनोदमें बिलकुल स्वाभाविकतासे हंसते-हंसते वापूने कही थी। वापूजीके चेहरेका वह दृश्य, आज जब अुनके शब्द सही सिद्ध हो रहे हैं, आंखोंके सामने खड़ा हो जाता है।

पढा, वर्णमाला लिखी। मैंने पाव दबाये, तेल मला और अपना काम पूरा करके साढ़े दस बजे सोने गअी।

श्रीरामपुर,
२३–१२–'४६, सोमवार

आज बापूजीका मौनवार था, अिसलिअे जल्दी अुठना नहीं था। प्रार्थनाके समय ही बापूजीने मुझे जगाया। प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीनेके पहले बापूजीने अपनी डायरी लिखी। अुसमें लिखा:

"आज नींद अच्छी आअी। सवा तीन बजे अुठ बैठा। दुःखी हुआ। यहाका काम कैसे निबटाया जाय? मेरी अहिंसा और कार्य-कुशलताकी कैसी कसौटी हो रही है!"

गरम पानी और शहद पीकर बापूने खुद ही पत्र लिखे। आजकी डाकमें साने गुरुजीको सहभोजनके बारेमें लिखा। ठक्करबापा तथा मणिलाल काका (दक्षिण अफ्रीका) के नाम पत्र लिखे। और मेरे पिताजीको मेरे यहां आनेके बाद पहला ही पत्र लिखा:

चि० जयसुखलाल,

मनुडी अभी सवेरे ६ बजे याद दिला रही है और यह पत्र लिख रहा हूं। मौनवार है न?

भाअी रतिलालकी तुनाअीसे बनी हुअी पूनीका जो नमूना तुमने दिया था वह सब कात चुका। पूनियां अच्छी थीं। अैसी बारीक कताअीके लिअे पूनी बडी होती है और अुसे पत्ते या कागजमें पकडा जाता है। भाअी रतिलालका साहस पूरी तरह सफल हो।

मनुडी सकुशल है और कामसे सन्तोष दे रही है। मैंने अिसीसे सुना कि परमानद गांधी जिस मधुर स्वरसे रामायण गाते थे वैसे ही स्वरसे तुम भी गाते हो। यह बात सुनी तब पछताया कि जरा पहले पता लग गया होता तो तुम्हें रोककर रामायण सुनता। परमानंदभाअीका स्वर आज भी कानोंमें गूंजता है। तुमने तो अुन्हें क्या देखा होगा? कालिदासमें वह स्वर कुछ कुछ अुतरा था। अब तो प्रभु हमें जब मिलाये तब मिलेंगे। मेरी सूचना याद रखना।

बापूके आशीर्वाद

'प्रभु हमें जब मिलायें तब मिलेंगे'—परन्तु यह मिलन हो ही न सका। बापूजीने मेरे सामने परीक्षाकी शर्त रखी थी कि, "यह तो यज्ञ है। हमारे पौराणिक यज्ञोंमें सब तरहसे पवित्रता होनी चाहिये। अुनमें काम, क्रोध, मोह, लोभ अित्यादिका त्याग करना होता है। (अिसलिअे) यदि दो महीने बाद तुम्हें अैसा मोह हुआ कि अपने पिता या बहनोंसे मिलना हो जाय तो कितना अच्छा हो, तो मैं तुम्हें नापास कर दूंगा।" यह परीक्षा मेरे लिअे थी और अीश्वर-कृपासे बापूजीको अैसा लगा कि मैं परीक्षामें सफल हुअी। अिसलिअे १९४७ में हमें जब वर्धा होकर कराची जाना था अुससे पहले बापूजीने मेरे पिताजीको खुद ही बुलाया। परन्तु दुर्भाग्यसे वे तब पहुंच सके जब बापूजीको बिड़ला-भवनसे अंतिम विदाअी हो रही थी। मेरे पिताजी मिलनेके अुल्लाससे महुवासे रवाना हुअे थे, परन्तु प्रभुने अुनको मिलाया ही नहीं। अीश्वरकी अैसी अगम्य लीला है।

५
तीन अमूल्य पाठ

श्रीरामपुर,
२४-१२-'४६, मंगलवार

आज सुबह बापूजीने मुझे तीन बजे जगाया। . . के नाम पत्र लिखवाये। तीनेक पत्र लिखवाये, अितनेमें प्रार्थनाका समय हो जानेसे लिखाना छोड़ दिया। दातुन-पानीके बाद प्रार्थना वगैरा नित्यक्रम चला। गरम पानी और शहद पीकर बापूजीने अपनी डायरी लिखी। साड़े छः बजे अनन्नासका रस लिया। यहां अनन्नास होता है। अितनेमें प्यारेलालजी अपने गांवसे आये। सुचेताबहन कृपालानी भी आअी थीं। घूमनेका सारा समय अुनके साथ बातोंमें चला गया और मालिशके समय दोनों अपने-अपने गांव चले गये।

आज स्नान करके आने पर साड़े बारह बज गये थे। अेक बजे भोजन कर सके। खाना आज रोजकी अपेक्षा देरसे हुआ, क्योंकि कुछ डाक आदमीके हाथोंहाथ कलकत्ता भेजनी थी। अुसमें बहुत वक्त लगाना पड़ा। भोजनमें प्यारेलालजी अपने हाथसे निकाले हुअे नारियलके तेलका जो मसका रख गये थे वह और अेक खाखरा लिया। यह मसका साधारण घी या मक्खनका

काम देता है। अिसलिअे दूध छ. औंस लिया और मक्खन खाना छोड़ दिया। अुबला हुआ साग भी थोड़ा ही लिया।

खाते खाते कर्नल जीवनसिंहजीके साथ बातें कीं। मैं घी मलनेके लिअे लगभग दो बजे अपने कामसे निबटनेके बाद जा सकी। अभी तक मैंने भोजन नहीं किया था, अिसलिअे बापूजी नाराज हुअे और कलसे अपने पास थाली लाकर खानेको कहा। यहां दोपहरको बहुत देरसे खानेका रिवाज है। सुबह लोग अच्छी तरह नाश्ता करते हैं, दोपहरको तीन साढ़े तीन बजे खाना खाते हैं, शामको चाय या नाश्ता लेते हैं और रातको भी देरसे भोजन करते हैं।

परन्तु बापूजीने कहा, "यह ढंग हमारे अनुकूल न हो तो अिसे छोड़ा जा सकता है। जल्दी अुठना और रातको दस साढ़े दस बजे भोजन करना शरीरमें जहर अुंडेलनेके बराबर है।"

पांच ही मिनट घी मलवाया और कहा कि अभी खा लो, फिर शामको भोजन न करके फलाहार कर लेना। दोपहरको अढाअीसे तीन बजे तक बापूजी सोये। तीन बजे नारियलका पानी पीकर कुछ पत्र लिखवाये। साढ़े तीन बजे काता। साढ़े चार बजे पेट और माथे पर मिट्टीकी पट्टी ली। बापूजीको कुछ थकावट-सी मालूम होती है। मिट्टी रखनेके समयमें मेरी डायरी सुनते हुअे दो बार झपकी ले ली। डायरी और भी संक्षेपमें लिखनेकी सूचना की।

पौने पांच बजे सुचेताबहन वगैरा आये और अुन्होंने बापूजीके साथ *अेकान्तमें बातें कीं।*

शामके भोजनमें आठ औंस दूध, अेक केला और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। रातको दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे।

मैं बापूजीकी कलकी डायरीकी नकल करने ठहर गअी, अिसलिअे ग्यारह बजे सोअी। ठंड और बरसात खूब थी।

(बापू, श्रीरामपुर, २५-१२-'४६)

श्रीरामपुर,
२५-१२-'४६, बुधवार

आज भी बापूजी अच्छी तरह सोये। प्रार्थनासे आध घंटे पहले अर्थात् साढ़े तीन बजे अुठे थे। दातुन-पानी किया। प्रार्थनामें पांचेक मिनटकी देर थी, अिसलिअे अुतने समयमें मेरी कलकी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बंगला वर्णमाला लिखी।

प्रार्थनाके बाद दसेक मिनटके लिअे बापूजी सो गये। रस पीकर कलके कुछ पत्रों पर दस्तखत किये और मुझे भी बगला जल्दी सीख लेनेको कहा।

सात बजे घूमने निकले तब लावण्यप्रभाबहन और मि० अिग्लाड आये। अुनके साथ मि० ग्लैन और अेन्थनी ढाकासे बडे दिनकी भेंट लाये। अिस भेंटमें साबुन, रूमाल, रेजर (अुस्तरा), कैंची, थैली वगैरा चीजें थी। बापूजीने सन्तोष देनेके लिअे अुन्हें वचन दिया कि आज रेजर स्वयं काममे लेंगे। *

आजकल घूमते समय बापूजी अेक पुल लाघनेकी तालीम लेते हैं। पुल बहुत छोटा है, परन्तु यात्रामें अिससे बहुत बड़े पुल आनेवाले हैं। अुन्हें पार करना आ जाय अिसीलिअे बापूजी यह तालीम ले रहे है। मुझे भी यह तालीम अच्छी तरह ले लेनेको कहा।

दोपहरको मैं घी मल रही थी, अुस समय बापूजी कुछ पेचीदा अंग्रेजी पत्रव्यवहार सुन रहे थे। वह पूरा हो जानेके बाद मैंने बापूजीसे कहा, आपने मुझे कॉलिजमें जाकर अेम० अे० या बी० अे० तक पढ़ने दिया होता, तो आपका अंग्रेजीमें होनेवाला काम मैं भी आसानीसे कर सकती। परन्तु आपने मुझे पढने ही नही दिया।

बापूने कहा: "मुझे तो तुम्हें पढ़ना और गुनना दोनों सिखलाना है। अुसका क्या होगा?"

मैंने कहा, देखिये, महादेवकाका अितना पढे तभी तो आपके निजी मंत्री बन सके। और दूसरे भी जितने बडे लोग हैं वे सब डिग्री प्राप्त किये हुअे हैं। अिसीलिअे तो वे अितने अूचे चढे न?

बापू हस पडे। बोले, "मोटे सो खोटे। डिग्रीकी जगह तुम अुपाधि शब्द काममें लो। और अुपाधि सचमुच अुपाधि ही है। मैं बैरिस्टर बना, अिसका मुझे आज पश्चात्ताप होता है। और अिसीलिअे तो मुझे अिस बातका आनद है कि मैंने . . . को अिस अुपाधिमें नही डाला, यद्यपि मैं जानता हू कि अुन लोगोंको सन्तोष नही है। और सच कहू तो मैं बैरिस्टर हू, अिसका मुझे *अब खयाल ही नही आता। अिसलिअे अपने अनुभवके आधार पर दूसरोंको*

---

* अिसी अुस्तरेको बापूजीने सारी यात्रामें अिस्तेमाल किया था। यह बात जब भेंट देनेवाले भाअियोंको मालूम हुअी तब वे अत्यंत प्रसन्न हुअे थे।

तो अंसी अुपाधिसे बचाना ही चाहिये। हा, भाषाके रूपमें सब कुछ अवश्य जानना चाहिये। परन्तु आजकलकी युनिवर्सिटीकी पढाअीमें जो रटाअी हो रही है वह मुझे खटकती है। देहातमें अपार काम पडा है। विद्यार्थी पढने और रटनेमें जितना समय गवाते हैं अुतना यदि कोअी रचनात्मक काम करनेमें लगावे तो देशकी शकल बदल जाय। हा, अिस पढाअीके पीछे ज्ञान प्राप्त करनेका ध्येय हो तो अलग बात है। तब तो ज्ञानके पीछे पढाअी और पढाअीके पीछे ज्ञान, यह मंत्र होना चाहिये। परन्तु आजकल विद्यार्थियोंमें परीक्षाके पीछे पढाअी और पढाअीके पीछे परीक्षा, यह दृष्टि होती है। और फिर? फिर अिस ज्ञानका अुपयोग रुपया कमानेमें होता है। कोअी डॉक्टर बनता है, कोअी वकील या बैरिस्टर बनता है, और कोअी अिंजीनियर बनता है। और पास होनेके बाद नौकरीकी खोज होती है। अिस प्रकार सारी मेहनतका परिणाम देखो तो शून्य। अन्तमें हमारी सारी पढाअीके पीछे यही ध्येय होता है कि हमें बडीसे बडी नौकरी कैसे मिले। अिसमें अपवाद जरूर होंगे। चालीस करोड लोगोंमें सभी अैसा करते है, यह कहनेका मेरा हेतु नही। परन्तु पढ़ाअीकी तहमें यह आजकलका शाश्वत नियम बन गया है। अमुक प्रकारकी पढाअी करे तो ही सेवा की जा सकती है, यह निरा भ्रम है। कैसी भी स्थितिमें रहकर मनुष्य सेवा कर सकता है। अीश्वरने मनुष्यको अैसी शक्तिया दी हैं कि वह कोअी बहाना बना ही नहीं सकता। वरना मनुष्य-जाति अैसी भयंकर है कि काम न करना हो तो बहाने ही बनाया करेगी। तुम देखोगी कि किसीके पास रुपया है तो किसीका शरीर काम देता है, किसीकी बुद्धि काम दे सकती है, तो किसीकी जबान, हाथ-पैर, आंख, कान वगैरा। सभी सेवार्थ काम दे सकते हैं। ये तो मैंने तुम्हारे सामने अुदाहरण रखे। अिसलिअे जो भी शक्ति हममें हो अुसे कृष्णार्पण कर दे तो हमे पूरे-पूरे नम्बर मिलेंगे। जिसकी शक्ति करोड देनेकी हो वह आधा करोड ही दे तो अुसे पचास नम्बर मिलेंगे। परन्तु जिसकी शक्ति पाअी ही देनेकी हो वह अगर पूरी पाअी दे दे तो अुसे सौमें से सौ नम्बर मिलेंगे।

"व्यवहार साफ होना चाहिये। स्वार्थबुद्धिसे या डरके मारे मनुष्य यदि कुछ करेगा तो वह सेवा नही मानी जायगी। जहां अीश्वरार्पणकी भावना है, वहा स्वार्थके लिअे स्थान ही नही है। अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज अपनी शक्तिमें वृद्धि करता है। अुद्यम करे तो वह भी सेवाभावसे ही करता

है। जो मनुष्य अिस तरह सेवा-परायण रहता है अुसके हंसनेमें, खाने-पीनेमें, बोलनेमें, हर क्रियामें सेवाभाव भरा होता है। अिसलिअे अुसके सभी कार्योंमें निर्दोषता होगी। अैसे भक्तोंको अीश्वर सभी आवश्यक शक्तियां दे देता है। अिसीलिअे गीता कहती है:

> अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
> तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
> मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
> कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥
> तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
> ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

(जो लोग अनन्य भावसे मेरा चिन्तन करते हुअे मुझे भजते हैं, नित्य मुझमें ही रहनेवाले अुन लोगोंके योगक्षेमका भार मैं अुठाता हूं। अर्थात् फलकी आशा मुझ पर छोड़ कर मेरा काम करो। मुझमें चित्त पिरोनेवाले, मुझे प्राणार्पण करनेवाले लोग अेक-दूसरेको बोध देते हुअे, मेरा ही नित्य कीर्तन करते हुअे, संतोष और आनंदमें रहते हैं। अिस प्रकार मुझमें तन्मय रहनेवाले, मुझे प्रेमपूर्वक भजनेवाले भक्तोंको मैं ज्ञान देता हूं और अुस ज्ञानसे वे मुझे प्राप्त करते हैं।)

"अिन श्लोकोंका तुम विचार करो। अिनमें अंतिम श्लोक बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अिसमें महाश्रद्धाकी जरूरत है। अीश्वरका काम करनेमें तुम अपनी प्राप्त की हुअी डिग्रीका कहां अुपयोग करोगी? मैं तुम्हारे मनमें यही बात बिठाना चाहता हूं। और कदाचित् तुम पढ़ती होतीं, कॉलिजमें जाती होतीं, तो आज कहां होतीं? मेरी चले तो मैं सभी कॉलिजकी लड़कियों और लड़कोंको दरोंको अिस आगमें झोंक दूं। सचमुच यदि हमारे विद्यार्थियोंके मनसे डिग्रीका मोह निकल जाय, तो तुम देखोगी कि सारी दुनियाके नकशेमें हिन्दुस्तान जो बिन्दुमात्र है वह समुद्र जैसा हो जाय। 'तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर'— यह सुन्दर कहावत छोटेसे कुटुम्ब पर ही लागू नहीं होती; बड़े-बड़े देशों पर भी लागू होती है। जैसा देश वैसी ही अुसकी रहन-सहन और वैसा ही अुसका कामकाज होना चाहिये। परन्तु अंग्रेजोंका न करने लायक अनुकरण करनेसे हमारा पतन ही होगा। 'हंस कौअेकी चाल चलने लगता तो मर ही जाता। परन्तु वह अपनी चाल

चला, अिसीलिअे जीत गया।' यह कहानी तुम जानती हो न? कहानियां भी केवल कहानीके लिअे नहीं होतीं। अुनकी तहमें बहुत बड़ा अुपदेश भरा होता है। हिन्दुस्तानमें अलबत्ता बहुतसी कुरीतियां हैं। फिर भी हिन्दुस्तान अपनी ही चालसे आगे बढ़े तो वह अैसा स्थान प्राप्त कर सकता है, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

"कारण, भारतकी संस्कृति अनोखी है। मैं जैसे-जैसे तुम्हें गीता समझाता जाअूंगा, वैसे-वैसे नये अर्थ निकलते ही जायेंगे। परन्तु आज अितना पचा लोगी तो भी काफी है। अिसे लिख डालना। परन्तु लिखना केवल लिखनेके लिअे ही नहीं, गीताका अर्थ अमलमें लानेके लिअे है। आजका यह सारा पाठ गीताके आधार पर है।"

मेरे अेक छोटेसे विनोदमें से पच्चीस मिनट तक बापूजीकी अैसी अमृतवाणी जीवनके पाठके रूपमें सुननेको मिली। फिर समय हो गया, अिसलिअे अुठ गये।

आज बापूजी सो न सके अिसका मुझे दुःख हुआ। यह बात मैं कहूं, अिससे पहले ही बापूजी बोले, "मैं सो नहीं सका अिसका दु:ख तुम्हें नहीं करना चाहिये। अीश्वर मुझे कैसे निभा रहा है, यही आश्चर्य है। सुबहसे अुठा हूं। मालिशके समय सतीशबाबू पैदल यात्राके ब्यौरेके बारेमें बातें करने आ गये, अिसलिअे न सो सका; और अिस समय तुम्हारे सहज विनोद करनेसे मेरे हृदयमें देनेके लिअे जो कुछ भरा था वह तुम्हें दे दिया। अब ताजगी अनुभव करता हूं। अब तुम नारियलका पानी ले आओ। भगवानकी अिच्छा होगी तो मिट्टी लेते लेते सो जाअूंगा।"

लगभग चार बजे अेक सार्वजनिक कार्यकर्ता, जो यहां अच्छा काम कर रहे हैं और जिन्हें बापूजीने मेरे लिअे पंजाबी पोशाक दरजीसे बनवानेकी जिम्मेदारी सौंपी थी, कपड़े लेकर आये। अुन्होंने पैसा लेनेमें अिनकार किया। अिसके पीछे केवल बापूजीके प्रति अुनकी भक्ति ही थी। मैं बापूजीके परिवारकी लड़की हूं और बापूजीने मेरा परिचय अपनी पौत्रीके रूपमें दिया, अिसलिअे वे दाम नहीं लेना चाहते थे।

परन्तु यहां तो दूसरा ही हिसाब था। बापूजीने पूछा, "तुम कहांसे लाओगे? तुम्हारे पास जो पैसा है, वह सार्वजनिक है। भले मैं ही क्यों न होअूं, मेरी जरूरतोंके लिअे भी तुम अेक पाअी भी अिस तरह खर्च नहीं

कर सकते। और फिर अिस लड़कीके पिता अितना गर्व ले सकते हैं।... जनसेवकको सार्वजनिक धनका कैसे अुपयोग किया जाय और कहां अुपयोग किया जाय, अिसका पूरा खयाल रखना चाहिये। आज तो तुमने मनुके लिअे यह बात की। कल तुम अपने नवविधियोंके लिअे अिस तरह नहीं करोगे, अिसका क्या भरोसा? देखो, तुम पर मुझे बिलकुल शंका नहीं है। क्योंकि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। तुमने प्रेमपूर्वक ही यह कहा है। परन्तु अितनेसे आगेके लिअे चेत जाना।"

यह आजका दूसरा पाठ हुआ, और अिसी तरह तीसरा अेक सुन्दर पाठ रातको मिला।

मेरे पास अेक गरम पशमीनेका टुकड़ा था, जिसे बापूजी रातको ठंडके कारण सिर पर बांधते थे। प्रार्थनासे आकर आज मैंने अेक नया गरम टुकड़ा बांधनेको दिया, क्योंकि पुराना जर्जर हो गया था। परन्तु बापूजीने नया कपड़ा नहीं लिया। बोले, "न तो तूने अेक कौड़ी कमाअी है, न मैं कमाता हूं। और न तुम्हारी तरह मेरे बाप बैठे हैं, जो कमाकर मेरा खर्च भेजें। मैं तो गरीब आदमी ठहरा। अिस तरह शाल फेंक देनेसे कैसे काम चलेगा? लाओ, अिस शालको मैं ही पैबन्द लगा दूंगा।" यों कहकर बापूजीने शालमें पैबन्द लगा दिया। अिसमें रातके साढ़े ग्यारह बज गये।

पैबन्द अितना सुन्दर लगाया गया है कि कोअी दरजी या कुशल स्त्री ही वैसा लगा सकती है। अुसका टांका भी अुतना ही सीधा लगा है।

बापू जैसे महापुरुष चाहें तो अैसे सैकड़ों पशमीनेके टुकड़े जुटा सकते हैं, परन्तु अुन्होंने अुस पैबन्द लगी हुअी शालका ही हमारी अिस यात्रामें अुपयोग किया।

भारतको पैबन्द लगाकर जोड़नेवाले, अनेक क्लेशमय परिस्थितियोंको दूर कर प्रजाके दिलोंको जोड़नेवाले बापूने कपड़ोंको भी जोड़कर विनोदमें कहा, "बोलो, मैं कुशल दरजी हूं न?" मैंने पैबन्द लगा देनेको कहा, परन्तु कहने लगे, "तुम देखो तो सही, मेरी परीक्षा तो करो कि मुझे यह काम आता है या नहीं।"*

अिस प्रकार दिनभरमें अेकसे अेक बढ़कर तीन सबक मुझे मिले।

---

* सौभाग्यसे वह सुअी-डोरा और पैबन्द लगी हुअी वह शाल मेरे अनेक पाठोंमें प्रत्यक्ष पाठ और प्रसादीके रूपमें मेरे पास सुरक्षित है।

६

पंडितजी मिलने आये

श्रीरामपुर,
२६–१२–'४६

आज तीन बजे अुठे। . . के नाम बापूजीने पत्र लिखवाये। ठंड बहुत थी। बापूजी लेटे-लेटे लिखवा रहे थे। दो-अेक बार झपकी ले ली। बापूजी झपकी लेते अुतने समयमें मैं अुनकी डायरीकी नकल अपने लिअे कर लेती। दो दिनकी नकल करनी बाकी थी। बापूजीने मुझे यह गलत परिश्रम न करनेको कहा। परन्तु मैंने कहा, "आप अपनी डायरीमें मेरे बारेमें अुल्लेख करते हैं, अिसीलिअे मैं नकल कर लेती हूं, ताकि जीवन भर वह मेरे पास रहे।"

प्रार्थनामें आज . नहीं थे। कल रातको . . काजीरखिलसे वापस नहीं आये। बापूजी बहुत दुःखी हुअे। प्रार्थनाके बाद . . . के बारेमें . . . के साथ बातें कीं और कलका प्रार्थना-प्रवचन सुधारा। मैंने बापूजीको गरम पानी देकर अपनी कलकी डायरी लिखी। आध घंटे काता। साढ़े सात बजे घूमने निकले। घूमते समय बापूजी कुछ विचारोंमें लीन थे। . . के साथ ही बातें कीं। रोजकी तरह पुल पार करनेकी तालीम जारी है। पर धोते समय . को प्रार्थनामें अुपस्थित न होनेके बारेमें पूछा, अुनके साथ बातें कीं। अिसमें बहुत वक्त लग गया। . . . पूछकर नहीं गये थे, अिसके लिअे बापूने से कहा, "अुन पर मेरा कोअी हक नहीं है। अेक पुत्रकी तरह वे रहते हैं, अिसलिअे अितना कहना मुझे अपना धर्म प्रतीत हुआ। वे मुझे छोड दें तो मैं बड़ा खुश होअूंगा। यह लड़की भी मुझे छोड सकती है। परन्तु मैंने अिसे वचन दिया है कि जब तक मैं जिन्दा हू तब तक अिसे नहीं छोडूंगा। यह चाहे तो मुझे छोड सकती है। तुम भी मुझे छोड़ सकते हो। तो ही मेरी परीक्षा होगी। शायद अीश्वरको मेरी परीक्षा करनी होगी; अिसीलिअे तो कहीं वह अकल्पित प्रसंग अुपस्थित नहीं करता हो? वह मानते हैं कि मैंने . . . में रहकर भूल की है। परन्तु मैं कहां मानता हूं? परन्तु मेरी परीक्षा अिसीमें होगी।" बापूजीने बड़ी गंभीरतापूर्वक . . . के सामने अपना हृदय अुड़ेला।

मैं ये बातें सुननेके लिअे खड़ी रही, अिसलिअे नहानेमें देर हो गअी। अिससे सभी कामोंमें विलम्ब हुआ। खानेसे पहले बापूजीके पैरोंमें घी मलने बैठी। बापूजीने अुलाहना दिया, "तुम्हारा बातें सुननेके लिअे खड़ा रहना मुझे अच्छा नहीं लगा। कितनी ही दिलचस्प बातें हों, तो भी हमें अपने नियमका भंग नहीं होने देना चाहिये। परन्तु . . . के साथ हुअी बातें तुम्हारे समझने लायक तो जरूर थीं, अिसलिअे तुम्हे मेरे पैरोंमें घी मलनेसे मुक्त रखनेकी अिच्छा होती है। परन्तु तुम नहीं चाहोगी, अिसलिअे अिस सारे समयका बदला चुकानेके लिअे तुम्हे अपनी कुशलता दिखानी होगी। अिसका अर्थ यह नहीं कि खानेमें जल्दी मचाकर चली आओ।"

तारसे समाचार आये कि पं० जवाहरलालजी २७ तारीखको आनेवाले हैं। अुनके लिअे क्या बन्दोबस्त करना होगा, अिसके सम्बन्धमें निर्मलदाके साथ बापूजीने बातें कीं। मुझसे बापूजीका कमोड ले जानेको कहा गया। खानेका अिन्तजाम आअी० अेन० अे० वाले कर्नल जीवनसिंहजीके आदमी करनेवाले हैं।

दोपहरको बापूजीने मेरी कलकी और आजकी अधूरी डायरी सुनी। अूपर-अूपरसे खुद देख गये। अभी हस्ताक्षर नहीं किये।

शामको बापूने कुछ नहीं खाया। प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद ही लिया है। पानी पीकर बापूजीने आध घंटे काता।

बापूजी जिस अंगोछेको काममें लेते थे वह बीचमें से बिलकुल जर्जरित हो गया था। मैंने नया देनेसे पहले विचार तो बहुत किया कि अिसमें कुछ अक्ल लगाअूं और यदि जोड लग सके तो जोड़ लगाकर ही बापूजीको दूं, ताकि शालके जैसा किस्सा न हो। बहुत विचार किया, परन्तु कुछ बुद्धि चली नहीं। अन्तमें नया अंगोछा बापूजीके हाथमें रखा। बापूजीने कहा, "अभी पुराना काम देगा।" (मैं तो मानती थी कि बापू कुछ भी करें तो भी अब अिसमें पैबन्द काम नहीं देगा और जोड लग ही नहीं सकेगा। साथ ही अैसे टुकड़ेमें रफू भी नहीं होगी। और अिससे ज्यादा बापूजी क्या करेंगे?) अिसलिअे मैंने झट अुत्तर दिया कि अिसमें मैंने बहुत अक्ल लगाअी है। अिसे छुट्टी दिये बिना चारा नहीं है। देखिये, अब अिसमें आप क्या कर सकेंगे?

बापू हंस पड़े। मेरा कान खींचकर बोले, "परन्तु अिस रूमालको अभी नया करके दो महीने चलाअूं तो?"

मैंने कहा, "आप चला ही नहीं सकते।"

अन्तमें अुन्होंने अुस रूमालको अुसी हालतमें डबल कर दिया, ठीक चौकोर बनाकर अच्छी तरह जोड़ा और रफू कर दिया। (सचमुच अुस रूमालकी अुम्र दो महीने तो बढ़ ही गअी। परन्तु बादमें मैंने जिद की और यह कहकर कि अिसे मुझे नमूनेके तौर पर अपने पास रखना है, मैंने रूमाल ले लिया। यह अंगोछा बहुत सुन्दर बन गया है। हमारे यहां रजाअीमें जैसे 'पंखे' डालनेका रिवाज होता है वैसी चौरस आकारवाली सुन्दर सिलाअी की गअी है। अिससे अंगोछा ज्यादा मजबूत हो गया है।)

बापूजीकी असी बारीकी और कलात्मक किफायतशारीका कलवाले शालके पाठमें आज भिन्न ही प्रकारका पाठ मिला।

अेक बहन बम्बअीकी डॉक्टर हैं। वे नोआखालीमें सेवा करने आनेको कहती थीं। परन्तु बापूजीने अुनसे कहा, "सुहरावर्दी साहबसे अिजाजत लेकर शौकसे आ सकती हो।"

रातको बापूजीने साढ़े नौ बजे सोनेसे पहले मेरी पूरी डायरी सुनी, हस्ताक्षर किये और बिस्तरमें लेटे।

(बापू)

श्रीरामपुर,
२७-१२-'४६

आज रातको बापूजी दो बजे अुठे। मुझे जगाया। मेरे लिअे छींटके पंजाबी सलवार और कुरते बने थे। बापूजीने पूछा: "तुमने छींट या किस प्रकारकी खादी ली जाय, अिस बारेमें . . . से कुछ कहा था?"

मैंने कहा, "यह कपड़ा . . . नहीं लाये हैं। आपने बिड़लाजीके आदमियोंसे कहा था। वे लाये हैं।"

बापूजी बोले, "तब तो क्या कमी हो सकती है? छींट भले ही आओ, और सलवार-कुरते भी पहन फाड़ना। परन्तु मनमें यदि यह भाव हो कि असे कपड़े पहननेसे और अच्छी लगूंगी, तो अुसे निकाल देना। मनुष्य स्वादके लिअे खुराकको खट्टी, मीठी और तीखी बनाता है। परन्तु यदि वह

यह वृत्ति पैदा करे कि हमारा शरीर अेक देवस्थान है, अिसका अुपयोग सेवार्थ होना चाहिये, और वह सेवा करनेके लिअे पौष्टिक भोजन करनेसे शरीर कायम रह सकता है, तो अुस मनुष्यका जीवन भव्य बनता है। यही बात कपडेको भी लागू होती है। कपड़े शरीर ढकनेके लिअे, सरदी-गरमीसे शरीरकी रक्षा करनेके लिअे है, न कि फैशन दिखानेके लिअे। आज तो हर बातमें फैशन ही फैशन है। लड़कियां बिना बांहोंके पोलके पहनती है, बारीक साड़ियां पहनती है, और पोलके भी अुतने ही बारीक और चुस्त होते हैं। मैंने अैसी बहुतसी निकम्मी बातें देखी हैं। और यह सोचकर मनमें दुःख होता है कि क्या हमारी संस्कृतिका नाश बहनें ही करेंगी?

"चुस्त कपडे पहननेसे श्वासोच्छ्वास अच्छी तरह नहीं लिया जा सकता, फेफड़े कमजोर पड जाते हैं, और अिसके परिणामस्वरूप स्त्रियां क्षय जैसे रोगोंकी शिकार बनती हैं। हिन्दुस्तानमें पुरुषोंसे स्त्रियां और अुनमें भी युवतियां अिस रोगकी अधिक शिकार बनती है। अिसके अनेक कारणोंमें से यह भी अेक कारण है।

"बालोंकी भी यही बात है। मैंने तुम्हें बालोंकी सादगीके बारेमें भी कहा तो है ही। अेक बार और कहता हूं कि बालोंमें जितनी सादगी रहेगी अुतने ही बाल सुन्दर लगेंगे। बाल सिरकी रक्षाके लिअे है। अीश्वरने जो कुछ दिया है, वह सब सदुपयोगके लिअे ही दिया है। अुनकी दी हुअी अेक भी चीज व्यर्थ नहीं है।

"दूसरी बात यह कहनी है कि तुम्हें . . . के या और किसीके साथ बातोंमें समय बेकार नहीं खोना चाहिये। तुम . . . अुम्रकी हो। और मैं तो अपना ही अुदाहरण तुम्हें देता हूं। बचपनमें समवयस्क लोगोंकी कुसंगतिमें पड जानेके कारण मैंने मांस खाया और कडेकी चोरी की। हमेशा बराबरकी अुम्रवालोंमें यदि समझनेकी शक्ति हो और साथ ही निश्चय हो कि हम अेक-दूसरेके गुणोंका ही अनुकरण करेंगे, अवगुणोंका नहीं, तो ही दोनों व्यक्ति अूपर अुठते हैं; नहीं तो आम तौर पर बुरी बातें ही सीखते हैं और दोनोंका पतन होता है। सबके साथ आवश्यक बातें ही करनी चाहिये। गुण अवगुणको दूर कर सकता है; पर अवगुण अवगुणको क्या दूर कर सकता है? . . . बहुत कुशल है। फिर भी मनुष्यमें कभी कभी कोअी अैसा दोष आ जाता है जो सारी अच्छाअियोंको ढंक देता है। परन्तु मेरे खयालसे शायद

मनुष्यकी परीक्षा करनेके लिअे ही अीश्वर सौ गुणोंके साथ अुसमें अेक अैसा अवगुण रख देता है और फिर अुसकी परीक्षा करता है। अिस अवगुणको मनुष्य समझ ले तब तो फिर कहना ही क्या? तब मनुष्य मनुष्य नहीं रह जाता, वह अनंत शक्तिमें लीन हो जाता है। अैसे मनुष्यत्वमें भव्यता है।"

मनुष्य-जीवनका यह तत्त्वज्ञान बापूने रातको अढाअीसे साढ़े तीनके बीचमें समझाया। प्रार्थनामें थोड़ी देर थी, अिसलिअे मेरी दो दिनकी डायरीमें हस्ताक्षर किये। मुझसे कहा, "मुझे पता नहीं था कि तुम अितनी लम्बी डायरी लिख सकती हो। मुझे अच्छी लगती है। तुम्हें रोज मुझसे पढवा ही लेना चाहिये और याद रखकर हस्ताक्षर करा लेने चाहिये। हस्ताक्षर करानेका मूल्य आज तुम्हारी समझमें नहीं आयेगा। परन्तु आजकल मैं तुम्हें जो कुछ दे रहा हू, अुसमें अपना हृदय अुडेल रहा हूं। भविष्यमें यह डायरी अुसका प्रमाण होगी। साथ ही तुम्हारी कच्ची अुम्र होनेके कारण अिस सारी नोंध पर मेरे हस्ताक्षर होना जरूरी है। अिसलिअे डायरीमें हस्ताक्षर करानेका काम रोजका रोज हो जाना चाहिये। अिसमें कितनी देर लगती है? मैं तो तुम्हें वैसे ही तालीम दे रहा हूं, जैसे मां बेटीको देती है।"

जवाहरलालजी आनेवाले हैं, अिस कारण अुनके लिअे खड्डेवाला पाखाना तैयार कराया। अुसमें बापूजीने जो सुधार सुझाये, अुन्हें करनेमें सुबहका सारा समय चला गया।

बाकीका क्रम तो लगभग नित्यके अनुसार ही चला। भोजनमें सबेरे बापूजीने रोजकी तरह ही सब चीजें लीं। शामको दूधके साथ अेक खाखरा (पापड जैसी खस्ता रोटी) लिया था। बापूजी कहते थे, "आज कुछ भूख-सी मालूम होती है।" बापूजी आज दिनभर . . . की बातें करते रहे। सारी बातचीत लगभग खानगी ही थी। अतः मेरे लिअे छुट्टी जैसी थी। मैंने अपना लिखनेका सारा काम पूरा कर डाला।

. . . ने अेन्टीफ्लॉजिस्टीन मगाया था। परन्तु बापूजीने काली मिट्टीको बारीक कपडेसे छनवा डाला और वह मिट्टी . . . को भेजी। अुस मिट्टीमें भीगने लायक पानी डालकर और गरम करके लेपकी तरह लगानेको कहा। बापूजी मानते हैं कि अिस मिट्टीमें अेन्टीफ्लॉजिस्टीनके लेपसे भी अधिक गुण हैं।

(बापू)

वापूजीने अपनी डायरीमें लिखा :-

> आज सवेरे दो बजे अुठा। २-१५ को मनुडीको जगाया, अुसे . . . के बारेमें समझाया। कपडों और बालोंकी सादगीके बारेमें तथा . . . या और किमीके साय बातोंमें समय न वितानेके सम्बन्धमें भी समझाया। . . . और अिस बारेमें बातें की कि अक्सर जैसी सोहबत होती है वैसा असर पडता ही है। (डायरीमें) हस्ताक्षर करानेके बारेमें समझाया। वह अच्छी तरह समझ गअी। प्रार्थनाके बाद . . . के साय बातें की। अिसमें काफी समय दिया। बगलाका पाठ किया, अितनेमें ५-१५ बज गये। . . . बीमार पडी है। अुसे पत्र लिखा कि वैद्य-डॉक्टर बाहरसे न बुलाया जाय। पंचतत्त्व परमेश्वरका आधार रखकर जैसी अिच्छा हो वैसा करे।

ठक्करबापा आये। जवाहरलालजी वगैरा आनेवाले थे। परन्तु (रातको) साढ़े नौ बजे तक नहीं आये। बापाके साथ थोड़ी बात हुअी। ७० तार काते। साढे नौ बजे सोनेकी तैयारी की।

श्रीरामपुर,
२८-१२-'४६

आज रातको बापूजी अढाअी बजे अुठ गये थे। परन्तु लालटेन देनेके बाद मुझे सुला दिया। और लिखनेका काम आज सारा बापूने खुद ही किया। प्रार्थनाके समय मुझे अुठाया। प्रार्थना वगैरा नित्यक्रम सदाके अनुसार।

साढ़े सात बजे घूमते वक्त जवाहरलालजी तथा मृदुलाबहन आये। वे लोग भी बापूजीके माथ घूमने आये। पुल लांघनेकी जो तालीम बापूजी ले रहे थे अुसे देखनेमें पंडितजीको बड़ा मजा आ रहा था। पंडितजी तो दो डगमें पुल पार कर गये। लौटते समय बापूजीने मुझे यह ध्यान रखनेको कहा था कि जवाहरलालजीकी सारी व्यवस्था ठीक है या नहीं। बापूजीके कहनेसे अुनका कमोड मैं पंडितजीके निवास-स्थान पर ले गअी। यह देखकर पंडितजी मुझ पर नाराज हुअे और बोले, "तुमको अितनी अक्ल नहीं है कि बापूको कितनी तकलीफ होगी? बापूका कमोड हम कैसे अिस्तेमाल कर सकते हैं? मैं अितना नाजुक आदमी तो नहीं हूं!"

मैंने कहा, "लेकिन बापूने कहा अिसीलिओ मैं लायी हूं।"

वे ज्यादा नाराज होकर कहने लगे, "बापूकी नाराजगी तुम्हें सहन करनी चाहिये। बापूको सभालनेकी जिम्मेदारी तुम्हारी है। फिर अुनको कितनी क्या जरूरत है यह देखनेका काम तुम्हारा है न? बापू तो अैसे हैं कि खुद तकलीफ भुगत लेंगे लेकिन दूसरेकी सब जरूरियात देख लेंगे! अैसे बापू हैं। लेकिन फिर भी कहता हूं कि मैं तो जवान आदमी हूं, कहीं भी चला जाअूंगा। लेकिन किसीको अिस तरह बापूकी जो जरूरियातकी चीजें हैं वह तुम्हें न देनी चाहिये। चाहे बापू मार भी डालें। तुम डरना नहीं, बापू मारेंगे नहीं।"

यह अंतिम वाक्य बोलते बोलते तो अेक क्षणमें पंडितजीके चेहरे परसे नाराजी जाती रही और विनोदका भाव आ गया। बालकोंको डांटकर बादमें बुजुर्ग लोग अक्सर प्यार करके अुन्हें मना लेते हैं, वैसे ही मुझे प्रेमसे आलिंगन करके कहने लगे, "जाओ, बापूसे कहना, जवाहरलाल मना करते हैं।" फिर पूछताछ की कि बापूकी तबीयत कैसी रहती है, भोजनमें क्या लेते हैं, वगैरा वगैरा।

बापूजीके प्रति पंडितजीकी भक्तिको कौन नहीं जानता? परन्तु साक्षात् दर्शन होनेसे पावनताका अनुभव हुआ। अिस बोधवाणीके समय अुनके भावनापूर्ण हृदयसे कभी जोशीले शब्द निकलते थे, तो कोअी वाक्य अत्यंत धीमा और भावपूर्ण निकलता था और कभी विनोदी शब्दोंका स्वर कानमें गूंजता था।

बापू कुछ लिखनेमें बहुत मशगूल थे। अिस समयका अुपयोग करके पंडितजीकी बात लिख लेनेका मुझे मौका मिल गया। अभी मालिश, स्नान वगैरा बापूजीका सब काम बाकी है। आज बहुत देर होनेकी संभावना है। मालिश करते समय मैंने बापूजीसे अुपरोक्त बात की। बापूजी अितना ही बोले, "यह आदमी अैसा ही है। अब वह कमोड काममें नहीं लेगा। रख दो।"

ठक्करबापा भी तबीयत खराब होनेके बावजूद यहां तक आ पहुंचे हैं। बापू कहने लगे, "अिनके सामने अच्छे अच्छे जवानोंको भी शरमाना पड़े, अितना काम ये अिस समय कर रहे हैं।"

खाते वक्त बापूजीने पंडितजीके साथ बातें कीं। अुन्हें अेक खाखरा और खोपरेका मसका और तेल—जो प्यारेलालजीने खास तौर पर

निकाल कर भेजा है — चखाया। अुसे बताते हुअे बापूजीने कहा, "जहां जहां नारियलकी पैदावार होती है वहां मनुष्योंको अनाजकी जरूरत नहीं है। नारियलका पानी भी खुराक जैसा माना जा सकता है; नारियलका दूध खाया जा सकता है। नारियलका तेल आसानीसे निकल सकता है और आजकलके मिलावटी घीसे बहुत पौष्टिक है। और जो छूछ निकलती है अुसकी मिठाअी बनाअी जा सकती है। (अिस मिठाअीको बंगालमें संदेश कहते हैं। वह मिठाअी भी बापूजीने अुन्हें चखाअी।) हिन्दुस्तानमें अैसा प्रदेश बहुत है जहां ताड़गुड़ और नारियलके अुद्योगका विकास हो सकता है। और अिससे अनाजकी बहुत बचत हो सकती है। बंगालमें अैसी प्राकृतिक संपत्ति भरपूर होते हुअे भी आज अुसकी हालत कंगाल जैसी है। अिसका कारण लोगोंके आलस्यके सिवाय मुझे तो और कुछ दिखाअी नहीं पड़ता। हमें प्रकृतिने तो अपार भंडार दिया है, परन्तु आलस्य हमें खा जाता है।" अिन बातोंके बाद दोनोंने लगभग डेढ़ घंटे तक अेकान्तमें बातें कीं।

जैसे अेक सयाना पुत्र पितासे थोड़े समयके लिअे जुदा हो जाता है और जब पिता-पुत्र फिर मिलते हैं तब पिताकी अनुपस्थितिमें हुअी भली-बुरी सभी घटनाओंसे वफादारीके साथ पिताको परिचित कराता है और पितासे अुचित मार्गदर्शन प्राप्त करके हल्का हो जाता है, वैसा ही दृश्य आज यहां है। ये दोनों पुरुष अिस समय अिस मिट्टीके झोंपड़ेमें अेक गद्दे पर बैठकर देशके भूत, वर्तमान और भविष्यके प्रश्नोंकी चर्चा कर रहे हैं। बापूजी दिल्ली छोड़-कर यहां आये अुसके बाद जो जो घटनाअें हो चुकी हैं, देशमें अिस समय हो रही हैं और आगे होंगी, अुनके लिअे क्या मार्ग अुचित था, है और होगा — अिस सम्बन्धमें पंडितजी बापूसे मार्गदर्शन ले रहे हैं। मुझे थोड़ी भी चित्रकला आती होती तो अिस दृश्यको आज शब्दोंमें लिखनेके बजाय मैं अिसका चित्र खींच लेती। यह दृश्य अितना भव्य था। लगभग ग्यारह बजेसे साढ़े तीन बजे तक पंडितजी, शंकरराव देव, कृपालानीजी वगैरा मेहमानोंके साथ बारी बारीसे बातें करनेमें बापूजीका समय गया।

अिन मेहमानोंका समय व्यर्थ न जाय अिसके लिअे बापूजीने दोपहरको साढ़े तीन बजे मौन लिया, ताकि कल साढ़े तीन बजेसे बातें हो सकें। शामकी प्रार्थनामें सभी मेहमान आये थे। जवाहरलालजी और कृपालानीजीने भाषण दिये थे।

शामको थकावट होनेके कारण बापूजीने छः औंस दूध और फल ही लिये। रातको नौ बजे डॉ० राममनोहर लोहिया आये।

बापूजी साढ़े नौ बजे बाद सोये।

श्रीरामपुर,
२९-१२-'४६

आज बापूजी पौने चार बजे अुठे। पंडितजीके लिअे कुछ लिखना शुरू किया, अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया। प्रार्थना वगैरा नित्यक्रमके बाद बापूजीने परसोंका भाषण सुधारा।

साढ़े सात बजे घूमने निकले। सभी लोग साथ थे। बापूजीका मौन होनेसे कोअी खास बातें नहीं हो रही थीं। मालिश और स्नानके बाद ग्यारहसे अेक तकका समय पंडितजीके साथ बिताया। पंडितजी बातें सुना रहे थे। बापूजीको कुछ पूछना होता तो लिखकर पूछ लेते थे। दोसे अढाअी तक बापूजीने आराम किया। मुझे मेहमानोंको भोजन कराने जाना था, अिसलिअे बापूजीने मिट्टी लेते समय पैरोंमें घी मलनेको कहा। अुठकर तुरन्त पंडितजीको फिर बुलवाया। अढाअीसे चार तक पंडितजीके साथ। प्रार्थनाके बाद पंडितजी, शंकरराव देव, कृपालानीजी और मृदुलाबहनके साथ मंत्रणा की। आज भी शामका भोजन हल्का ही किया। बिहारके दंगोंसे बापूजीको काफी दुःख हुआ है।

पू० ठक्करबापाको आज बुखार नहीं आया। आज दिनमें बापू कात नहीं सके थे, अिसलिअे अिस समय नौ बजे कात रहे हैं। कातते कातते प्रेस-रिपोर्टरसे अखबार सुन रहे हैं, और मैं पास बैठी अपनी डायरी लिख रही हूं। साढ़े नौ बजे तक कातनेके बाद कुछ लिखनेका काम करके बापूजी बिस्तर पर लेटे।

श्रीरामपुर,
३०-१२-'४६

बापूजी अढाअी बजे अुठे हैं और पंडितजीके लिअे कुछ लिख रहे हैं। मैं अपनी डायरी लिखने बैठी हूं।

आजकल बापूजीको समय नहीं रहता, अिसलिअे मेरी डायरी नहीं देख पाते। बापूजीका अभीका जीवन-मंथन वैसा ही है जैसा अर्जुन भगतने

गाया है : समुद्रमें नाव तो कहीं भी जानेको मुड़ती है, पर नाविककी आंख केवल ध्रुवतारे पर होती है और अुसी निशानीके आधार पर वह अपनी नावको अपने मार्ग पर ले जाता है। आजकल बापूजी वैसा ही कर रहे हैं। अुन्होंने अपना निशान सत्य–ओीश्वर–रामनामको बनाया है।

आज साढ़े सात बजे पंडितजी और अन्य मेहमान बिदा हुअे। घूमकर आये तब पता चला कि कृपालानीजी अपनी पेटी भूल गये हैं। अुसे फेनी भिजवाया। बापूजीको पिछले तीनेक दिनसे थकावट जान पडती है। रोज दो-अढ़ाओी बजे अुठकर काममें लग जाते हैं, पर यह सब बापूजीके लिअे शक्तिसे बहुत ही ज्यादा है।

शामको चरखा चलाते हुअे पिछले तीन दिनकी डायरी पढ़वाओी। दूसरी डाक पढवाओी। बापूजीने कहा, "तुम्हारी डायरी रोज नहीं पढ़ी जाती, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।"

मैंने कहा, "आपको समय कहा रहता है?"

बापूने कहा, "परन्तु प्यारेलालको बताओो, जिससे मुझे संतोष है। वह भी तुम्हारा काफी पथप्रदर्शन कर सकते हैं।" और कोओी खास बात आज नहीं हो पाओी।

(बापू। अच्छा लिखा है। ३१–१२–'४६, श्रीरामपुर)

पुनश्च :

(२८, २९ और ३० तारीखकी मेरी डायरीमें ता० ३१–१२–'४६ को तड़के ही अेकसाथ अूपर लिखे अनुसार बापूने हस्ताक्षर कर दिये।)

७

यात्राकी तैयारी

श्रीरामपुर,
३१-१२-'४६, मंगलवार

आज बापूजी प्रार्थनासे थोड़ी ही देर पहले अुठे। प्रार्थनामें लगभग १५ मिनटकी देर थी, अिस बीच मेरी डायरी देख गये और हस्ताक्षर कर दिये। मुझसे कहने लगे, "तुम बहुत लम्बा लिखती हो। पर लिखा अच्छा है।"

मैंने कहा, "सक्षेपमे लिखू तो सही, परन्तु यह नोटबुक पूरी होने पर भाअीको (पिताजी) को भेजूगी। अितना लबा न लिखा हो तो अुन्हे यहाकी परिस्थितिका कैसे पता चले?"

बापू हसते हंसते बोले, "चले, चले, अगर लिखना आवे तो..."

प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीकर पत्र लिखे। ७ बजे प्यारेलालजी अपने गावसे आये। अुनके साथ बातें करके घूमने गये।

९॥ बजे मालिशमें मैंने बापूजीसे कहा, "जब तक सुहरावर्दी जैसे लोग हैं, तब तक आप झूठसे भरे वातावरणमें कैसे काम कर सकेंगे?" मेरे अिस प्रश्नका अुत्तर तो अेक तरफ रह गया, परन्तु अेक नया पाठ मुझे मिला।

"तुम सुहरावर्दी कैसे कह सकती हो? सुहरावर्दी साहब कहना चाहिये। वे कैसे भी हों परन्तु आज अेक अूचे ओहदे पर हैं। दूसरी दृष्टिसे कहूं तो तुमसे अुम्रमें बड़े हैं। अिस प्रकारकी कुटेव हमारी प्रजामें बहुत पाअी जाती है। जब तक हममें विवेक-बुद्धिकी कमी होगी तब तक हम पिछड़े हुअे ही रहेंगे। पश्चिमके लोग तो अेक नौकरको भी अुससे कोअी चीज मगानी हो तो 'प्लीज़' शब्द आगे रखकर ही सबोधन करेंगे और कार्यके अतमें 'थैंक यू' कहे बिना नहीं रहेंगे। यह तो मैंने तुम्हे अुदाहरण दिया है। परन्तु हमारी प्रजामें यह चीज नहीं है। भाषामें शिष्टता और विनय तो कभी छोडना ही नहीं चाहिये। अिस प्रकारकी कुटेव हममें साधारण बन गअी है। और शायद ही कोअी अिस पर ध्यान देता है। मगर मैं तो भाषामें अशिष्टता आ जाय तो अुसे भी सूक्ष्म रूपमें हिंसा कहता हूं और राअीके बराबर भूलको पहाड जैसी

मानता हूं। यह कुटेव कोओी साधारण नहीं है। जो हमसे बड़े या बुजुर्ग हों अुनके प्रति सम्मानपूर्ण भाषा ही काममें लेनी चाहिये। जब प्रत्येक भारतवासीको अैसी आदत पड़ जायगी तभी हमारे देशका, जो पिछड़ा हुआ माना जाता है, अुद्धार होगा। अैसी आदतें बचपनसे डाली जानी चाहियें।"

अपनी भूलसे मिला हुआ यह बोधपाठ मुझे किसी अच्छी पाठशालामें भी पढ़नेको मिलता या नहीं, अिसमें शंका है।

आजकी खुराकमें बापूजीने परिवर्तन कराये। दोपहरके सागसे बंद कर दिये और अुसके बजाय पांच बादाम पिसवा कर सागमें डलवाये। पांच काजू लिये। शामको फल और अेक औंस गुड़ लिया।

श्रीरामपुर,
२–१–'४७, गुरुवार

मैंने साथ रखनेका सारा सामान बांधा तथा तुरन्त आवश्यक हों अैसी चीजों और महत्वके कागजोंका अेक बड़ा बगलझोला अपने अुठानेके लिअे अलग तैयार किया।

ठीक साढ़े सात बजे बापूजीने श्रीरामपुर छोड़ा। मैं बापूजीका बड़ा बगलझोला लेकर छोटे रास्तेसे तीस मिनटमें अर्थात् आठ बजे यहां (चंडीपुर) पहुंच गओी। चंडीपुर आकर बापूजीकी मालिशकी तैयारी की, कूकर रखा और बर्तन साफ किये। बापूजीके साथ सुशीलाबहन थीं। रामधुन चल रही थी और दूसरे कीर्तनवाले भी कीर्तन कराते आ रहे थे। बापूजी यहां आठ बजकर पचास मिनट पर पहुंचे। यहां जिस घरमें हमारा पड़ाव है अुस घरकी बहनोंने बापूका स्वागत किया, अुन्हें तिलक लगाया और हार पहनाये।

अब्दुल्ला साहब, डी० अेम० पी०, आये। अुन्हें बापूजीने कहा, "अिन सेनाके आदमियोंका होना मुझे अच्छा नहीं लगता, शोभा नहीं देता। मेरी रखवाली तो बहुत बड़ा प्रभु कर रहा है। मैंने अुस रखवाले—ओीश्वर, खुदा पर ही सब कुछ छोड़ दिया है। अुसे जरूरत होगी तो वह मुझे जिन्दा रखेगा, न जरूरत होगी तो अुठा लेगा।"

मालिश, स्नान, भोजन और आराम करके बापूजी अुठे तब लगभग १२–५० हो गये थे।

भोजनमें यहां ताजे बने हुअे मुरमुरे, अुबाला हुआ शाक, अेक ग्रेपफ्रूट और दूध लिया। अेक बजे नारियलका पानी पिया। दोसे तीन बजे तक काता।

कातकर मिट्टी लेते हुअे . . . के साथ बातें कीं। शामको अिस खयालसे प्रार्थना साढ़े चार बजे हुअी कि बहनोंके लिअे बहुत देर न हो जाय। प्रार्थनामें बहनोंकी अच्छी संख्या रही। प्रार्थनासे आकर बापूजीने शाक, थाली और दूध लिया। थालीको शाकमें डाला था, परन्तु चबानेमें बापूजीको कठिनाअी हुअी।

आज सुशीलाबहनके गांवमें घूमने गये। अुस गांवका नाम है चांगेरगांव। चडीपुरके पास ही है। अेक बड़ा मकान है, जिसमें दूसरे भी रहते हैं और अेक कमरेमें सुशीलाबहन रहती हैं। अुनसे तथा अन्य स्थानीय लोगोंसे बापूने बातें कीं। हम अचानक ही पहुंच गये थे, अिसलिअे सुशीलाबहन बहुत प्रसन्न हुअीं। लौटते समय तो बापूजीने खूब दौड़ाया, पचास मिनटमें वापस आ गये। जाते समय सवा घंटा लगा था। आकर मैंने बापूजीके पैर धोये और अुन्होंने रामफल खाते हुअे मेरी डायरी सुनी, बंगलाका पाठ किया और थकावट मालूम होनेके कारण लेट गये। नौ बजे बाबा (सतीशबाबू) आ पहुंचे।

चडीपुर,
३–१–'४७, शुक्रवार

आज रातको बापूजी बहुत जल्दी नहीं अुठे। सवा तीन बजे अुठे। दातुन करते करते किसी प्रसंगके आधार पर मुझे कहने लगे, "मेरा मनोविज्ञान यह है कि हम कुछ भी काम करें और अुसका सोचा हुआ परिणाम न आवे, तो यह समझना चाहिये कि दोष हमारा है। हमें गंभीरतासे विचार करना चाहिये कि हमारा सोचा हुआ परिणाम क्यों नहीं आया? अिसका जवाब अपने मनसे शान्तचित्त होकर मांगना। तुम्हें जवाब मिले बिना नहीं रहेगा। यदि तुम अितनी विचारक बन सको तो मेरा काम कितना चमक अुठे? तुम्हारे लिअे यह बड़ा कठिन काम है, परन्तु प्रयत्न करोगी तो बहुत आसान हो जायगा। जिस दिन हम अपने दोष देखने लगेंगे, अुस दिनसे हमें अिस प्रकार लड़ाअी-झगड़े और मारकाटमें पड़नेकी बात नहीं सूझेगी। केवल यही सूझेगा कि दुनियाका भला किस बातमें है। आज हमारे दिमाग खाली पड़ गये हैं। हम आपसमें अेक-दूसरे पर दोष मढ़ते हैं। मेरे कहनेका यह आशय नहीं कि अैसा हम जान-बूझकर करते हैं, परन्तु यह स्वाभाविक ही हमसे हो जाता है। जैसे आगसे अनजाने हाथ छू जाय तो हम तुरन्त अुसे हटा लेते हैं, अुसमें यह विचार करनेकी जरूरत नहीं पड़ती कि हटायें या नहीं, वैसे ही आजकल जो अमानुषिक कृत्य हो रहा है वह मानो स्वाभाविक हो

गया है। परन्तु अिसकी तहमें जाकर हमें यह सोचना चाहिये कि कोअी हिन्दू अेक भी मुसलमानको क्यों मारे ? या कोअी मुसलमान अेक भी हिन्दूको क्यो मारे ? अिस दंगेकी जिम्मेदारी मेरी दृष्टिमे सारे हिन्दुस्तानकी है। प्रत्येक भारतीय यह सोचे कि 'मेरा हृदय किस ओर है ? शुद्ध है या अशुद्ध ? मैं प्रत्येक भारतीयको अपना भाअी मानता हूं या नही ?' यदि अेक भी हिन्दू यह चाहे कि मुसलमान मरे तो अच्छा हो अथवा अेक भी मुसलमान यह चाहे कि हिन्दू मरे तो अच्छा हो—भले वह खुद छुरिया न भोकता हो, परन्तु मनमें अेक-दूसरेका बुरा चाहता हो—तो मैं कहता हूं कि जो छुरा भोंककर मारनेवाले हैं अुनसे ये हलके विचारवाले लोग अधिक क्रूर और निर्दय हैं। क्योकि अुनका मन गदा हो जाता है और यह गदगी वातावरणमें अैसे रजकण फैलाती है जो सूक्ष्मसे सूक्ष्म होते हैं। अुदाहरणार्थ, घरमें किसी प्रकारकी गदगी है—अेक टी० बी० का शिकार हुआ आदमी है। कोअी जानता नही कि अुस आदमीको सचमुच टी० बी० हो गया है, शायद शुरूमें वह भी न जानता हो कि मुझे क्षय जैसा रोग है। वह चाहे जहा थूककर गंदगी करता है। धीरे-धीरे अुस पर मक्खिया बैठती हैं और दूसरे जन्तु फैलते हैं। समझ लो कि तुम्हारे शरीरमें रोगके विरुद्ध लडनेवाले जन्तु कम हो जाय, फिर भी तुम भली-चगी रहो। परन्तु तुम्हारे खाने पर ये मक्खिया कब आकर बैठ गअी और क्षयके जहरीले जतु फैला गअी, यह तुम भी न जानती हो। पर तुम्हारे दुर्बल शरीरमे यह जहरीली खुराक जाय तो तुम क्षयकी शिकार तो अवश्य बनोगी।"

[अिसी तरह हिन्दुस्तान अिस समय निर्बल है। अुसमें रोगोंके विरुद्ध लड़नेवाले जन्तु—विचारक, नि.स्वार्थ, सेवाभावी और फूट न फैले यह चाहनेवाले लोग बहुत कम हो गये हैं। और अिसलिअे मनसा, वाचा, कर्मणा हम जैसा चाहें या करें वैसा होता है।]

"जैसा यह सूक्ष्म विज्ञान है, वैसा ही मेरी दृष्टिसे मनका विज्ञान है। हममें कहावत है कि 'मन चंगा तो कठौतीमें गगा।' अिस मनकी, विचारोंकी तुम बारीकीसे जाच करना कि . . . की या तुम्हारी बनाअी हुअी . . . मैंने क्यो काममें नही ली ? यह मैं अुलाहनेके तौर पर नही कहता, परन्तु यह बतानेका प्रयत्न करता हूं कि हमारे विचार क्या रूप लेते हैं।"

दातुन करते करते बापूजीने अेक छोटीसी बात परसे सारे देशके वातावरणमें हमारे मनका, अिच्छाका कितना हाथ रहता है अथवा प्रत्येक मनुष्यकी

जैसी जिच्छा वैसा अुसका कार्य होता है, अिस संबंधमें अपनी विचारसरणी मुझे बताअी। अिस समय जो हिन्दू-मुस्लिम-वैमनस्य पैदा हो गया है अुसके लिअे बापूजी देशके प्रत्येक मनुष्यके मनको अधिक जिम्मेदार समझते हैं। ये बातें अुदाहरण-सहित अितनी सरलतासे बापूजीने कही कि बिलकुल गले अुतर जाय। बापूजी तो अैसी छोटीसी मानी जानेवाली भूलोंको—कदाचित् साधारणतः जिन्हें भूल भी नहीं कह सकते अैसे प्रसंगोंको पहाड़ जैसा बना लेते हैं। वे हमेशा कहते हैं कि "मनुष्यको आगे बढ़ना हो तो छोटीसी भूलको भी पहाड़ जैसी बनाकर अुसे सुधार लिया जाय, ताकि फिर कभी अैसी भूल हो ही नहीं।" यह बात बिलकुल सच है।

सदाकी भांति प्रार्थना हुअी। आज प्रार्थनामें प्यारेलालजी थे, अिसलिअे भजन और गीतापाठ अुन्होंने कराया। बापूजीने गरम पानी पीकर अुनके साथ बातें कीं। निर्मलदाके साथ भी बातें कीं और आश्रमकी डाक लिखी। मैंने भी डाक लिखी और प्रातःकालकी बातें नोट कर लीं।

सुबह साढ़े सात बजे यहांकी हरिजन-बस्ती और जिन्हें नमोशूद्र कहा जाता है अुनका मुहल्ला देखने गये। वहां दंगाअियोंने अैसे अमानुषिक कार्य किये हैं कि दिल कांप अुठता है। साथमें आअी० अेन० अे० वाले देवनाथ दास और कर्नल जीवनसिंह थे। आकर बापूजीके पैर धोये। और वे कलका प्रार्थना-प्रवचन सुधारने बैठे। जिससे मालिशमें काफी विलम्ब हो गया। मालिशके समय प्यारेलालजीके साथ बातें हुअीं।

भोजनमें आज आठ औंस दूध, बार्ली, मदेरा (खोपरेका) और थोड़ा कच्चा शाक लिया।

भोजनके समय मैं पास नहीं बैठी थी। प्यारेलालजी थे, अिसलिअे मुझे बापूजीने नहाकर कपड़े धो डालनेको कहा, क्योंकि बारह बज गये थे। मैं निबटकर आअी। बापूजीने भोजन कर लिया, अुसके बाद बापूजीके बरतन साफ करके पैरोंमें घी मला। वे आध घंटे सोये। यहांका नकशा देखा। दो बजे अमियबाबू (गुरुदेव टागोरके मंत्री) आये। अुनके साथ लगभग घंटे भर बातें कीं और देशमें रोगके रजकण किस प्रकार बढ़ गये हैं, यह जैसे आज सुबह मुझसे कहा था, वैसे ही लगभग धाराप्रवाह रूपमें अुन्हें सुनाया।

तीन बजे बापू और मैं बहनोंकी सभामें गये। सभामें बहुत बहनें थीं। अस्पृश्यता और पवित्रता पर बापूजीने सुन्दर भाषण दिया। अन्तमें कहा, "जब बहनें अिस कार्यको अपनायेंगी, तभी देशकी अुन्नति होगी।"

चार बजे पेट पर मिट्टी लेते वक्त बिहारके भाअी, व्होल्टन साहब और मिन्हाजी आये। अुनके साथ लगभग पाच बजे तक चर्चा चली। बापूजीने कमीशन नियुक्त करनेके बारेमें खूब जोर दिया। बिहारमें नोआखालीको मात करें, अैसे कुछ कृत्य हुअे दीखते हैं। और . . . आपसमें भी गंदगी हो अैसा लगता है।

बातें करते हुअे बापूजीको दूध, शाक और फल लेना था, अिसलिअे मिट्टी साड़े चार बजे अुतार ली। पौने पाच बजे खाना शुरू किया। दूधमें अेक औंस बार्ली पीसकर डाली थी। सब कुछ मिलाकर पी गये। पाच बजे खाना पूरा हुआ और प्रार्थनामें गये। कल जरा जल्दी हुअी थी। अिसलिअे आज प्रार्थना देरसे रखी। वहासे सीधे रामकृष्ण मिशनबाडीमें घूमने गये। आकर बापूजीके पैर धोये। फिर अुन्होंने अखबार सुने। अिस बीच मैंने अपना रातका कामकाज निवटाया। तार दुबटे किये। सौ तार निकले।

आज दिन भर मुझे अितना ज्यादा काम रहा कि सुबहसे घरकी डाक आअी हुअी थी, फिर भी रातको बापूजी लेटे तब अुनके पैर दबाने और सिरमें तेल मलनेके बाद दस बजे डाक पढ़ी। और अभी यह डायरी पूरी की। (ग्यारहका घंटा बज रहा है।) बापूजीके साथ बड़ा आनंद आ रहा है और खूब सीखने और जाननेको मिल रहा है। अिस प्रकार सारा काम रोज पूरा किया जा सके तो कोअी अड़चन न हो।

बापूजी सुबह बहुत जल्दी अुठाते हैं, अिसलिए मैंने सोनेसे पहले विनोदमें कहा, आज यदि आप जल्दी न अुठ सकें तो भगवानके नाम पर अेक दीया जलाअूंगी।

बापूजी हसते हुअे बोले: "भगवान अैसा लालची नहीं है।"

(ठीक समझी हो, परन्तु मेरी दृष्टिसे कुछ सुधार करने जैसा मालूम होता है। बापू, ५–१–'४७, चंडीपुर)

अपनी डायरीमें तो आज बापूजीने अपना कार्यक्रम और दिनमें कौन कौन आया, यही लिखा है।

सवेरे नमोशूद्रोंकी बस्तीमें गये थे। अुसे देखकर अपनी विचारमालामें अेक वाक्य अुद्धृत किया है, "घूमते समय नमोशूद्रोंकी बाड़ीमें हुआ नुकसान देखा। सहज ही ये विचार आये कि मनुष्य धर्मके नाम पर या स्वार्थवश अैसी बरबादी कैसे करता होगा?"

चंडीपुर,
४-१-'४७, शनिवार

बापूजी दो बजे अुठे। लालटेन जलवाअी। मैंने बापूजीसे कहा, मेरा दीया निष्फल रहा। आप रातको देरसे सोते हैं और दो बजे अुठ जाते हैं। तब लालटेन धीमी रखें तो क्या हर्ज है? रोज सुबह ठंडमें लालटेन जलानेमें मेरे हाथ ठिठुर जाते हैं।

बापू बोले, "अरे, बच्चोंकी ठंड तो बकरी चर जाती है, यह तुम्हें मालूम है? तुम्हारी बात सही है, परन्तु अितना घासलेट कौन दे? न तुम कमाकर लाती हो, न मैं कमाता हूं। तुम्हें घासलेट जलानेकी सूझती है, क्योंकि तुम्हारे पिता महुवामें कमाते हैं! परन्तु तुम्हें मालूम है कि लालटेन बुझानेसे मेरे दो काम हो जाते हैं: अेक तो लालटेन जलानेसे तुम्हारी नींद अुड़ जाती है, जिससे मैं कुछ लिखवाअूं तो तुम अूंघे बिना लिख सकती हो, और घासलेटकी बचत तो होती ही है। अिस प्रकार मेरे तो अेक पंथ दो काज होते हैं। परन्तु तुम अिसका अर्थ जानती हो? अेक पंथ और दो काजका अर्थ है वह कौनसा पंथ है जिसे ग्रहण करनेमें सदा दो काम बनें? दो काजका मतलब दो ही काम नहीं समझना चाहिये। दो काजका अर्थ अनेक अथवा सौ काज समझना चाहिये। यहां हजारों आदमी तबाह हुअे हैं, अिस परसे सहज ही यह विचार आता है कि हमें अेक भी पल व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये। शरीरको जरूरत हो अुतनी ही नींद, अुतनी ही खुराक वगैरा ली जाय। अपनी तमाम शारीरिक आवश्यकताअें मर्यादित की जाय। 'आजनो लहावो लीजिये रे काल कोणे दीठी छे?' — आजका लाभ अुठा लो, फिर कल किसने देखा है? अिस भजनके अनुसार हमें पता नहीं कि अेक क्षण बाद हमारा क्या हो जायगा? मैं तुम्हें अभी यह समझा रहा हूं। पर अीश्वर चाहे तो मुझे या तुम्हें अुठा ले सकता है। अिसलिअे भजनकी यह कड़ी बहुत समझने लायक है। तब अैसा सुवर्ण-सुनहला पंथ कौनसा है, जिसे अपनानेसे सभी काम सध जायं? यह पंथ केवल परोपकारका ही है। परोपकारका अर्थ है पड़ोसीकी सेवा अथवा यों कहें कि अीश्वर-भक्ति। परन्तु अीश्वर-भक्ति केवल तिलक लगाने या माला फेरनेसे नहीं होती। तिलक लगाकर कोअी मनुष्योंको छुरे भोंके, जैसा कि आजकल हो रहा है, तो वह दंभ कहा जायगा। परन्तु नरसिंह भगतने

कहा है कि 'भक्ति शीश तणु साटुं'—भक्ति सिरका सौदा है। अिसलिअे तुम समझ लो कि तुमसे शरीर द्वारा किसीका अुपकार न हो तो मनके द्वारा किया जाय। अुठते-बैठते, खाते-पीते, हंसते-खेलते हम मनके द्वारा सारे जगतका कल्याण चाहें और अपने हाथमें जो सेवा आये अुसे करें। अितना समझ लोगी तो बहुत सीखोगी। मैंने तो छोटेमें मजाकमें तुम्हें सबक दे दिया। हमारी कहावतोंमें अैसे गूढ़ अर्थ भरे हैं।"

फिर लालटेन रखवाकर खुद ही लिखना शुरू किया। मुझे जोरकी सरदी हो गअी है, अिसलिअे सो जानेको कहा। मैं सो गअी। प्रार्थनाके समय बापूजीने अुठाया। दातुन, प्रार्थना वगैरा नित्यके अनुसार हुआ। मेरा गला बैठ जानेसे आज भी प्रार्थना प्यारेलालजीने कराअी। वे जल्दी अपने गांवसे पैदल चलकर आ गये थे। आज तो अमियबाबू और अुनके मित्र भी प्रार्थनामें थे। आजकल बिहारके सम्बन्धमें भी कअी गूढ प्रश्न अुपस्थित हैं। अुन सबसे परिचित रहनेके लिअे प्यारेलालजी बड़े सवेरे लगभग रोज बापूजीके पास आते हैं और बातें करके अपने गांव चले जाते हैं।

साढ़े सात बजे रोजमर्राकी भांति घूमने निकले। अुत्तर चागेरगांवमें अेक पाठशालाका अुद्घाटन बापूजीके हाथों होनेवाला था, अिसलिअे घूमने वहीं गये। घूमते वक्त रास्तेभर अमियबाबूके साथ ही आजकी परिस्थिति पर ब्यौरेवार बातें कीं।

वहांसे लौटनेमें अेक घंटा लग गया। बापूके पैर धोकर मैंने मालिश और नहानेकी तैयारी की, बापूजीके लिअे साग काटकर कूकर रखा; खाखरे भी बना लिये; तो भी बापूजीकी बातें पूरी न हुअीं। कर्नल जीवनसिंहजी और आअी० अेन० अे० वाले देवनाथ दासके साथ बातें हो रही थीं। अन्तमें मुझसे नहीं रहा गया। मैंने कहा, अब तो बापूजीको छोड़िये। दो बजेसे अुठे हैं, बहुत देर हो गअी है। फिर मालिशमें जल्दी करायेंगे। अिस पर बापूजी हंसते-हंसते कहने लगे, "अिस लड़कीकी बात नहीं मानेंगे तो हमारी शामत ही आ जायगी! गुजरातीमें कहावत है कि 'मीठा झाडना मूळ न खाअीअे'—मीठे पेड़की जड़ें नहीं खाअी जातीं। थोड़ा ही अच्छा। अिसलिअे आप अब जाअिये। यह रूठेगी तो मेरी सेवा कौन करेगा? अतः अिसकी खातिर भी हमें बातें बन्द करनी

चाहिये।" अिस प्रकार मीठी वाणीमें अिन दोनों भाअियोंको तुरन्त विदा दे दी।

मालिशमें बापूजी पद्रह मिनट सो लिये, अिसलिअे ताजे हो गये। अुठकर कहने लगे, मेरी कुछ थकावट अुतर गअी। रातके ठीक दोमें सुबहके नौ बजे तक लगातार काम चला और अुसमें भी बोलनेका ही ज्यादा रहा। बापूजीके लिअे यह बहुत अधिक कहा जायगा। खानेमें दो खाखरे, साग, दूध, थोडासा पपीता और अेक छोटासा सदेसका टुकड़ा लिया। बापूजीने मुझे मुरमुरे, पोहे, नारियलका तेल वगैरा कैसे बनता है, अिसका ब्योरा जान लेनेको कहा। "और फिर हम चावल साथ रखें जिसमें तुम्हें रोज-रोज खाखरे बनानेकी मेहनत न करनी पड़े। मुरमुरे बनाकर रख दिये जायं तो वे दस-पद्रह दिन तक चलेंगे और हमारा काम हो जायगा। मेरे जैसेके लिअे तो मुरमुरे गेहूकी जगह अच्छी तरह काम दे सकनेवाली वस्तु है।"

खाना खाकर बापूजी लगभग पौन घंटा सोये। कातते समय आज मेरी दो-तीन दिनकी डायरी सुनी। बापूजीने कहा कि सब पर अेकसाथ हस्ताक्षर कर दूगा, अिसलिअे पाट पर रख दो।

शैरेनदाने अेक बढ़िया धनुष-तकली बनाअी है, जिस पर बापूजीने काता। कातकर ग्रामसभामें गये। चार बजे बापूजीके पेट पर मिट्टी रखकर मैं शामका खाना तैयार करने गअी। आज बापूजी आखोंमें जलन होनेकी शिकायत करते थे। आखो पर भी मिट्टी रखी। बापूजी आजकल बड़े गहन विचारोंमें डूबे रहते हैं। खूब थके हुअे है। शामको छ औस दूध और थोडा शाक ही लिया।

शामको प्रार्थनामें अच्छी सख्या थी। लगभग दस बजे सोये। बिस्तरमें तो साढ़े नौसे लेट गये। मैं आज जल्दी साढ़े दस बजे सो गअी। मुझे सरदीके कारण बुखार है। बापूजीको यह अच्छा नहीं लगता। सोनेसे पहले कहने लगे, "आज मेहरबानी करके तुम जल्दी सो जाओगी तो मुझे अच्छा लगेगा।" मैं समझ गअी कि बापूजीको मेरी काफी चिन्ता होती है। कुछ भी बहस किये बिना सारा अतिरिक्त काम छोड़कर सो गअी। अभी बापूजीका सूत दुबटा करने, कुछ पत्रोंकी नकल करने और कुछ अखबारोंकी कतरनें फाअिल करनेका काम बाकी है। कल निबटा दूगी।

(बापू, ५-१-'४७, रविवार, चडीपुर)

चंडीपुर,
५–१–'४७, रविवार

बापूजी अढ़ाओी बजे अुठे। मुझे अुठाया। मैंने लालटेन जलाओी। सबसे पहला काम आज मेरी चार-पांच दिनकी डायरीको अूपर-अूपरसे देखकर हस्ताक्षर करनेका था। ता० ३–१–'४७ की डायरीमें भाषाकी दृष्टिसे क्या सुधार हो सकता है (व्याकरणकी कुछ भूलोंका) सो बताया। थोड़ेसे चैकों पर हस्ताक्षर किये और यह समझाया कि किस प्रकार यह सब हिसाब रखा जाय। बापूजीने स्वयं ही कुछ पत्र आश्रमको लिखे। साढ़े सात बजे सदाकी भांति घूमने निकले। घूमते समय रास्ते पर सुधीरदा (सुधीरचंद्र घोष) के साथ बातें कीं। अुन्हें विदेशमें राजदूतके नाते अथवा मंत्रि-मंडलमें अुपयोगी हो सकें तो अुस दृष्टिसे कुछ सूचनायें और मार्गदर्शन दिया। सुधीरदा बहुत ही सरल स्वभावके और सादे आदमी हैं।

जहां हत्यायें हुआी थीं वहां गये। सब अुजाड़ और वीरान पड़ा था। हड्डियां भी बिखरी पड़ी थीं। आकर बापूजीके पैर धोये। बापूजी और सुधीरदाके बीच खूब लम्बी बातें चलीं, अिसलिअे मालिशमें बहुत देर हो गअी। मालिश जल्दी जल्दी कराओी। खाते समय बापूजीने को बुलाया। अुन्होंने जानेकी अिच्छा बताओी। मेरे लिअे भी ये बातें समझने लायक होनेसे बापूजीने कहा, "कुछ खानगी नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम अिस किस्सेको समझो, अिसलिअे यहीं बैठ जाओ।" बापूजीने से कहा, "मैं समझूंगा तुम छुट्टी पर गये हो। तुम पर . . ने अटूट प्रेम बरसाया है। तुमने मेरे लिअे फकीरी ली है। तुम्हारी भक्तिपूर्ण भावनाके कारण मैंने तुम्हें मुक्त किया। मैं तो तुम्हें पुत्रके समान मानता हूं और मानूंगा। अिस समय तुम अुत्तेजित हो, अिसलिअे मेरा सारा समझाना व्यर्थ है। यह भी हो सकता है कि मैं अपनी भूल न समझ पा रहा होअूं।"

बापूजीने भोजनमें दो खाखरे, आठ औंस दूध, खोपरेका मसका, जरासी कच्ची भाजी और दो सन्तरे लिये। भोजन करके आरामके लिअे लेटे। मैं पैरोंमें घी मल रही थी। अिसलिअे मुझसे बोले, "आज हर पैरको अढ़ाओी मिनट देकर पांच मिनटमें दोनों पांव पूरे करने हैं। तुम अभी तक नहाओी नहीं? कब नहाओगी और कब कपड़े धोओगी? आज तो धोनेको ढेरों कपड़े निकाले हैं। बरतन भी बहुत मांजने होंगे। परन्तु . . . की बात

समझना तुम्हारे लिअे बहुत जरूरी था, क्योंकि तुम ब्यौरेवार लिख सकती हो और तुम . . अितनोसे बातें कर लोगी तो मेरा समय भी बच जायगा।"

बापूजीके पैरोंमें घी मलकर, चरखा तैयार करके और अुठें तब नारियलका पानी देनेको शोरेनदासे कहकर मैं नहाने-धोने गअी। यहां खानेका समय आम तौर पर अढाअी-तीन बजेका है और मैं अपने कामकाजमें अढाअी बजे ही निबटी। रोज तो बापूजीको मेरा अितनी देरसे खाना अच्छा नहीं लगता, अिसलिअे जल्दी खा लेती हूं। परन्तु आज अपवाद था, अिसलिअे मैंने घरके लोगोंके साथ भोजन किया। अिससे दीदी, शोरेनदा सब बहुत खुश हुअे। परन्तु बापूजीको मालूम हुआ तो कहने लगे, "असमय खानेसे न खाया होता, दूध पी लिया होता या फल और नारियलके पानी जैसा हलका आहार ले लिया होता तो मुझे अधिक पसन्द होता। ये सब तो बीमार पडनेके लक्षण हैं। यदि तुम यहां बीमार हो गअी तो मेरे सभी किये-कराये पर पानी फिर जायगा। तुम्हें मुझसे पूछना तो था कि मैं खाअूं या नहीं? यह सब मुझे अच्छा नहीं लगा। तुम्हें अभी तक जुकाम है, फिर भी अितने ज्यादा कपडे धोये। . . . परन्तु अब और काम छोडकर आध घंटा आराम ले लो। यह मुझे अधिक अच्छा लगेगा और संतोष होगा। तुम्हारा आजका समय बिगाडनेवाला तो मैं हूं। मैंने तुम्हें बातें समझनेको रोका। किसलिअे रोकना चाहिये था? परन्तु मेरा मन न माना। खैर, जो हुआ सो हुआ। यह तो भविष्यकी सुरक्षितताके लिअे अितना कहना पडा।"

कातकर बापूजी कारीगरोंकी सभामें गये। मुझे नहीं ले गये। सोनेको कहा। मैं सो गअी। बापूजीने आकर चार बजे जगाया। "तुम कितनी थक गअी थीं, अिसका खयाल तुम्हें मुर्देकी तरह सोते देखकर मुझे हुआ। तुम तो कहती थी कि नींद नहीं आती। सुबहके अढाअी बजेसे तुम्हें अुठाया है। अिसलिअे थकावटका कोअी दोष नहीं। परन्तु बढ़-बढ़कर बूतेसे ज्यादा काम करोगी तो मर जाओगी और मैं भी मर जाअूंगा।"

शामको खानेमें अनन्नासका रस, आठ औंस दूध और अेक औंस गुड लिया। प्रार्थना चांगेरगांवमें हुअी। वहांसे हरिश्वरामें अेक मुसलमान भाअीके यहां गये।

चारुदा, बाबा और मा आये। यात्रा शुरू होने वाली है, जिसलिअे अुसके विषयमें चर्चा हुअी। बापूजीने कहा, "काजीरखिल कैम्पमें से कोअी भी आदमी मेरी सेवामें खास तौर पर रहे, यह मैं नही चाहता और मेरे साथ जो अखबारवाले रहना चाहें अुन्हें भी कह दिया जाय कि वे अपने खर्च, जोखिम और जिम्मेदारी पर रहना चाहें तो ही रहे। बहुत बार अैसा भी हो सकता है कि ये लोग मेरे दलमें मान लिये जाय। जिसलिअे प्रेस-रिपोर्टरोंको खास तौर पर समझा दिया जाय। . . . ने तो जाना तय किया है। . . . भी बहुत नही टिक सकता। फिर भी देखना है। लेकिन मनु और निर्मलबाबू मेरी मडलीमें ही माने जायेंगे।"

बाबा (सतीशबाबू) और मा (सतीशबाबूकी पत्नी हेमप्रभादेवी), दोनोंको बापूजीकी अतिरिक्त चीजें सौंप दी।

रातको प्रार्थना-सभासे आकर बापूजी खूब थक गये थे। आधे औंसके बराबर गुड़ लिया और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। मौन लेकर बहुतसे पत्र जाचे। दस बजे सोये।

शामके बाद मौन होनेसे बापूजीके पास कोअी खास काम नही रहा। अब नियमानुसार रोज अेक अेक गावमें रहना होगा, जिसलिअे कमसे कम सामान साथ रहे जिसके लिअे बहुत प्रयत्न किया।

चंडीपुर,
६–१–'४७, सोमवार

बापूजी विशेष जल्दी नही अुठे। ठीक प्रार्थनाके समय ही अुठे। मौनवार होनेसे लिखनेका काम अुन्होंने स्वयं ही किया। प्रार्थना वगैरा नित्यकर्मसे निवटकर रस लिया। बादमें पत्र पढते-पढते सो गये। शायद कल शामको बूतेसे बाहर घूमे थे; अुसकी थकावट होनेसे पैर दबानेको भी अिशारेसे कहा। मैंने पाचेक मिनट पैर दबाये कि गहरी नीदमें सो गये। साढे छः बजे अुठे। साढे सात बजे बापूजी और मैं अेक कार्यकर्ता भाअीको, जो बीमार पडे हैं, देखने गये। वहा बापूजीने लिखकर अुन्हें कुछ हिदायतें दीं। बार बार गरम पानीमें शहद और थोड़ा थोड़ा सोडा डालकर पीनेको कहा। कुछ भी खानेके लिअे मना कर दिया। पेट पर मिट्टी लेनेका भी आदेश दिया। वहासे आनेमें पूरा अेक घंटा लगा। पैर धोकर सीधी मालिश की। मालिशमें बापूजी पच्चीस मिनट सो लिये।

शामको प्रार्थनामें बापूजी नंगे पैरों आये। मैंने कारण पूछा तो मौनके बाद बतानेको कहा। रातको बापूजीने अपना काम जल्दी समेट लिया और आठ बजे बाबा, मा, अरुणभाओ (सतीशबाबूके लड़के) के साथ बातें कीं।

बापूजीके पैरमें चीरा पड़ गया है, अिसलिअे हेज़लीन लगाया। प्यारेलालजी आये। अुनके साथ लगभग दस बजे तक बातें कीं।

बापूजी रातको लेटे थे और मैं तेल मल रही थी तब मुझे चप्पल छोड़नेका कारण बताते हुअे कहा : "हम हिन्दू मंदिर, मस्जिद या गिरजेमें जाते हैं तब चप्पल नहीं पहनते। तब मुझे तो दरिद्रनारायणके पास जाना है, जिस भूमिके स्वजन लुट गये हैं, जहां स्त्रियों और बच्चोंकी हत्या हुआी है; जहांके लोगोंके पास लाज ढंकनेको भी कपड़े नहीं हैं, जहां अनेक निर्दोषोंकी पवित्र हड्डियां पड़ी हुआी हैं, अैसी भूमि पर चलना है और अैसे लोगोंसे मिलने जाना है। यह मेरे लिअे पवित्र यात्रा है। (कलसे नियमित प्रवास शुरू होनेवाला है।) अैसी हालतमें मैं चप्पल कैसे पहन सकता हूं?"

ये शब्द बोलते समय बापूजीके हृदयकी स्थिति वैसी ही थी, जैसी मक्खन निकालनेके लिअे छाछ बिलोते समय छाछकी होती है। अिस पैदल यात्राको बापूजी कितनी पवित्र मानते हैं, यह समझाया।

(बापू, मासिमपुर, ८–१–'४७)

८

अेकला चलो रे

चंडीपुर,
७–१–'४७, मंगलवार

आज पवित्र यात्राका स्मरणीय दिवस होनेके कारण प्रार्थनामें 'वैष्णव जन' का भजन गानेके लिअे बापूजीने कहा। और अुसमें प्रत्येक कड़ीके अन्तमें ख्रिस्तीजन, पारसीजन, सिक्खजन, मुस्लिमजन और 'हरिना जन तो तेने कहीअे जे पीड पराअी जाणे रे' जोड़कर गानेका आदेश दिया।

प्रार्थनाके बाद लगभग अेक घंटे तक बापूजी और प्यारेलालजीके बीच बातें हुआीं। मैं सामान ठीक करनेमें लग[illegible] बातें नहीं सुनीं।

आज . . . को बापूजीने बड़ा हृदयस्पर्शी पत्र लिखा है और अुसमें यहांका विस्तृत चित्र दिया है। अुसकी नकल की। बापूजीने अुस पत्रमें लिखा है :

" . . . मेरे स्वास्थ्यकी चिन्ता न करो। अभी तो बहुत काम देता है। कब तक काम देगा, यह तो भगवान जाने। सेवाग्राममें मेरी बीमारीका कारण मेरी मूर्खता थी। तब मुझमें कुशलता थोड़ी थी और स्वादेन्द्रियकी प्रभुता थी। पाच चीजें खाओ या अेक चीज, परन्तु मैं अिस बातका प्रत्येक क्षण अनुभव करता हूं कि अिस अिन्द्रियके वश हो जाओ तो वह हमारे व्यवस्थित किये हुअे कामको चौपट कर डालती है। साथ ही . . से कहता हूं कि मेरी चिन्ता न करो। मेरी चिन्ता करनेवाला अेक सर्वशक्तिमान वैद्य हमारे सिर पर है; वह काफी है। . . . के नाम लिखा तुम्हारा पत्र आया था। जवाबकी मत पूछो। थोड़ेसे पत्र लिखता हूं सो भी जल्दी अुठता हूं अिसलिअे। काम सभल नही पाता। अुसकी भी चिन्ता नही करता। कहते शर्म आती है कि 'हरिजन' मिलता तो है, परन्तु पढ़ नही पाता। . . . अपने-अपने गावमें हैं। भला-बुरा देखनेमें आयेगा तब तो कह ही दूगा। यहाका काम अटपटा है। रास्ता अंधेरेमें तय करना है। 'मुझे अेक कदम काफी है।' यह सारी प्रस्तावना है।"

बापू सवा सात बजे अुठे। बाथरूममें गये। अितनी देरमें मैंने जिस गद्दी पर बापूजी बैठते हैं अुसका अतिम बेडिंग बाधा और पाचेक मिनटमें बापूजी बाहर आये। घरकी और दूसरी बहनोंने बापूजीको तिलक लगाया, आरती अुतारी; अेक तरफ मैं और दूसरी तरफ बापूजीकी काठकी बैसाखी। बापूजी नंगे पैर थे।

आजका दिन मेरे जीवनमें अैतिहासिक दिन बन गया है। अुसके आनंदकी तो किसीको कल्पना भी नही हो सकती। बापूजीके अैसे अद्भुत महायज्ञमें आज मेरे लिअे अुनकी लाठी बननेका अवसर आयेगा, यह तो मैंने कभी सोचा भी नही था।

ठीक साढ़े सात बजे 'जदि तोर डाक शुने केअु ना आसे, तबे अेकला चलो रे'—तेरी पुकार सुनकर कोअी न आये तो तू अकेला ही चल—यह पंक्ति गाते हुअे बापूजीने नंगे पैर घरके बाहर रखे, अुस समयका दृश्य

अैसा था, मानो 'परथम पहेलु मस्तक मूकी वळती लेवु नाम' (पहले सिर रखकर बादमें अुसका नाम लेना चाहिये।) वाली पंक्तिको अुन्होंने प्रत्यक्ष आचरणका रूप दे दिया हो। 'अेकला चलो' के भजनके बाद रामधुन अेकके बाद अेक गाते गाते मार्ग काट रहे थे। तुलसीदासजीने गाया है 'दंडक वन प्रभु पावन कीनों ॠषियन त्रास मिटाओ'; अुसी तरह यह भी निरा जंगल ही था और बापूजी मानो अनेक निर्दोषों पर गुजरा हुआ सितम और त्रास मिटानेको ही जा रहे थे। सबसे आगे सेनाके आदमी थे, बादमें प्रेस-रिपोर्टर थे और अुनके पीछे बापूजी और मैं। दो आदमी मुश्किलसे अेक साथ चल सकें, अितनी चौड़ी पगडंडी थी। परन्तु मार्ग बड़ा रमणीय था। नारियल और सुपारीके हरे हरे पत्ते बापूजी पर झुककर मानो प्रणाम करके अुनका स्वागत कर रहे थे। चारों तरफ हरियाली छाअी हुआी थी। और घनी हरीभरी वनराजिके अूपर सामने लाल लाल आकाशमें सूर्यदेव भी मानो अिस महापुरुषकी अैतिहासिक यात्राकी घड़ीके साक्षी बननेको निकल आये थे। अिस भव्य अरुणोदयका प्रतिबिंब आसपासके सुन्दर तालाबोंमें पड़ रहा था।

जगह जगह अनेक सुन्दर झरने थे। मेरे मनमें विचार आया, आजका यह सुनहला और भव्य अवसर किस पुण्यके प्रतापसे मिला होगा? पू० बाके आशीर्वादका और मेरे माता-पिताकी अुनके प्रति रही भक्तिका ही यह सुफल है। अैसी अनेक भावनाओंसे मैं हर्षित हो रही थी। अीश्वरसे अेक ही प्रार्थना कर रही थी कि मुझे परीक्षामें पार अुतारना, मेरे प्रभु! रास्तेमें दो जगह ठहरे। चांगेरगावसे सुशीलाबहन आनेवाली थीं, परन्तु वे दूसरे रास्तेसे गअीं।

बीचमें ही सतीशबाबू (बाबा) और चारुदा आ पहुंचे। ठीक नौ बजे हम यहां (मासिमपुर) पहुंचे।

मासिमपुर,
७-१-'४७, दोपहरके दो बजे

बापूजी अिस समय कात रहे हैं और मैं डायरी लिखने बैठी हूं। हम यहां नौ बजे पहुंचे। यहां किसीका कोअी घर नहीं था। जहां देखो वहीं जले हुअे मकान थे। निर्मलदा जल्दी आ पहुंचे थे। निर्मलदाने अपना सामान आप ही अुठाया था। बड़े सिद्धान्तवादी आदमी हैं।

बाबा (सतीशचन्द्र दासगुप्ता) और अुनकी मंडलीने जो 'फोल्डिंग हट' बनाया है अुसे खडा किया गया है। नीचे घास है। अूपर चटाअी बिछाअी है। दो खाटें हैं, अेक बापूजीकी और दूसरी मेरी। छोटी-छोटी खिड़कियां और रोशनदान रखे गये हैं। पीछेकी ओर बापूजीकी मालिश हो सके, अैसा स्थान रखा गया है। कमांड रखनेकी भी छोटी कोठरी-सी बनाअी गअी है। छोटीसी होने पर भी यह झोंपडी छोटी-बड़ी सारी सुविधाओंवाली और बहुत रमणीय है। अूपर तिरंगा राष्ट्रध्वज फहरा रहा है।

बापूजीने सुबह आते ही पहले यह झोंपड़ी देखी। फिर बाहर अेक पटिये पर जब मैं अुनके पैर गरम पानीसे धो रही थी तब (नंगे पैर चलनेसे बापूजीके पावोंमें छाले पड़ गये हैं। बापूजीके पाव बडे स्वच्छ और कोमल हैं। हमारे हाथोंसे भी वे पावोंके तलुअे ज्यादा स्वच्छ रखते हैं। तलुओंमें जरासा भी मैल या कालापन नहीं होता।) वे बोले, "तुमने देखा कि सतीशबाबूने मेरे अिस महलके लिअे कितना परिश्रम किया है? अिसके अलावा, अुठानेवालेको अेक जगहसे दूसरी जगह ले जाना आसान हो, अिसके लिअे छोटे-छोटे हिस्से बनाये हैं, ताकि छोटा बच्चा भी अेक हिस्सा अुठा सके। अिन्होंने मुझ पर अैसा प्रेम बरसाया है। परन्तु अैसे अपार प्रेमको स्वार्थी बनकर मैं ही कैसे स्वीकार करूं? अिसलिअे अपने मनमें मैंने निश्चय किया है कि यह महल अब किसी और गावमें नहीं ले जाया जायगा। अुसका अुपयोग अेक छोटासा अस्पताल बनानेमें होगा या अैसे ही किसी और कामके लिअे किया जायगा। मैं तो जहां तहां, जो जगह मिलेगी वहीं, आरामसे पडा रहूंगा। कोअी जगह नहीं मिली तो अंतमें यहा पेड़ कितने अधिक है? वे हमें कहा अिनकार करते हैं? अुनके नीचे आरामसे पडे रहेंगे। जैसे रामजीको निबाहना होगा वैसे निबाहेंगे। अिसकी चिन्ता हम किस लिअे करें? गावोंमें जो भी कार्यकर्ता गये हैं अुन्हें मैंने कह दिया है कि जिस गावमें बैठो वहीके लोग तुम्हें खाने-पीनेको दे, जैसे कुटुम्बके आदमियोंको खिलाते हैं अुसी तरह। कार्यकर्ता अुनके कुटुम्बी बन जायं। वे यह भाव न दिखायें कि हम कुछ है अथवा हम तुम्हारी सेवा करने आये हैं अिसलिअे तुम पर अुपकार करने आये है। अगर अैसा भाव दिखायेंगे तो वे टिक नहीं सकेंगे। यदि वे बीमार पडें तो गावोंमें जो दवा-दारू और वैद्य-हकीम मिलें अुन्हींसे अथवा पंचमहाभूत जो कुछ दें अुसीसे संतोष मानें। यही

बिस्तर पर लेटे। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर मैंने थोड़ेमे नोट लिखनेके लिअे आध घंटेकी छुट्टी मागी। बापूजीने अधिकसे अधिक दस बजे सो जानेको कहा। आजकी डायरी टुकड़े-टुकड़ेमें लिखी गअी है। डर था कि सब काम पूरा नही कर सकूंगी, परन्तु आज कोअी विशेष कठिनाअी नहीं हुअी। सवेरे रसोअी और मालिशका समय अेकसाथ होनेसे मैं कूकर रखनेको ठहरती हूं अुतनी बापूजीको देर हो जाती है। बापूजीने खाखरे दूसरे किसी समय बनाकर रखनेका आदेश दिया। यद्यपि अुन्होंने खाखरेकी जगह मुरमुरेसे काम चला लेनेको कहा, परन्तु मैंने अिनकार कर दिया। अिसलिअे अन्य किसी समय बनाकर रखनेको कहा, ताकि सवेरे समयकी खींचतान न हो।

प्रभुकृपासे अिस प्रकार आजका पहला दिन बहुत अच्छी तरह निर्विघ्न पूरा हुआ।

बापूजीकी डायरीकी नकल की। ठीक दस बजे हैं। मैं भी अब बापूजीको दिये हुअे वचनके अनुसार सोने जाती हू।

फतहपुर,
८-१-'४७, बुधवार

बापूजीने दो बजे मुझे जगाया। जाजूजीको पत्र लिखवाया। अुसमें . . . के पत्रका अुल्लेख किया। अेक पत्र बिहारके सबंधमें राजेन्द्रबाबूके नाम लिखवाया। फिर मेरी डायरी सुनी। अब रोजकी रोज सुनकर किसी भी समय हस्ताक्षर कर देनेको कहा। "महादेव और प्रभा काम करते थे अुसी ढगसे तुम्हें करना सिखाना चाहता हूं। तुमने बहुत कुछ सीख लिया है, फिर भी अभी बहुत सीखना बाकी है।" बापूजीने डाक लिखवाअी, फिर मैंने पढकर सुनाअी। अितनेमे प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद तीन-चार दिनकी मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बादमे बापूजीने निर्मलदाके साथ काम किया।

हम ठीक सात बजे मासिमपुरसे यहाके लिअे रवाना हुअे। साथमे कुछ स्थानीय स्वयसेवक है। थोड़ा थोड़ा सामान सबने अुठाया। साढे आठ बजे यहां पहुंचे। रास्तेमें मुसलमानभाअी मिलते थे। बापूजी सबको सलाम करते, परन्तु वे लोग अिस तरह चले जाते थे मानों कुछ जानते हो न हो। मैंने

नियम तुम्हारे लिअे और मेरे लिअे भी है। तुम देखना अिस निश्चयका परिणाम अद्‌भुत होगा। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं।"

पैर धोकर मैंने बापूजीकी मालिश की। मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिये। दो बजेसे अुठे थे। रातके दोसे दिनके पौने दस तक सतत आठ घंटे काम किया! नहाने-धोनेमें साढे ग्यारह हो गये। आज पहला ही दिन है, अिसलिअे हर काममें थोडी देर हुअी। भोजनमें आठ औंस दूध, अुबाला हुआ शाक, दो खाखरे और अेक ग्रेपफ्रूट लिया।

भोजनके समय सुशीलाबहन और प्यारेलालजी बैठे थे, अिसलिअे मैं नहाने-धोने और दूसरा काम निबटानेमें लग गअी। तीन बजे बापूजी बंगलाका पाठ करते करते आध घंटे सो लिये। मुझे भी पैरोंमें घी मलकर सो जानेको कहा। परन्तु मुझे और बहुत काम था, अिसलिअे मैं सोअी नहीं। साढे तीन बजे बापूजी अुठे। नारियलका पानी पिया। डाक देख और पढ़कर बापूजीने अपनी डायरीमें कुछ नोट किया। पौने चार बजे मिट्टी ली। अब्दुल्ला साहब और जमान साहबके साथ निराश्रितोंके बारेमें बातें कीं। मिट्टी लेते ही 'रिलीफ कमेटी' की बैठक शुरू हो गअी। परन्तु मैं अुसमें भाग न ले सकी। अुसमें बैठती तो दूसरा थोड़ा जरूरी कामकाज रह जाता। अिसलिअे अिच्छा होते हुअे भी अुसमें शामिल नहीं हुअी। अन्नदाबाबूके साथ लगभग दो घंटे निराश्रितोंके प्रश्न पर चर्चा चली। बापूजी मानते हैं कि निराश्रितोंको दान देनेके बजाय अुन्हें स्वावलम्बनकी ओर मोड़ना चाहिये। कुछ दान भले देना पडे, मगर केवल दानसे तो 'मुफ्तका खाना और मस्जिदमें सोना' अिस कहावतके अनुसार अुनकी वृत्ति हो जायगी।

ठीक पाच बजे प्रार्थनामें गये। प्रार्थनामें रामधुन शुरू की कि मुसलमान भाअी प्रार्थनामें से अुठने लगे। परन्तु प्रार्थना जारी रही। प्रार्थनासे पहले शामको बापूजीने अेक केलेका गूदा और आठ औंस दूध पिया, और साढ़े सात बजे अेक औंस गुड लिया।

अिसके बाद अेक दर्शनार्थी और मुलाकाती आते गये, परन्तु साढ़े नौके बाद निर्मलदाने सबको मना कर दिया। अैसे बहुत कुछ काम निर्मलदा ही निबटा देते हैं।

थोड़ा घूमनेके बाद बापूजीके पैर धोये। बापूजीने बंगलाका पाठ लिया, मैंने बिछौने वगैराका सारा काम पूरा किया। साढ़े नौ बजे बापूजी

बिस्तर पर लेटे। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर मैंने थोड़ेसे नोट लिखनेके लिअे आध घंटेकी छुट्टी मांगी। बापूजीने अधिकसे अधिक दस बजे सो जानेको कहा। आजकी डायरी टुकड़े-टुकड़ेमें लिखी गअी है। डर था कि सब काम पूरा नहीं कर सकूंगी, परन्तु आज कोअी विशेष कठिनाअी नहीं हुअी। सवेरे रसोअी और मालिशका समय अेकसाथ होनेसे मैं कूकर रखनेको ठहरती हूं अुतनी बापूजीको देर हो जाती है। बापूजीने खाखरे दूसरे किसी समय बनाकर रखनेका आदेश दिया। यद्यपि अुन्होंने खाखरेकी जगह मुरमुरेसे काम चला लेनेको कहा, परन्तु मैंने अिनकार कर दिया। अिसलिअे अन्य किसी समय बनाकर रखनेको कहा, ताकि सवेरे समयकी खींचतान न हो।

प्रभुकृपासे अिस प्रकार आजका पहला दिन बहुत अच्छी तरह निर्विघ्न पूरा हुआ।

बापूजीकी डायरीकी नकल की। ठीक दस बजे हैं। मैं भी अब बापूजीको दिये हुअे वचनके अनुसार सोने जाती हूं।

फतहपुर,
८-१-'४७, बुधवार

बापूजीने दो बजे मुझे जगाया। जाजूजीको पत्र लिखवाया। अुसमें . . . के पत्रका अुल्लेख किया। अेक पत्र बिहारके सबंधमें राजेन्द्रबाबूके नाम लिखवाया। फिर मेरी डायरी सुनी। अब रोजकी रोज सुनकर किसी भी समय हस्ताक्षर कर देनेको कहा। "महादेव और प्रभा काम करते थे अुसी ढंगसे तुम्हें करना सिखाना चाहता हूं। तुमने बहुत कुछ सीख लिया है, फिर भी अभी बहुत सीखना बाकी है।" बापूजीने डाक लिखवाअी, फिर मैंने पढ़कर सुनाअी। अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद तीन-चार दिनकी मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बादमें बापूजीने निर्मलदाके साथ काम किया।

हम ठीक सात बजे मासिमपुरसे यहाके लिअे रवाना हुअे। साथमें कुछ स्थानीय स्वयंसेवक हैं। थोड़ा थोड़ा सामान सबने अुठाया। साढ़े आठ बजे यहां पहुंचे। रास्तेमें मुसलमानभाअी मिलते थे। बापूजी सबको सलाम करते, परन्तु वे लोग अिस तरह चले जाते थे मानो कुछ जानते ही न हों। मैंने

नियर ा तुम्हारे लिये और मेरे लिये भी है। तुम देखना अिस निश्चयका परिण ाम अद्भुत होगा। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं।"

पैर धोकर मैंने बापूजीकी मालिश की। मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिये। दो बजेसे अुठे थे। रातके दोसे दिनके पौने दस तक सतत आठ घंटे काम किया। नहाने-धोनेमें साढ़े ग्यारह हो गये। आज पहला ही दिन है, अिस लिये हर काममें थोड़ी देर हुआी। भोजनमें आठ औंस दूध, अुबाला हुआ शाक, दो खाखरे और अेक ग्रेपफ्रूट लिया।

भोजनके समय सुशीलाबहन और प्यारेलालजी बैठे थे, अिसलिये मैं नहाने-धोने और दूसरा काम निबटानेमें लग गयी। तीन बजे बापूजी बंगला का पाठ करते करते आध घंटे सो लिये। मुझे भी पैरोंमें घी मलकर सो जानेको कहा। परन्तु मुझे और बहुत काम था, अिसलिये मैं सोअी नहीं। साढ़े तीन बजे बापूजी अुठे। नारियलका पानी पिया। डाक देख और पढ़ कर बापूजीने अपनी डायरीमें कुछ नोट किया। पौने चार बजे मिट्टी ली। अब्दुल ला साहब और जमान साहबके साथ निराश्रितोंके बारेमें बातें कीं। मिट्टी लेते ही 'रिलीफ कमेटी' की बैठक शुरू हो गयी। परन्तु मैं अुसमें भाग न ले सकी। अुसमें बैठती तो दूसरा थोड़ा जरूरी कामकाज रह जाता। अिसलिये अिच्छा होते हुअे भी अुसमें शामिल नहीं हुअी। अन्नदाबाबूके साथ लगभग दो घंटे निराश्रितोंके प्रश्न पर चर्चा चली। बापूजी मानते हैं कि निराश्रितोंको दान देनेके बजाय अुन्हें स्वावलम्बनकी ओर मोड़ना चाहिये। कुछ दान भले देना पड़े, मगर केवल दानसे तो 'मुफ्तका खाना और मस्जिदमें सोना' अिस कहावतके अनुसार अुनकी वृत्ति हो जायगी।

ठीक पाच बजे प्रार्थनामें गये। प्रार्थनामें रामधुन शुरू की कि मुसलमान भाअी प्रार्थनामें से अुठने लगे। परन्तु प्रार्थना जारी रखी। प्रार्थनासे पहले शामको बापूजीने अेक केलेका गूदा और आठ औंस दूध पिया, और साढ़े सात बजे अेक औंस गुड़ लिया।

अेकके बाद अेक दर्शनार्थी और मुलाकाती आते गये, परन्तु साढ़े नौके बाद निर्मलदाने सबको मना कर दिया। वैसे बहुत कुछ काम निर्मलदा ही निबटा देते हैं।

थोड़ा घूमनेके बाद बापूजीके पैर धोये। बापूजीने बंगलाका पाठ किया, मैंने बिछौने वगैराका रातका काम पूरा किया। साढ़े नौ बजे बापूजी

बिस्तर पर लेटे। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर मैंने थोड़ेसे नोट लिखनेके लिअे आध घंटेकी छुट्टी मांगी। बापूजीने अधिकसे अधिक दस बजे सो जानेको कहा। आजकी डायरी टुकड़े-टुकड़ेमें लिखी गअी है। डर था कि सब काम पूरा नहीं कर सकूंगी, परन्तु आज कोअी विशेष कठिनाअी नहीं हुअी। सवेरे रसोअी और मालिशका समय अेकसाथ होनेसे मैं कूकर रखनेको ठहरती हूं अुतनी बापूजीको देर हो जाती है। बापूजीने खाखरे दूसरे किसी समय बनाकर रखनेका आदेश दिया। यद्यपि अुन्होंने खाखरेकी जगह मुरमुरेसे काम चला लेनेको कहा, परन्तु मैंने अिनकार कर दिया। अिसलिअे अन्य किसी समय बनाकर रखनेको कहा, ताकि सवेरे समयकी खींचतान न हो।

प्रभुकृपासे अिस प्रकार आजका पहला दिन बहुत अच्छी तरह निर्विघ्न पूरा हुआ।

बापूजीकी डायरीकी नकल की। ठीक दस बजे हैं। मैं भी अब बापूजीको दिये हुअे वचनके अनुसार सोने जाती हूं।

फतहपुर,
८–१–'४७, बुधवार

बापूजीने दो बजे मुझे जगाया। जाजूजीको पत्र लिखवाया। अुसमें . . . के पत्रका अुल्लेख किया। अेक पत्र बिहारके संबंधमें राजेन्द्रबाबूके नाम लिखवाया। फिर मेरी डायरी सुनी। अब रोजकी रोज सुनकर किसी भी समय हस्ताक्षर कर देनेको कहा। "महादेव और प्रभा काम करते थे अुसी ढंगसे तुम्हें करना सिखाना चाहता हूं। तुमने बहुत कुछ सीख लिया है, फिर भी अभी बहुत सीखना बाकी है।" बापूजीने डाक लिखवाअी, फिर मैंने पढ़कर सुनाअी। अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद तीन-चार दिनकी मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बादमें बापूजीने निर्मलदाके साथ काम किया।

हम ठीक सात बजे मासिमपुरसे यहांके लिअे रवाना हुअे। साथमें कुछ स्थानीय स्वयंसेवक हैं। थोड़ा थोड़ा सामान सबने अुठाया। साढ़े आठ बजे यहां पहुंचे। रास्तेमें मुसलमानभाअी मिलते थे। बापूजी सबको सलाम करते, परन्तु वे लोग अिस तरह चले जाते थे मानो कुछ जानते ही न हों। मैंने

बापूजीसे कहा : "आप किसलिअे सरगम करते हैं, जब अिन लोगोंको कुछ पड़ी ही नहीं है ?" बापू बोले, "अिसमें हमारा क्या जायगा ? कभी न कभी ये जरूर समझेंगे। हमें कभी नम्रता नहीं छोड़नी चाहिये। ये लोग यही मानते हैं कि यह हमारा दुश्मन आ गया है, जब कि मुझे तो साबित करना है कि मैं किसीका दुश्मन नहीं, सबका मित्र हूं, सेवक हूं। और यह दावा मैं तभी कर सकता हूं जब मुझमें और मेरे साथ रहनेवालोंमें पूरी नम्रता हो . . ।"

रास्तेमें रामधुन, भजनादि कलकी तरह ही चले।

यहां अेक पाठशालामें हमारा पड़ाव है। यह पाठशाला मुसलमानोंकी है। बापूजीके पैर धोये कि कुछ मुसलमान भाओी बापूजीसे बातें करने आ गये। मुझे तो लगा कि सिर्फ गप्पें ही लगाने आये हैं। परन्तु बापूजी सबकी बात बहुत धीरजसे सुन रहे थे। बापूजी अुन लोगोंके साथ बातें कर रहे थे, अुस बीच मैंने अुनके नहानेके लिअे खंभे गाड़कर अुनके चारों ओर कनात बांध ली और मालिशके लिअे भी वैसी ही व्यवस्था कर दी। कमोड भी अुसी बाथ-रूममें लगा दिया। बापूजीके लिअे शाक भी अुबलनेको रख दिया और खाखरे भी बना लिये। हमारे साथ आओी० अेन० अे० वाले सरदार जीवनसिंहजीकी टोली है। ये लोग पत्थरके चूल्हे तैयार करके बाहर दाल-रोटी बनाते थे। अुसी तरह अेक दूसरा चूल्हा बनाकर अुस पर बापूजीके लिअे नहानेका पानी रखा। हवा और ठंड खूब लग रही थी। बापू भी मालिशमें सो नहीं सके। मालिशके समय कहने लगे, "यहांके मुसलमान कैसी सयानी सयानी बातें करते हैं ! मानो बेचारे बिलकुल निर्दोष हों !"

साढ़े ग्यारह बजे कामसे निबटनेके बाद बापूजीको भोजन कराकर मैं नहाने-धोने गओी। बापूजीने भोजनमें तीन खाखरे, आठ औंस दूध, शाक — यीस्ट और अेक ग्रेपफ्रूट लिया।

यहां पानीकी भी बड़ी तंगी रहती है। बाहरसे बालटीमें लाना पड़ता है, सो ले आओी। मेरे और बापूजीके कपड़े धोने और नहानेमें अेक बज गया। फिर भोजन किया। आज सरदार जीवनसिंहजीकी दाल-रोटी खाओी। रोटी पजाबी थी। अितनी मोटी कि मुश्किलसे आधी खाओी जा सकी। परन्तु खाना स्वादिष्ट लगा। तीन पत्थर जमाकर अच्छी तरह पकाया था। सबने हाथोंहाथ काम किया।

माना खाकर बापूजीके पैर मलते समय देखा कि पैरोंमें बिवाअियां पड़ गयी हैं और खून निकल आया है। अुन बिवाअियोंमें घी भरा। मेरी आखोंमें आंसू आ गये। अंगूठेके जोड़में तो गहरा चीरा पड़ गया है। बापूजीकी अिस अुम्रमें कितनी कड़ी परीक्षा हो रही है। भारतके लोगोंका कैसा दुर्भाग्य है कि वे अिस महापुरुषको पहचान नहीं सकते? क्या अीश्वर महापुरुषोंके यही हाल करता है? रामचन्द्रजीने चौदह वर्षका वनवास भोगा। अिसीलिअे आज वे अीश्वरके अवतारके रूपमें पूजे जाते हैं। अिस प्रकार दुनियाको सबक देनेके लिअे अीश्वर अवतार लेता ही है। जब जब अधर्म फैलता है तब तब अीश्वरको अवतार अवश्य लेना पड़ता है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

गीताके अिस श्लोकका अेकाअेक मनमें स्मरण हो आया। अिस श्लोकका यहां मैं प्रत्यक्ष दर्शन कर रही हूं।

दोपहरको कातकर मिट्टी लेते लेते बापूजी मुसलमान भाअियोंके साथ बातें करने लगे। अुन बातोंमें बापूजीने कहा: "यदि आप लोग हिन्दुओंको नहीं अपनायेंगे तो आपकी हालत खराब होगी। यहां अथवा जहां भी आप बहुमतमें हैं, वहां किसी दुर्बल हिन्दूको मारनेका काम तो अेक छोटा बच्चा भी कर सकता है। अैसा नीच काम करनेको आपके कुरान शरीफमें कहीं भी लिखा हो तो मुझे बताअिये। मैं तो कुरान शरीफका विद्यार्थी हूं। और फिर मुसलमानोंमें मेरी गहरी दोस्ती रही है। आज भी जैसी मेरी यह लड़की है वैसी मेरी दूसरी बहुतसी मुसलमान लड़कियां हैं। अुनमें से अेक अम्तुस्सलाम है, जो यहां अुपवास कर रही है। अुसे तो आप जानते ही होंगे। वह लड़की अैसी है कि मेरे लिअे जान दे दे। अिसलिअे मेरी आपसे नम्र प्रार्थना है कि जो कोअी अैसा अनुचित काम करे अुसे चेतावनी दीजिये, ताकि आपका भविष्य अुज्ज्वल बने।"

बादमें मुसलमान भाअियोंने बिहारकी और दूसरी दलीलें दीं। अिस बीच बापूजीको जरा अूंघ आ गअी। रातके दो बजेसे अुठे हैं, अिसलिअे खूब थक गये हैं। परन्तु अूंघ आ जानेके लिअे बापूजीने अुन लोगोंसे माफी मांगी। नम्रताके अैसे पाठ मिल रहे हैं।

दासपाड़ा,
९–१–'४७, गुरुवार

आज भी फतहपुरमें बापूजीने मुझे दो बजे जगाया। और रातमें जल्दी सो जानेको कहा। बादमें लालटेन जलाकर जाजूजीने चरखा-संघकी जो लम्बी रिपोर्ट भेजी है अुसे पढा; अुसीमें सारा समय बीता और प्रार्थनाका वक्त हो गया।

प्रार्थनाके बाद बापूजीसे मेरी डायरीमें हस्ताक्षर कराये। फिर अुन्हें गरम पानी और शहद देकर रस निकालने गअी। अितने समयमें कल लिखाअी हुअी डाक पर हस्ताक्षर करके बापूजीने मुझे सुधार बताये।

फतहपुरसे यहां आनेके लिअे हम ठीक सात पैंतीसको निकले। यहा अेक छोटासा झोपड़ा है, परन्तु बड़ा साफ-सुथरा है। घरमें अक बूढ़ेके सिवा कोअी नहीं था। अुसका अिस दगेमें दूसरा बहुत कुछ स्वाहा हो गया है। नारियलके पत्तोंकी छत है। गुवजवाले घासके झोपडे जैसा लगता है। बापूजीको यह झोंपडा खूब पसद आया।

बापूजीके पैर धोकर मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की। आज तो सरदारजीके आदमियोंने ही खड्डा खोदकर मालिश और नहानेकी सुविधाके लिअे परदे डाल दिये। कर्नल जीवनसिंहजीने बापूजीके लिअे साग काटा, और मैं बापूजीके लिअे कूकर किस तरह रखती हू, यह सब दिलचस्पीसे देखा। मैंने बापूजीसे सरदारजीकी बात की तो वे कहने लगे, "ये बड़े जबर्दस्त सैनिक है। सुभाषबाबूके साथ खूब काम किया है। और तलवार-बन्दूकके दाव बढ़िया जानते है। परन्तु यहा पर अहिंसक बनकर बैठे हैं। यह कोअी अैसी-वैसी बात नहीं मानी जा सकती। परन्तु मेरे पास अैसे बहुत सैनिक रहे है। अफ्रीकामें लडाअीके समय जो सेना थी अुसको अपना काम करना ही पड़ता था। प्रत्येक काम हिस्सेके अनुसार बाट लेते थे। अुसमें अच्छे अच्छे पढ़े-लिखे भारतीय तो खाना पकाते ही थे, परन्तु गोरे भी अुत्साहसे शरीक होते थे। अिसलिअे जीवनसिंहजी न पकाते तो मुझे आश्चर्य होता, पकानेसे नहीं होता। जो सैनिक हो गया है, वह हर कामका जाननेवाला होना ही चाहिये।"

मालिशमें बापूजी बीस-पच्चीस मिनट सोये। नहाना दस बजे पूरा हुआ। खानेके समय मारवाड़ी रिलीफ सोसायटीके अेक भाअी जो पुस्तकें लाये थे अुन्हें देखा।

चार बजे बापूजीने दूध, फल, तीन गंतरे और थोडासा शाक लिया। अुसके बाद प्रार्थनामें गये। प्रार्थनामें मुसलमान भाअी बहुत थे। प्रार्थनासे आने पर हरेरामजी मिले। (ये हरेरामजी बिडलाजीके यहां नौकर हैं। हरिजन हैं। दिल्लीमें बापूजीकी खूब सेवा करते थे। अुन्हें बिड़लाजीने बापूकी सेवा करने भेजा था। हरेरामजी बडे ध्यानपूर्वक बापूजीकी सेवामें तल्लीन हो जाते थे।)

हरेरामजी बापूजीको प्रणाम करने आये। बापूजीने अुनसे पूछा, "क्यों आये हो?" और हालचाल पूछे। फिर बापूजीने अिनकार करते हुअे कहा: "यह तपस्या है। मैं बिडलाजीसे यह कहूं कि मेरे लिअे रसोअिया, मोटर-गाडी, विमान, नौकर-चाकर सबकी व्यवस्था कर दो तो वह कर देंगे। परन्तु अिसका नाम यज्ञ नहीं। यज्ञमें कठिनाअी तो आती ही है। और कठिनाअीके बिना अिसे 'तप' कैसे कहा जाय?" अितनी बात समझाकर अुन्हें बिदा किया।

बेचारे बडे निराश हुअे। मेरे पास आकर कहने लगे, तुम बापूसे कहो कि मुझे रख लें। मैंने कहा कि बापूजी जब बिडलाजीकी नहीं मानते तो मेरी तो मानने ही क्यों लगें? और मैं अुनसे कहूं तो वे मुझीको यहांसे निकाल दें।

घूमते वक्त अेक मुसलमान भाअीके आग्रहसे अुनके घर गये। जाते-आते बड़ी तेजीसे चले। सुशीलाबहन आ गअी थी।

घूमकर आने पर बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। प्रार्थना-प्रवचन और डाक देखी। सुशीलाबहनको थोडासा लिखवाया।

मैंने अपनी डायरी लिखी। बापूजीका और अपना बिस्तर किया। सुबहके लिअे सामान बांधा और बापूजीके पांव धोये। दस बजे अुनके लेटनेके बाद पैर दबाये और सिरमें तेल मला। बापूजीके सोनेके बाद अुनका सूत अुतारा। फिर कताअी की। अितनेमें साढे दस हो गये। यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा। कहने लगे, "मैं सोने जाअूं अुसके बाद अधिकसे अधिक पंद्रह मिनटसे ज्यादा जागनेकी तुम्हें छुट्टी नहीं है। यदि काम अधूरा रहे तो सुबह मुझे कह दो कि अितना काम पूरा नहीं हुआ।"

मैं पौने ग्यारह बजे सोअी।

(बापू, ९–१–'४७, फतहपुर)

दासपाड़ा,
१०-१-'४७, शुक्रवार

रोजकी तरह बापूजी दो बजे अुठे। मुझे जगाया। गुजराती पत्र ही लिखवाये — मावलंकरदादा, मणिलालकाका, सुशीलाकाकी, रामदासकाका और कहानाको। अितनेमें प्रार्थनाका समय पास आ गया। दातुन-पानी करके प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजीने शहदका गरम पानी लेते लेते मेरे साथ लगभग चालीस मिनट बातें की।

आजकी बातोंमें बापूजीकी नम्रता चरम सीमाको पहुच गअी। "मेरा आरोप तुम पर था। मैं कहता हू कि मैंने वह आरोप तुम पर बिलकुल गलत लगाया है। मैं तुमसे कही बडा, तुम्हारा दादा हूं। अत तुमसे माफी तो क्या मागूं? फिर भी माफी मागू तो कुछ बेजा नही होगा। परन्तु तुम अैसा नही चाहोगी। मुझे आत्म-सतोष यह हुआ कि मैंने अनजाने अन्याय करके तुम्हे दबाया था, पर अुससे मैंने तुम्हे पहचाना। की बात मैं आज मानता हूं और तुम्हें पहचान सकनेके लिअे आज आनंद अनुभव कर रहा हू। यह विचार मेरे दिमागमें कलसे घूम रहा है कि मनुडीसे कहू या नही? अुसने कहूं तो वह फूल तो नही जायगी? यह विचार भी आया। फिर नींद अुड गअी। घडीमें देखा। दो बजे थे। मुझे लगा कि चलो मनुडीको अुठाकर अुससे अितना कह देना मेरा धर्म है कि मेरे मनने अुसकी निर्दोषता स्वीकार कर ली है। कही मैं अिसमें खप जाअू तो? क्योंकि चारो तरफ अंधेरा ही अंधेरा देख रहा हू। जहां तहां असत्य ही भरा है। अेक तरफ बिहारमें दावानल फूट पड़ा है। कही भी मेल नहीं; अेका नही। अिसमें मुझे टिके रहना है। कहा तक टिकूंगा यह नही कह सकता। तुम्ही देखो न, रोज दस-ग्यारह बजे सोकर दो-अढाअी बजे अुठता हूं, और काम करता हू। आराम तो जरा भी नही मिलता। फिर भी अीश्वर कैसे टिका रहा है, अिसीका आश्चर्य होता है। अिसलिअे तुम्हे यह बात कह दी। अेकाअेक मनमें विचार आया कि कही मैं अिस दुनियामें न रहूं तो तुम्हारे बारेमें अपने खयालकी थोडी झाकी तो तुम्हें करा दूं।"

आदर्श विवाहके बारेमें अपने विचार बताते हुअे बापूजी कहने लगे, "विवाह करना पाप नही, परन्तु आजकल हमने अिसे पाप जैसा बना डाला है। विवाह करनेका अर्थ यह है कि स्त्री और पुरुष साथ मिलकर संसारका जो

भोजनमें तीन खाखरे, शाक, दूध, गंतरे और खोपरेके सन्देशके दो टुकड़े लिये।

बापूजीको खिलानेके बाद नहाकर मैंने कपड़े धोये और जीमकर निबटी तब तक साढ़े बारह हो गये। बापूजी लिखनेके काममें लगे हुओ थे, अिसलिओ मैंने अुनके बरतन मलकर सूत अुतार लिया। बादमें अुनके पैरोंमें घी मला। बापूजीके लिओ गुड़ तैयार किया। बकरीका दूध आज लगभग अढाओी सेर आया था। बादमें कुछ पत्रोंकी नकल की। थोड़ी देर सोओी। तीन-साढ़े तीन बजे बापूजीने जगाया। साढ़े तीन बजे अुनके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखकर पैर दबाये। शामको बापूजी शाक नहीं लेनेवाले थे। दूध और खजूर लेनेवाले थे। मैंने बापूजीकी डायरीकी नकल करके सामान बांधा। अिसमें साढ़े चार बज गये। बापूजीको दूध देकर अपना कामकाज किया, अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद स्थानीय मुसलमान भाओी मिलने आये। बापूजीने शान्ति-समिति बनानेका सुझाव दिया।

प्रार्थनामें बहुत थोड़े आदमी थे, अिसलिओ बापूजीने कहा, "आप अितने थोड़े है, यह मुझे पसंद भी है और नापसन्द भी। पसन्द अिसलिओ कि लोग अपना मुंह दिखाने या मुझे देखने आयें, अिससे तो अुनका न आना ही अच्छा है। परन्तु मैंने ओक बात ओसी सुनी है कि बहुतसे अिस डरसे नहीं आते कि प्रार्थना करने जायेंगे तो पकड़े जायेंगे अथवा मेरे साथ जो पुलिस दल है वह मारेगा। मैं आप सबसे कहता हूं कि अगर मुसलमान यह कह दें कि गांधीका हम कुछ होने नहीं देंगे तो आपको पुलिसका जो झूठा डर है अुसे सरकार पर दबाव डालकर भी मैं मिटा सकता हूं। मैं तो आपका मित्र हूं। आपमें से किसीको पकड़वाने या तंग करनेके लिओ मैं यहां नहीं आया हूं।"

बापूजी और मैं साढ़े नौ बजे सोये। रोजकी तरह पैर दबाकर, तेल मलकर और बापूजीको प्रणाम करके मैं तुरन्त ही सो गओी। अिससे वे बहुत ही खुश हुओ। "हां, अितनी जल्दी सोने लग जाओ तब तो मेरे आनन्दका पार न रहे। परन्तु अिस सीखको ओक कानसे सुनकर दूसरे कानसे निकाल तो नहीं दोगी?"

(बापू, १०-१-'४७, दासपाड़ा)

दासपाड़ा,
१०-१-'४७, शुक्रवार

रोजकी तरह बापूजी दो बजे अुठे। मुझे जगाया। गुजराती पत्र ही लिखवाये — मावलंकरदादा, मणिलालकाका, सुशीलाकाकी, रामदासकाका और कहानाको। अितनेमें प्रार्थनाका समय पास आ गया। दातुन-पानी करके प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजीने शहदका गरम पानी लेते लेते मेरे साथ लगभग चालीस मिनट बातें की।

आजकी बातोंमें बापूजीकी नम्रता चरम सीमाको पहुच गअी। "मेरा आरोप तुम पर था। मै कहता हू कि मैंने वह आरोप तुम पर बिलकुल गलत लगाया है। मैं तुमसे कही बड़ा, तुम्हारा दादा हूं। अत. तुमसे माफी तो क्या मागूं? फिर भी माफी मागू तो कुछ बेजा नही होगा। परन्तु तुम अैसा नही चाहोगी। मुझे आत्म-सतोष यह हुआ कि मैंने अनजाने अन्याय करके तुम्हें दबाया था, पर अुसमे मैंने तुम्हें पहचाना। की बात मैं आज मानता हूं और तुम्हें पहचान सकनेके लिअे आज आनद अनुभव कर रहा हू। यह विचार मेरे दिमागमे कलसे घूम रहा है कि मनुडीसे कहू या नही? अुससे कहूं तो वह फूल तो नही जायगी? यह विचार भी आया। फिर नींद अुड़ गअी। घड़ीमें देखा। दो बजे थे। मुझे लगा कि चलो मनुड़ीको अुठाकर अुससे अितना कह देना मेरा धर्म है कि मेरे मनने अुसकी निर्दोषता स्वीकार कर ली है। कहीं मैं अिसमें खप जाअू तो? क्योकि चारो तरफ अंधेरा ही अंधेरा देख रहा हूं। जहां तहां असत्य ही भरा है। अेक तरफ बिहारमे दावानल फूट पड़ा है। कही भी मेल नहीं, अैका नहीं। अिसमें मुझे टिके रहना है। कहां तक टिकूगा यह नही कह सकता। तुम्ही देखो न, रोज दस-ग्यारह बजे सोकर दो-अढाअी बजे अुठता हूं, और काम करता हू। आराम तो जरा भी नही मिलता। फिर भी अीश्वर कैसे टिका रहा है, अिसीका आश्चर्य होता है। अिसलिअे तुम्हे यह बात कह दी। अेकाअेक मनमें विचार आया कि कहीं मैं अिस दुनियामे न रहूं तो तुम्हारे बारेमें अपने खयालकी थोड़ी झांकी तो तुम्हे करा दूं।"

आदर्श विवाहके बारेमें अपने विचार बताते हुअे बापूजी कहने लगे, "विवाह करना पाप नही, परन्तु आजकल हमने अिसे पाप जैसा बना डाला है। विवाह करनेका अर्थ यह है कि स्त्री और पुरुष साथ मिलकर संसारका जो

जीवन-चक्र चल रहा है अुसे जारी रखनेमें अर्थात् संसारके दुःख दूर करनेमें सहायक हो। दोनों अेक गाड़ीके दो पहिये हैं। विवाहका अर्थ यह नहीं है कि विषय-वासनाका पोषण किया जाय, बहुत बच्चे पैदा किये जाय, जो यहा-वहां भटकते फिरे, जिन्हें खानेके भी लाले पड़ें तो दूध तो मिले ही कहांसे? विवाहका यह अर्थ नहीं कि पति-पत्नी आपसमें झगड़ते रहे, अेक-दूसरे पर चिढ़ते रहे और दोनोंके शरीर नाजुक हो जाय। अिसलिअे विवाह करनेसे पहले मैं सब लड़कियोंसे विचार करनेको कहता हूं। विवाह करनेके बाद ब्रह्मचर्यका पालन करना बहुत कठिन होता है। यदि ब्रह्मचर्यका पालन करके दोनों विचार-पूर्वक जीवन बितायें तो कितने अूचे अुठ जाय? मैं अितना अूचा अिसलिअे नहीं अुठा हूं कि मैं बैरिस्टर बन गया या बाकी अितनी पूजा आज अिसलिअे नहीं होती कि वह मेरी पत्नी थीं; बल्कि अिसका कारण यह है कि हम दोनोंने ब्रह्मचर्यका पालन किया। अिसमें भी बा यदि दृढ़ न रही होती तो भी हम अितने अूचे नहीं अुठ सकते थे। लोगोंने मुझे जो महात्माका पद दिया है अुसका श्रेय बाको है। ब्रह्मचर्यका पालन करनेका अर्थ है निर्विकार होना। जो निर्विकार हो अुसके सामने अप्सरा भी आकर क्यों न खड़ी रहे, तो भी अुसकी दृष्टि दूषित नहीं होती। जो निर्विकार है अुसमें क्रोध, मोह, असत्य, हिंसा, चोरी, झूठ, परिग्रह आदि कुछ भी नहीं हो सकता। अथवा मैं तो यहां तक जाअूगा कि अुस आदमीमें अैसे अवगुण प्रवेश ही नहीं कर सकते। अिन सबके साथ अुसके मनमें यदि रामजी रमते हों तो कभी बीमार पड़ना तो क्या अुसे अेक फुसी तक न होगी और वह मृत्युसे रामजीका नाम लेते हुअे हसते हंसते अेक मित्रकी भांति भेट करेगा। अुसे रोगसे पीड़ित होकर मरनेका मौका ही नहीं आ सकता। यह हुआ विवाहित जीवनका बड़ा लाभ। परन्तु यह लाभ तो कोअी विरले ही आदमी प्राप्त कर सकते हैं। यह लाभ अुठाने जितनी हमारी आत्मा प्रबल न हो तो कुछ भी नहीं हो सकता। . . . नहीं तो . . . के जैसे हाल होते हैं।

"कोअी काम करना हो तो अुसके बारेमें हमें पूरा ज्ञान होना चाहिये। अुदाहरणार्थ रोटी (बाजरे) की कैसे बनाअी जाती है, यह तुम्हें मालूम है? मेरी माकी रोटी अभी तक मुझे याद आती है। आजकल तो चकले पर थापकर बनाअी जाती है। मेरी मा, बा वगैरा सब हाथसे थाप-थापकर बनाती थीं। अिसमें चकलेकी जरूरत नहीं पड़ती। हा, अेक हाथ किसी

समय काम न करे तो शायद चकलेकी जरूरत पड़े। परन्तु अधिक मीठी तो तभी लगती है जब दोनों हाथोंसे थापकर बनाओी जाय। तुम्हें तो अिस स्वादका शायद पता भी नहीं होगा।

"अिसी तरह . . . अिन दो शक्तियोंके मेलसे अधिक सेवा करनेके लिअे विवाह करनेका मेरा अर्थ है। सेवा अर्थात् देशसेवा करना। देशसेवाका अर्थ यह नहीं है कि मंत्री बनें तो ही सेवा हो सकती है। घरकी संभाल रखना भी देशसेवा है। अुदाहरणके लिअे, रसोओी बनाना। रसोओी अिस ढंगसे बनानी चाहिये कि अनाजका अेक कण भी अैसे कठिन समयमें बेकार न जाय। थोड़ी खानगियोंमें शरीरके लिअे आवश्यक सभी तत्त्व मिल जाने चाहिये। कपड़ा यह सोचकर पहनें कि शरीरकी रक्षाके लिअे पहनना है। हमारे देशका अेक भी आदमी नगा-भूखा न रहना चाहिये। जितनी जरूरत हो अुतना ही संग्रह किया जाय। आजकल बहुतसे घरोंमें स्त्रियां किफायत तो करती हैं, परन्तु संग्रह अितना करती हैं कि जिससे दूसरोंको खाने-पीने, पहनने वगैराकी चीजें नहीं मिलतीं अथवा महंगी लेनी पड़ती हैं। यह स्वार्थपूर्ण मितव्यय कहा जायगा। अिसलिअे अैसी वृत्ति पैदा करनी चाहिये कि हम जो कुछ करें वह अपने देशको ध्यानमें रखकर करें। अैसी दृष्टि रखकर काम करनेवाली गृहिणी मेरी दृष्टिसे बड़ीसे बड़ी देशसेवा करती है। आजकल तो देशसेवाका नाम बड़ा हो गया है। लोग मानते हैं कि अखबारोंमें फोटो और नाम छपना अथवा जेलमें जाकर मंत्री बन जाना ही सच्ची देशसेवा है। अिसलिअे सभी मंत्री बनना और सत्ता लेना चाहते हैं। अैसी हालतमें सच्चे मंत्री कैसे काम कर सकते हैं? बेशक, मंत्रियोंकी भी देशको जरूरत है। परन्तु मंत्री . . . मंत्री-पदके लिअे योग्य हो तो ही शोभा देता है। अुस पदको सुशोभित करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। अितना समझ सकें तो अेक अपढ़से अपढ़ स्त्री भी देशकी सेवा करती है। ये सब विचार तुम्हींको अिस ढंगसे समझाता हूं। . . . को भी समझाये तो हैं, परन्तु जरा दूसरे ढंगसे। अुसका रहन-सहन भिन्न है। वह विवाहित थी। तुम अभी बच्ची हो। तुम सत्रह वर्षकी हो गअी, परन्तु मेरी दृष्टिमें तो छः-सात वर्षकी बालिका ही हो। . . .

"यह नोआखालीका यज्ञ तुरन्त पूरा हो जायगा, अैसा सोचना आकाश-कुसुम जैसा है, अिसलिअे बेकार है। अिस समय मुझे अैसे चिह्न दिखाओी नहीं देते कि हिन्दू-मुसलमानोंका हार्दिक वैमनस्य बिलकुल नष्ट हो

जाय। वह तभी मिटेगा जब मुझमें पूर्णता आ जायगी। परन्तु अभी तक अितना रामनाम हृदयगत हो गया है अैसा दावा नहीं है। अुस दिशामें मेरा प्रयत्न जरूर है।

"आजकी सब बातोंसे तुम्हें गंभीर बननेका कोअी कारण नहीं। माके नाते मैं अपना फर्ज अदा कर रहा हू। मेरे मनमें जो भरा है वह तुम्हें पिला रहा हू। अपनी डायरीमें ये बातें विचारपूर्वक लिखना, क्योंकि मुझे भय है कि आजकी हमारी बातें तुम्हें जरा कठिन मालूम होंगी। साथ ही अेक बातमें से दूसरी अनेक बातें निकल आअी हैं। परन्तु आजकी बातें तुम्हारी जीवन-रचनाके लिअे बुनियादी हैं। मैं मर जाअूगा तब तुम्हारे लिअे, जयसुखलालके लिअे, तुम्हारी बहनोंके लिअे ये अुपयोगी सिद्ध होंगी। मैं पुरुष होकर भी तुम्हारी मा बना हू। अिसलिअे मेरा भार आजकी बातें तुम्हें कह देनेसे हलका हो गया।"

(ठीक है, परन्तु लबा लिखा है। बापू, लामचर, ११-१-'४७, शनि।)

जगतपुर,
१०-१-'४७, शुक्रवार

अुपरोक्त बातें बापूजीने सवेरे तड़के ही कही थीं। अुन्हें लिखनेमें मेरा पूरा अेक घंटा गया। बापूजी प्रार्थनाके बाद प्रवचन सुधारनेमें और अपने काममें लग गये और मैंने यह सब लिखनेका काम पूरा किया। बापूजीने अभी देखा नहीं। मुझे डर है कि बापूजीको लबा लगेगा। बापूजी ७-४० पर बाहर आये और हमारी यात्रा शुरू हुअी। बंगलाका पाठ लिखनेमें साढे सात बजकर दस मिनट हो गये। साधारण नियम साढे सात बजे यात्रा शुरू करनेका रखा है।

दासपाडासे यहां आनेका हमारा रास्ता साफ किया गया था। परन्तु मुसलमान भाअियोंने अुसे गोबरमें और जहां तहां मलसे गदा कर दिया था। यह भी मालूम हुआ कि अैसा जान-बूझकर किया गया है। बापूजी कहने लगे, "यह मुझे अच्छा लगता है। अिस प्रकार यदि मेरे प्रति अुनका रोष बाहर निकले तो अिसमें कोअी दोष नहीं।"

यह झोपड़ा अेक हिन्दूका है। आकर सदाकी भांति मालिश-स्नान वगैरासे निबटनेमें साढ़े दस हो गये। मालिशमें बापूजी चालीस मिनट सो गये।

दोपहरके ग्यारह बजे भोजन हुआ। भोजनमें दो खाखरे, शाक, दूध और अनन्नास लिया। साढ़े बारहसे अेक तक आराम किया। अेक बजे अुठकर नारियलका पानी पिया और काता। दो बजे प्यारेलालजी आये, अुनके साथ बातें की। अितनेमें बहनें मिलने आ गअी। बहुतसी बहनोंको जबरन् मुसलमान बनाया गया था। कुछ बहनें अैसी दु:खी थी मानो अुनके पति और पुत्रकी हत्या हुअी हो। बापूजीके सामने हिचकियां भर भर कर रोते हुअे अपना हृदय अुडेल रही थी। बापू बोले, "तुम अिस तरह रो रही हो और मैं हिचकियां भरकर तुम्हारी तरह रोता नहीं। तुम्हारे और मेरे बीच अितना ही फर्क है। मेरा हृदय रो रहा है। तुम्हारा दु:ख मेरा दु:ख है। अिसीलिअे यहां आया हूं। रामनामके सिवा आश्वासन प्राप्त करनेको और कोअी दवा नहीं है। सबसे बड़ी दवा यही है। कितना ही रोयें तो भी गअी हुअी चीज वापस नहीं आयेगी। यह जान लें तो फिर अिस प्रकार दु:खका कारण नहीं रह जाता।"

आश्वासनके ये शब्द बापूजी बड़ी गंभीरतासे कह रहे थे। और जैसे जैसे वे बोलते जाते थे, वैसे वैसे वातावरण गंभीर बनता जा रहा था। ये बहनें मिलने आअी तब अैसा करुणामय वातावरण था कि अच्छे अच्छोंका दिल भी काबूमें न रहे।

साढ़े तीनसे चार तक बापूजीने मिट्टी ली। कुछ मुलाकाती आये हुअे थे, अुनसे मिले। डाकके पत्रों पर हस्ताक्षर किये।

शामको केवल गुड़ ही लिया। दूध, फल सभी छोड़ दिया। कहने लगे: "आज मिलने आनेवाली बहनोंका दृश्य अैसा था जो आंखोंके सामनेसे हट नहीं सकता। कौन जाने अभी अैसे और कितने दु:खद दृश्य देखना नसीबमें होगा!"

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी। वहांसे आकर घूमे। प्रवचन देखा। मुलाकाती आये थे अुनसे मिले। आठ बजे लेटे लेटे अखबार सुने।

लगभग दस बजे बापूजी सो गये।

मैंने अपना सामान मिलाकर पैक किया। डायरी पूरी की। बापूकी डायरीकी नकल की। साढ़े दस हुअे हैं; सोनेकी तैयारी है। बापूजीके १२० तार हुअे।

बाबाने बापूजीके पैरोंमें लगानेको हेजलीन भेजा है। अुसे आज सोते समय लगाकर पट्टियां बांधी हैं।

लामचर,
११–१–'४७, शनिवार

जगतपुरमें रात बिताओी। दो बजे बापूजीने मुझे जगाया। मुझसे डायरी लिखनेके बारेमें पूछा। फिर पत्र लिखवाये। पहला पत्र माधवदास मामा (पू० कस्तूरबाके भाओी)को लिखवाया। और दूसरे . . . को लिखवाये। प्रार्थनाका समय हो जाने पर लिखाना बन्द किया। दातुन-पानी करके प्रार्थना की। दातुन करते हुअे आजकल मैं क्या खुराक लेती हूं, कब लेती हूं, अित्यादि बातें पूछीं। अितने अधिक काममें भी बापूजी मेरी छोटी छोटी बातोंसे परिचित रहते हैं। प्रार्थनाके बाद अुन्हें गरम पानी देकर और रस तैयार करके बर्तन मले और सामान तैयार किया। सुबह मुझे काफी वक्त मिल गया। क्योंकि सुबहके लिअे जरूरी चीजें बाहर रखकर सारा सामान मैंने रातको ही बांध लिया था। साढ़े सात बजते ही बापूजीने चलनेकी तैयारी की। बापूजीके सूतको दुबटा किया। वे बाथरूममें गये अुतनी देरमें बिस्तर बांधा। घड़ीमें ठीक सात चालीस होने पर जगतपुर छोड़ा।

रास्तेमें भजन और रामधुन जारी रही। बीचमें अेक बिलकुल जला हुआ घर देखा। वहां खूनके दाग भी थे। अैसा लगा कि वहां हत्याअें हुओी होंगी।

मैंने बापूसे अपनी कलकी डायरी लिख चुकनेकी बात कही थी, अिसलिअे डाक और अपनी डायरी यहां पहुंचते ही बापूजीकी मेज पर रख दी। पैर धोते समय बापूजीने पत्र देखकर अुन पर हस्ताक्षर किये। मालिशमें डायरी देखने लगे। परन्तु थकावट थी, अिसलिअे सो गये।

स्नानके बाद खाते समय मैंने अपनी डायरी सुनाओी। बापूजी थोड़ेमें लिखनेको कहते हैं, मगर मुझे थोड़ेमें लिखना नहीं आता। मैंने कहा, मुझे आपका अेक अेक शब्द लिखना है। बापू कहने लगे, "यह तुम्हारा झूठा मोह है, परन्तु मुझे जबरन कुछ नहीं कराना है। तुम जितना अधिक लिख सको लिखो। मुझे वह अच्छा लगेगा, क्योंकि मेरा खयाल है कि लिखनेसे अक्षर सुधरते हैं।"

खाते-खाते कलकी डायरीमें हस्ताक्षर किये। अुसमें भी लंबा लिखनेकी आलोचना की। परन्तु कुल मिलाकर बापूजीको वह अच्छा लगा। तुरन्त ही लिख ली थी, अिसलिअे कोओी खास बात छूटी नहीं थी।

भोजनमें शाक, बारह औंस दूध, पांच बादाम और पांच काजूकी चटनी ताओ। बादाम और काजू कराचीसे जयंतीभाओने भेजे हैं। अुनका पारसल भटकता भटकता आज मिला।

बापूजीके दायें पैरका अंगूठा दुख रहा है। और कोओ खास बात नहीं हुओ।

जगतपुरसे लामचरका रास्ता बहुत ही खराब था। जमीन बहुत ठंडी थी और खेतोंमें चलकर जाना था। अेक नया परिवर्तन यह हुआ कि आज पहला ही दिन है जब प्रत्येक मुसलमान भाओने बापूजीको सलाम ली और अुन्हें सलाम की।

बापूजी अखबार सुनते सुनते जल्दी सो गये। दस बजे फिर अुठे। मैंने अिस बीच डायरी लिखी और घर पत्र लिखा। सूत अुतार रही थी कि बापूजी जाग गये। बाथरूममें जानेके बाद बिस्तर किया। बापूजी साढ़े दस बजे बिछौने पर लेटे। अुनके सिरमें तेल मला, पैर दबाये और सदाकी भांति प्रणाम किया। अुन्होंने मुझ पर वात्सल्यपूर्ण हाथ फेरा। मैं कब सो गओी, अिसका पता ही नहीं रहा। काम खूब रहता है, परन्तु रातको नींद आनेमें पांच मिनट भी नहीं लगते।

कारपाड़ा,
१२–१–'४७, रविवार

कल डॉ० सुशीलाबहन नय्यरने बापूजीको रोज डेढ़ दो बजे अुठनेसे मना कर दिया। अिसका अुनके स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है। अंतमें बापूजी समझ गये और जल्दी न अुठनेकी बात स्वीकार कर ली। परन्तु आज अपनी आदतके अनुसार डेढ़ बजे अुठ गये। मैं भी अुठी। परन्तु दोनों फिर सो गये और प्रार्थनाके समय अुठे। प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया तथा रस पिया। सुशीलाबहनके साथ बातें करनी थी, अिसलिअे और कोओ लिखनेका खास काम नहीं कराया।

हम लामचरसे ७–४० को निकले। ८–४५ पर यहां पहुंचे। रास्तेमें . . . के साथकी बातोंमें अुन्हें सबके साथ मिलकर अेक हो जानेको कहा। कह सकते हैं कि कारपाड़ामें भाओी-बहनोंने भव्य स्वागत किया। यह गांव

सुशीलाबहन पैका है। गांवके लोगों पर अुनकी बड़ी अच्छी छाप पड़ी है। खास तौर पर स्त्रियां और लड़कियां अुनके प्रति बहुत आदर रखती हैं।*

अुन्होंने बापूजीके स्नान और मालिशके लिअे सुन्दर व्यवस्था की थी। अिसलिअे बापूजी पहुंचते ही सीधे मालिश और स्नानके लिअे चले गये। और समय भी बहुत बच गया। मालिश और स्नानके बाद भोजनमें शाक, मखन, दूध, पांच बादाम और पांच काजू लिये। ये बादाम और काजू सुशीलाबहनने बापूजीके लिअे बहुत समयसे बचा कर रखे थे, ताकि बापूजी अुनके घर आयें तब दिये जा सकें। बापू कहने लगे, "यह तो शबरीके बेरों जैसी बात हुआी।"

दोपहरको बहनोंकी सभा थी। अुसमें बापूजीने सबसे कातनेका अनुरोध किया। बहनें बहुत अधिक संख्यामें थीं। कारीगरोंकी भी सभा थी। अिस प्रकार दोपहरका सारा समय अिन दोनों सभाओंमें ही चला गया। शामके भोजनमें दूध और थोड़ासा पपीता लिया। आज बापूजीने १५० तार लगभग ४५ मिनटमें काते। धनुष-तकलीसे काता था। शामको थकावट लग रही थी, अिसलिअे लगभग पौने नौ बजे ही सो गये। शामको छः बजकर छः मिनट पर मौन लिया। सरदार निरंजनसिंह गिल आये थे।

(बापू, नारायणपुर, १५-१-'४७)

शाहपुर
१३-१-'४७, सोमवार

चार बजे अुठे। आज प्रातःकालीन प्रार्थना कारपाड़ामें सुशीलाबहनने मैंने कराअी। नियमानुसार प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद लिया। अेक तार बादिमजाके नाम अम्तुस्सलाम बहनके अुपवासके बारेमें किया। बापूजी डाक पढ़ते पढ़ते सो गये थे। ठीक साढ़े सात बजे अुठे। और शाहपुर पालीम पर कारपाड़ासे यहां आनेको रवाना हुअे। चलनेसे पहले सुशीलाबहनने सबके ललाट पर तिलक लगाया। बापूजीके साथ दोनों सुशीलाबहन थीं; डॉ०

* सुशीलाबहन पै आजकल कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी मंत्री हैं। नोआखालीमें बापूजीके साथ जितने कार्यकर्ता थे, अुनमें से प्रत्येकको अेक अेक गांव सौंपा गया था; अुसी तरह अिन बहनको यह गांव सौंपा गया था।

सुशीलाबहन नय्यर और सुशीलाबहन पै। प्यारेलालजी भी साथ थे। अुन्होंने चलते-चलते मुझे गीताके १२ वें अध्याय सम्बन्धी प्रश्न समझाये।

हम ठीक साढ़े आठ बजे यहा पहुंचे। आज मालिश और स्नान सब मैंने कराया। भोजनमें बापूने दो खाखरे, आठ औंस दूध, नीबू, कच्चा शाक और अेक संदेशका टुकड़ा लिया। खाते समय   के साथ खानगी बातें होनेके कारण मैं नहाने-धोने चली गअी और जल्दी काम पूरा कर लिया। बापूजी खाकर धूपमें जमीन पर लेटे। सिर पर छाया कर ली थी। शाम तक बाहर खुलेमें ही रहे। सुचेताबहन दोपहरको आअी थी। अुनकी भयानक बातें सुनकर तो दिल कांप अुठता था। क्रूर ढंगसे हिन्दू स्त्रियोंकी अिज्जत ली गअी थी। डॉ० सुशीला नय्यर मुर्दोंकी जाच करने लामचर गअी और वहांसे अम्तुस्सलाम बहनकी परीक्षा करके साढ़े चार बजे लौटीं।

शामको आठ औंस दूध और खजूरकी आठ पेशिया भाप दिलवाकर ली।

प्रार्थनाके बाद घूमकर जल्दी आ गये। नवा आठ बजे बापूजीके पैर धोये और वे सोये। पैरका अंगूठा अब ठीक है। बापूजी कहते है, "तुम सबने मेरी सेवा कर करके मुझे कोमल बना दिया है, अिसलिअे मेरे पैर भी कोमल बन गये है। अिसका फल तो मुझीको भुगतना चाहिये न?"

(बापू, नारायणपुर, १५-१-'४७)

भटियालपुर,
१४-१-'४७

रोजकी तरह चार बजे ही अुठे। प्रार्थनाके बाद शाहपुरकी गृह-स्वामिनीके साथ बातें की। अुसने बापूजीसे कहा, "हमें डर लगता है।" बापूजी बोले, "अगर डर लगता है तो यह देश छोड देना तुम्हारा धर्म माना जायगा। जहा डर न लगे वहां जाना चाहिये।" गरम पानी पीनेके बाद अनन्नासका रस दिया। रस पीकर बापूजीने बंगला बारहखडी और वर्णमाला लिखी। लिखते लिखते झपकी आ गअी। ७-३५ पर अुठे और भटियालपुरके लिअे रवाना हुअे।

आजका यह गांव प्यारेलालजीका है। रास्तेमे कुछ मुसलमानोके घर पर दो-दो चार-चार मिनटके लिअे ठहरे थे। मैं मुसलमान बहनोंसे मिलनेके लिअे अन्दर जाती, परन्तु मुझे देखकर वे भाग जाती। फिर भी मैं अंदर जाकर

अुनसे बातें करती। बापूजीसे मिलनेकी अुनसे प्रार्थना करती और कहती, "आपके आंगनमें अेक संत महात्मा आये हैं। आप अुनके दर्शन किये बिना कैसे रह सकती हैं?" अेक बाड़ीमें पहले तो स्त्रियोंने बापूके सामने आना स्वीकार किया, फिर अिनकार कर दिया। परन्तु दूरसे अुन्हें देखा। दूसरी अेक बाड़ीमें तो बहनोंने बापूजीके साथ फोटो खिचवानेकी मांग की। बापूजी बीचमें कुर्सी पर बैठे, बहनें खड़ी रहीं और अुस परिवारके अेक लड़केने फोटो लिया। अैसा लगा जैसे बापूजीके प्रति बहनों और कुटुम्बके पुरुषोंमें कुछ भक्ति हो। बापूजी कभी 'पोज' देते ही नहीं, परन्तु अिस ढंगसे ले लिया। यहां आनेके बाद यह पहला ही अवसर था जब बहनें अितनी आजादीसे मिलीं।

हम सवा नौ बजे भटियालपुर पहुंचे। दोनों सुशीलाबहन वहां मौजूद थीं। डॉ॰ सुशीलाबहनने मालिश की। मैंने बापूजीको स्नान कराया। आज बापूजीके लिअे प्यारेलालजीने खाखरे बनाये थे। आठ औंस दूध, दो खाखरे और कच्चा शाक लिया। दोपहरको निरंजनसिंह गिल आये थे। आज यहां अेक ठाकुरजीके मंदिरमें बापूजीके हाथों मूर्तिकी फिरसे प्रतिष्ठा की गअी। अिसकी मूर्ति दंगेमें अुठा ली गअी थी। अिस अुत्सवमें बहुतसे मुसलमान भी आये थे। जिन मुसलमानोंने मूर्ति अुठाअी थी अुन्हींके सान्निध्यमें मूर्तिकी दुबारा प्रतिष्ठा होना कोअी छोटा-मोटा काम नहीं माना जा सकता। मुसलमानोंने प्रतिज्ञा ली कि हम अपनी जान देकर भी अिस देव-मंदिरकी रक्षा करेंगे। आरती हुअी और प्रसाद बांटा गया। . . .

नित्यके अनुसार प्रार्थना वगैराका क्रम रहा। शामको भोजनमें केवल दूध और भापसे पकाया हुआ मेवा लिया। रातको दस बजे बापूजी सोये।

(बापू, नारायणपुर, १५-१-'४७)

९
कड़ी परीक्षा

नारायणपुर,
१५–१–'४७

आज भी बापू सदाकी भांति चार बजे ही अुठे। परन्तु कह रहे थे कि "तीन बजेसे जाग रहा हूं।" प्रार्थना नित्य क्रमके अनुसार। . . . ७–३५ पर यहां आनेके लिअे भटियालपुर छोड़ा। रास्तेमें डॉ० सुशीला-बहन अलग होकर अपने गांव चली गअीं।

यहां पहुंचने पर पैर धोकर मैं बापूजीके लिअे नहानेकी तैयारी करने लगी। पर 'खानेकी पेटी' में रोज पैर घिसनेका जो पत्थर रखती हूं वह नहीं मिला। खूब ढूंढा परन्तु कहीं भी नहीं मिला। बापूजीसे कहा तो बोले, "तुमने बड़ी भूल की है। कदाचित् मनुडी खो जाय तो काम चल सकता है, परन्तु पत्थर खो जानेमें काम नहीं चल सकता। मैं चाहता हूं कि वह पत्थर तुम स्वयं ही ढूंढकर लाओ। निर्मलबाबूसे कह देना कि मेरे लिअे खाना तैयार कर लें। परन्तु पत्थर तो तुम खुद ही ढूंढने जाओ। अैसा करोगी तो दूसरी बार कोअी चीज भूलोगी नहीं। और अिसमें तुम्हारी और मेरी परीक्षा होगी कि मैं तुम्हें निर्भीकताका कैसा पाठ पढ़ा सका हूं, और तुमने अुसे कितना हजम किया है?"

मैंने स्वयंसेवकको साथ ले जानेके लिअे पूछा तो बापूने साफ अिनकार कर दिया। और मैं भी थोड़ी गुस्सेमें बापूजीको छोड़कर चली गअी। मुझे डर तो लग रहा था कि कोअी पकड लेगा तो क्या होगा। नारियलकी घनी झाड़ियां थीं और मुश्किल रास्ता था। परन्तु किसी तरह अुस बाड़ीमें पहुंची जहां भटियालपुरसे यहां आते हुअे बापूजीके पैर बहुत ठंडे हो जानेके कारण अुन्हें धोनेके लिअे पत्थर निकाला था। बुढियाने वह पत्थर फेंक दिया था, परन्तु तुरन्त मिल गया। अुसे लेकर अेक बजे बापूजीके पास आअी। रास्ते भर मनमें रामनामकी रट लगाती रही। शायद अितना अीश्वर-स्मरण मैंने आजतक कभी नहीं किया होगा। भूख भी अुतनी ही

कड़ाकेकी लगी थी। आज बापूजीकी अमुक सेवा छूट गअी, अिससे मनमें अपार दुःख हुआ। पत्थर बापूजीके सामने डाल कर बोली — "लीजिये आपका पत्थर।" और मैं रो पड़ी।

बापूजी खिल-खिलाकर हंस पड़े। मुझे लगा कि मेरा तो दम निकल गया और ये हंस रहे हैं! फिर कहने लगे, "आज तुम्हारी परीक्षा हो गअी। अीश्वर जो करता है वह भलेके लिअे ही करता है। पहले ही दिन मैंने तुमसे कह दिया था कि मेरे यज्ञमें शरीक होना बड़ी हिम्मतका काम है। अगर जरा भी हिम्मत हार गअी तो नापास हो जाओगी, अिसलिअे वापस जाना हो तो चली जाओ। यह तुम्हें याद है? अिस पत्थरके निमित्तसे तुम्हारी परीक्षा हुअी। अिसमें मेरी दृष्टिसे तुम अुत्तीर्ण हुअी हो। मुझे अिससे कितना आनन्द हुआ, अिसका तुम्हें पता नहीं है। साथ ही तुम अेक सुन्दर पाठ भी सीखीं। पत्थर तो बहुत मिल जायेंगे, दूसरा ढूंढ लूंगी — अैसी लापरवाही नहीं रखनी चाहिये। प्रत्येक अुपयोगी वस्तुको संभालकर रखना सीखना चाहिये।"

मैंने कहा, "बापूजी, अगर दिलसे कभी रामनाम लिया हो तो आज ही लिया है।"

बापूजी बोले, "हां, जब दुःख पड़ता है, तभी अीश्वर याद आता है। फिर भी अुसकी दया कितनी अपार है! मनुष्य सुखमें अुसका स्मरण नहीं करता, परन्तु दुःखमें थोडा भी याद करता है तो अीश्वर अुसे बचा लेता है।"

अिस प्रकार मुझ पर आअी हुअी अिस अकल्पित विपत्तिने दोपहर तकका सारा समय ले लिया और दूसरा कुछ भी काम नहीं हो सका।

डेढ बज जाने पर बापूजी कहने लगे, "तुम्हें खूब भूख लगी होगी। खाना हो तो खा लो। परन्तु मैं तो चाहूंगा कि नारियलका पानी या फल लेकर थोडी देर आराम कर लो। अिससे तुम्हारी थकावट अुतर जायगी।"

मैंने अिनकार करते हुअे कहा कि कपडे धोकर और बहुतसा काम पड़ा है अुसे पूरा करके खाअूंगी। परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा।

बापूजी दोनों पलड़े बराबर करा लेते हैं। अेक तरफ कड़ी धूपमें अितनी दूर पत्थर लेनेको भेजा, और दूसरी तरफ आने पर जबरन् हलका

भोजन कराकर आध घंटे सुलाया। बापूजीका सब काम अैसा ही होता है और अिससे सचमुच जीवनका वास्तविक निर्माण होता है।

शामको रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद घूमते समय बापूजी कहने लगे, "अगर आज तुम्हें गुंडे पकड़ लेते और तुम वहां मर गअी होती तो मैं खुशीसे नाचता। परन्तु यदि तुम डर कर भाग आती तो मुझे जरा भी अच्छा न लगता। आज प्रातःकाल पत्थरके प्रसंगसे मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी थी। यह समझकर ही मैंने तुम्हें भेजा था। मैंने तुम्हें अिस तरह अकेले भेजकर कितना खतरा अुठाया, अिसका तुम्हें खयाल नहीं आया होगा। मुझे लगा कि यह लड़की 'अेकला चलो रे' का गीत तो स्वस्थ स्वरसे गाती है, परन्तु अिसने अुसे पचाया कितना होगा? भगवानकी अिच्छासे तुम पत्थर भूल आअी, अिसलिअे मेरे मनमें जो अिच्छा थी वह पूरी हुअी। आजके प्रसंग परसे तुम विचार करना कि मैं कितना कठोर हो सकता हूं। मुझे भी अिसका भान हुआ और तुम्हें तो हुआ ही होगा।"

लामचरसे बापूजीने डायरी नहीं देखी थी, अिसलिअे घूमकर लौटने पर बीस मिनटमें डायरी सुन ली और तुरन्त ही हस्ताक्षर कर दिये।

बादमें अखबार सुने। साढ़े नौ बजे सोनेकी तैयारी की। आज बापूजीके अेक सौ चौबीस तार हुअे। खुराक रोजकी तरह। शामको छः औंस दूध लिया। दो औंस कम कर दिया।

(बापू, १५-१-'४७, नारायणपुर)

रामदेवपुर,
१६-१-'४७

आज रातको तीन बजे बापूजीने मुझे जगाया। मैं घुटने समेटकर सो रही थी। अिसलिअे सीधी सोनेको कहा। फिर कहने लगे, "अब तक तो तुम सब कुछ मुझमें श्रद्धा रखकर रही हो। परन्तु अब जो कुछ करो वह समझकर, ज्ञानपूर्वक, करो तो तुम्हारी शकल बदल जायगी। श्रद्धा अंध-श्रद्धा नहीं होनी चाहिये। हम जो कुछ करें अुसमें ज्ञानपूर्वक हमारी श्रद्धा होनी चाहिये। कोअी आदमी कुछ भी पढ़ाअी करे, अुदाहरणार्थ शब्द या वर्णमाला सीखनेकी श्रद्धा तो रखे परन्तु वर्णमालाका ज्ञान प्राप्त न करे, ह्रस्व-दीर्घ, मात्रा, शून्य, अल्पविराम, पूर्णविराम वगैरा कहां और कैसे लगाये जायें,

यह समझे विना चले तो कभी बार अर्थका अनर्थ हो जाता है। वैसे ही तुम्हें भी अब केवल श्रद्धा न रखकर अुसमें ज्ञानको मिलाना चाहिये। गीतामें कहा है कि :

> यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन।
> ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा॥
> न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
> तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति॥
> श्रद्धावाल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
> ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥
> अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
> नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः॥

अिसलिअे तुम अपने भीतर ज्ञानपूर्ण श्रद्धा पैदा करनेकी कोशिश करो।"

अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया। अिसलिअे प्रार्थनाके बाद निर्मलदाने प्रार्थना-प्रवचनका अनुवाद करके बताया। मैं डायरी लिख रही थी कि . . . आये और अुनके गांवकी क्या प्रारंभिक तैयारी करनी है यह पूछ गये। साढ़े सात बजे नारायणपुर छोड़ा। वहांसे यह गांव दूर माना जा सकता है। आज ठंड खूब थी। धूप बिलकुल नहीं थी। रास्तेमें बापूजीके दायें पैरकी पट्टी निकल गअी। यह थोड़ा चल लेनेके बाद पता चला। बापूजी कहने लगे, "वह पट्टी तो ढूंढनी ही चाहिये।" कर्नल जीवनसिंहके अेक साथी आधी दूर तक जाकर पट्टी ढूंढ लाये। अिससे बापूजी आनंदित हुअे। बोले, "मुझे बड़ा अच्छा लगा। हमारे आलस्यके कारण अेक चिन्दी भी चली जाय तो भारतको कितनी हानि पहुंचे?"

रास्तेकी अेक वाड़ीमें अेक बहनने पैर धोनेके लिअे गरम पानी कर रखा था। वहां पैर धोये। अेक मुस्लिम वाड़ीमें भी गये। यहां हम पौने नौ बजे पहुंचे। पैर धोनेका पानी तैयार था। यह गांव कनुभाअीका है। अुनकी व्यवस्था सुन्दर थी। बाथरूम और मालिश-घर भी तैयार कर रखा था। अिस गांवमें आकर मुझे कोअी खास तैयारी नहीं करनी पड़ी। पैर धोते समय बापूजीको डंडा-रास (काठियावाड़ी) दिखलाया गया। स्थानीय देहाती बच्चोंको 'सियास्वामीकी जय, प्यारे राघवकी जय, बोलो हनुमान कृपालुकी जय, जय, जय'—धुनके तालोंके साथ रास अच्छी तरह सिखाया गया

था। बापूजीको पैर धोते समय ही यह राग बताया गया, अिसलिअे अुनका समय बच गया। यह व्यवस्था अुन्हें बहुत पसंद आयी।

आज . . . ने बापूजीको मालिश करनेकी मांग की। मुझसे पूछा तो मैंने कहा, "आपको सेवा करनी हो तो जरूर कीजिये। मैं जानती हूं कि बापूजीकी कोअी भी सेवा करनेको मिले तो अुसका आनंद अनोखा होता है। अिसलिअे मैं मना नहीं कर सकती।" परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा। कहने लगे, "यह मेरे स्वभावमें है कि जो चीज लगातार चलती आयी हो अुसे बदला न जाय। मुझे आज यह परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। तुम्हें . . . को अुनका धर्म बताना चाहिये था। मैं तुममें अितनी हिम्मत पैदा करना चाहता हूं कि जो सच्ची बात हो वह सबसे स्पष्ट कह दो। तुम्हें कहना चाहिये था कि बापूकी सेवा आपके लिअे मुख्य वस्तु नहीं है। आपके लिअे अिस गांवकी सेवा ही सच्ची सेवा है। यदि अिसमें से आप जरा भी विचलित होंगे तो अुतना पाप करेंगे। साथ ही, बापूकी सेवा गांवकी सेवा करनेके समयमें से चोरी करके ही तो करेंगे! मान लीजिये कि बापू न आये होते तो आपने अुतने समयमें गांवकी कुछ न कुछ सेवा तो की ही होती? जब तुम अितना और अिस तरह कहनेका साहस अपनेमें पैदा करोगी, अुस दिन मैं मानूंगा कि अब हर हालतमें तुम्हारा कुशल ही है। सच बातसे किसीको बुरा लगेगा या अच्छा लगेगा, यह विचार नहीं किया जा सकता। हां, मर्यादामें रहकर अच्छी भाषामें कहना चाहिये। किसीको अच्छा लगनेके लिअे हम अपना नियम तोड दें तो दुनियामें आगे नहीं बढ़ा जा सकता। तुम्हें पता है न कि बच्चोंको हमेशा मीठा ही मीठा भाता है। फिर भी माता अुन्हें जिलानेके लिअे या तदुरुस्त रखनेके लिअे कभी कभी निष्ठुर बनकर कड़वी दवा भी देती है।"

मालिश और स्नानके बाद बापूजी अन्दर गये। भोजन अन्दर किया, परन्तु भोजन करके जल्दी ही बाहर आ गये। खाना रोजकी भांति ही था — थोड़े मुरमुरे, आठ औंस दूध, खाखरे, शाक और खोपरेका संदेश।

दोपहरको कोअी तीन बजे कातते समय कुछ महिलायें आयीं। अुन्होंने अपने हाथके सूतकी खादी बापूजीको भेंट की। बापूजीने अुनसे कहा, "तुम्हें अपने परिवारके लिअे स्वयं ही अिस प्रकार कात कर खादी बना लेनी चाहिये। मुस्लिम बहनोंके साथ मिल-जुलकर तुम अुन्हें अपनी बहन बना लो।

अपनी कला अुन्हें सिखाओ। अितना कर लोगी तो अिस प्रदेशमें जो यह कहा जाता है कि मुसलमानोंका बहुमत है अुसके बजाय यह कहा जायगा कि हिन्दू-मुसलमान दोनोंका समभाग है। तुम बहनें तो अैसा बहुतसा *काम कर सकती हो, जो पुरुष हरगिज नहीं कर सकते।"*

बहनोंके जानेके बाद बापूजीने मिट्टी ली। मिट्टी लेते हुअे कुछ पत्र लिखवाये। अुठकर रामफल और दूधको फाडकर अुसका पानी लिया। प्रार्थनाके बाद प्रवचन लिखा। रेड्डीजीने कथकलीका नाच किया। अखबार सुने। साढे दस बजे बापूजी सोये।

(बापू, पाराकोट, १७-१-'४७, शुक्रवार)

पाराकोट,
१७-१-'४७

नियमानुसार प्रार्थना। बापूजीको सदाकी भांति गरम पानी और शहद दिया। दस मिनट बापूजी सोये। अुठकर अनन्नासका रस लिया। ७-४० पर हम यहांके लिअे रवाना हुअे। आज पाराकोट और रामदेवपुरकी दो भजन-मंडलियां मिल गअी थीं। अिस रास्तेमें बरबाद हुअे मकान बहुत थे। साढे आठ बजे यहां पहुंचे। बापूके पैर धोकर मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की। अभी तक धूप नहीं आ रही थी, अिसलिअे बापूजीने थोडी देर दूसरा काम किया। मालिश करके अुन्हें स्नान कराया तब तक ग्यारह बज गये। खुराक सदाकी भांति ही ली।

धूपमें ही बैठकर खाना खाया। और धूपमें ही लेटे। बापूजीके पैर मलनेके बाद कपड़े धोने और बरतन मांजनेमें अेक घंटा चला गया। दो बजे बापूजी अुठे। नारियलका पानी पिया। साढ़े तीन बजे मिट्टी ली। चार बजे स्त्रियोंकी सभामें गये।

सभामें बहनोंको कातने, मुस्लिम बहनोंसे मिलने और घरबारको सफाअी रखनेका अनुरोध किया।

साढे चार बजे सभामें आकर केला, दूध और हरे जरदालू लिये। खाकर प्रार्थनामें गये। प्रार्थनासे अेक मुस्लिम मुहल्लेमें गये। बापूजी खूब थक गये थे। आकर पैर धोनेके बाद प्रार्थना-प्रवचन देखा। बंगलाका पाठ किया।

अितनेमें नौ वज गये। मैं पैर दवा रही थी, अुस समय बापूजी वात्सल्यपूर्ण वाणीसे कहने लगे, "तुम थक जाओ तो मुझे कह देना। जब मैंने आज तुम्हें दौड़ते दौड़ते मेरे लिअे नहानेका पानी भरकर बाल्टी लाते देखा, तब मुझे खयाल हुआ कि मैं तुमसे बिलकुल निष्ठुर बनकर काम लेने लगा हूं। तुम जरा भी सकोच न करना। क्योंकि यह समझ लेना कि बीमार पड़ गअी तो खैरियत नही। मेरी यह अुत्कट अिच्छा है कि तुम्हे दोपहरको आध घंटे सो ही लेना चाहिये। परन्तु मुझे अिसका आश्चर्य और दु.ख है कि मैं अितना भी समय तुम्हारे लिअे क्यों नही निकाल पाता। तुम अिसमें मदद करो तो मैं आध घंटा तुम्हारे लिअे आसानीसे निकाल सकता हूं। मैं तुम्हे अेक मिनट भी फुरसत नहीं लेने देता। वैसे मुझे यह पसन्द है। परन्तु यह तुम पर भार न बन जाय तो मुझे तुमसे अितना काम लेनेमें कोअी आपत्ति नहीं है।"

मैंने कहा, आप चिन्ता न कीजिये। मुझे अिससे कितनी ही बातें सीखनेको मिलती है।

अिस प्रकार बातें करते करते बापूजी सो गये। मुझे सोनेमे ग्यारह बज गये।

कोअी सगी मां अपनी बच्ची पर जितना प्रेम बरसा सकती है, अुससे भी अधिक प्रेमामृत बापूजीकी आजकी अिस बातके अेक अेक शब्दसे झर रहा था। अितनी अधिक चिन्ताओंके बीच भी मेरे जैसीकी वे अितनी मीठी चिन्ता रखते है। मुझे सवेरे पानी भरकर लाते देखकर अुन्हे कितना दु ख हुआ? माताके समान अैसी प्रेमपूर्ण और मीठी चिन्ता कौन पुरुष रख सकता है? परन्तु बापूजीने बार बार कहा है कि "जैसे मैंने सत्य, अपरिग्रह, अस्पृश्यता, अहिंसा और अैसे अनेक आदर्श देशके सामने रखे है, वैसे मुझे यह आदर्श भी पेश करना है कि पुरुष भी माता बन सकता है। स्त्रियोंके प्रति पुरुषोंकी दृष्टि माता जैसी मीठी हो जायगी तभी हमारी भव्य संस्कृति स्थायी बन सकेगी।" सचमुच अिस अनुभवमें से आजकल मैं गुजर रही हूं। बापूजी मेरी माता बनकर यह प्रयोग कर रहे हैं, अिसे मैं अपना अहोभाग्य समझकर आनन्दसे फूली नहीं समाती।

बादलकोट
१८-१-'४७, शनिवार

आज बापूजी सवा तीन बजेसे जाग रहे थे। मुझे जगाकर कहा "आज तो अैसी निद्रा आ गअी कि रातमें अेक बार भी अुठना नहीं पड़ा। यह मुझे बहुत अच्छा लगा।" प्रार्थनाके बाद बापूजीने अपना भाषण लिखा और सारा समय . . . और . . को पत्र लिखनेमें बिताया अंतिम दस ही मिनट जरा लेटे। हमने सात पैंतीस पर पाराकोट छोड़ा रास्तेमें अेक मुसलमानके घर पर ठहरे थे। वहां सबको सलाम करके आगे बढ़े। यहां आनेके बाद सारा कार्यक्रम नित्यकी भांति रहा। मालिश और स्नानादिसे दस बजे निबटे। बापूजीने रोजकी तरह खाखरे, शाक और दूध लिया।

मैंने दो बजे अपना कामकाज पूरा करके ढाअी बजे बापूजीके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी। पैर दबाये और मैं भी पन्द्रह मिनट सोअी। तीन बजे महिलाओंकी सभा हुअी। बहनें बहुत आअीं।

शामको दूध और अेक केला ही लिया। प्रार्थना वगैरा नियमानुसार हुआ। लगभग दस बजे सोये। बापूजीके पैर अब कुछ अच्छे होने लगे हैं। तबीयत अितने कामकाजके हिसाबसे ठीक है, हालांकि बहुत कम भोजन करते हैं, बहुत ज्यादा काम करते हैं, नींद कम कर डाली है और अितनी असह्य ठंड पड रही है। यह तो स्पष्ट ही दिखाअी देता है कि अीश्वर ही अुनमें शक्ति पूर रहा है।

आताकोरा,
१९-१-'४७

सदाकी भांति साढे तीन बजे अुठे। दातुन-पानीके बाद प्रार्थना हुअी। आज गरम पानी करनेमें जरा देर हो गअी। गरम पानी देरसे हो तो फलोंका रस भी बापूजी देरसे ही ले पाते हैं। रातको मैं अीधन अन्दर लेना भूल गअी थी। (रोज थोडा अीधन अंदर ले लेती हू, जिससे सुबह ओसमें भीग न जाय।) अिसलिअे ओसमें भीग गया था। मैंने अपनी ओढ़नीकी चिंदी फाड़कर लालटेनके घासलेटमें डुबोअी। बापूजी पीछेसे देख रहे थे। लेकिन मुझे अिसका पता नहीं था। दियासलाअी पेटीसे निकालते ही कहने लगे, "यह चिन्दी बताना तो!" मैंने बताअी।

बापूजीने अुसे देखा और मुझसे कहने लगे, "अिसे धो डालो और धूपमें सुखा लो। चिन्दीमें लगा तेल तो जायगा। परन्तु तेल बचायें तो नाड़ा जाता है और नाड़ा बचायें तो तेल जाता है। अिसलिअे फायदा नाड़ा बचानेमें ही है। नाड़ा बन जाय अुतनी बड़ी चिन्दी कहीं चूल्हा जलानेके काममें ली जाती है? मैं कितना लोभी हूं, अिसका तुम्हें पता है? साथ ही बनिया भी हूं। गरम पानी जरा देरमें हुआ तो क्या चिन्ता है? चिन्दीने कितना अधिक तेल पी लिया? अिसके सिवा मेरा ध्यान न गया होता तो वह जल ही जाती न?"

मैंने कहा, "पर अितना लोभ क्यों किया जाय?"

बापूजी बोले, "हां, तुम तो अुदार बापकी बेटी हो। परन्तु मेरे बाप थोड़े ही बैठे हैं जो मुझे रुपया देंगे? मेरे विनोदमें भी हमेशा गांभीर्य रहता है। अुसे तुम समझना सीख लो तो काफी है।"

मैंने चिन्दी धो डाली। वह सूखी अिसमें पहले दो-तीन बार पूछताछ हुआी और जब चिन्दी सूखी और अुसका नाड़ेके रूपमें अुपयोग हुआ तब ही अिस बातकी पूर्णाहुति हुआी!

बादमें बापूजी डाकके काममें लगे और मैं अपने काममें लगी। कल 'यीस्ट' की बोतल फूट गयी थी, अिसलिअे बापूजीने हरअेक चीज साथ ही रखनेको कहा। पहलेसे भेज देनेको मना कर दिया। सात पैंतीस पर हमने बादलकोट छोड़ा। आजका रास्ता बहुत ही खराब था। सरदार जीवनसिंहजी दो बार फिसल कर गिर पड़े। पगडंडी अैसी थी कि मैं और बापूजी बड़ी मुश्किलसे साथ चल सकते थे। कहीं कहीं तो मुझे छोड़कर अुन्हें अपनी काठकी लकड़ीके सहारे चलना पड़ता था। अिसके सिवा यह रास्ता कार्यकर्ताओंने साफ तो किया था, लेकिन रातको मुसलमानोंके लड़के गंदा कर गये थे। अेक-दो भाअियोंने अपनी आंखों यह देखा था। यह गंदगी — मैं जरा पीछे रह गयी थी अिसलिअे — बापूजी पत्तेसे साफ करने लगे। मैंने देखा कि सब अेकाअेक रुक गये हैं। अेकके बाद अेक लाअिन बनाकर चलने लायक वह पगडंडी थी। मुझे बापूजी पर गुस्सा आया। मैंने कहा, आप मुझे क्यों लज्जित करते हैं? मुझे कहनेके बजाय आपने खुद क्यों साफ किया? अिस पर बापूजी हंस पड़े और बोले, "तुम्हें क्या पता कि अैसे

काम करनेमें मुझे कितना आनंद आता है? तुम यह जानती होती तो अिस प्रकार मुझ पर गुस्सा न होती।"

गावके लोग देख रहे थे। अिसलिअे मुझे गावके लोगों पर भी मन ही मन गुस्सा आया। बापूजी जैसे पुरुष तो यह गंदगी साफ कर रहे हैं, जिन्हें जगत पूज्य मानता है, और गावके अनाड़ी और अज्ञान लोग खड़े खड़े पुतलोंकी तरह देख रहे हैं? जरा भी शर्म नहीं आती?

परन्तु बापूजी कहने लगे, "तुम देख लेना, कलसे ये गंदे रास्ते मुझे साफ नहीं करने पड़ेंगे। क्योंकि गावको यह पाठ मिल जायगा कि गन्दगीको सफाअी करना हलका काम नहीं है। परन्तु मेरे ही लिअे वे रास्ता साफ करेंगे तो मुझे बुरा लगेगा।"

मैंने कहा, "केवल कल भरको कर देंगे और बादमें नहीं करेंगे तो आप क्या करेंगे?"

"मैं तुम्हें देखनेको भेजूंगा और फिर अैसा गंदा रास्ता होगा तो खुद साफ करने आअूंगा। अस्वच्छको स्वच्छ करना तो मेरा धंधा ही है।"

बापूजीकी यह आखिरी बात कितनी सत्य है, अिसका वर्णन करना मेरी शक्तिसे बाहर है। परन्तु अैसी छोटी छोटी अस्वच्छताओंसे लेकर जीवनकी, व्यवहारकी, राजनीतिकी और धर्मकी अनेक अस्वच्छताओंको स्वच्छ करना अुनका धंधा ही था। और अुन्होंने कअी प्रकारसे हमें स्वच्छ किया भी सही। यहा तो मैं यह देख ही रही हूं। खूबी तो यह है कि जो छोटी या निकम्मी बात मानी जाती है अुसीको बापूजी महत्त्वकी और मुख्य बात साबित करके बता देते हैं। तब समझमें आता है कि जीवनको सच्चे अर्थमें जीनेके लिअे यह छोटी बात ही महत्त्वकी है।

रास्तेमें हम अुस जगह पहुचे जहा धूपमें अेक मदरसा लगा हुआ था। वहां रास्ता तंग था, अिस कारण कर्नल जीवनसिंहजी फिसल कर गिर पड़े। अुनका पहाड़ी और कसा हुआ शरीर है, अुस पर फौजी सिपाही! वही फिसल पड़ें तो वह रास्ता बापूजीके लिअे कितना खतरनाक हो सकता है अिसकी कल्पना ही कर लेनी पड़ेगी। बापूजी खूब हंसे। कहने लगे, "समुद्रमें ही आग लगे तो क्या किया जाय?"

मदरसेमें पढ़नेवाले लड़के-लड़किया हमें देखकर भागने लगे। बापूजीने सबको सलाम करनेकी कोशिश की। परन्तु कोअी सलाम नहीं करता था।

अब्दुल्ला साहबने सबसे अपना काम जारी रखनेको कहा। मुझे सहज ही विचार आया कि भाग्यमें हो तभी मिले न ? नरसिंह मेहताने सच ही गाया है : 'जेहना भाग्यमा जे समे जे लख्युं . . .' — 'जिसके भाग्यमें जिस समय जो लिखा हो . . .'। बापूजी जैसे पुनीत पुरुष, जिनके दर्शन दुर्लभ हो सकते हैं, स्वयं प्रत्यक्ष आकर सामने खड़े हैं, परन्तु अज्ञानने अिन लोगोंको अंधा बना दिया है। यह है भाग्यकी बलिहारी!

आताकोरा लगभग दो मील होगा। परन्तु यहा पहुंचनेमें पूरा अेक घंटा लग गया।

यहा आकर नित्यके अनुसार बापूजीके पैर धोकर मैंने रोजका कामकाज शुरू किया। धूप नही थी, अिसलिअे मालिश और स्नान देरसे हुआ। अिस बीच बापूजीने दूसरा काम निबटाया। मैं जब मालिश कर रही थी, तब बापूजीने अपने हाथसे हजामत बनाअी। अेकसाथ दोनों काम निबट गये।

शामको अेक बूढ़ेके घर गये। बूढा बहरा था, शरीरसे अशक्त था, परन्तु बापूजीके सामने अुठ कर खड़ा हुआ। बापूजीने प्रेमपूर्वक अुसके गाल पर चपत लगाअी। तुरन्त ही बूढेकी पत्नी आयी। अुसने बूढ़ेको कपूरकी अेक माला दी और अेक स्वयं रखी। दोनोंने बापूजीको माला पहनाअी। बुढ़िया कांप रही थी। अुसने बापूजीके हाथ पकड लिये, सारे शरीरको लगाये और पावनता अनुभव की। दो मीठे नारियल खास तौर पर रख छोड़े थे, जिनका पानी पीनेका आग्रह किया। मुझे यह दृश्य देखकर रामायणकी शबरीके बेरोंवाली बात याद आअी। आसपास हराभरा जंगल था। जैसे प्रभुने शबरीके बेर प्रेमसे खाये थे, वैसे बापूजीने नारियलका पानी प्रेमसे पिया।

कंदमूल फल सुरस अति, दिये राम कहु आनि।
प्रेम सहित खाये प्रभु, बारंबार बखानि।।

मैं रोज रामायण पढती हूं। अुसी क्रमसे जब आज घूमकर आअी और रामायण पढने बैठी तो यही अूपर वाला सोरठा पढनेमें आया। यही दृश्य मैंने अुस समय देखा, जब बूढ़े-बूढ़ीने संग्रह करके रखे हुअे नारियलका पानी पीनेके लिअे बापूजीके सामने रखा। बापूजी शामको खानेके बाद कुछ भी नही लेते, लेकिन प्रेमसे दिये हुअे नारियलके पानीको अस्वीकार न करके अेकका पानी स्वय लिया और दूसरेका मुझे जबरदस्ती पिलाया। अिस अवसर पर बापूजीके चेहरे पर आनंद झलक रहा था।

वहासे लौटते हुअे अपने आप कहने लगे, "अपने जैसे आदमी मिल जाते हैं तब हमेशा आनंद होता है। ये दोनों बूढ़े-बूढ़ी अस्सीके आसपास तो होंगे ही। शायद कुछ बडे हों।"

दोपहरको बातोंमें बापूजीका कातना रह गया था। आकर अब कात रहे हैं। शामके साढे सात हुअे हैं। शैलेनभाअी अखबार सुना रहे हैं। मैं डायरी लिख रही हू।

पुनश्च मेरी डायरी कातनेके बाद साढे नौ बजे सुनी; हस्ताक्षर करनेके बाद सोये।

शिरंडी,
२०-१-'४७

आज बापूजी सवा पाच बजे जागे। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार गरम पानी और शहद लिया। बादमें रस देकर और सामान पैक करके मैं कलका वह रास्ता देखने गअी। रास्ता गदा ही था। अिसलिअे बापूजीसे कहने न जाकर मैं स्वय साफ करने लगी। गावके लोग भी सफाअीमें शरीक हो गये। अिसलिअे मेरा काम पंद्रह मिनटमें निबट गया। गावके लोगोंने मुझसे कहा, "कलसे आप न आअिये। हम खुद साफ कर लेंगे।"

अिस पर मौन खुलने पर बापूजीने कहा, "तुमने आज मेरा पुण्य ले लिया न? वह रास्ता मुझीको साफ करना था। खैर, अिससे दो काम होंगे। अेक तो सफाअी रखी जायगी; दूसरे, लोग दिया हुआ वचन पालना सीखेंगे तो सचाअी सीखेंगे, जिसका यहा बिलकुल अभाव है। तुम जानती हो कि हमारे काठियावाडमें भी सबको रास्ते गदे करनेकी बडी बुरी आदत है। तुम यह मत समझना कि यही सबको थूकने या टट्टी बैठनेकी गदी आदत है। हिन्दुस्तानमें बहुत जगह लोगोंको यह कुटेव है। काठियावाडमें तो खास तौर पर है। यह सुधार करनेकी बचपनसे मेरी साध थी। परन्तु संयोगवश मैं काठियावाडमें स्थायी होकर न रह सका। तुम्हे मुझ पर जो क्रोध आया वह अनुचित था, क्योंकि जैसे खुद खायें तभी पेट भरता है, वैसे ही स्वच्छताका नियम मेरे लिअे है। स्वयं सफाअी करनेमें मुझे अपार आनंद होता है।"

(बापूजी सुबह मुझसे पहले शिरंडी पहुंच गये थे। वहां अम्तुस्सलाम बहन अुपवास कर रही थीं। वह गाव अनका कार्यक्षेत्र था। यह कहा जाता है कि अुस गावमें कुछ मुसलमान भाअियोंने हथियार छुपा रखे हैं। अिससे

बहनको दुःख हुआ कि मेरे जातिभाओी यह कैसा कृत्य कर रहे हैं! अम्तुस्सलाम बहन शरीफ मुसलमान खानदानकी लड़की हैं। बापूजी तो अुन्हें सगी बेटीसे बढ़कर मानते थे। अिस अेकताके कार्यमें अुनका ठोस हाथ रहा। और आज भी वे यही कार्य कर रही हैं। दीखनेमें दुबली-पतली, अुम्र लगभग पचाससे अूपर होगी, मगर जीतोड मेहनत कर रही हैं। अिन बहनने नोआखालीमें अुपवास किये थे तब वे मृत्युशय्यासे ही अुठी थी अैसा कहा जा सकता है।)

मैं और निर्मलदा पीछे रहे, परन्तु सामान अुठानेवाला आज और कोओी न था। बापूजी जल्दी चले गये, अिसलिअे सभी चले गये। अिससे बड़ी कठिनाओी हुओी। परन्तु बापूजी मार्गमें अेक दो स्थानों पर मुसलमानोंके घर ठहरे, अिसलिअे मैं समय पर पहुंच सकी।

अम्तुस्सलाम बहन बहुत ही अशक्त हो गओी हैं। अुनका बिस्तर बाहर किया और अुन्हें बापूजीने सूर्यस्नान लेनेको कहा। . . . बापूजीने दिन-भर मुसलमान भाअियोंसे समझौतेकी बातचीत जारी रखी।

अम्तुस्सलाम बहन दिनभर गीता, कुरान शरीफ या भजन सुननेकी अिच्छा रखती हैं। सब बारी बारीसे सुनाते हैं।

बापूजीकी दिनभरकी बातचीतके परिणामस्वरूप रातको नौ बजे लिखापढ़ी हुओी और मुसलमान भाअियोंने समझौता किया। बहनके अुपवास छूटे। प्रार्थनाके बाद बापूजीके हाथों मोसंबीके रसका प्याला लिया। सन्देशसे सबका मीठा मुंह कराया। प्रार्थना हुओी। प्रभुका अुपकार मानी कि अुपवासका सुखद अंत आया। वातावरण आनंदमय बन गया और सबको शान्ति हुओी।

बापूजी रातके ग्यारह बजे सोये। दिनभर बातें करते रहनेसे थक गये थे।

केथूरी,
२१-१-'४७

रोजकी तरह प्रार्थना हुओी। आज सुशीलाबहनने प्रार्थना करायी। बापूजीको गरम पानी देकर मैं सामान ठीक करने गयी।

अितनेमें सात बज गये। बापूजी अुठे। अम्तुस्सलाम बहनके पास गये। अुनसे विदा ली। कुछ बहनें बापूजीको तिलक लगाकर प्रणाम कर गओीं और हम रवाना हुअे।

आज . . . भी गये, अिसलिअे मुझ पर कामका काफी जोर पड़ा। वे बीमार पड़े हैं। बापूजी कहते हैं, "यह आदमी मेरे पास अचानक आ गया। पहले वह सिपाही था। बादमें आओ० अेन० अे० में भरती हो गया। अुसने मुझसे कहा कि मेरी सेवामें ही जीवन बिताना चाहता है, परन्तु अिसमें मुझे दया दिखाओ देता है। मगर मुझे क्या? मेरा जीवन अिसीसे बना है।" फिर महाभारतकी कहानी सुनाओ कि "जब पाचों पाडव और द्रौपदी वनमें (महाभारतके युद्धके बाद) गये, तब स्वर्गारोहणके समय युधिष्ठिरके साथी अेकके बाद अेक सभी गिरते गये। अन्तमें द्रौपदी भी स्वर्गमें साथ न जा सकी। अेक कुत्ता बाकी रहा। अिसी तरह अिस यज्ञमें पहलेसे ही साथी अेकके बाद अेक निकलते जा रहे हैं। यह मुझे अच्छा लगता है। अन्त तक तुम रह जाओ तो? कदाचित् रह भी जाओ। अिस कहानीसे बड़ा सुन्दर अर्थ निकलता है: कुत्ते जैसे अल्प प्राणीने, जिसकी कुछ भी कीमत नहीं, अैसे क्या पुण्य किये होंगे कि वह अिन पांचों जनोंके बाद भी जिन्दा रहा? कारण यही है कि वह वफादार प्राणी था। अिसलिअे यह माननेका कोओी कारण नहीं कि बड़े माने जानेवाले आदमी या व्यक्ति पाप नहीं करते और छोटे ही करते हैं; कभी कभी 'अल्प' माने जानेवाले बड़ोंसे अधिक आगे बढ़े हुअे होते हैं।"

शामको अेक मुसलमान भाओी आये। अुन्हें पंडित सुन्दरलालजीने यहां भेजा है। अुनका नाम हुनर है। वे यहां रहेंगे। बापूजीने अुन्हें प्रत्येक काम स्वयं करनेकी सूचना दी। रसोओी आदि भी सीखा लेनेको कहा। सबसे पहले पाखाना-सफाओीका काम सौंपा गया। मुझे अिन भाओी पर बड़ी दया आती है। बापूजी आनेवालेकी पहले-पहल खूब परीक्षा लेते हैं। परन्तु मैं अिन भाओीकी मदद नहीं कर सकती। यदि कुछ भी सहानुभूति दिखाअूं और बापूजीको मालूम हो जाय तो वे मेरी खबर ले डालें। अिसलिअे बहुत दया आने पर भी मैं कठोर बनकर वहांसे चली गओी — कारण यह था कि कहीं अुनके साथ बातें करनेमें जी पिघल जाय और अुन्हें मदद कर बैठूं। अिसलिअे वहांसे चले जानेमें ही मैंने खैरियत मानी।

मैंने बापूजीसे यह बात कही। बापूजी कहने लगे, 'मैं अिसे दया नहीं निर्दयता कहूंगा। मेरी दया दूसरी तरहकी है। जो कार्य अिस भाओीके जीवनमें ओतप्रोत होकर अिसे अुन्नतिके मार्ग पर चलानेवाले हैं वे कठिन होने पर भी महत्त्वके हैं। अतः अिस समय अिसके प्रति सहानुभूति बताना निर्दयता ही है।

टमें कोओी बिगाड़ हो गया हो और ऑपरेशन करना जरूरी हो, अुस समय डॉक्टर यदि कहे कि बेचारेको हथियार लगाअूगा तो खून निकलेगा और ज्यादा परेशान होगा, तो अेफ० आर० सी० अेस० हुआ डॉक्टर भी अयोग्य ही माना जायगा। बीमारका पेट अुसे चीरना ही चाहिये और भीतरकी खराबी निकालनी ही चाहिये। अिस प्रकार अुस भाओी पर आओी हुआी तुम्हारी दयाको मैं दया नहीं कहूंगा। अच्छा हुआ कि तुमने असकी मदद नहीं की, वर्ना पता नहीं मैं क्या करता।"

बापूजीके कार्योंमें कैसा सूक्ष्म तत्त्वज्ञान होता है? अैसा तत्त्वज्ञान मैं किसी कॉलेजमें गआी होती तो वहां कोओी प्रोफेसर मुझे अिस ढंगसे समझा सकता या नहीं, अिसमें शंका है।

सुबहका भोजन तो रोजकी भांति लिया। शामको प्रार्थनाके बाद दूधको फाड़कर अुसका पानी पिया और नारियलका मगज लिया। प्रार्थनामें अम्तुस्स-लाम बहनके अुपवास संबंधी बातें कहीं। मुसलमान भाअियोंने यह खबर अख-बारोंमें देनेसे मना किया। बापूजीने समझाया कि प्रगट हुआी बात छुपानी नहीं चाहिये। यह खबर अखबारोंमें न देनेके पीछे अुनका जरूर कुछ न कुछ हेतु रहा होगा, परन्तु बापूजी अिस तरह किसीके चक्करमें आनेवाले नहीं थे। खबर छपवानी ही पड़ी।

दस बजे बापूजी अखबार सुनकर सोये। . . . मैंने दिनभरमें बहुतसा काम निवटा लिया। कपड़ोंमें सारी चादरें धोओीं। बापूजीका तकिया रुओी निकालकर और अुसे सुखाकर फिरसे भरा। लिखना भी बहुत था। छोटा-बड़ा सारा सामान भी साफ किया। रातको अूंघते अूंघते घरकी डाक लिख रही थी। कब सो गओी, अिसका पता नहीं चला। सवेरे अुठी तो कागज-कलम अिधर-अुधर बिखरे पड़े थे। बापूजी भी अितने ज्यादा थक गये थे कि गहरी नींदमें थे। अिसलिअे आज अुनके अुलाहनेसे बच गओी। सवेरे मेरा यह सारा पराक्रम देखकर अुन्होंने पूछा। मैंने बताया तो बोले, "मैं तो कहता ही हूं कि मुझे कौन धोखा दे सकता है? मैंने तुम्हें मेरे सोनेके बाद जागनेसे बिलकुल मना कर दिया है, तो भी तुमने मेहनत करके काम निवटानेके लिअे जागनेका प्रयत्न किया। परन्तु अीश्वरने तुम्हारी आंखोंमें नींद भर दी। यह क्या बताता है? अिसलिअे मैं तो मानता हूं कि दगा किसीका सगा नहीं। आअिंदा सावधान रहना और अैसा न करना।"

यह अेक छोटीसी बात है, परन्तु अितना तो मानना ही पड़ेगा कि बापूजीको धोखा देनेकी कोशिश करनेवाला स्वयं ही धोखा खाता है।

पनियाला,
२२-१-'४७

आज पूज्य बाका मासिक मृत्यु-दिवस है। अिसलिअे जल्दी अुठे। मुझे भी फौरन जगाया। दातुनके बाद प्रार्थना और सदाकी तरह पूरे गीताका पारायण किया। पारायणमें मैं अकेली ही थी। कलसे बापूजी कुछ अधिक थके हुअे लगते हैं।

प्रार्थनाके बाद गरम पानी किया। परन्तु शहदकी बोतल नहीं मिली। कोअी अुठा ले गया दिखता है, क्योंकि मैंने रातको सब कुछ तैयार करके रखा था। सुबह देखा तो बोतल गायब थी! परन्तु खुशकिस्मतीसे अनुदीदीके पास अच्छा गुड था। अुसमें गरम पानी डालकर नीबू निचोडा और वह बापूजीने पिया। कहने लगे, "कोअी हर्ज नहीं। जो ले गये होंगे वे खानेके काममें ही तो लेंगे। हमारा काम गुडसे अच्छी तरह चल जाता है। अब बोतल कौन ले गया है, अुसकी जाच करानेके झगडेमें मत पड़ना।"

प्रार्थनाके बाद कुछ पत्र देखते देखते — हाथमें पत्र रखकर ही — बापूजी सो गये। ये पत्र यदि अुनके हाथमें से ले लेती तो वे जाग जाते। अिसलिअे सामान बाधनेमें मुझे देर हो गअी। बाहर कीर्तनवाले आ गये थे। सब सामान जमानेमें मुझे पाच मिनट ज्यादा लगे। बापूजी कहने लगे, "लोग कभीके आ गये हैं। कहा जायगा कि तुमने आज पाच सौ आदमियोंके पाच मिनट चुराये हैं। यह मुझे बर्दाश्त नहीं हो सकता। मैं जाता हूं। तुम पीछेसे आ जाना। परन्तु आज मैं जाता हू अिससे यह न समझ लेना कि रोज मैं अिसी तरह चला जाअूंगा और तुम दौडकर मुझे पकड़ सकोगी, अिसलिअे रोज अैसा करोगी तो चलेगा। तुम लड़की हो और मैं बूढा हूं, अिस विचारसे तुम छूट सकती हो। परन्तु वह अपराध होगा। अिसलिअे सदा नियत समय पर काम होना चाहिये। किसी आदमीको समय देकर कहा हो कि सात बजे मैं बाहर निकलूगा, तब सात पर दो सेकण्ड भी हो जायं तो मुझे अखरेगा। मुझे अुठा देना तुम्हारा धर्म था। मुझे जगाकर भी चीजें जमा ली होती तो वह तुम्हारा पुण्यकार्य माना जाता और कहा जाता कि तुमने अपने धर्मका पालन किया है।"

बाकीका काम रोजकी तरह। सुबहसे मुझे बुखार था। ग्यारह बजे १०३° हो गया। परन्तु बापूजीसे कह देती तो बिस्तर पर लिटा देते, अिस डरसे नहीं कहा। दो बजे लगभग १०४° हो गया तो सो गअी। चार बजे अुतर गया। फिर बापूजीके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी। और दो घंटे आराम करके काममें लग सकी, अिससे मनमें संतोष हुआ। मिट्टी लेते समय बापूजी मेरी डायरी देख गये और अुस पर हस्ताक्षर किये।

शामको प्रार्थनामें बरसात हुअी तो भी कोअी अुठा नहीं। बापूजी पर चद्दर डाल दी। फिर भी मैं और बापूजी काफी भीग गये। लोगोंमें से कोअी अुठा नहीं। मुसलमान भाअी अच्छी संख्यामें थे। भजनके बाद अेकाअेक नअी धुन दिमागमें आ जानेसे मैंने वही गाअी। लोगोंने तालके साथ सुन्दर ढंगसे गाअी।

रघुपति राघव राजाराम पतित-पावन सीताराम,
अीश्वर अल्लाह तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान्।

यह धुन गाअी तो सही, परन्तु मुझे डर था कि बापूजीसे पूछे बिना मैंने जो समझदारी बताअी अुसका अुनके मन पर न जानें क्या असर होगा।

परन्तु नियमानुसार धुनके बाद प्रवचन हुआ। अुसमें अिस धुनका अुन्होंने सुन्दर अुल्लेख किया। अिस पर मेरे संतोषका पार नहीं रहा।

प्रार्थना-स्थलसे लौटे तब बापूजी कहने लगे, "आजकी धुन मुझे बड़ी मधुर लगी। लोगोंको पसंद आअी। तुमने कहांसे सीखी? या तुमने खुद बना ली?"

मैंने अुसका अितिहास कहा: "पोरबन्दरमें सुदामाके मन्दिरमें अेक सभागृह था (आज भी है)। वहां अेक ब्राह्मण महाराज कथा कहते थे। अुनकी कथा पूरी होने पर धुन गाअी जाती थी। अुसमें प्रत्येक जातिके लोग भाग ले सकते थे। मैं भी अपनी माके साथ आठ-दस वर्षकी अुम्रमें अिस सत्संगमें जाया करती थी। वहां अेक दिन मैंने यह धुन सुनी थी। यहां तो आज अचानक दिमागमें आ गअी।"

बापूजी कहने लगे, "अीश्वरने ही तुम्हें यह धुन सुझाअी। मेरे यज्ञमें अीश्वर किस खूबीसे मदद दे रहा है! अुस शक्ति पर मेरी श्रद्धा अधिकाधिक प्रबल होती जा रही है। चारों ओरसे जब मेरे कामोंका विरोध हो रहा है, तब मैं अधिक दृढ़ होता जा रहा हूं। मेरे साथ मेरा अीश्वर है

और यह मुझे कितनी सहायता दे रहा है, यह तो तुम देखो! बापूकी यह रामधुन अिसकी साक्षी है। . . .

"पुराने जमानेमें अैसा ही था। अब रोज यही धुन गवाना। कौन जाने अिस कठिन समयमें ओश्वरने ही तुम्हें यह धुन सुझाओ हो! ठीक समय पर अिससे प्रार्थनामें नये प्राणका संचार हो गया। मा-बापके साथ भजन-कीर्तनमें जानेसे कभी कभी अैसा लाभ होता है, जो जीवनमें महत्त्वपूर्ण भाग अदा करता है। मैं भी पोरबन्दरमें रामजीके मंदिरमें जाता तब बड़ा आनंद आता था। परन्तु आजकल तो सब कुछ मिटता जा रहा है। सुदामाजीके मन्दिरमें और वह भी ब्राह्मणने अल्लाहका नाम बहुत स्वाभाविकतासे लिया। आजका यह कलुषित वातावरण तो पिछले पांच-सात वर्षोंमें ही बढ़ा है।"

घूमकर आने पर दूधको फाड़कर अुसका पानी लिया। नारियलका मसका लिया और खाता। अखबार सुने। साढ़े नौ बजे बापूजी सोये। मैंने काता नहीं था अिसलिअे कातकर दस बजे सोओी।

बरसातमें भीग गओी थी, अिसलिअे सोते समय फिर बुखार आ गया है। परन्तु अब सोना ही है, अिसलिअे कोओी चिन्ताकी बात नहीं।

डाल्टा,
२३-१-'४७

आज बापूजी अेक नींदमें सुबह हो जानेकी बात कह रहे थे। जब सरदार जीवनसिंहजी जगाने आये तभी जागे। रोजकी तरह प्रार्थना। गरम पानी पीते समय. . . के साथ अुनके कामोंके बारेमें बातें कीं। और बादमें अुनके बच्चोंके बारेमें भी बातें कीं। बालकोंके बारेमें बोलते हुअे बच्चोंके प्रति माता-पिताकी क्या जिम्मेवारी है और माता-पिता आजकल किस ढंगसे अपना फर्ज अदा करते हैं, अिसकी सुन्दर, ठोस और बोधप्रद बातें बापूने कहीं. ". . . नहीं समझता कि सत्य क्या चीज है; अुसकी मेरे पास बहुत शिकायतें आओी हैं। मेरे खयालसे बच्चे अैसे बनें तो अिसमें मैं मा-बापका कसूर मानता हूं। तुम्हारे अितने बालकोंमें से किसीमें भी तुम्हारा गुण क्यों नहीं आया? अिसका कारण यह है कि तुमने बच्चोंकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। मां-बाप लगातार बच्चे पैदा करते जाते हैं, परन्तु बच्चोंके संस्कार या शिक्षाकी परवाह नहीं करते। अपने विषय-सुखके लिअे भारतका

(देशका) कचूमर निकालना अिसे ही कहा जायगा। मेरा ही अुदाहरण लो। हरिलालके जन्मके समयका। वह पैदा हुआ तब मैंने अुतना ध्यान नही दिया जितना पिताकी हैसियतसे मुझे देना चाहिये था। अुसे छोटासा छोड़कर मैं विलायत चला गया। परिणाम क्या हुआ, यह तो तुम जानते ही हो। अब अुसका ब्याह कर देनेमें ही अुसका भला है। . . .की शादी न की होती तो वह बिगड़ जाती।" . . . अुन्होंने मेरी अेक बात कही कि "अुसने मनुके बारेमें जो अीर्ष्याभरे वाक्य मुझे सुनाये हैं, वे मैंने मनुसे कहे नहीं। न कहना चाहता हूं।" . यह बात सुनकर मैं अुद्विग्न हो गअी कि मैं तो किसीके बीचमें पड़ी ही नही फिर अैसा क्यों हुआ। अिस प्रकार विचारों ही विचारोंमें पतियालासे डाल्टा तक पहुंच गये।

रोज 'अेकला चलो रे' का यात्राके दौरानमें गाया जानेवाला भजन आज नही गाया। मैं प्रातःकालकी बापूजी और . . .की बातें सुनकर मनमें दुःखी थी, अिसलिअे यह भजन गाना भूल गअी। परन्तु यहा आने पर चुपचाप बापूजीके पैर धो रही थी तब अुन्होंने अुलाहना दिया, "आज तुमने अपने मनका गाना मुक्त कंठसे यात्रामें नही गाया। जो कुछ मनमें हो कह दो। आज कुछ परेशान हो क्या? तबीयत ठीक नही है?" वगैरा बातें पूछी। मैंने बापूजीसे कहा, बादमें कहूंगी।

मालिश वगैरा निबटाकर बापूजीको स्नान करा रही थी तब बापू फिर मुझसे कहने लगे, "यदि तुम शान्त हो गअी हो तो अब कहो।" मैंने सुबहकी बात कही और मेरे लिअे अिन लोगोको अितना दुःख है, वगैरा कहा।

बापू बोले, "मनको अितना दुःखी क्यों बनाती हो? मुझे भी कितने ही लोग गालियां देते हैं। क्या लोग मेरी अीर्ष्या नही करते होंगे? परन्तु मैं अिस तरह सब बातें ध्यानमें रखूं तो अपनेको संभालना भूल जाअूं और पागल बन जाअूं। अिसीलिअे मैंने . . . की कही हुअी बात तुमसे नहीं कही थी। आज भी तुम्हारे सामने कहनेकी अिच्छा नही थी। परन्तु तुम अपना काम कर रही थीं और . . .के साथ हो रही बातें खानगी नहीं थी। . . . यह आदमी बहुत भला है, बैरागी है। तुमने देख लिया कि मैंने तुम्हारे सामने अुसे बच्चोंके लिअे अितना अुलाहना दिया, परन्तु अुसने कोअी अुत्तर नहीं दिया। अिसीलिअे मैंने अुसे अपने पास रख छोड़ा है। हमें सदा गुणग्राही रहना चाहिये। तुम मेरे बानर गुरुको

जाननी हो न? कोअी हमारी निन्दा करे तो हमें सुनीसे नाच
चाहिये। 'निन्दक बाबा वीर हमारा' यह भजन तो तुम जानती हो।"

मैं बापूजीकी बातोंसे अुल्लासमें आ गअी। मेरे मनमें बिलकुल स्प
हो गया कि यदि हम अैसे छोटे मामलोंमें निराश हो जायं तो हमार
जीना व्यर्थ है।

बापूजीने अन्तमें कहा, "जीवनका आनन्द ही परीक्षा तथा निन्दापूर्ण
और आलोचनामय वातावरणके बीच सांगोपांग जीनेमें है। और तभी पता
चलता है कि अीश्वरके प्रति हमारी श्रद्धा कैसी है। तभी कहा जा सकता
है कि हम अीश्वरके सच्चे भक्त हैं या केवल जबानसे बकवास करते हैं।
तुम यह मीठा भजन गाती हो न?

जीवनने पथ जता ताप थाक लागशे,
वधनी विटवणा सहना तु थाकशे;
सहता संकट अे वधाये,
हो मानवी, न लेजे विसामो.

(जीवनके मार्ग पर चलते हुअे तुझे धूप लगेगी और थकावट मालूम
होगी; बढ़ती हुअी कठिनाअियां सहते सहते तू थक जायगा। लेकिन अिन
सब संकटोंको सहन करते हुअे भी हे मानव, तू कभी आराम न लेना;
आगे ही बढ़ते जाना।)

"यद्यपि सारा ही भजन बड़ा मधुर है, परन्तु यह हिस्सा मेरी दृष्टिसे
तुम्हारी अिस समयकी मनोव्यथा पर अधिक लागू होता है।"

आज बापूका नहानेमें बहुत समय चला गया। मुझे अुपरोक्त पाठ
सिखानेमें तल्लीन हो गये थे। वाणीका प्रवाह सतत बह रहा था।
मुझे पता था कि समय बहुत हो गया है, फिर भी अुस प्रवाहको रोक
देनेका मेरा जी नहीं हुआ। अुनके अेक अेक शब्दमें, अेक अेक वाक्यमें ज्ञान
भरा था।

अिस गांवमें कुछ अधिक सुविधाअें हैं और गांव भी रमणीय है।
परन्तु हर जगह बरसातका गीलापन बहुत है। गृहस्वामीने मुझे बड़े
प्रेमसे खिलाया। बापूजीका बंगलाका पाठ नियमानुसार चला। आजकी डाकमें
सरदारदादा, जवाहरलालजी और हबीब कुरेशीके पत्र आये थे।

घनश्यामदासजी बिड़लाका भी पत्र था। सरदारदादाको बापूजीने छोटीसी चिट्ठी लिखी। बिड़लाजीके आदमी संतरे भी दे गये। अुन्हीके साथ डाक भेजी।

बापूजीने दोपहरके भोजनमें तो रोजके अनुसार ही चीजें ली। शामको फाड़े हुअे दूधका पानी और शहद लिया। आज लिखनेमें बापूजीका बहुत समय बीता। बहुतसे पत्र आये और अुनके अुत्तर दिये। सबको बापूजीने स्वयं ही पत्र लिखे। अिसके बाद वे सो गये। आजके तार १२० हुअे। बापूजीने तुनाअीकी पूनियां काती।

मुरियम,
२४-१-'४७, शनिवार

प्रार्थना नित्यकी भांति हुअी। प्रार्थनाके बाद आसामके बारेमें बापूजीने जो प्रस्ताव तैयार किया था अुसके कागज ढूंढनेमें अुनका बहुत समय चला गया। निर्मलदाने भी तलाश किये, लेकिन नहीं मिले। शायद दूसरे कागजोंके साथ निर्मलदाकी फाअिलमें कलकत्ते चले गये हों। बादमें मेरी डायरी सुनी। अुस पर तुरंत हस्ताक्षर किये। बापूजी बंगलाका पाठ कर रहे थे अुस बीच मैंने अुनका सूत दुबटा किया। लिखते-लिखते पंद्रह मिनट सो लिये। मैंने पैर दबाये। अितनेमें रवाना होनेका समय हो गया। यहां आठ बजे पहुंचे। डाल्टासे मुरियम तक अढाअी मीलका रास्ता है।

आज हम अेक मुसलमानकी बाड़ीमें ठहरे हैं। बड़ा प्रेमी कुटुम्ब है। गृहस्वामीका नाम हबीबुल्ला साहब पटवारी है। मुसलमान भाअी बापूजीसे बड़े प्रेमसे मिले। मौलवी साहबने जो चाहिये सो मदद दिलवाअी। मुझे अपने घरकी स्त्रियोंके पास (जनानखानेमें) ले गये। मेरा अुनसे और अुनका मुझसे परिचय कराया और बापूजीको समय मिले तब बहनोंके पास लानेकी विनती की। अिसके बाद मैं बापूजीकी मालिश, स्नान वगैरा निबटाकर रोजके काममें लगी। बापूजी नहाकर बाहर आये। तब मैं अुन्हें घरकी स्त्रियोंके पास ले गयी। सबने भक्तिपूर्वक अुन्हें सलाम किया। कुछ बहनें शरमा रही थी। अुनसे बापूजीने कहा, "मैं तो तुम्हारे बापके बराबर बूढ़ा आदमी हूं। मुझसे कोअी स्त्री पर्दा रखती ही नहीं। पर्दा रखना ही तो सच्चा पर्दा दिलमें रखना चाहिये। झूठा पर्दा छोड़ दो। बाहरसे पर्दा रखो और मनमें विकार भरे हों तो वह पाप है।"

हबीब साहबने अिसका सुन्दर अनुवाद करके बहनोंसे कहा, "आज हम पावन हो गये। हम पर हिन्दुओंको मारनेका काला कलंक है, अिसलिअे हम पापी हैं। हमारे आगनमें ये खुदाके फरिश्ते आये हैं, अुनके दर्शन करके पावन होनेमें पर्दा कैसा?" यह जरा जोर देकर कहा, अिसलिअे सब बहनें बाहर आ गअी। कुछ बच्चोंको बापूजीने संदेशके टुकड़े दिये।

बापूजीने बहनोंकी सफाअी पर ध्यान आकर्षित किया। "तुम बाहरकी और हृदयकी सफाअी करो।" यह पहला ही अवसर है कि मुसलमान परिवारमें हम अिस प्रकार कुटुंबी जैसे बन सके। बापूजीका धीरज और तप सफल हुआ।

बापूजी मुसलमानोंको सलाम करते थे तो भी वे मानते थे कि गांधी हमारा दुश्मन है। परन्तु अुन लोगोंको बापूने प्रेम और धीरजसे जीत लिया।

दोपहरको बापूजीने रोजकी तरह ही खुराक ली। परन्तु हबीब साहब बापूजीके लिअे खास तौर पर रामफल लाये, अिसलिअे खाखरा अेक ही खाया। खाकर बापूजी तुरत सो गये। मैंने पैरोंमें घी मला। नहाकर कपड़े धोये, अितनेमें बापूजी जाग गये। अुन्हें नारियलका पानी दिया।

मैंने डेढ़ बजे तक भोजन नहीं किया था, अिसलिअे बापूजी मुझ पर नाराज हुअे और अपने पास ही थाली लाकर खाने बैठनेको कहा। भूल हो गअी अिसलिअे अुनका हुक्म मानना ही पड़ा। खाना खाकर मिट्टीकी पट्टी रखी। मिट्टी लेते हुअे बापूने मुझसे पत्र लिखवाये। ठक्करबापा, शारदाबहन और बलसारियाको। . . . पत्र लिखवा रहे थे, अितनेमें बाबा (सतीशबाबू) और मजिस्ट्रेट आये।

शामको प्रार्थनासे पहले नारियलका दूध, बकरीके दूधका संदेश और अेक केला लिया।

प्रार्थना-सभा आज बहुत बड़ी थी और सब लोग आनंदसे रामधुन गा रहे थे।

बापूजी बोले: "आज प्रार्थना-सभा बहुत बड़ी थी और हिन्दू-मुसलमान सब धुनमें शरीक थे। अुसमें कहीं भी गड़बड़ नहीं दिखाअी देती थी। अिस गांवका वातावरण अच्छा रखनेमें हबीब साहबका काफी हाथ मालूम होता है।"

प्रार्थनामें लौटने पर भी अेकके बाद अेक लोग दर्शन करने आते रहे। साढ़े नौ बजे तक यही तांता रहा। बापूजी बहुत थक गये थे। सवा दसके बाद सोये।

(बापू. २५-१-'४७, हीरापुर, रवि)

हीरापुर,
२५-१-'४७

रातको बापूजीके पेटमें थोड़ी गड़बड़ी थी। मुझे भी बुखारकी हरारत-सी मालूम होती थी। प्रार्थना नियमानुसार हुआी। प्रार्थनाके बाद गीताके आठवें अध्यायके श्लोकोंके अुच्चारणमें बापूजीने मेरी भूलें बताअीं।

अेक (कार्यकर्ता) भाअीसे बापूजीने कहा, "मेरे साथ जो लोग स्वयंसेवकके तौर पर काम करते हैं, अुनका भोजनालय अलग होना चाहिये। अुन्हें हाथसे खाना पकाना चाहिये। नहीं तो जिस गृहस्वामीके यहां वे ठहरेंगे, अुसके लिअे भार बन जायेंगे।" अुन्होंने यह बात स्वीकार की।

गरम पानी देनेके बाद बापूजीने मुझे जबरन् सुलाया। साढ़े छह बजे अुठी। अुठकर मैंने बापूजीके लिअे रस निकाला। परन्तु सो जानेसे मेरा लिखने और सूत अुतारनेका सब काम रह गया। मुरियमसे यह गांव केवल डेढ़ मील पर होनेके कारण यहां जल्दी पहुंच गये। मुरियमसे रवाना होनेके पहले सभी बहनें बापूजीसे मिलीं। बापूजीने अुनसे कहा, "हिन्दू स्त्रियोंको अपनी बहनकी तरह समझना। जब तक तुम घरकी और बाहरकी सफाअी नहीं रखने लगोगी, तब तक हृदयकी स्वच्छता तुममें आ ही नहीं सकती। अिसलिअे आज ही से अपने कपड़ोंकी, अपने बच्चोंकी, घरकी और शरीरकी सफाअी करने लग जाना। अिससे तुम देखोगी कि तुम्हारे दिलोंकी सफाअी अपने-आप होने लगी है।"

यहां आकर बापूजीने थोड़ा लिखनेका काम किया। मालिश और स्नानके बाद सदाकी भांति भोजन किया। मुझे भी साथ ही खा लेनेको कहा। परन्तु मैं नहाअी नहीं थी, अिसलिअे नहीं खाया। आज बापूजीने कहा, "कलसे मुझे खिलानेमें तुम्हें समय नहीं खोना चाहिये। अैसे लाड़ तो बा (कस्तूरबा) करती थीं! तुम अिस तरह मक्खियां अुड़ाने बैठोगी तो तुम्हारा भी काम पूरा नहीं होगा और मेरा भी नहीं होगा।"

दोपहरको बापूजी अच्छी तरह लगभग घंटे भर सोये। तबीयत अच्छी नहीं थी। स्वामीजीने गीताके कुछ प्रश्न पूछे। अुत्तरमें अेक बात बापूजीने कही, "औीश्वर-परायण मनुष्य काममें गलती करे तो वह भी सुधर जाती है। आज मैं अधिक खा गया। पेट आराम चाहता था। कै करने जैसी हालत हो गअी। रोका जा सके तो रोकना था, अिसलिअे मैं सो गया। लेकिन कै रोकी, अिसमें थकावट बहुत मालूम हुअी। परन्तु रामनामकी अच्छी मदद रही। नतीजा यह हुआ कि अच्छी तरह सो सका और सब काम भलीभांति हो गया।"

आज बापूजीके बस्तेमें से बहुतसे बेकार कागज निकाल डाले। निर्मलदाने अिस काममें अच्छी सहायता दी।

शामको बापूजीने भोजनमें कुछ नहीं लिया। कलसे प्रार्थना-प्रवचनके नोट लेनेको बापूजीने मुझे कहा, ताकि अखबारोंमें भाषणकी जो रिपोर्ट जाती है अुसमें कुछ छूट न जाय। वैसे निर्मलदा तो लेते ही हैं। बापूजी हिन्दीमें बोलते हैं और वे अंग्रेजी या बंगलामें लिखते हैं, परन्तु मूल तो हिन्दीमें ही लिखी जा सकती है।

प्रार्थनासे आकर पौन घंटा घूमे। साढ़े नौ बजे बापूजी और मैं दोनों साथ ही सो गये। आज जल्दीसे जल्दी सोये।

बासा,
२६–१–'४७

आज बापूजी बहुत जल्दी अुठे। अढ़ाअी बजे पाखाने जाना पड़ा, बादमें नहीं सोये। मेरी डायरी देखी। दूसरा काम किया, अितनेमें लगभग रोजके अुठनेका समय हो गया। अिसलिअे दातुन-पानी किया।

बापूजीके साथ जो स्वयंसेवक आते हैं अुनका अलग भोजनालय रखनेकी बात की। मैं और निर्मलदा जहां खाते हैं वहां ये लोग नहीं खा सकते। कल हीरापुरमें हम जहां ठहरे थे वहांके गृहस्वामीने अिन सबको खाना खिलाया था। अिसलिअे अिस बातका खास तौर पर ध्यान रखनेके लिअे बापूजीने यहांके कार्यकर्ता . . . भाअीसे कहा।

२६ जनवरीको स्वातंत्र्य-दिवस होनेके कारण हीरापुर छोड़नेसे पहले वन्देमातरम्का गीत गाया गया। फिर सात चालीसको हीरापुरसे निकले। यहांके

लिअे रवाना होनेसे पहले कुछ मुसलमान बहनोंसे मैं मिलने गअी तो अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की। अिसलिअे बापूजीको मैं अुन महिलाओंके पास ले गअी। परन्तु अेकके सिवा सब महिलाअें अन्दर चली गअीं। मुझे भी दुःख हुआ कि बहनोंके कहनेसे मैं बापूजीको यहां लाअी और वे सब अन्दर चली गअीं। बहुत समझाया, परन्तु बाहर निकलीं ही नहीं। अिसलिअे अन्तमें बापूजी हर बहनकी झोंपड़ीमें जाकर हरअेकको सलाम करके आगे बढ़े। पन्द्रह-सोलह वर्षकी लड़कियोंके पास जा जाकर बापूजी सलाम कर आये! अिस पर मैं बहुत शर्मिन्दा हुअी। यह कोअी छोटी-मोटी बदनामीकी बात नहीं है। मैंने बहनोंसे कहा, अिसमें आपसे अधिक मुझे नीचा देखना पड़ा है, क्योंकि आपके कहनेसे मैं बापूजीको लाअी और यहां आकर मेरी अुम्रकी लड़कियोंको बापू जैसे महापुरुषको सलाम करना पड़ा! आप मेरी बहनें हैं, अिसलिअे आपसे ज्यादा मुझे शर्म आ रही है। हमारे घर पर अेक महापुरुष आये हैं, अैसा आप न मानें तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं। अपनी दृष्टिसे जिन्हें मैं भगवान मानती हूं अुन्हें आप भगवान न मानें अिसे मैं समझ सकती हूं। परन्तु हमसे यह आदमी अुम्रमें बड़ा है, अिस खयालसे तो आपको अिनका सत्कार करना चाहिये। बड़ी देरके बाद मेरी बात अुन्हें जंची; लेकिन अुनमें से हरअेकके घर हमारे हो आनेके बाद ही। फिर सब महिलाअें बाहर निकलीं।

अिस पर बापूजी कहने लगे, "देखा तुमने? अेक अेक लड़कीका मन जहरसे भरा है। स्त्रियोंमें भी कितना जहर फैल गया है? अिस जहरको मिटानेमें तुम जितनी अुपयोगी हो सको अुतनी होनेका प्रयत्न तुम करना। तुम्हारे शुद्ध हृदयका प्रतिबिम्ब अिन लोगों पर पड़े बिना नहीं रहेगा। अिसलिअे यह समझ लो कि अिस काममें तुम जितनी अुत्तीर्ण होगी अुतना मुझे लाभ होगा। तुम और मैं दो ही व्यक्ति अिस महायज्ञमें हैं। अिसलिअे यह समझ लो कि तुम्हें मेरा कोअी काम छोड़कर भी यह काम पहले करना है। तुमने देखा कि आज पहले बहनें नहीं आअीं, अुसमें पुरुषोंकी सिखावट थी? परसों हबीब साहबके यहां जो दृश्य देखा अुससे यह अुलटा ही था।"

यहां हम ८–१० पर पहुंचे। आजकी यात्रा सबसे छोटी थी। बापूजीको लगा मानो कुछ चले ही नहीं। आकर तुरन्त ही अुन्होंने डाक लिखी। रशीद अहमद, कुलरंजनबाबू, प्रकाशम्, जवाहरलालजी, मदालसा बहन, डॉ० जोशी और रविशंकर शुक्लको पत्र लिखवानेके बाद मालिश हुअी। मालिश

शुरू करनेसे पहले अे० पी० आअी० के अेक प्रतिनिधि शैलेनभाअीने बापूजीसे पूछा कि आज स्वातंत्र्य-दिवस होनेके कारण कोअी खास कार्यक्रम रखा जाय या नहीं। बापूजीने कहा, "मैं तो यह यज्ञ आरंभ करके बैठा हूं। मेरे लिअे यही स्वातंत्र्य-दिवस है। परन्तु गांवके लोगोंमें अुत्साह पैदा करनेके लिअे तुम लोग (प्रेस-प्रतिनिधि और दूसरे) अुत्सव मना सकते हो।"

अिस कारण यहां सरदार निरजनसिंह गिलके हाथों ध्वज-वन्दन हुआ। बापूजी और मैं अुसमें शरीक होकर सीधे मालिशके लिअे धूपमें लगाये हुअे तम्बूमें गये। सामूहिक भोजनका कार्यक्रम रखा गया था। बादमें समाचार आये कि यदि मुसलमान लोग खाने आयेंगे तो धोबी लोग नहीं आयेंगे, क्योंकि अुन्हें डर है कि अैसा करनेसे संभवतः अुन्हें जबरन् मुसलमान बनाया जायगा। अिसलिअे बापूजीने कहा, "जो डरे हुअे हैं वे सहभोजमें भाग न लें।" भोज अिसी मुहल्लेमें रखनेको कहा। मुझे भी अुन्होंने शामको भोजमें जानेको कहा। बापूजीने आज अुपवास किया है, अिसलिअे स्नानके बाद गरम पानी और शहद लिया। शामको अुपवास छूटेगा। खूब काता। मिट्टी लेते हुअे पत्र लिखवाये : अुरुली कांचनवाले मणिलालभाअी, गोखलेजी, धीरुभाअी, डॉ० भागवत और परमानन्दभाअीको।

बापूजीने स्वातंत्र्य-दिवसके विषयमें दुःखी हृदयसे कहा, "आज २६ जनवरी है, स्वाधीनताका दिवस है। जबसे कांग्रेसका जन्म हुआ, तबसे भारतने अेक नया जन्म लिया है। सब हिन्दुस्तानी यह जानते नहीं थे, परन्तु धीरे धीरे कांग्रेसकी वृद्धि हुअी और कांग्रेसने गांव-गांवमें आन्दोलन करके लोगोंको यह भान कराया कि आजादी क्या चीज है। अुस जमानेमें अेक भी गांवमें कोअी जानता नहीं था कि हिन्दू-मुसलमान-वैमनस्य चीज क्या है। परन्तु आज दोनोंमें अतिशय वैमनस्य फैल गया है। आज दोनोंके दो दिल हो गये हैं, यह दुःखकी बात है। यदि अैसा कलुषित वातावरण न होता तो मैं यहां तिरंगा झंडा फहराता। मुझसे कुछ भाअियोंने पूछा था। मैंने जान-बूझकर अुन्हें मना कर दिया। परन्तु यदि किसी अंग्रेज अफसरने मुझसे कहा होता कि यहां तिरंगा झंडा नहीं फहरा सकते तो मैं जरूर वहीं झंडा फहराता। अिसके लिअे मेरी जान भी देनी पड़ती तो मैं दे देता। परन्तु आज मैं किससे कहूं? मान लीजिये मैं यह झंडा फहराअूं और मुसलमान भाअी अुसे सहन भी कर लें। परन्तु मनमें वे यही

मानेंगे कि यह आफत कहांसे आ गअी? अैसा मैं नहीं करना चाहता। परन्तु मेरे मनमें जो भरा है वह तो कहूंगा। जब झंडेकी बात पहले-पहल अुठी तब मेरे मनमें विचार आया कि अेक ही रंग रखेंगे तो अन्याय होगा। हिन्दुस्तानमें तो अनेक जातियां हैं। हां, अेक दिन अैसा जरूर था जब हिन्दू, मुसल्मान, पारसी, सभी भारतीय जातियां मानती थीं कि यही हमारा झंडा है। और अिसी झंडेके लिअे लोग मरे भी हैं। आज तो कितने ही झंडे हो गये हैं। परन्तु तिरंगा झंडा तो होना ही चाहिये। जैसे यूनियन जेक है। किसी समय अैसा जमाना था, परन्तु अब नहीं रहा। आज मैं किससे कहूं? अथवा किसके साथ लडूं? हम सब भारतीय हैं और भाअी भाअी हैं। स्वाधीनतामें आपसमें, अेक-दूसरेके मनमें, वैरका जहर फैल जाय तो वह स्वाधीनता किस कामकी? परन्तु आज तो वह सब हमारे लिअे आकाश-कुसुम जैसी बात हो गअी है। हमें अैसा लगना चाहिये कि जब तक आजादी न मिल जाय तब तक हम चैनसे नहीं बैठेंगे। आज हम भाअी भाअी आपसमें लड रहे हैं। आजादीसे पहले पाकिस्तान कैसा? क्या अंग्रेज पाकिस्तान देंगे? कौन जानता है आजादी कैसी होगी? अंग्रेज तो यहांसे अवश्य जायेंगे। परन्तु अमरीका और रूस मौजूद हैं। अगर हम सावधान नहीं रहेंगे तो मर जायेंगे। अभी अभी 'जन-गण-मन' गाया गया। कितना सुन्दर गीत है? हिन्दुस्तानमें अैसी अैसी चीजें मौजूद हैं। परन्तु अिसे हम हृदयसे गायें तो सब अेक हो जायें। अैसा नहीं करेंगे तो हम मूर्ख कहलायेंगे। यदि आप सबका हृदय स्वीकार करे कि यह अनुभवी बूढ़ा जो कह रहा है वह सही है, तो आजसे आप मेरे कहे मुताबिक चलनेकी कोशिश कीजिये।

"आज मैंने झंडा नहीं फहराया। परन्तु मेरे साथ जो अखबारोंके प्रतिनिधि घूम रहे हैं अुन्होंने फहराया। बंगालके महापुरुष नेताजीने अिसी स्वाधीनताके लिअे अपनी जान कुर्बान की थी। यदि अुनके लिअे हम अितना भी 'यज्ञ' न करें तो किसके लिअे करेंगे?"

आज बापूजीने घूमनेके बाद दूध और खजूर लिये। मैं अपना कामकाज निबटाकर प्रेसवालोंके निमंत्रण पर वहां भोजन करने गअी। खिचडी और शाक बनाया गया था। खाने जानेमें मुझे आध घंटा देर हो गअी, अिसलिअे सब मेरी प्रतीक्षामें बैठे थे। साढे आठ बजे खाकर आअी तब बापूजी अखबार पढ रहे थे। साढे नौके बाद सोये।

बापूजीको रातमें अेक दो वार अुठना पड़ता है। मैं रोज सोचती हू कि अुस समय अुठ जाअूगी और तसला, पानी वगैरा दे दूंगी। परन्तु बापूजी अितने धीरेसे अुठते है कि मुझे पता ही नही चलता। अुलटे ठंडमें सिकुड़कर पडी रहती हू तो मुझे अच्छी तरह ओढा देते है। अिसलिअे सोनेसे पहले मैंने बापूजीसे कहा, आपकी सेवा करनेके बजाय मैं रातको आपसे सेवा कराती हू। आजसे मुझे जरूर अुठा दिया करे।

वे बोले, "रातकी मेरी सेवाकी बात कहती हो, परन्तु दिनमें मैं तुमसे सेवा कराता हू। तुम मुर्देकी भांति गहरी नीदमें सोअी रहती हो। अुसे मैं सुन्दर निर्दोष निद्रा कहूंगा। मुझे वह बहुत अच्छी लगती है। यह निद्रा अिस बातका विश्वास कराती है कि तुम कितनी निर्दोष हो। मनुष्यका जैसा मानसिक वातावरण होता है वैसा ही परिणाम दिखाअी देता है। भले मनुष्य बोले नही, परन्तु निद्रा, आहार, व्यवहार आदि सबसे परीक्षा हो जाती है कि वह किस कोटिका आदमी होगा।"

बापूजीके पैर दबाकर, सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके मच्छरदानी बन्द की। अिस वक्त पौने ग्यारह बजे हैं। मैंने अपनी डायरी भी पूरी कर ली। दातुनकी कूची बनाना बाकी है सो बनाकर सोने जाअूंगी।

पल्ला,

२७–१–'४७, सोमवार

आज ठंड अितनी अधिक थी कि अुठनेका जी ही नही होता था। बापूजीके पैर बहुत ठडे हो गये थे। बहुत देर तक दबाये। प्रार्थना आदि नित्यक्रम रोजके अनुसार चला। अब शामकी प्रार्थनाके समय अपनी डायरी साथ ले जाती हूं। बगला भाषान्तर होता है अुस बीच मैं लिख लेती हूं। बापूजी सुबह पानी पीते समय रोज सुन लेते है। देखकर हस्ताक्षर कर देते है।

आज बापूजीने बगला बारहखडी पूरी की। अुसे लिखनेमें पूरा आध घटा लगा। फिर कुछ पत्र लिखे। सात बजे थोडी देर सोये। ७–४० पर हम बारासे चले और ८–१० पर यहा पहुचे। अेक ही मील चलना था।

हमारा पड़ाव यहा अेक जुलाहेके घर है। बापूजीका मौन है। जुलाहा परिवार बड़ा प्रेमी है। धूप निकलनेके बाद बापूजीको मालिश की। स्नान करके भी वे बाहर धूपमें ही रहे।

आज दोपहरके भोजनमें बापूजीने पांच काजू, पाच बादाम, मुरमुरे और साग लिया। राजेन्द्रबाबूकी आत्मकथाकी पुस्तक आओी है। अुसे पढ़नेमें बापूजीने बहुत समय लगा दिया। सोमवार है अिसलिअे मुझे तो छुट्टी जैसा ही लगता है। अपना अतिरिक्त काम आज मैंने पूरा कर लिया। बापूजीकी चादरें और शतरंजी बड़ी मैली हो गअी थी। आज सब धो डाली। लगभग चालीससे अधिक कपडे धोये। अिसमें तीन बज गये। बादमें कलके लिअे खाखरे बना लिये।

दोपहरको दो बजे बापूजीने नारियलका पानी लिया। शामको प्रार्थनाके बाद यहांकी यूनियनके पुराने अध्यक्षके घर गये। वह मुसलमान परिवार था। वहां बापूजीने नारियलका पानी लिया। बहनें भी मिलीं। अेक बहन आठवी तक पढ़ी हुअी थी। बापूजीने बहनोंसे खास तौर पर शिक्षा प्राप्त करने अर्थात् लिखना-पढ़ना सीखनेको कहा और कातने पर जोर देते हुअे कहा : "कातनेसे घरमें साठ रुपयेका कपड़ा बनता है। और कपासका तो यह देश है ही। फिर आजकल कपडेकी अितनी असह्य महगाअी है। हमारे अैसे देशमें कपडे पर अंकुश ही किसलिअे हो? बहनें विचार करें तो अुन्हें जरूर लगेगा कि वे अपना कितना समय फिजूल खो देती हैं। छोटी छोटी लडकियां भी कात सकती हैं। आप जो पर्दा रखती हैं, वह मनमें रखिये। पर्देका अर्थ है शरम, मर्यादा और सभ्यता। परन्तु बाहर दिखानेको पर्दा रखें और मन मैला हो तो पर्दा किस कामका?"

आज हम जिस जुलाहेके घरमें ठहरे हैं, अुस पर बापूजी बहुत ही खुश हैं। अुसका अुल्लेख करके बोले, "मुझे बडा आनंद होता है कि आज मेरा मुकाम अेक जुलाहेके घर पर है। मुझे सब बड़े प्रेमसे रखते हैं। प्रेमके बिना महल कैदखाने जैसा लगता है, जब कि प्रेमपूर्ण झोंपडी महलसे भी अधिक अच्छी लगती है। सच बात तो यह है कि मैं बंगालकी झोंपड़ियों पर मुग्ध हू। अिनमें जो हवा और रोशनी मिलती है, वह कमरोंमें कहांसे मिल सकती है? परन्तु दुःखकी बात यह है कि अैसा सादा जीवन होने और कुदरतकी मेहरबानीके बावजूद यहांके हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेके साथ मुहब्बतसे नही रहते। क्या धर्म भिन्न होनेसे हम अिन्सानियत खो देंगे? परन्तु मुझे आशा है कि यह वैमनस्य हम जल्दी भूल जायंगे और अपनी जिम्मेदारीको समझेंगे। जहां दंगे हुअे हैं वहां अभी भी

बाजार बन्द है, लोग अेक-दूसरेको अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं। जिसमें नुकसान हमारा ही है; किसीको फायदा नहीं होगा। अेक तरफ अन्न न पकनेके कारण अकाल पडा हुआ है, तो दूसरी तरफ अज्ञान और जडताके कारण हम अपनी ही हानि कर रहे हैं। अपने ही पैरों पर कुल्हाडी मार रहे हैं।

"हमारे सामने कितने ही अैसे सवाल पड़े हैं, जिनके लिये सरकारको जरा भी तकलीफ देनेकी आवश्यकता नहीं। हम खुद अुन सवालोंको हल कर सकते हैं। अुदाहरणके लिअे, स्वास्थ्य, स्वच्छता, फल-फूलोंके छोटे छोटे पौधे अुगाना, पक्के पाखाने बनाना और नियमपूर्वक खाद तैयार करना अित्यादि अनेक काम हमारे सामने हैं। यदि हम अपने दिमागको अिन कामोंमें लगा दें तो सबको कितना लाभ हो? किसीको अेक पलकी भी फुर्सत मिले तो मुझसे कहना। परन्तु यह तभी होगा जब हमारी बुद्धि खुले। प्रभुसे मैं निरंतर यह प्रार्थना करता हूं कि जैसा अिस लड़कीने 'सबको सन्मति दे भगवान' गाया, वैसे वह हमारी बुद्धिको खोले और हमें अच्छे काम करनेकी शक्ति दे।"

यह आजकी प्रार्थना-सभाका प्रवचन है। निर्मलदा अिसका बंगला अनुवाद कर रहे थे, अुस बीच बापूजीने अपनी डायरी लिखी। मैंने अपनी लिखी।

बापूजी शामको बहुत थक गये थे। प्रार्थनाके बाद घूमकर लौटने पर मैंने आज अुनके पैर धोये। बहुत ठंड है। स्टीम किया हुआ अेक सेब और दूध लिया। ओढ़कर अुन्होंने थोडासा काता। कातकर अखबार सुने। शैलेनभाओी सुना रहे थे। बापूजी बहुत ठंडे हो गये थे, अिसलिअे मैंने अुनका शरीर दबाया। सवा नौ बजेके बाद बिस्तर किया। बापूजीने हाथ-मुंह धोकर गरम पानी पिया और लेट गये। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर मैं भी पौने दस बजे सोयी। आजके जैसी ठंड कभी अनुभव नहीं की।

रातमें भी बापूजीको बड़ी ठंड लग रही थी, अिसलिअे मुझे जगाया। ैने और ओढ़ाया और खूब दबाकर शरीर गरम किया।

पांचगांव,
२८–१–'४७

सदाकी भांति पल्लामें प्रार्थना हुअी। आज निर्मलदाने बहुत मीठे स्वरमें भजन गाया।

कल रातको बापूजीने स्त्रियोंके कुछ सवालोंकी छानबीन की थी। अुनके जो थोड़ेसे सवाल आये अुनमें अेक सवाल यह था कि यदि गुंडे स्त्रियों पर हमला करें तो वे क्या करें? भाग जाय या सामना करनेके लिअे हथियार तैयार रखें?

बापूजीने कहा, "बचावके लिअे हथियार रखनेकी अर्थात् हिंसा करनेकी तैयारी की ही नहीं जा सकती। आदर्श अहिंसक साहस बढ़ानेकी तैयारी करनी चाहिये। जो मनुष्य अहिंसक है, अुसके जीवनमें अैसे संकटका अवसर आता ही नहीं। वह शांति और गौरवके साथ हंसते हंसते मृत्युका आलिंगन करनेको तैयार रहता है। क्योंकि सच्ची सहायता हथियारोंकी नहीं, परन्तु अीश्वरकी ही है।

"संसारके पास आज आदर्श अहिंसासे पैदा होनेवाला साहस नहीं है, अिसलिअे वह अणुबम जैसे शस्त्रोंसे सुसज्जित है। परन्तु लोगोंको स्वाभाविक रूपमें किसी पर आधार रखे बगैर स्वतंत्रतासे रहना सीखना पड़ेगा। किसीके वश हो जानेकी अपेक्षा स्त्रियोंको प्राण त्याग देनेकी हिम्मत अपने भीतर पैदा करनी चाहिये। तब अुनमें अंतरकी पवित्रता अितनी बढ़ जायगी कि गुंडोंके हथियार अपने-आप नीचे गिर पड़ेंगे। मुझसे अपने प्राण दे देने और हमला करनेवालेकी जान लेनेके बीच चुनाव करनेको कहा जाय तो मैं कहूंगा कि हंसते-हंसते प्राण देनेमें ही सच्ची बहादुरी है।"

प्रार्थनाके बाद मुझसे कुछ पत्र लिखवाये। अुनमें अुपरोक्त बातका अुल्लेख किया। पत्र लिखाते-लिखाते बापूजी सो गये। अेक महिलाने बापूजीको पेंसिलसे पत्र लिखा था। अुसका अुल्लेख करके बापूजीने लिखा, "अब तुम हमेशा स्याहीसे ही लिखना। पेंसिलसे लिखना पाप है, आलस्य ही हिंसा है।"

रोजकी तरह हम साढ़े सात बजे पल्लासे यहांके लिअे रवाना हुअे। रास्तेमें रामकुमार दे, मुहम्मद रजा और मुफलिस रहम, अिन तीन जनोंके

घर गये। अिसलिअे यहा नौ बजे पहुंचे। मुफलिस रहमके यहां रोजकी भांति मैं स्त्रियोंके पास गअी तो सब स्त्रिया अन्दर चली गअी और दरवाजा बन्द कर लिया। आज यह अेक नया ही अनुभव हुआ। थोड़ी देरमें अेक अधेड़ अुम्रकी स्त्री मेरे पास आअी। अुसने बड़ी भलमनसाहतसे बातें कीं। पूछा कि मेरा और बापूजीका क्या रिश्ता है। अितनेमें दूसरी स्त्रियां भी बाहर आ गअी। अेक बहन खाना बना रही थी। अुसने मुझे मछलीका शाक और रोटी खानेका बहुत आग्रह किया। मैंने कहा, मछली मैं खाती नहीं, और रोटी खानेकी अिस समय मुझे आदत नहीं। अिससे अधेड़ अुम्रवाली स्त्री कहने लगी, "तुम बहाने बनाती हो। तुम कहती हो कि गांधीजी हिन्दू-मुस्लिम-अेकता करनेके लिअे निकले हैं। परन्तु हिन्दू अपने-आपको अूचा मानते हैं और हमें नीचा समझते हैं, हमसे भ्रष्ट होते हैं। तुम भी तो हिन्दू ही हो न?"

मैंने कहा, "मुझे खानेमें कोअी अेतराज नहीं है। आपके मनको सतोष देनेके लिअे मैं रोटी मुहमें डालनेको तैयार हूं, परन्तु अिस तवे या हाथको भी मछलीका शाक लगा हुआ होगा तो मैं नहीं खाअूंगी।"

शुद्ध रोटी बनाअी गअी। अुसमें से मैंने अेक टुकड़ा तोड़कर खा लिया। अिन बहनोंने मेरी परीक्षा की। कहने लगी, "तुममें हिन्दू-मुस्लिमका भेद नहीं है।"

मैंने रास्तेमें यह बात बापूजीसे कही। बापूजी कहने लगे, "तुमने थोड़ीसी रोटी ले ली यह अच्छा किया। परन्तु तुमने देख लिया न कि मेरे बारेमें भी बहनोंमें कितनी शका है?"

मुहम्मद रजाके यहासे सतरे आये। यहां आने पर बापूजीके पैर धोकर तुरत मालिश की। स्नानके बाद खानेमें दो खाखरे, शाक, दो काजू, दूध और गृहस्वामीको खुश करनेके लिअे थोड़ा नारियलका संदेश खाया। खाते समय अधूरे रह गये पत्र लिखवाये। बादमें आराम किया। सोकर अुठने पर दो नारियलका पानी पिया। कातते समय फिर पत्र लिखवाने लगे। अितनेमें प्यारेलालजी और सुशीलाबहन आ गये। अिसलिअे पत्र अधूरे रहे।

शामकी प्रार्थना-सभामें आज बहनोंके साथ मेरी मुलाकात और रोटी खानेका अुल्लेख करके बापूजीने कहा, "मेरी यात्रामें मुझे अेक हिन्दू और दो

मुसलमानोंके घर ले जाया गया। अिससे मुझे बडा आनन्द हुआ। मैं तो भावका भूखा हूं। मुझे पहलेसे नही कहा गया था कि जितनी जगह जाना पड़ेगा, परन्तु रास्तेमें निमंत्रण देनेवाले भाअियोंमें मुहब्बत देखी अिसलिअे वहा चला गया। तीनों जगह मुझे कुछ न कुछ खानेके लिअे कहा गया। परन्तु वह मेरा खानेका वक्त नही था। मैंने कहा, मुझे फल भेजेंगे तो मैं जरूर खाअूगा। मेरे साथ मेरी पोती भी यात्रा करती है। वह बहनोंके पास गअी। बहनोंने प्रेमसे अुसका स्वागत किया और अेक बूढी माजीने यह जानने पर कि यह लड़की मेरी पोती है अुनका आलिंगन किया। अेक बहनने मछलीका शाक और रोटी बनाअी थी। शाक-रोटी खानेका अुस बहनने मेरी पोतीसे आग्रह किया। परन्तु लड़की बेचारी क्या करती? अुसने अिनकार किया और कहा कि अिस समय मेरी खानेकी आदत नहीं। तब बहनोंको संदेह हुआ कि छुआछूतकी दृष्टिसे यह लडकी कुछ नही खा रही है। अिस पर जरासी रोटी तोड़कर अुसने खाअी, अिससे बहनें खुश हो गअी। मुझमें या मेरे साथ यात्रा करनेवालोंमें जातपातका भेद नही है। हमें किसीके भी साथ बैठकर खानेमें जरा भी आपत्ति नहीं है। मैं अपने मुसलमान मित्रोंसे प्रार्थना करता हूं कि जो हिन्दू यह मानते हो कि मुसलमानोंके हाथका खानेसे अपवित्र हो जाते हैं अुनके प्रति आप अुदार दृष्टिसे देखें। मैं समझता हूं कि अुनका यह खयाल गलत है। परन्तु सच्चे प्रेमकी परीक्षा किसीके साथ खानेमें ही थोड़े होती है? समय पाकर यह वहम अवश्य दूर हो जायगा। अिस दिशामें बहुत काम सफलतापूर्वक हुआ भी है। परन्तु वहम जब तक पूरी तरह मिट न जाय तब तक जहा जहा आपको सच्चा प्रेम देखनेको मिले वहां अुसकी कद्र कीजिये। तभी आप सब अेक-दूसरेके अधिक निकट आ सकेंगे।"

२६ जनवरीके प्रसंगका अुल्लेख करते हुअे बापूजीने कहा, "मेरे साथ अखबारवाले यात्रा करते हैं। अुन्होंने अेक समूह-भोजन रखा था। मुसलमान भाअी तो अुस पंगतमें खाने नही आये थे। परन्तु जिसके यहा ये भाअी ठहरे थे अुसने हाथ जोड़कर कहा कि मुझसे आप अपने साथ खानेका आग्रह न करें। आप तो अेक दिन रहकर चले जायगे, लेकिन मुझ पर आफत आ जायगी। आपके जानेके बाद मुझ पर दबाव पड़ेगा कि तू भ्रष्ट हो गया है, अिसलिअे मुसलमान हो जा।

"अिस आदमीका डर मुझे सच्चा लगा । और मैंने अखबारवालोंसे कह दिया कि आप अिस बेचारेकी झोंपडीमें सहभोज न रखें। हिन्दू और मुसलमान अपनी अपनी कमजोरी मिटाकर अेक-दूसरेके नजदीक कब आयेंगे, यह मैं नहीं जानता। परन्तु यह मकसद पूरा करनेके लिअे जरूरत पड़ने पर मैं अपनी जान देनेको भी तैयार हूं। अिसलिअे आप सब मेरे साथ अीश्वरसे प्रार्थना करें कि हे प्रभो! अैसा सुन्दर दिन जल्दी ही ला दे।"

मेरे छोटेसे प्रसंग परसे आज बापूजीने बड़े गद्‌गद हृदयसे प्रवचन किया।

प्रार्थनासे आकर बापूजीने आठ खजूर और आठ औंस दूध लिया।

रातको दस बजेके बाद बापूजी सोये। तब तक प्यारेलालजीके साथ महत्त्वकी बातें कीं, प्रवचन लिखा और दूसरे पत्र लिखे।

जयाग,
२९-१-'४७

बापूजीका प्रार्थना अित्यादिका क्रम नित्यके अनुसार चला। कुछ डाक देखी और बंगला वर्णमाला लिखी। मुझे शब्द लिखवाये। बापूजी बंगला शब्द स्वयं सीखकर मुझे सिखाते हैं और मजेकी बात तो यह है कि स्वयं ककहरा लिख देते हैं और मुझे अुस पर हाथ घुमानेको कहते हैं। अुन्हें कोअी अक्षर या शब्द समझमें नहीं आता तो मुझसे पूछते हैं और मैं अुनसे पूछती हूं। दोनोंमें से कोअी न समझ सके तो जाते हैं निर्मलदाके पास। बापूजीने आज बारहखड़ीके अपने लिखे अक्षरों पर मेरा हाथ घुमवाया, ताकि मेरे अक्षर सुधरें। यह देखकर निर्मलदा खूब हंसे। कहने लगे, "ये शिक्षक और शिष्या खूब हैं!" अिस प्रकार आजकल हमारी बंगलाकी पढ़ाअी चल रही है।

साढ़े सात बजे हमने पाचगाव छोड़ा। सवा आठ बजे हम यहां पहुंचे। यहां रातभर जागकर गृहस्वामीने हमारी व्यवस्था बड़े प्रेमसे की थी। 'जंगलमें मंगल' अिसीका नाम है। रामजीने जब चौदह वर्षका वनवास भोगा था, तब वनमें रहनेवाले भीलों या जंगली मनुष्योंने ही नहीं, पशु-पक्षियोंने भी कितने प्रेमसे अुनका स्वागत किया था, अिसका वर्णन हम रामायणमें पढ़ते हैं। वैसा ही यह दूसरा प्रत्यक्ष दर्शन मैं कर रही हूं। यहां भी हमारा मुकाम जंगलमें रहनेवाले जुलाहे, मोची, हरिजन आदि लोगोंके यहीं रहता है। परन्तु वे प्रेमसे नहला देते हैं। अुनका सत्कार बम्बअी-दिल्लीमें रहनेवाले शहरियोंके

इसलिये बड़ी बहादुर बन है, अैसा कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां पढ़े-लिखे लोग रहते हैं, जिन्हें बापूजीने अितनी तालीम दी है। यहां बापूजीका लिखा साहित्य पढ़नेवाला वर्ग भी है। लेकिन यहां केवल भक्तिमय प्रेम ही है। स्त्रियां भी अपने घर आ पड़नेवाले अितने असह्य दुःखोंके बीच भी बापूजीके आने पर अुनका स्वागत करनेके लिअे मंगल शंख बजाती हैं, शगुन करती हैं, तिलक लगाकर आरती अुतारनेको दीपमाला जलाती हैं और मंगलनादसे वातावरणको गुंजा देती हैं। सचमुच बापूजी जब दौरा करते हैं तब शहरोंका (बम्बअी, पूना, दिल्ली वगैरहका) स्वागत मैंने अपनी आंखों देखा है। परन्तु यह स्वागत कुछ अनोखा ही लगता है। चारों ओरका वातावरण प्रकृतिकी शोभासे भरपूर है। नोआखालीके ये गांव बहुत ही रमणीय हैं। अुनमें भी ग्रामीण लोगोंका स्वागत। फिर क्या पूछना? अिसके सिवा वे सब पूरा अकेले ही नंगे पैरों अैसी असह्य सर्दीमें यात्रा कर रहे हैं, अिस पवित्र यात्रामें शरीक होनेका मुझे जो सौभाग्य मिला है अुसके आनंदकी क्या बात कहूं? आज मैं रामायणके अुस प्रसंगकी कल्पना अच्छी तरह कर सकती हूं जब लक्ष्मणजी रामचन्द्रजीसे वनवासमें खुदको साथ रखनेकी प्रार्थना करने गये और रामचन्द्रजीने बड़ी आनाकानीके बाद अुन्हें अपने साथ ले जाना स्वीकार कर लिया। तब अुन्हें कितना आनन्द हुआ होगा? भगवान्ने बापूजीकी अिस यात्रामें रहनेका मुझे कैसा सुन्दर अवसर दिया है! अुसकी दया वास्तवमें अपार है।

यहां आकर बापूजीके पांव धोये। डॉ० सुशीलाबहन आअी हैं। आज बापूजीकी मालिश अुन्होंने की। अिस बीच मैंने बापूजीके लिअे खाखरे और शाक बनाया। बापूजी नहाकर बाहर निकले कि तुरंत अुन्होंने भोजन कर लिया। वे बोले, "मेरी सेवा तो बहुत होती है। फिर भी मैं बेचैन रहता हूं। काम बढ़ता जा रहा है और पूरा नहीं हो पाता। यह मुझे खटकता है।"

आज बापूने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर दिये हैं। यह प्रश्नोत्तरी अिस प्रकार है।

प्रश्न : क्या आप चाहते हैं कि मुसलमान आपकी प्रार्थनामें आयें?

बापूजीने कहा : "मेरी प्रार्थनामें सबको सम्मिलित होना ही चाहिये अैसा मेरा जरा भी आग्रह नहीं है। परन्तु यदि मुसलमान भाअी अ।

आये तो मैं प्रसन्न अवश्य होअूंगा; मुझे अच्छा भी लगेगा। मेरी प्रार्थनामें मुसलमान भाओ-बहन काफी शरीक होते रहे हैं।"

प्रश्न : आपको तो लोग अवतारी पुरुष मानते हैं। आप हिन्दू हैं फिर भी आप हमारे कुरानमें से आयतें क्यों बोलते हैं? अिस प्रकार राम-रहीम और कृष्ण-करीमको कैसे जोड़ा जा सकता है?

बापूजीने कहा : "अिन प्रश्नोंमें अुठाओ गओ आपत्तियोंसे मुझे अपार दुःख होता है। अिस प्रकारकी आपत्तियां अुठाना हमारे मनकी संकीर्णताको बताता है। मेरी प्रार्थनामें कुरानकी आयतें पढ़ना मेरी लड़कीके समान और अिस्लामका दृढ़तासे पालन करनेवाली, अब्बास तैयबजीकी पुत्री बीबी रैहाना बहनने शुरू किया है। मुझे कहा जाता है वैसा मैं कोओ अवतारी पुरुष नहीं हूं। मैं तो अदनेसे अदने भाअियोंसे भी छोटा प्रभुका — खुदाका — सेवक हूं। मेरी अिच्छा मुसलमानोंको अधिक अच्छे और सच्चे मुसलमान, हिन्दुओंको अधिक अच्छे हिन्दू, ओसाअियोंको अधिक अच्छे ओसाओ और पारसियोंको अधिक अच्छे पारसी बनानेकी है। मैं किसीसे धर्म बदलनेको कहता ही नहीं। मेरा धर्म दुनियाके सभी धर्मशास्त्रोंका पाठ करना स्वीकार करता है; वह बड़ा व्यापक धर्म है। प्रभुके — खुदाके — अनेक नाम हैं। क्या हम यह कह सकते हैं कि राम ही अुसका नाम है? अथवा रहीम ही अुसका नाम है? मैं अपनेको अवतारी पुरुष मानता ही नहीं और अुस प्रकारसे कुछ करता भी नहीं। मैं आपके जैसा ही अेक साधारण मनुष्य हूं। और प्रभु तो अेक ही है। अुसे कोओ खुदाके नामसे पुकारता है, कोओ प्रभुके नामसे। प्रभु अलग नहीं है, हमने अुसे अलग कर रखा है। यह बात बार बार मैं अिसलिअे दोहराता हूं कि आप मेरे कार्यको समझें।"

युवकोंसे भी बापूजीने दो शब्द कहे, "हमारे देशके जो नौजवान — स्त्री-पुरुष — रोजगारके लिअे बम्बओ-कलकत्ते जैसे शहरोंमें गये हैं, अुनका फर्ज आज जब देश पर आफत आओ है अुचित सहायता देना है। अुनका कर्तव्य गांवोंकी सेवा करना है। अिसका बिलकुल आसान रास्ता यह है कि अिस प्रकारके नौकरीपेशा लोग या व्यापारी अिकट्ठे हों और फिर कुछ मासकी छुट्टी लेकर गांवोंमें व्यवस्थित काम करें; अुनकी छुट्टी पूरी होने पर दूसरी टोली काम करे और वे अपने निजी काममें लग जाय, जिससे अुन्हें धन्धेमें भी हानि न अुठानी पड़े और गांव भी फिरसे ताजे हो जायें। जो

लोग खुद सेवा न कर सकें, वे पास रुपया हो तो रुपयेसे अिस काममें मदद करें।

"अिंग्लैण्ड, रूस और अैसे दूसरे आगे बढ़े हुअे देशोंके लोग अपने देशके लिअे कितना अधिक काम करते हैं? अुनके लिअे हमारे मनमें सचमुच आदर पैदा होता है। प्रत्येक परिवारमें से अेक अेक स्त्री या पुरुष भी अिस प्रकार निकल आये तो आज कितना शानदार काम हो सकता है? दुनियाके लोगोंमें आपसी अैक्य अिसी ढंगसे सिद्ध किया जाता है। हमारे यहां भी देशप्रेमी कम पैदा नहीं हुअे। परन्तु आज भाअी भाअीको मार रहा है, अिसलिअे सब कुछ खतम हो रहा है। हम अपने संकीर्ण मनके स्वार्थपूर्ण हिसाबोंसे परे हो जाय, यही प्रभुसे मेरी प्रार्थना है।"

शामको निराश्रितोंकी अेक छावनी देखने गये। अुसमें पाठशाला चलती है। पाठशालाके बालकोंने कसरत करके बताअी। अेक बालकको पुस्तक और स्लेट अिनाम दी। दूसरोंको हमारे पासके संतरे बांटे। वहांसे घूमने गये। लौटकर बापूजीने खजूर और दूध लिया।

आज फिर बापूजीके पैरोंमें बिवाअियां पड़ गअी हैं। कलकी असह्य ठंड अिसका कारण मालूम होती है। गीले फिसलनवाले खेतोंमें नंगे पैर चलनेसे पैरोंमें खुरसटें पड़ जाती हैं। राम रखे वैसे ही रहना पड़ता है। रातको पैर धोकर बिवाअियोंमें मरहम भरा। दायें पैरके अंगूठेकी बिवाअीको फूट देखकर तो मैं कांप अुठी। आंखें बन्द करके अन्दर मरहम भरा और पट्टी बांधी। परन्तु सवेरे नंगे पांव चलेंगे कि फिर वही हालत हो जायगी। अब तो बापूजी पैरोंमें कुछ पहनें तो अच्छा। परन्तु मेरी कहनेकी हिम्मत नहीं होती।

रातको नौ बजेके बाद बापूजीने काता। २६० तार हुअे। बादमें सोनेकी तैयारी करनेके लिअे हाथ-मुंह धोनेका पानी मांगा। रोज मुंह धोनेके लिअे ठंडे पानीका ही अुपयोग करते हैं। परन्तु आज मुझे लगा कि अैसी असह्य सरदीमें मुंह धोनेको गरम पानी रख दूं। मैंने अैसा ही किया। परन्तु मेरी समझदारी महंगा सौदा साबित हुअी। गरम पानी देखकर बापूजी बोले, "तुम्हें मुझ पर दया आती हो तो अेक काम करो। सुन्दर सेज बिछा दो, मोटरें मंगा दो या हवा गरम रहे अैसा सुन्दर महल बनवा दो और अुसमें अिस महात्माको रख दो। कैसा अच्छा रहेगा! क्यों?"

बापूजी बहुत व्यंगमें बोल रहे हैं, यह मैं फौरन समझ गअी। "तुमने विचार किया है कि मुह धोनेको भी यदि गरम पानी चाहिये तब तो यह कैसी साहबी होगी? आज जहा लोगोंको रोटी पकानेको लकडी नही मिलती वहा मेरे लिअे मुह धोनेको तुम गरम पानी करती हो, यह तुम्हारे लिअे और मेरे लिअे आश्चर्यकी बात नही? नहानेके लिअे तो गरम पानीकी बात समझी जा सकती है। परन्तु हाथ-मुह धोनेके लिअे भी तुमने गरम पानी किया, यह मेरी समझमें नही आ सकता। अितनेसे सचेत हो जाओ कि तुम अभी तक कहा हो? बस, मुझे अितना ही तुमसे कहना है।"

हाथ धोनेके लिअे गरम पानी काममें लेनेमें भी बापूजीको गरीबोंके दर्दका कितना खयाल होता है, यह अिससे देखा जा सकता है। "जहां रोटी पकानेको भी लकडी नही मिलती वहा हाथ धोनेको गरम पानी किया जा सकता है? अिस हद तक बढा हुआ नाजुकपन हम कब दूर करेंगे।?" ये शब्द बोलते हुअे बापूजी अत्यन्त दुखी हो गये, यह मैं स्पष्ट देख सकी।

सोते समय यह बहुत ही वेदनाभरी घटना हो गअी। मुझे भी बहुत खटकी। बापूजीने अिसके भीतर छिपे हुअे सुन्दर पाठका विचार और मनन करनेकी सूचना की।

आमकी,
३०–१–'४७

सदाकी भांति प्रार्थना। बंगलाका पाठ करनेके बाद मेरी डायरी बापूजी देख गये।

बम्बअीसे दो बहनें खास तौर पर बापूजीको १,२५० रुपये हाथोहाथ देने आअी हैं। बापूजीने यह रुपया मुझे सौंपा और सतीशबाबूको देकर अुनकी रसीद लेनेकी सूचना की।

सात बजे रस लिया और दस मिनट बापूजीने आराम किया। साढे सात बजे हमने पांचगाव छोड़ा। पौने नौ बजे हम यहां पहुचे। यहा आकर तुरन्त ही बापूजीने पंडितजीके नाम पत्र लिखा। सारा पत्र अंग्रेजीमें लिखा, परन्तु सम्बोधन 'चि० जवाहरलाल' किया। सुन्दर लगता था। मालतीदीदी (मालती-देवी चौधरी) भी आअी थीं। मालिश, स्नानादिसे निबटकर दस बजे भोजन किया। भोजनमें साक, दो खाखरे, दूध और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। आज शामके

लिअे दूध नहीं है। हो जाय सो सही। दोपहरको हॉरेस अेलेक्जेन्डर आये। कातते कातते अेक घंटा अुनके साथ बातें कीं। बादमें जमान साहब आये। अुन्होंने २५० रुपयेका अेक झोंपड़ा बनाया है, जिसे देखनेके लिअे हमें ले गये।

परन्तु बापूजी बोले : "हमारी काठियावाडी भाषामें कहूं तो यह अेक पिटारा ही है।" हम आधे पहुंचे कि याद आया बापूजीका छोटा रूमाल लेना मैं भूल गअी हूं। अुसे लाने दौड़ती हुअी डेरे पर गअी और ले आअी। हमारा आजका मुकाम अेक कायस्थके घर है। अिस गावमें ५४२ हिन्दू, १,९९४ मुसलमान, २६ जुलाहे और ७५ दूसरी जातियोंके लोग हैं। पांच भंगियोंके घर हैं। जिन भाअीके घर हमारा मुकाम है अुनका नाम यशोदाकुमार दे है।

आज शामके लिअे दूध कहीं भी नहीं मिला। अंतमें हारकर मैंने बापूजीसे बात कही। वे बोले, "अिसमें क्या हुआ? नारियलका दूध बकरीके दूधका काम अच्छी तरह देगा। और बकरीके घीके बजाय नारियलका ताजा तेल खायेंगे।"

मैंने नारियलका दूध आठ औंस बकरीके दूधकी तरह तैयार किया, परन्तु यह दूध पचनेमें भारी पड़ा और बापूजीको दस्त होने लगे। शाम तक तो बहुत ही कमजोरी आ गअी। बापूजीको खूब पसीना छूटा। सिर पकड़ रखा। मैंने निर्मलदाको पुकारा। मुझे ख्याल हुआ कि सुशीलाबहनको बुलवा लूं। कभी कुछ हो जाय तो मूर्ख मानी जाअूंगी। (सुशीलाबहन बापूजीकी प्रार्थनासे पहले ही चली गअी थी। थोड़ासा फर्क पड़ा।)

मैं निर्मलदाको चिट्ठी देने गअी त्यों ही बापूजी जागे, "मनुड़ी, तुमने निर्मलबाबूको पुकारा, यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा। परन्तु तुम्हारी अुम्रको देखकर मैं तुम्हें क्षमा करता हूं। फिर भी अैसे समयमें कुछ न करके हृदयसे रामनाम लेनेकी तुमसे आशा रखता हूं। मैं तो मनमें रामनाम ले ही रहा था। तुमने निर्मलबाबूको बुलानेके बजाय मनमें रामनाम लेना शुरू कर दिया होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। अब तुम अिस बारेमें सुशीलासे न कहना, न लिखकर अुसे बुलाना। मेरा सच्चा डॉक्टर राम ही है। अुसे मुझसे काम लेनेकी गरज होगी तब तक वह जिलायेगा, नहीं तो अुठा लेगा।"

अीश्वरने मेरी कैसी लाज रखी? खयाल हुआ कि श्रद्धालु मनुष्यकी अीश्वर वास्तवमें मदद करता है। मेरी यह कितनी कड़ी कसौटी थी? 'सुशीलाको न बुलाना' ये शब्द बापूजीके मुहसे निकले और मैंने निर्मलदासे अपनी चिट्ठी छीन ली।

यह घटना बापूजीके सामने ही हो रही थी। अिसलिअे वे लेटे-लेटे ही सब बात समझ गये। मुझसे कहने लगे, "क्यों तुमने लिख भी डाला था न?" मैंने मजूर किया।

"आज तुम्हे और मुझे अीश्वरने बचा लिया। यह चिट्ठी पढ़कर सुशीला तो दौडती हुअी मेरे पास आती, परन्तु मुझे वह जरा भी अच्छा न लगता। मैं तुम पर और अपने पर चिढ़ता। आज तुम्हारी और मेरी परीक्षा हुअी। यदि रामनामका मत्र मेरे हृदयमें गहरा अुतर जायगा तो मैं कभी बीमार होकर नही मरूगा। यह नियम हर आदमीके लिअे है, केवल मेरे लिअे नही। मनुष्य जो भूल करता है अुसका फल भोगना ही पड़ता है। आखिरी सास तक रामनामका स्मरण हृदयगत रहना चाहिये। तोतेकी तरह नही, बल्कि हृदयसे। रामायणमें कथा है कि जब सीताजीने हनुमानजीको मोतियोंकी माला दी, तब अुन्होंने अुसे तोड़ डाला। अुन्हें यह देखना था कि अुसमें राम शब्द है या नहीं। अुनकी दृष्टिमें मोतीका कोअी मूल्य नही था। रामनाममें वे अितने तन्मय थे। यह घटना सच्ची होगी या नही, अिस झझटमें हम क्यों पड़ें? हनुमानजी जैसा पहाड़ी शरीर शायद हम न बना सकें। परन्तु आत्मा तो पहाडी बना सकते हैं। मनुष्य चाहे तो अभी मैंने जो अुदाहरण दिया अुसे सिद्ध कर सकता है। सिद्ध न कर सके लेकिन सिद्ध करनेका प्रयत्न ही करे तो भी काफी है। गीतामाताने कहा है कि मनुष्य प्रयत्न करे, और फल अीश्वरको सौप दे। अिस प्रकार तुम्हें, मुझे और सबको प्रयत्न करना चाहिये। अब तुम समझी होगी कि तुम्हारी, मेरी या किसीकी भी बीमारीके बारेमें मेरी क्या दृष्टि है?

"आज . . . के साथ ब्रह्मचर्यकी बातें करते समय मैंने जो कहा था वह तुम्हारे समझने जैसा है। मैंने कहा कि जो पुरुष मानते हैं कि स्त्रियोंको छूनेमें भी पाप है और अिसलिअे अुन्हें नहीं छूते, क्योंकि स्त्रीके स्पर्शमात्रसे विकार पैदा होनेका अुन्हें डर है, अैसे आदमी ब्रह्मचारी हों तो भी मैं अुन्हें ब्रह्मचारी नही मानता। दूसरे, यह मत मानो कि मनुष्य बूढ़ा हो गया है

जिसलिअे निर्विकार हो गया है। यह निर्विकार अिसलिअे है कि अुसकी शक्ति बूढ़ी हो गअी है, न कि ब्रह्मचर्यके पालनसे। और मन तो आखिरी दम तक भी बूढ़ा नहीं होता। मेरे कुछ मित्रोंमें भी अिस विषयमें मतभेद जरूर है। परन्तु मैं तो अनेक प्रयोगों और अनुभवोंके बाद यह दावा करता हूं कि अुन सबमें सच्चा ब्रह्मचारी मैं हूं। जो निर्विकार हो अुसे रोग क्यों हो? वह रोगोंसे पीड़ित रह ही नहीं सकता। जिन्होंने मेरे साथ अिस विषयमें बहस की है वे बीमार ही रहते हैं। जिसके लिअे सभी स्त्रियां मां, बहन या बेटी हैं, वह अुनके स्पर्शसे विकारी क्यों बने? भले सामने अप्सरा जैसी स्त्रियां क्यों न हों! फिर भी मैं तो कहता हूं कि मेरी मृत्यु ही यह साबित करेगी कि मेरा यह दावा सच्चा है या झूठा। मनुष्यकी मृत्युसे पहले यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि क्षणभरमें मनुष्य बदल भी सकता है। मन अितना चंचल होता है। अिसीलिअे मैंने अुनसे कहा कि यदि मैं रोगसे मरूं तो यह मान लेना कि मैं अिस पृथ्वी पर दंभी और रावण जैसा राक्षस था। परन्तु यदि रामनाम रटते रटते जाअू तो ही मुझे सच्चा ब्रह्मचारी, सच्चा महात्मा मानना।"

बापूजी रामनामकी अपनी असीम श्रद्धा पर धाराप्रवाह बोलते जा रहे थे। अेक अेक शब्द हृदयकी गहराअीसे निकल रहा था।

मैं तो अिस घटनासे यही सोच रही थी कि भगवानने मुझे कैसे समय पर बचा लिया। सचमुच सेवा करनेसे, केवल अुनके पांव दबाने या भोजन तैयार करने जैसे कामोंसे सच्चे बापूजीको नहीं पहचाना जा सकता। अैसे अवसरों पर ही अुनके विराट स्वरूपका दर्शन होता है। और तभी खयाल होता है कि ये सच्चे बापू हैं। गीतामें जिस पुरुषोत्तमका वर्णन किया गया है, वैसे ही साक्षात् पुरुषोत्तमके समीप रहनेका सौभाग्य अीश्वरने दिया, यह अुसकी मुझ पर कितनी बड़ी दया है?

रातको बापूजीने अपने पत्रमें भी अेक बीमार बहनको रामनामके बारेमें लिखा, "रामबाण दवा तो संसारमें अेक ही है और वह रामनाम है। अिस नामको रटनेवाला जिन नियमोंका पालन करना चाहिये अुनका पालन करे। परन्तु यह रामबाण दवा हम सब कहां कर पाते हैं?"

रातको बापूजी अेकदम ताजे हो गये थे। घूम कर लौटनेके बाद हॉरेस अेलेक्जेण्डरके साथ ही लगभग सारे समय बातें हुअीं।

अुनके जानेके बाद प्रेस-प्रतिनिधियोंके साथ फिर २५० रुपयेवाले झोंपड़ेकी बात की। "वह झोपडा नही, परन्तु पिटारा है। अुसमें न हवा आ सकती है, न धूप आ सकती है। नारियलके पत्तोंका झोपड़ा बनायें तो अूपरका शून्य अुड जायगा और पच्चीस रुपयेमें काम पूरा हो जायगा। मुझे ठेका देनेको तैयार हो? मैं तो अिसमें से कमीशन भी कमा लूंगा।" सब खिलखिलाकर हंस पडे।

रातको दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। मैंने हमेशाकी तरह सिरमें तेल मला। पैर दबाकर डायरी पूरी कर रही हूं। थोड़ी दोपहरमें लिखी थी। अिस समय साढे दस हुअे हैं।

रातको लेटे लेटे मैं विचार कर रही थी कि बापूजीने आश्रमके नियमोंमें ब्रह्मचर्यका जो व्रत रखा, वह कितनी अुच्च कोटिका विचार करके रखा होगा। अुसके आध्यात्मिक भावका साक्षात्कार यहां हो रहा है।

मेरे जैसी छोटी लडकीकी माता बनकर बापूजी भिन्न भिन्न प्रकारसे मेरा निर्माण कर रहे हैं। अिसीलिअे मुझे ब्रह्मचर्य व्रतकी बारीकी समझाअी।

नवग्राम,
३१–१–'४७

रोजकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार मेरी डायरीमें बापूजीने दस्तखत किये।

बिहारमें जो अुपद्रव और गडबड़ी चल रही है अुससे परिचित रहनेके लिअे जिन भाअीको (शासन-तन्त्रके) बापूजीने सब बातें समझनेके लिअे बुलवाया था, वे जदुभाअी सहाय आये हैं। हुनरभाअी हिन्दी-अुर्दूकी डाक देखते हैं। बापूजीने बिहारमें कमीशन नियुक्त करनेका सुझाव दिया। परन्तु . . . को यह बात बहुत पसन्द हो अैसा नहीं लगता। मिट्टी लेते समय हॉरेस अेलेक्जेण्डर आये। अुनसे बापूजीकी आध्यात्मिक और वर्तमान हलचलों पर बहुत बातें हुअीं।

दोपहरको बहनोंकी सभा हुअी। अुसमें अेक बहनने प्रश्न पूछा कि अुसका पति संन्यासी हो गया है, अब वह क्या करे? बापूने कहा, "जिसका पति संन्यासी हो गया है अुसे शुद्ध जीवन बिताना चाहिये। वह अपनी रोटी खुद कमाये। परिग्रह न करे। संन्यासी कोअी भगवे कपडे पहननेसे ही होता

है अैसी बात नही। कुछ न सूझे तो चरखा चलाये। मैंने चरखेको कामधेनु कहा है। कातते समय रामनामका रटन करे। कदाचित् यह संन्यास पतिके संन्याससे मेरे खयालमें बढ़ जायगा। वह ग्राम-सफाअी और बच्चोकी सफाअी आदि भिन्न भिन्न सेवाके कामोंमें अपनेको लगा दे। 'खाली दिमाग शैतानका घर' यह कहावत शायद बंगलामें भी होगी। हम बेकार बैठेंगे तो हजार अुत्पात सूझेंगे। अिसलिअे अेक मिनट भी खाली न बैठना ही तुम्हारे लिअे सबसे सुन्दर मार्ग है।"

शामको बापूजीने कुछ नही खाया। शहदका पानी और अेक औंस गुड़ लिया।

आमिशपाडा,
१–२–'४७

रोजकी तरह प्रार्थना। फिर पत्र लिखाये और बंगलाका पाठ किया। 'डायरी' शब्द लिखनेके बजाय 'रोजनीशी' अथवा 'नित्यनोंध' जैसे शब्द लिखनेको कहा। कलकी डायरी सिलसिलेवार नही लिखी गयी थी, अिसलिअे कहा कि जो बात या घटना जिस समय हो अुसे अुसी क्रमसे लिखा जाय, तो किसी समय यह देखनेकी जरूरत पडने पर कि कौनसी बात कब कही गअी, तलाश न करना पडे। अतः अिसका ध्यान रखा जाय।

दूसरी बात यह कही कि यह डायरी चाहे जिसके हाथोंमें न पड़ जाय, अिसकी खास तौर पर सावधानी रखनी चाहिये। हमारे पास कुछ खानगी तो है ही नहीं, फिर भी चाहे जिसके हाथोंमें जानेसे अुसका दुरुपयोग हो सकता है। यह डायरी भविष्यमें तुम्हे बडी काम आयेगी। जयसुखलालको अच्छी लगेगी। तुम्हें मालूम है कि सुशीलाने आगाखा महलमें जो डायरी रखी थी वह मेरी दृष्टिसे अेक अैतिहासिक और मूल्यवान डायरी हो गअी है। अिसीलिअे मैं अिस बात पर जोर देता हूं और ध्यान देता हूं। अतः तुम अिसे संभालकर रखो या जयसुखलालके पास भेज दो। प्यारेलालको बताओ तो वह बहुतसे अच्छे सुधार कर सकते हैं। मेरे पास खूब गहराअीमें जानेका समय ही कहां है? मेरा विश्वास है कि प्यारेलाल विद्वान आदमी हैं। वे मुझे अच्छी तरह समझते हैं। तुम अुनके पास डायरी पढने भेजोगी तो कुछ खोओगी नही, बल्कि पाओगी और अुन्हे मेरे कामकी कल्पना होगी।

परन्तु मैंने भीतर बहुत कुछ अुलटा-सीधा लिखा हो और वे हंसी अुड़ायें तो? अिस विचारसे अिनकार कर दिया।

बापूजी बोले, "किसीके मुहकी तरफ क्यों देखें? वे हंसी अुड़ायेंगे तो भी तुम सबक सीखोगी। कोओी यह कहेगा या वह कहेगा, अिसकी कल्पना किसलिअे की जाय? ओीश्वरको जो करना होगा सो करेगा। हम अपना कर्तव्य-पालन करते रहें। यदि यह कल्पना करके कि अच्छा होगा या बुरा होगा हम पुरुषार्थ न करें तो आगे नहीं बढा जा सकता। परन्तु साहस बढ़ाकर जैसे हम हों वैसे ही दिखाओी दें। और अैसा करते हुअे कोओी हमें सुधारनेवाली बातें कहे तो अुन्हें सुनकर हम अुनका स्वागत करें। बड़ेसे बड़ा माने जानेवाले मनुष्यको कभी कभी छोटे बालक भी अैसा सबक सिखा देते हैं कि अुसका सारा जीवन ही बदल जाता है। यह मैंने अनुभव किया है। अिसलिअे जिसमें जो सीखनेको मिले वह सीख लेनेकी ही वृत्ति हमें अपने भीतर पैदा करनी चाहिये।"

हमने साढ़े सात बजे नवग्राम छोड़ा। सवा आठ बजे यहां पहुंचे।

भोजन करते समय प्यारेलालजी अपने गांवसे आये। वे बापूजीके लिअे स्वयं खाखरे बनाकर लाये थे। अिसलिअे अुनके बनाये हुअे दो खाखरे, शाक, दूध और खोपरेके सन्देशका छोटासा टुकड़ा बापूजीने लिया। दो बजे नारियलका पानी और शामको दूध और आठ खजूर लिये।

हम जिनके यहां ठहरे हैं, अुनका नाम कृष्णमोहन चटर्जी है।

आज प्रार्थना-सभामें बापूजीने अिस्लाम धर्मकी सुन्दर व्याख्या की। रोजकी अपेक्षा आजकी प्रार्थनामें हिन्दू-मुसलमानोंकी संख्या बहुत ज्यादा थी और खूब शोरगुल था। बापूजीने शान्ति हो जानेके बाद प्रवचन शुरू किया।

अेक मौलवी साहबने कहा कि "गांधीजीको अिस्लामके कानूनके बारेमें बोलनेका कोओी हक नहीं।" अुन्होंने राम जैसे (मनुष्य) राजाके साथ खुदाका नाम जोड़नेका भी विरोध किया। अिस पर बापूजीने कहा, "मेरे मतानुसार धर्मके मामलेमें यह बिलकुल संकुचित दृष्टि है। अिस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म या पारसी धर्म कोओी पेटीमें बंद करके रखनेकी वस्तु नहीं है। मनुष्यमात्रको अुनका अध्ययन करके अुनके आदर्श और सिद्धान्त, जो जीवनमें अुपयोगी

हों, स्वीकार या अस्वीकार करनेका पूरा अधिकार है। मैंने अिस्लाम धर्मका अध्ययन किया है, अिसलिअे यह कहता हूं।"

बादमें डॉ० सुशीलाबहन जिस गांव (चांगेरगाव) में काम करती हैं वहांसे सुन्दर समाचार आये। अुन्होंने अपनी दवादारूसे और सेवासे बहुतसे मुसलमान भाअी-बहनोंको अच्छा करके अुनका प्रेम सम्पादन किया है। अुन्हें सेवाग्राम जाना है, परन्तु ये लोग जाने नहीं देते। साथ ही जिन लोगोंने दंगेके समय लूटपाट की थी वे खुद सुशीलाबहनको लूटका माल केवल अुनके प्रेम और सेवाके कारण अपने-आप लौटा जाते हैं। यह कितना सुन्दर हृदय-परिवर्तन कहा जायगा?

बापूजीने कहा, "मैं तो सरकारको यह सलाह दूंगा कि लूट करनेवालोंको अदालतोंमें घसीटना छोड दे। हां, सच्चे दिलसे अुन्हे समझाकर यदि जनता और सेनाके आदमी अिस दिशामें काम करें तो वह शान्ति स्थायी शान्ति होगी।"

जायदादके ट्रस्टियोंके बारेमें अेक सवाल बापूजीसे पूछा गया था। अुस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा, "जो भी सम्पत्ति है वह सब अीश्वरकी, खुदाकी है, वह सर्वशक्तिमान अीश्वरसे ही मनुष्यको मिली है। आदमीके पास जो कुछ है वह अुसकी निजी सम्पत्ति नहीं, परन्तु ससारकी सेवाके लिअे अुसे सौंपी गअी सम्पत्ति है। किसी भी व्यक्तिके पास यदि अुसकी अपनी जरूरतसे ज्यादा जायदाद हो, तो वह भगवानकी दु:खी और गरीब सन्तानकी सेवामें अुसका अुपयोग करनेके लिअे अुस जायदादका ट्रस्टी है। अीश्वर पर यदि श्रद्धा रखें तो वह सर्वशक्तिमान है। वह कोअी वस्तु सग्रह करता ही नहीं। मनुष्यको चाहिये कि वह अपनी जरूरतके अनुसार रोज लेकर कुछ भी संग्रह न करे। यदि हम यह सत्य अपना लें तो मेरे खयालसे कानूनकी दृष्टिमें यह ट्रस्टीपन ही माना जायगा। फिर किसीको लूटने या चूसनेकी नौबत नहीं आयेगी।"

बापूजीका हर बार, जैसा गीताजीमें कहा है, भिन्न भिन्न स्वरूपोंमें दर्शन होता है। कोअी भी मामला अुनके सामने रखें तो अुसमें से अटूट खजानेके रूपमें नअी नअी बातें जाननेको मिलती हैं। कुबेरके भंडार जैसा है। अिस खजानेमें से जितना लें अुतना ही थोड़ा है। लेनेवालेमें लेनेकी शक्ति होनी चाहिये।

दशघरिया,
२-२-'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना हुआी। बादमें बंगलाका पाठ। अुसके बाद गरम पानी लिया। आज बापूजी प्यारेलालजीके साथ बातें करते रहे, अिसलिअे अुनसे मेरी डायरी पढ़वाना रह गया।

बादमें मोरवीके महाराजा साहबने दस हजार रुपयेका जो चेक भेजा है अुस पर बापूजीने हस्ताक्षर कर दिये, और अुन्हें अेक पोस्टकार्ड लिखा। फिर फलोंका रस लेकर सो गये। मैं पैर दबा रही थी, अिसलिअे तैयार होनेमें देर लगी।

सात पैंतीसको हम यहांके लिये रवाना हुअे। रास्तेमें दो खंडहर देखे। सुन्दर मकान वीरान कर डाले गये हैं। मनुष्योंकी हत्यायें भी हुआी हैं। बापूजीने . . के साथ बात करते हुअे कहा कि "जरूरी कामके बिना या मेरे बुलाये बगैर कोआी न आये। जिसीमें मेरा, कार्यकर्ताका और यज्ञका श्रेय है। सब अपनी अपनी मतिके अनुसार कार्य करते रहें।"

मालिश और स्नान नियमानुसार। दोपहरके भोजनमें खाखरे दो, दूध आठ औंस, जरासा खोपरेका मावा और ग्रेपफ्रूट लिया। अिस गांवमें २५१ हिन्दुओं और ८०० मुसलमानोंकी आबादी है।

शामको अब्दुल्ला साहब (अेस० पी०)के साथ बात करनेके बाद मौन लिया।

भोजनमें शामको दूध, अेक केला और जरासे मुरमुरे लिये। रातमें अेक औंस गुड़ लिया। रातको मौन शुरू हो गया था, अिसलिअे खास तौर पर कोआी नहीं आया था।

दादुरसील,
३-२-'४७

सदाकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद तुरत ही आज जवाहरलालजीको पत्र लिखा। पानी पीते समय मैंने अपनी डायरी सुनाआी, परन्तु हस्ताक्षर दशघरियामें नहीं हो सके। मैं डायरीको दूसरी पुस्तकोंके नीचे रखकर चली गआी थी, अिसलिअे बापूजीने हस्ताक्षर करनेको ढूंढी परन्तु मिली नहीं।

सात बजकर पैंतीस मिनट पर दशघरियासे चले। रास्तेमें क्षेमनाथ चौधरी और हबीबुल्लाहकी बाड़ीमें थोड़ी देर ठहरे।

यहा हम यशोदा पाल नामक कायस्थके घर ठहरे है।

यहां आकर रोजकी तरह सब क्रम चला। स्नानादिसे निवृत्त होकर बापूजीने भोजनमें पांच बादाम, पांच काजू, दूध और खोपरेका सन्देश लिया, जो हमारे यजमानने बनाया था। अिन लोगोंकी बापूजी जरासी भी चीज स्वीकार कर लेते हैं तो वे अपने-आपको कृतकृत्य मानते है।

यहा २७१ हिन्दुओं और १,२१२ मुसलमानोकी वस्ती है। आज मौन है, अिसलिअे कोअी खास बात नही हुअी। बापूजीका मौन हो अुस दिन सब सूना सूना लगता है। शामको यहाकी अेक पाठशाला देखने गये। वहासे आकर दस खजूर और आठ औंस दूध लिया। दूसरा कुछ नही लिया। नियमानुसार प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें अच्छी संख्या थी।

धादुरखील,
४–२–'४७

अब मौनवारके दिन अेक ही गांवमें दो दिन ठहरनेका कार्यक्रम रखा है, क्योंकि गावके लोगोंको मौनके दिन बापूजीके साथ बातें करनेका लाभ नही मिलता। अिसलिअे सवेरे मुझे बहुत थोडा काम रहा।

रोज हम जिस समय यात्राके लिअे प्रयाण करते है, अुसी समय अर्थात् ७–३० पर हम घूमने निकले। अेक मुसलमान वकीलके यहा गये। मै स्त्रियोंसे अन्दर मिलनेको गअी। अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की, अिसलिअे अुन्हें बापूजीसे मिलाया। साढे आठ बजे लौटे। रोजकी भांति बापूजीके पैर धोकर मालिश व स्नान कराया। मुझे आजसे बापूजीने गीताके श्लोक लिखनेको कहा। पैर धुलवाते हुअे बापूजीने कुछ पत्रो पर दस्तखत किये। · · · के साथ बातें करते हुअे नअी तालीमकी चर्चा की। नअी तालीम सीखनेवालेको अपना शरीर मजबूत बना लेना चाहिये। पोहे, मुरमुरे, खोपरेका तेल, खली और पकानेकी अन्य सब कला सीख लेनी चाहिये। स्वभाव पर अैसा अंकुश रखना चाहिये कि सत्याचरण करते हुअे सबके साथ प्रेमपूर्वक घुलमिल सके। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि सीख लेना चाहिये। गुजराती सीख लेनी चाहिये। बंगला भी। आज दिनभर लगभग मुसलमान भाअी और वे भी पदाधिकारी ही मिलने आते रहे।

आजकी प्रार्थना-सभा अेक मुसलमान भाअीकी बाड़ीमें हुअी। निर्मलदा अनुवाद कर रहे थे तब बापूजीने मुझे लिखकर दिया कि "तुम अन्दर बहनोंसे

मिल आओ, ताकि बादमें वक्त खराब न हो।" मैं बहनोंके पास गअी। मैंने अऊजबिल्ला सुनाया। अेक लडकी कहने लगी : "हम तो हिन्दूके साथ बात करनेमें भी पाप समझती हैं।" मैंने कहा, तुम्हारा आग्रह था, अिसीलिअे तो कुरानकी यह आयत मैंने सुनाअी। परन्तु मुझे तो यह जानना है कि तुम किस तरह पढ़ती हो। अिसलिअे तुम मुझे पढकर बताओ। मैं तुम्हारे सामने विद्यार्थी बनकर सीखना चाहती हूं। मेरी अिस बातका अेक बुढिया माजी पर अच्छा असर हुआ। अुन्होंने अुस लड़कीको डांटा और अेक छोटीसी आयत भी मुझे सुनाअी।

अितना निश्चित है कि वातावरणमें खूब जहर भरा है। लोगोंको धर्मके बहाने अिस तरह भुलावेमें डालकर ज्ञानी लोग शैतानका काम कर रहे हैं।

मैंने बापूजीसे प्रार्थनाके बाद बात की। बापूजी बोले : "अिसीलिअे तो मैं कहता हूं कि जरूरतसे अधिक ज्ञानने अधिक अज्ञान और जडता पैदा की है। जैसे हमारे यहा समझदार जरूरतसे ज्यादा समझदारी बताता है तो अुसे अवलमंदका दादा कहा जाता है, अुसी तरह अिस आवश्यकतासे अधिक ज्ञानने बरबादी ही की है।"

हमारी प्रार्थना-सभा शादुरखीलके मुख्य नेता सलीमुल्ला साहबके घर पर हुअी थी। प्रार्थनाके दौरानमें रामधुन तालियोंके साथ अच्छी तरह गाअी गअी थी। बापूजीको बंगला भाषामें मानपत्र दिया गया था।

बापूजीने कहा, "मुझे तो आपके दिलो पर कब्जा करके सबको अेक करना है। यदि दिलोंमें अेकता कायम न हो तो कोअी काम सिद्ध नहीं होगा; और जब तक अेकता कायम नहीं होगी तब तक हमारे भाग्यमें गुलामी ही लिखी रहेगी। हम सब किसी भी नामसे पुकारे जाते हों, परन्तु गुलामी हम केवल सर्वशक्तिमान अीश्वरकी ही स्वीकार करें। मैं खुदाको केवल मानव जैसे रामके साथ जोड़ता हूं, यह माननेमें अज्ञान है। मेरा राम ही मेरे लिअे अीश्वर है। वह पहले था, आज है और आगे भी सनातन काल तक कायम रहेगा। अुसका न जन्म हुआ है, न किसीने अुसे बनाया है। अिसलिअे सब भिन्न भिन्न धर्मोंका अध्ययन करके अुनका आदर करना सीखें। रहीम और करीम नामवाले मेरे मुसलमान मित्र हैं। अुन मित्रोंको मैं अुनके नामसे बुलाअूं तो अिसका यह अर्थ नहीं कि मैंने अुन्हें खुदाके साथ जोड़

दिया है। और असे आप गुनाह कहेंगे? वैरका बदला वैरसे लेनेमें मेरा विश्वास नहीं। जाति जातिके बीच सच्चा भाओीचारा स्थापित हुओ बिना किसी भी काममें कामयाबी नहीं मिलेगी।

"मुझे जबर्दस्ती बिहार भिजवानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। परन्तु जब मुझे महसूस होगा कि अमुक जगह बैठकर मैं राष्ट्रकी अुत्तम सेवा कर सकूंगा तो वहां अवश्य पहुंच जाअूंगा। अिसीलिअे यहां आकर बैठा हूं।"

शामको बापूजीने दूध नहीं लिया। दो ग्रास गुड़ लिया। दस बजे सोने गये। पांच सात मिनटमें मैं भी सोने चली गअी।

श्रीनगर,
५–२–'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना वगैराका क्रम चला। मुझे सख्त जुकाम और बुखार होनेसे बापूजीने अपने पास सुला दिया और डाक सारी खुदने ही लिखी। सुबह ठीक साढ़े छः बजे मुझे अुठाया।

रोजकी तरह सात पैंतीसको शादुरखील छोड़ा। यहां वीणावहन दास और दूसरी महिलाओंने सुन्दर तैयारी की थी। वे अिस गांवमें काम करती हैं। सवा आठ पर यहां पहुंचे। आकर्षक रांगोली पूरी गअी थी। आज हमारा मुकाम अेक तांती (जुलाहे)के घरमें है। पिछले अक्तूबरमें अुसका सर्वस्व लुट गया था। बापूजीके पांव धोकर मालिश की। मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिये। स्नानके समय भी सो गये।

बापूजीको भोजन करा रही थी अुस समय वीणादीदी अपना थर्मामीटर लेकर मेरे पास आअी और बापूजीके सामने जबरन् मेरा बुखार नापा। १०४° था। यह देखकर बापूजी मुझ पर बहुत नाराज हुअे।

मेरा खयाल था कि जल्दी काममें फारिग होकर सो जाअूंगी। परन्तु वीणादीदी नहीं मानी। और अितना बुखार होने पर भी काम किया, अिसलिअे बापूजी खूब नाराज हुअे। कहने लगे, "यदि तुमने सुबहसे अपना काम देवभाअी या निर्मलबाबूको सौंप दिया होता और सो जाती तो यह हाल न होता। यह सब अच्छा नहीं कहा जा सकता। परन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे कहूं तो मूर्खता भी कही जा सकती है। अिसकी अपेक्षा नम्रतासे आराम लिया होता तो मैं खुश होता। मैंने कअी बार तुमसे कहा है कि काम करने लगती हो तो फिर तुम शरीरकी तरफ नहीं देखती। अिसके लिअे आगाखां महलमें तुम्हें कितनी ही

बार रुलाना पड़ा है। आज भी रुलाना पड़ेगा। जरा भी थकावट मालूम हो तो काम छोड़ ही देना चाहिये। तुम देखती हो कि मेरे पास कामका ढेर लगा हुआ है, फिर भी मैं वक्त निकालकर आराम लिये बिना नहीं रहता। नहीं तो सेवा कैसे कर सकता हूं? जिसे सेवा करनी है अुसे पहले अपनी सेवा करना सीखना चाहिये।"

दो घंटे आराम लेनेके बाद बुखार अुतर गया। शामको ९९॥° हो जाने पर प्रार्थना करने गअी। बीणादीदीने आज बडी मदद दी, अिसलिअे बापूजीकी सेवामें खास दिक्कत नहीं हुअी।

आज बापूजीके प्रार्थना-स्थान पर मंडप-सा बनाया गया था। अूपर भी छत बनाअी गअी थी। प्रार्थनामें लोगोंकी खासी भीड थी। परन्तु शान्ति थी। बापूजीने प्रार्थना-स्थलको सजानेका विरोध किया। कहा, अिससे रुपये और शक्तिका व्यय होता है। थोड़ीसी अूंची बैठक रहे, ताकि लोगोंको देखा जा सके और लोग मुझे देख सकें। बैठनेके लिअे नरम गद्दी जैसी हो, ताकि थकावट न लगे। अिसके सिवा किसी भी प्रकारकी सजावट करनेकी जरूरत नहीं।

प्रार्थनामें आज अहिंसाके शास्त्र पर कहा। बापूजी बोले, "जो आजादीकी रक्षा करनेवाले (मंत्री) होंगे वे विरोधियोंको मार डालनेको तैयार नहीं होंगे, परन्तु खुद मरनेको तैयार होंगे। हिन्दुस्तानके स्वराज्यके मामलेमें अंग्रेज क्या कहते हैं या क्या नहीं कहते हैं, अिसकी मुझे परवाह नहीं; अुसका आधार हम पर ही है। अिसीलिअे तो जब जवाहरलालजी और दूसरे साथियोंने राज्य-शासन अपने हाथमें लिया, तब मैंने कहा था कि आजसे आपको कांटोंकी सेज पर सोना है। हमारा ध्येय भारतकी संपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है; और अुसके बिना चैन नहीं लेना है। परन्तु यदि कोअी यह मानता हो कि अंग्रेजोंको तलवारके जोरसे निकाल देंगे तो यह बडी भूल है। अंग्रेज लोग तलवारसे कभी नहीं डरते। अंग्रेज जातिकी लगन, दृढ़ता और हिम्मत विलक्षण है। अिसलिअे तलवारकी ताकतसे वे कभी नहीं भागेंगे। परन्तु यदि हम मौतका बदला मारकर नहीं बल्कि मर कर देंगे, तो अिस अहिंसाके साहससे वे अवश्य हारकर चले जायेंगे। अहिंसाके सामने वे खड़े नहीं रह सकते। अहिंसासे बढ़कर किसी शक्तिको मैं नहीं जानता। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि अभी तक हमें पूरी आजादी नहीं मिली, अिसका कारण

यह है कि हमारी अहिंसा कच्ची है। परन्तु कुछ भी हो। आज तक अहिंसाकी ताकतका विकास करनेका जो प्रयत्न हुआ, अुस ताकतका जवाब ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मंडलका तैयार किया हुआ दस्तावेज है।

"युद्धके परिणामोंका हम विचार करें तो मालूम होगा कि मित्रराज्योंको भी लाभ नहीं हुआ, दुश्मनको तो होता ही कहांसे? असंख्य मानव कट गये। परन्तु फिर भी आज दुनियाकी स्थिति अैसी है कि वह अिस समय अनाज और कपड़ेके बिना अधमरी हो गअी है। मैं तो बिना किसी हिच-किचाहटके कह सकता हूं कि परिणामकी परवाह किये बिना धर्मके रूपमें नहीं, तो केवल प्रामाणिक नीतिके रूपमें अहिंसाको अपनाकर अिस शक्तिसे प्राप्त होनेवाले आत्म-विश्वास पर आधार रखनेमें हमारा अधिक श्रेय है।"

अंग्रेजी भाषाके बारेमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, "अंग्रेजी शिक्षाने हमारी बुद्धिको ज्ञानके भोजनके अभावमें बिलकुल भूखों मारकर हमें पंगु बना दिया है। मैं तो चाहूंगा कि हमारी अितनी अधिक समृद्ध भाषाओंकी शिक्षा विद्यार्थियोंको दी जाय। हम यदि लगनसे काम करें और अंग्रेजी शिक्षाका मोह छोड़ दें, तो जनताको सच्ची नागरिकताके धर्म और अधिकारोंकी शिक्षा बहुत जल्दी दे सकते हैं।"

आज जब प्रवचनका बगलामें अनुवाद हो रहा था तभी मैं घर चली आअी थी। बापूजीके लिअे दूध और सेब तैयार करके सो गअी। फिर रातको बुखार हो आया। परन्तु साढ़े आठ बजे अुठकर बापूजीका बिछौना करके रोजका कामकाज पूरा किया। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पाव दबाकर फिर जल्दी सो गअी।

बापूजीको मेरा काम करना अच्छा नहीं लगा। अैसा लगा कि नाराज हैं। परन्तु मैं चुपचाप कामकाज निबटाकर सो गअी। (आजकी डायरी ता० ६-२-'४७ के दिन लिखी गअी है।)

धरमपुर,
६-२-'४७, गुरुवार

रोजकी भांति प्रार्थनाके लिअे अुठी। बापूजीने कहा कि तुम्हें रातभर बुखार रहा अिसलिअे सो रहो। परन्तु मुझे अच्छा लगा अिसलिअे अुठ बैठी। प्रार्थनामें गीताजीके अध्यायमें भूल हो गअी। शुक्रवारका अध्याय आज पढ़ना आरंभ कर दिया। बापूजीने सचेत किया। मुझसे कहने लगे, "यह

वार रुलाना पड़ा है। आज भी रुलाना पड़ेगा। जरा भी थकावट मालूम हो तो काम छोड़ ही देना चाहिये। तुम देखती हो कि मेरे पास कामका ढेर लगा हुआ है, फिर भी मैं वक्त निकालकर आराम लिये बिना नहीं रहता। नहीं तो सेवा कैसे कर सकता हूं? जिसे सेवा करनी है अुसे पहले अपनी सेवा करना सीखना चाहिये।"

दो घंटे आराम लेनेके बाद बुखार अुतर गया। शामको ९९॥° हो जाने पर प्रार्थना करने गअी। वीणादीदीने आज बड़ी मदद दी, अिसलिअे बापूजीकी सेवामें खास दिक्कत नहीं हुअी।

आज बापूजीके प्रार्थना-स्थान पर मंडप-सा बनाया गया था। अूपर भी छत बनाअी गअी थी। प्रार्थनामें लोगोंकी खासी भीड़ थी। परन्तु शान्ति थी। बापूजीने प्रार्थना-स्थलको सजानेका विरोध किया। कहा, अिससे रुपये और शक्तिका व्यय होता है। थोड़ीसी अूची बैठक रहे, ताकि लोगोंको देखा जा सके और लोग मुझे देख सकें। बैठनेके लिअे नरम गद्दी जैसी हो, ताकि थकावट न लगे। अिसके सिवा किसी भी प्रकारकी सजावट करनेकी जरूरत नहीं।

प्रार्थनामें आज अहिंसाके शास्त्र पर कहा। बापूजी बोले, "जो आजादीकी रक्षा करनेवाले (मंत्री) होंगे वे विरोधियोंको मार डालनेको तैयार नहीं होंगे, परन्तु खुद मरनेको तैयार होंगे। हिन्दुस्तानके स्वराज्यके मामलेमें अंग्रेज क्या कहते हैं या क्या नहीं कहते हैं, अिसकी मुझे परवाह नहीं; अुसका आधार हम पर ही है। अिसीलिअे तो जब जवाहरलालजी और दूसरे साथियोंने राज्य-शासन अपने हाथमें लिया, तब मैंने कहा था कि आजसे आपको काटोंकी सेज पर सोना है। हमारा ध्येय भारतकी संपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है; और अुसके बिना चैन नहीं लेना है। परन्तु यदि कोअी यह मानता हो कि अंग्रेजोंको तलवारके जोरसे निकाल देंगे तो यह बड़ी भूल है। अंग्रेज लोग तलवारसे कभी नहीं डरते। अंग्रेज जातिकी लगन, दृढ़ता और हिम्मत विलक्षण है। अिसलिअे तलवारकी ताकतसे वे कभी नहीं भागेंगे। परन्तु यदि हम मौतका बदला मारकर नहीं बल्कि मर कर देंगे, तो अिस अहिंसाके साहससे वे अवश्य हारकर चले जायंगे। अहिंसाके सामने वे खड़े नहीं रह सकते। अहिंसासे बढ़कर किसी शक्तिको मैं नहीं जानता। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि अभी तक हमें पूरी आजादी नहीं मिली, अिसका कारण

यह है कि हमारी अहिंसा कच्ची है। परन्तु कुछ भी हो। आज तक अहिंसाको ताकतका विकास करनेका जो प्रयत्न हुआ, अुस ताकतका जवाब ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मंडलका तैयार किया हुआ दस्तावेज है।

"युद्धके परिणामोंका हम विचार करें तो मालूम होगा कि मित्रराज्योंको भी लाभ नहीं हुआ, दुश्मनको तो होता ही कहांसे? असंख्य मानव कट गये। परन्तु फिर भी आज दुनियाकी स्थिति असी है कि वह अिस समय अनाज और कपड़ेके बिना अधमरी हो गअी है। मैं तो बिना किसी हिच-किचाहटके कह सकता हूं कि परिणामकी परवाह किये बिना धर्मके रूपमें नहीं, तो केवल प्रामाणिक नीतिके रूपमें अहिंसाको अपनाकर अिस शक्तिसे प्राप्त होनेवाले आत्म-विश्वास पर आधार रखनेमें हमारा अधिक श्रेय है।"

अंग्रेजी भाषाके बारेमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, "अंग्रेजी शिक्षाने हमारी बुद्धिको ज्ञानके भोजनके अभावमें बिलकुल भूखों मारकर हमें पंगु बना दिया है। मैं तो चाहूंगा कि हमारी अितनी अधिक समृद्ध भाषाओंकी शिक्षा विद्यार्थियोंको दी जाय। हम यदि लगनसे काम करें और अंग्रेजी शिक्षाका मोह छोड़ दें, तो जनताको सच्ची नागरिकताके धर्म और अधिकारोंकी शिक्षा बहुत जल्दी दे सकते हैं।"

आज जब प्रवचनका बंगलामें अनुवाद हो रहा था तभी मैं घर चली आअी थी। बापूजीके लिअे दूध और सेब तैयार करके सो गअी। फिर रातको बुखार हो आया। परन्तु साढ़े आठ बजे अुठकर बापूजीका बिछौना करके रोजका कामकाज पूरा किया। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पांव दबाकर फिर जल्दी सो गअी।

बापूजीको मेरा काम करना अच्छा नहीं लगा। अैसा लगा कि नाराज हैं। परन्तु मैं चुपचाप कामकाज निबटाकर सो गअी। (आजकी डायरी ता० ६-२-'४७ के दिन लिखी गअी है।)

धरमपुर,
६-२-'४७, गुरुवार

रोजकी भांति प्रार्थनाके लिअे अुठी। बापूजीने कहा कि तुम्हें रातभर बुखार रहा अिसलिअे सो रहो। परन्तु मुझे अच्छा लगा अिसलिअे अुठ बैठी। प्रार्थनामें गीताजीके अध्यायमें भूल हो गअी। शुक्रवारका अध्याय आज पढ़ना आरंभ कर दिया। बापूजीने सचेत किया। मुझसे कहने लगे, "यह

भूल बताती है कि तुम बीमार हो, फिर भी या तो मैं आराम नहीं लेने देता या तुम नहीं लेती।" बापूजीको पानी और रस देकर मैं सो गअी। बापूजीने . . . को पत्र लिखा। अुसमें लिखा कि "लीग और राजा कुछ भी करे। मेरी दृष्टिसे कांग्रेसको कुछ नहीं करना है। कपडे और खुराकके मामलेमें मेरा विचार सीधा और दृढ है।"

साढे सात बजे हमने श्रीनगर छोडा। रास्तेमें अेक मुसलमान भाअी सिकदर जूनियाकी वाडीमें रुके। मैं स्त्रियोंके पास गअी। आकर रोजकी तरह बापूजीकी मालिश, स्नान अित्यादि काम पूरा किया। भोजनमें बापूने पाच काजू, पांच बादाम, शाक, फल और दूध लिया। मेरी तबीयत ठीक रही। सब काम किया। परन्तु दोपहरके बाद १०४° टेम्परेचर हो गया। अिसलिअे चारसे पाच तक बापूजीके पास सो गअी। पाच बजे प्रार्थनाके समय जागी और नियमानुसार प्रार्थना करने बापूजीके साथ गअी।

शामको बापूजीने भोजन कुछ नहीं किया। केवल गुड ही लिया। अिसलिअे प्रार्थनाके बाद मेरे पास कोअी खास काम नहीं था। बापूजी कहने लगे, "तुम्हें सुला सकू, अिसीलिअे मैंने केवल गुड़ लिया है।" बापूजीने मेरी चिन्ताके कारण और मेरे आरामके लिअे सिर्फ गुड लिया, अिसका पता मुझे रातको लगा। मैंने माना था कि शायद तबीयत ठीक न होनेके कारण दूसरा कुछ लेनेसे अिनकार कर रहे हैं। परन्तु वे दूसरोंकी चिन्ता कितनी ज्यादा करते हैं? मुझे गुडकी बात सुनकर दु ख हुआ। सोचा मैंने अपना स्वास्थ्य नहीं संभाला, अिसकी यह सजा मिली!

आज सफाअीके बारेमें बापूजीने कहा कि "स्वच्छता तो मेरा मुख्य और मनपसद विषय है। पश्चिमकी बहुत बातें मुझे पसन्द नहीं, मगर वहा स्वच्छताका नियम मैंने खास सीखा है। यहांके तालाबोंमें अुसी पानीमें कपडे धोने होते हैं और वही पानी पीना होता है। यह देखकर मुझे बड़ा दु ख होता है। लोग जरा भी सकोच किये बगैर जहा-तहां थूकते हैं, पान खाकर पिचकारियां छोडते हैं। यह सब हमारे देशमें स्वाभाविक बन गया है। अिससे बड़ा दु ख होता है। यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। हिन्दुस्तानमें अनेक रोगोंका कारण अिस प्रकारकी गदगी ही है। अितने पर भी भारत जी रहा है, यही मेरे लिअे तो अचरजकी बात है। यहाकी आबादीमें मृत्युका अनुपात दुनियामें सबसे अधिक है। पूरी सफाअी रखनेमें गरीबी कभी

बाधक नहीं होती। सिर्फ हम आलस्य छोड दें तो अपने देशको स्वर्णभूमि बना सकते हैं। अंग्रेजीमें कहावत है कि स्वच्छता दैवी गुणके निकट पहुंच सकती है। और यदि हम बाहरकी सफाअी रखनेके नियमोंका मनन करेंगे तो अन्दरकी सफाअी रखना हमें अपने-आप सूझेगा।

बापूजीकी प्रवृत्तियोंसे परिचित रहनेके लिअे सब अखबारी संवाददाता साथ रहनेकी मांग करते हैं। बापूजी कहते हैं, "अखबारवालोंने अभी-अभी अिस क्षेत्र पर चढ़ाअी की है। यहां तो अुनके लिअे किसी भी प्रकारकी सुविधा नहीं है। यदि वे मेरे आसपास ठाटबाट खड़ा करें तो मैं अुन्हें चले जानेको कह दूं। परन्तु वे बहुत सादे ढंगसे देहातके अनुकूल बनकर जीवन बिता रहे हैं। मेरी सलाह है कि अखबारवाले यहां संवाददाता भेजकर व्यर्थ खर्च न करें। फिर भी अखबारवालोंके पास अपने आदमी मेरे पास भेजनेको ज्यादा रुपया हो तो वे मुझे रुपया ही भेज दें। यहांका कष्ट सब कोअी सहन नहीं कर सकते।"

बापूजीसे अेक प्रश्न यह पूछा गया कि "१९२५ में आपने कहा था कि मैं तो शासन-विधानमें यह धारा रखूं कि स्वतंत्र भारतमें जो शारीरिक परिश्रमसे राज्यकी कुछ न कुछ सेवा कर सके अुसीको मत देनेका अधिकार दिया जाय। क्या आप अिस बात पर अब भी कायम हैं?" बापूजीने जवाब दिया, "अिस बात पर तो मैं मरूंगा तब तक कायम रहूंगा। भगवानने मनुष्यको बनाया है अिसलिअे प्रत्येक मनुष्यका यह धर्म है कि वह काम किये बिना खाना न खाये। रुपयेवाले अपना रुपया दे दें और सबके साथ हाथ-पैर चलाकर खायें। बुद्धिसे रुपया बटोर कर, भोग-विलासके साधन खड़े करके अैश-आराममें जीवन व्यतीत करना पाप है।"

राजाओंके विषयमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, "हिन्दुस्तानमें राजा तो ६०० हैं और प्रजा करोड़ोंकी संख्यामें है। राजाओंसे मैं कहूंगा कि तुम राजा न रहो और प्रजाके सेवक बन जाओ। अिसमें तुम्हारा और प्रजाका सबका कुशल है।"

बापूजीके पास आनेवाले भिन्न भिन्न प्रश्नों पर अलग अलग चर्चाअें होती हैं और अुनसे बापूजीके निश्चित विचार विस्तारसे जाननेको मिलते हैं।

प्रसादपुर,
७-२-'४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे साढ़े तीन बजे अुठे। प्रार्थनाके बाद मेरी दोनों दिनकी डायरीमें बापूजीने हस्ताक्षर किये। रोजकी तरह बंगलाका पाठ किया। निर्मलदाने अेक बंगाली बालिकाका बंगलामें लिखा पत्र सुनाया।

सात पैंतीस पर धरमपुर छोड़ा। सवा आठ बजे हम यहां पहुंचे। यह मकान डॉक्टर अुपेन्द्रकुमार मजूमदारका है।

मेरी तबीयत अच्छी है, अिसलिअे बापूजीने सभी काम करनेकी अिजाजत दे दी। आकर रोजकी भांति बापूजीकी मालिश की, स्नान कराया। बापूजी नहाकर निकले, अितनेमें सुशीलाबहन पैं आअीं। बापूजीके लिअे संभालकर थोड़ेसे काजू-बादाम रख छोड़े थे सो लाअीं। बापूजीने भोजनमें शाक, दूध, थोड़े मुरमुरे और दो काजू लिये। खाखरे नहीं खाये। बाकी सारा क्रम नित्यकी भांति चला।

दोपहरको बहुत लोग मिलने आये। अुनमें प्रोफेसर राजकुमार चक्रवर्ती, सतीशबाबू, मनोरंजनबाबू, चारुदा, मा (हेमप्रभादेवी), जमान साहब, और पुलिस अफसर भी थे। कर्नल शाहनवाज साहब (आअी० अेन० अे०वाले) और हरिदासभाअी तथा बेलाबहन (नेताजीकी भतीजी) आअीं। निरंजनसिंह गिल भी आये।

बापूजी मिट्टी लेते लेते थोड़ी देर सो गये। अुठकर मेरे बारेमें आये हुअे अेक स्वप्नकी बात कही। ". . . तुम अुसे मरते देखती हो और अुसे बचानेका धर्म समझकर अुसके पास जाती हो। परन्तु तुम अुसके पास पहुंचती ही हो कि वह आदमी विकारवश हो जाता है। तुमने अुसे दो चांटे लगाये। अिसलिअे अुसने आकर तुमसे माफी मांगी। तुम मुझे यह बात कहने आती हो अितनेमें मेरी आंख खुल जाती है। मैं तुम्हें शाबाशी देने जा रहा था।"

बापूजी कहने लगे, "मैं तुम्हें अिस स्वप्नके जैसी बनाना चाहता हूं। यह स्वप्न सिद्ध करनेमें वर्षों या शायद युगोंका समय भी लग जाय। परन्तु कितना ही समय लगे, अुससे हमें क्या? हम कर्तव्य करते करते मर गये तो अगले जन्ममें अिसे पूरा करेंगे। परन्तु अिसमें बीमारीको जरा भी स्थान नहीं होना चाहिये। हमारी भाषामें दृढ़ता होनी चाहिये, रहन-सहनमें

मर्यादा और विवेक होना चाहिये। और डरके लिअे थोड़ा भी स्थान नहीं होना चाहिये। अितना तुम पचा लोगी तो खूब अूची अुठोगी।"

अूपरकी बातें हो रही थीं, अितनेमें ठक्करबापा आ गये। डाकका बड़ा-सा ढेर लाये। बापा और बापूजीने थोड़ीसी बातें कीं। आजकी डाकमें सबके पत्र बहुत गरमागरम हैं।

शामको जमान साहबके साथ बातें करते समय अुन्होंने बताया कि निराश्रितोंके लिअे सदाव्रत खोला गया है, जहासे अुन्हें मुफ्त अनाज दिया जाता है। अिस पर बापूजीने अपने विचार बताते हुअे कहा, "प्रत्येक मनुष्यको मेहनत करके ही खानेका अधिकार है। सरकारको अिस तरहका काम खोलना चाहिये। अुदाहरणार्थ, रास्ते सुधारना, देहातकी पुनर्रचना करना, सहकारी ढंग पर अुद्योग स्थापित करना आदि। अैसे अनेक कामोंमें जो लोग साथ दें अुन्हींको यह पूरा राशन लेनेका अधिकार है। हमारे यहा जो मुफ्त दान दिया जाता है और हमने अुसका जो अर्थ किया है, अुसका मैं विरोधी हूं। सशक्त लोग कुछ भी काम न करें और सरकारकी तरफसे रहने तथा खानेकी मुफ्त सुविधा पानेकी आशा रखें, यह मेरी दृष्टिमें अुचित नहीं है। वैसे जो लोग बेघरबार, निराश्रित हो गये हैं अुनके प्रति मुझे पूरी सहानुभूति है। सट्टा करके जो लोग रुपया प्राप्त करते हैं वह सच्ची कमाओीका पैसा नहीं है। हर आदमी अपना पसीना बहाकर, खुद मेहनत करके कमाये और खाये तब तो हमारे यहा स्वर्ग ही जाय, अिसमें मुझे कोअी सन्देह नहीं है। कवि, डॉक्टर, लेखक, शिक्षक, वकील और व्यापारी कुछ भी स्वार्थ रखे बिना यदि सच्चे दिलसे अपने-अपने फर्ज़ अदा करें और अपने ज्ञान अथवा कुशलताको अपने अपने ढगसे मानव-सेवामें खर्च करें, तो हमारा भारत संसारमें प्रथम श्रेणीका देश बन जाय।"

बापूजीने जमान साहबको अिस प्रकार अपने विचार बताये, अिस पर मैं विचार कर रही थी कि वे अितनी बड़ी अपेक्षा अिन लोगोसे कैसे रखते हैं? मैंने बापूजीसे पूछा तो वे कहने लगे :

"अेक आदमी भी अिस प्रकार करने लग जाय तो अुसका असर दूसरों पर पड़ेगा। हमें निराश न होकर प्रयत्नशील रहना चाहिये। हिन्दुस्तानमें अगर स्वार्थी हैं तो परमार्थी भी कम नहीं हैं। साथ ही मैं तो गीता-माताका अभ्यासी हूं। अिसलिअे कहूंगा कि गीतामाताने कहा है कि तुम

श्रद्धा रखकर किसी फलकी अपेक्षा रखे बिना शुद्ध भावनासे अपना कर्तव्य करते रहो।"

आज बापूजी प्रार्थनासे लौटने पर कात पाये। रोज दोपहरको ही कात लेते हैं। परन्तु आजका दिन मुलाकातियोंसे भरा हुआ था। कातते कातते अखबार सुने। मैंने डाक सुनाओ। फिर पैर धोये और बापूजी बिस्तर पर लेटे। शामको कुछ नहीं खाया। बहुत थक गये हैं। गरम पानी और शहद लिया। पांच ही मिनटमें बिस्तर पर लेट गये। बादमें मैं पैर दबा रही थी कि सो गये।

बापूजीके सोनेके बाद मैंने घरके लिअे पत्र लिखा। बापूजीके लिखे हुअे पत्रोंकी नकल करके डायरी लिखी। काता। अितनेमें साढ़े बारह हो गये। परन्तु लिखनेका काम बहुत चढ़ गया था, अुसे पूरा कर लिया। अिसलिअे हलकी हो गओ।

नंदीग्राम,
८-२-'४७

मैं रातको देरसे सोने गओ तब बापूजी गहरी नींदमें थे। परन्तु डेढ़ बजे अुठे और मुझे जगाकर लालटेन जलानेको कहा। मुझसे कहा "मैं रामनाम तो ले ही रहा था, परन्तु अेक पत्र मजिस्ट्रेटको लिखना था, अिसलिअे मन पर बोझ है। नींद अुड़ गओ। और भी बहुतसे पत्र लिखने हैं। और कल बापा जो ढेर सारी डाक लाये हैं वह भी पढ़नी है। अिसलिअे लालटेन जला दो।"

मैंने लालटेन जलाकर कागज, कलम वगैरा दिये। मैंने कहा, आप लेटे लेटे मुझसे लिखवाअिये न?

बापूजी बोले, "तुम ७७ वर्षकी हो जाओ फिर लिखना। अभी तो सो जाओ।" मैं अेक शब्द भी बोले बिना सो गओ। मुझसे कहने लगे, "जिस लड़कीको मैं दिनमें सोनेके लिअे पूरा आराम नहीं दे सकता और जो रातको देर तक काम करती है, अुसे यदि आधी रातको भी अुठाकर काम करनेको कहूं तो मैं कैसा पापी माना जाअूंगा?"

मैं तुरंत समझ गओ कि कल रातमें साढ़े बारह बजे तक लिखती रही, यह बापूजीके ध्यानमें बाहर नहीं रहा। मेरा कसूर था, अिसलिअे कुछ बोलनेकी गुंजाअिश नहीं थी। बापूजी मेरा कितना ध्यान रखते हैं?

बापूजीने डेढ़से सवा तीन बजे तक काम किया। बादमें मुझे फिर जगाया। दातुन-पानी किया। प्रार्थना हुआी। आज वेलाबहनने प्रार्थनामें सुन्दर भजन गाया।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। और बंगला पाठ करके सो गये। मैं थोड़ी देर बापूजीके हाथ-पैर दबाती रही। पंद्रह मिनट सोये। अुठकर रस लिया और यहां आनेका समय हो गया।

लगभग रातके डेढ़ बजेसे काम कर रहे हैं, फिर भी बापूजी कहते हैं कि "मुझे थकावट नहीं मालूम होती।" मुझसे कहा, "यदि तुम रातको मेरे साथ ही जल्दी सो गआी होती तो सारा काम तुमसे कराता। परन्तु तुम देरसे सोने आआी, अिसलिअे तुमसे कैसे काम लेता?" मुझे भी जल्दी न सोनेका अफसोस हुआ।

साढ़े सात बजे प्रसादपुर छोड़ा। आठ पच्चीसको हम यहां पहुंचे। बापाको पत्र भिजवाया। बापूजी दूसरी डाक देख रहे थे, अितनेमें मैंने मालिशकी तैयारी की। मालिशमें पचास मिनट सोये। सारी रातका जागरण था, अिसलिअे अितना सो लिये यह अच्छा हुआ।

दोपहरके खानेमें खुराक बहुत घटा दी। दो खाखरे, छः औंस दूध और शाक ही लिया।

कातते समय सुरेन्द्र घोष, लावण्यप्रभाबहन और मिदनापुरके कार्यकर्ता आये। सुचेताबहन कृपालानी और मनोरंजन बाबू भी आये।

आज बापूने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर देते हुअे कहा, "मुसलमान हिन्दुओंका बहिष्कार करते हैं, अैसी बातें मेरे पास जरूर आआी हैं। परन्तु सभी जगह यह स्थिति नहीं है। अिसके सिवा, हिन्दुओंके पास जितनी जोती जा सके अुससे अधिक जमीन है। अिसमें दोनों वर्गोंकी अपार हानि होती है। मैं तो यह सलाह दूंगा कि वे जितनी खुद जोत सकें अुतनी जमीन रखें, अधिक जमीन अपने कब्जेमें न रखें। हम कोआी अतिरिक्त चीज नहीं रख सकते — फिर वह छोटी हो या बड़ी। समाजको अिस आदर्श तक पहुंचनेकी साधना करनी चाहिये।

"मैं यहां दो-तीन महीनेसे आया हुआ हूं। अिस अर्सेमें अितना जरूर देखता हूं कि हिन्दुओंने किसी हद तक अपनी बहादुरी दिखानेका साहस किया है, अथवा यों कहें कि अपनी कमजोरी मिटाआी है। थोड़े दिनों

पहले ही भटियालपुरमें जिस मन्दिरको मुसलमानोंने नष्ट कर दिया था वहीं प्यारेलालजीकी मेहनतसे मेरे हाथों फिर देव-प्रतिष्ठा हुआी है। अुसमें मुसलमानभाअी भी मौजूद थे। अितना ही नहीं, अुन्होंने प्रतिज्ञा भी ली कि भविष्यमें अपनी जान देकर भी हम अिस मंदिरको बचायेंगे। पहले अपनी जान कुर्बान करेंगे, बादमें ही कोअी मन्दिरको हाथ लगा सकेगा। अिस प्रकारकी हवा पैदा हो अथवा मुसलमान भाअी अैसी प्रतिज्ञा लें, यह कोअी अैसी-वैसी बात नहीं है। मेरे दौरेमें अैसी छोटी-मोटी बातें होती रही हैं, जिनसे हमें अितना आत्म-संतोष जरूर होता है कि कुछ न कुछ काम हो रहा है। यदि मैं शुद्ध होअूं, जो कहता हूं वही करता होअूं, तो यह काम अवश्य टिकेगा। मैं यह भी मानता हूं कि सेवक जो सार्वजनिक सेवा करता है अुसका अुसके निजी जीवनके साथ भी मेल बैठना चाहिये और अुसका जीवन अुतना ही विशुद्ध और पारदर्शक होना चाहिये। प्रत्येक सच्चा कार्य मनुष्यको अमर बनाता है। मनुष्यके मर जानेके बाद अुसका काम रुक जाता है, यह कहना गलत है। अिसलिअे मेरे साथके लोग और कार्यकर्ता भीतर और बाहरसे शुद्ध होंगे तो अुनका काम अवश्य चमकेगा। नहीं तो समाज अपने-आप अुन्हें अुस स्थान पर नहीं रहने देगा। यह मेरा कानून नहीं, दुनियाका कानून है। यदि सार्वजनिक सेवकमें थोड़ा भी आडंबर या अभिमान होगा तो वह अेक क्षण भी नहीं टिक सकेगा।"

आजकी प्रार्थनामें सुशीलाबहन पैंके साथ कारपाड़ासे ८० स्त्रियां आअी थीं। सुशीलाबहन कह रही थीं कि अिनमें से कुछ बहनें तो अैसी हैं जिन्होंने कभी गांवसे बाहर पैर नहीं रखा। रामधुनको बहनोंने सुन्दर ढंगसे गाया।

अिस गांवमें मुश्किलसे बापूजीके ही रहने लायक छोटीसी जगह मिली है। शेष सबके लिअे तम्बू तानने पड़े हैं। अैसा दृश्य दिखाअी देता है मानो कोअी काफिला पड़ा हो। क्योंकि संवाददाताओं और फोटोग्राफरोंका दल बहुत बढ़ गया है। अिसके अलावा गांवोंके लोग भी शामिल हो गये हैं। खेतोंमें तम्बू तानकर सब पड़े हैं।

प्रार्थनासे आकर बापूजीने फटे हुअे दूधका पानी लिया। डाक देखकर दस बजे बाद सोये। मैं कलके अुलाहनेके कारण बापूजीके सिरमें तेल मल कर और पैर दबाकर फौरन सो गअी।

विजयनगर,
९-२-'४७

रोजकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार बंगलाका पाठ किया और कुछ पत्र स्वयं ही लिखे। यहां कार्यकर्ताके रूपमें मुख्यतः बहनें ही काम कर रही हैं। ये बहनें भजन गाते-गाते सुबह जल्दी ही बापूजीको लेने नंदीग्राम आ पहुंची थीं। अुनमें से दो छोटी अुम्रकी बहनोंको बापूजीकी बैसाखी बननेकी बड़ी अिच्छा थी, अिसलिअे अुन्हें बैसाखी बनने दिया और मैं निर्मलदाके साथ छोटे रास्तेसे यहां आ गअी।

यहां आकर बापूजीके पहुंचनेसे पहले ही मैंने सारी व्यवस्था कर ली। अिसलिअे बापूजीके आते ही पैर धोकर मालिश की। और स्नान करके साढ़े दस बजे निबट गये। अितने दिनोंके सफरमें बापूजीने जल्दीसे जल्दी आज भोजन किया।

बेलाबहन यहांसे गअीं। किशोरलाल काकाको दमा है, अिसलिअे बेला-बहनने अुनके लिअे अेक जड़ी-बूटी भेजनेको बापूजीसे कहा। वे कहती थीं कि यह अुनकी आजमाअी हुअी जड़ी-बूटी है। परन्तु बापूजीने विनोदमें कहा, "अगर किशोरलालका दमा जड़से चला जाय तो मैं तुम्हें अिनाम दूंगा।"

मुझ पर अभी तक सरदीका असर है, अिसलिअे बापूजीने दोपहरको सुला दिया और कहा, "मैं अुठाअूं तब अुठना।" मैं सोती रही। परंतु जागनेके बाद क्या देखती हूं कि बापूजीने चरखा खुद तैयार कर लिया है और कातने बैठ गये हैं। मैंने रोषमें कहा, "मैं अभी भी जागी न होती तो आप अुठाते ही नहीं न? मुझे यह खयाल नहीं था कि आप खुद चरखा तैयार करके मुझे अुठायेंगे।"

बापूजी हंसकर कहने लगे, "तुम्हें क्या पता कि अपना काम आप ही करनेमें मुझे कितना आनंद आता है! तुम तो रोज करती ही हो और आगे भी करोगी। परन्तु मुझे जब जब अपना काम खुद करनेका मौका मिलता है तब अुसका सदुपयोग करनेका आनंद लूट लेता हूं। तुम जरा और अच्छी हो जाओ, फिर मैं थोड़े ही तुम्हें अेक घंटा सोने दूंगा? मैं कितना निर्दय बन सकता हूं, यह अनुभव करना हो तो तुम लोहे जैसी मजबूत बन जाओ। लुहारको लोहा तेज आगमें तपाते और अुस पर जोरसे

हथोडे मारते वक्त लोहे पर दया आती है? अैसा निष्ठुर मैं तभी बन सकता हूं जब तुम तपे हुअे लोहे जैसी बन जाओ। और अुस लोहेके आकार भी कैसे सुन्दर बनते हैं? अैसा आकार तुम्हारा मैं तभी बना सकता हूं जब तुम अितनी मजबूत बन जाओ। अिसलिअे तुम्हें मेरा प्रत्येक काम करनेकी अिच्छा तभी रखनी चाहिये, जब तुम्हारे नखमें भी रोग न हो।"

बादमें कातते हुअे दूसरे पत्र लिखवाये। अितनेमें अुपलेटाके वली-मुहम्मद भाअी आ गये। आज बापूजीने प्रार्थनासे पहले ही पांच बीस पर मौन ले लिया। प्रार्थनामें लिखा हुआ भाषण पढा गया। आजका भाषण कार्यकर्ताओंकी प्रश्नोत्तरीके रूपमें था।

बापूजीके पास अेक प्रश्न यह आया "कुछ कार्यकर्ताओंको सेवामें अपना जीवन बितानेके बाद कुछ अंशोंमें सत्ताका भी शौक हो जाता है। अिसलिअे अुनके साथी अथवा अुनके मातहत काम करनेवाले कार्यकर्ता अुन पर किस तरह नियंत्रण रखें? और संस्था लोकतांत्रिक नीतिको किस प्रकार कायम रख सकती है? अनुभवसे पता चलता है कि अैसे कार्यकर्ताओंके साथ असहयोग करनेसे कार्योंमें विघ्न आता है।"

बापूजीने कहा, "मनुष्य स्वभावसे सत्ताका शौकीन है। और अिस शौकका अंत तो मृत्युके साथ ही होता है। अिसलिअे सत्ताके पीछे पडे हुअे सेवकको अंकुशमें रखनेका काम दूसरोंके लिअे मुश्किल है। अिसके कअी कारणोंमें अेक कारण यह है कि दूसरोंमें भी यह दोष जाने-अनजाने होना संभव है। साथ ही जगतमें सर्वथा अहिंसक ढंगसे चलनेवाली अेक भी संस्था देखनेमें नहीं आती। और तब तक हम यह नहीं कह सकते कि कोअी भी संस्था पूरी तरह लोकतांत्रिक ढंग पर चल रही है। जब तक लोकतंत्रको पूरी तरह अहिंसाका आधार न हो तब तक वह कभी पूर्ण नहीं माना जा सकता। यदि अुद्देश्य अथवा कार्य शुद्ध हो तो अहिंसक असहयोग सफल हुअे बिना रह ही नहीं सकता। और अैसे असहयोगसे संस्थाको बिलकुल आंच नहीं आयेगी। अिस प्रयोगमें अहिंसाकी मात्रा थोडी हो या बिलकुल न हो तो ही असफलता मिलेगी। मैंने अनुभव किया है कि जो लोग दूसरोंकी शिकायत करते हैं वे स्वयं ही सत्ताका लालच मनमें रखते हैं। अिसलिअे जहां अेक ही किस्मके दो प्रतिस्पर्धियोंमें भेद किया

जाता है वहां अुसे बतानेसे किसीका समाधान नही होता और दोनों पक्ष रोपसे भर जाते है।"

"जैसे हमारे शहरोंमें दलबन्दी है और सत्ताके लिअे गंदी-चालें चली जाती हैं, वैसे ही गांवोंमें होने लगें तो भारतके लिअे अफसोसकी बात होगी। यदि कार्यकर्ता सत्ताके लिअे गांवोंमें जायेंगे तो वे देहातकी प्रगतिमें बाधक होंगे। मैं तो यह कहूंगा कि परिणामकी आशा रखे बिना हम अपना काम करते रहें और अुस काममें स्थानीय लोगोंकी सहायता लें। यदि हमें सत्ताका मोह नहीं लगा होगा, तो हमारा काम हरगिज नही बिगड़ेगा। शहरोंके पढ़े-लिखे और सुधरे हुअे माने जानेवाले लोग हमारे गावोंकी तरफसे लापरवाह रहे हैं। यह हमने भयंकर अपराध किया है। यदि हम अिसका हृदयसे प्रायश्चित्त करेंगे तो हममें धीरज आयेगा। मैं तो गावोंमें घूम रहा हूं। वहां कमसे कम अेक-दो प्रामाणिक कार्यकर्ता तो मिलते ही हैं। अिसलिअे अब भी गांव अच्छे हैं। परन्तु अुनकी अच्छाअी स्वीकार करने या मानने जितनी नम्रता हममें नही है। जिसे स्थानीय दलबन्दी द्वारा काम करना है अुसे गांवोंसे अलग ही रहना चाहिये। और यदि सब दलोंकी या जो किसी भी दलमें न हो अैसे लोगोंकी अच्छी सहायता मिलती हो तो अुसे नम्रतासे स्वीकार कर लेना चाहिये। हम देहातियोंमें से अेक बन सके, अिसी अुद्देश्यसे मैंने प्रत्येक गावमें अपने अेक अेक साथीको रखा है। और जो कार्यकर्ता बगला न जानता हो अुसीके साथ दुभाषियेका काम करनेके लिअे अपवाद-स्वरूप दूसरा साथी रखा है। अिससे मुझे लाभ हुआ दीखता है। हमें जल्दबाजीमें निर्णय कर लेनेकी बुरी आदत है। बाहरकी मददके बिना काम नहीं होता, यह गलत बात है। स्थानीय सहायता जितनी मिले अुसे लेकर हम अकेले ही हिम्मत और समझके साथ काम करेंगे तो जरूर विजयी होंगे। फिर भी यदि सफलता न मिले तो और किसीका (किसी व्यक्तिका या समयका) दोष बताये बिना अपना ही दोष बताना हम सीखेंगे तभी हमारी अुन्नति होगी। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं।"

यह मकान जोगेशचन्द्र मजूमदारका है। अिस गांवमें १,२६९ मुसलमान और ८६५ हिन्दू हैं। बहुतसे घर जला दिये गये हैं। लीगके नाम पर रुपया भी लिया गया है। लगभग सबको जबरन् मुसलमान बनाया गया है। हिन्दुओंमें बहुतसे जुलाहे हैं। अमीर लोग तो अधिकांश बाहर रहते

प्रातःकालके भोजनमें थोड़े मुरमुरे, पाच बादाम, दो काजू, शाक और आठ औंस दूध लिया। दोपहरको दो बजे दो नारियलका पानी। शामको प्रार्थनासे पहले आठ औंस दूध और अुसमें अेक चम्मच खारकका चूर्ण डाला। प्रार्थनाके बाद अखबार सुनते हुअे गरम पानी और दो चम्मच शहद लिया। शामको लगभग अढ़ाअी मील घूमे। पौने दस बजे बापूजी बिस्तरमें लेटे। मुझे सोनेमें साढ़े दस हो गये।

विजयनगर,
१०–२–'४७, सोमवार

अिस गावमें दो दिन तक रहना है, अिसलिअे आज तो प्रार्थनाके बाद कोअी खास काम नही रहा। रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे अुठे। दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका पाठ किया। मौन-दिवस होनेके कारण . . . और . . . को बड़े मननीय पत्र लिखे।

अभी तक मेरी सरदी नही मिटी, अिसलिअे अेक पर्चे पर लिखा:

"यह जुकाम मिटानेका अुपाय तुम्हें ढूढ़ना चाहिये। रामनाम तो रामबाण दवा है; अुससे जरूर मिटना चाहिये। छाती और गलेमें कुछ न कुछ लपेट रखो तो ठीक रहे। कुछ भी हो, रामनामका अेक कानून यह है कि कुदरतके नियम न टूटने चाहिये। अिस पर विचार करना सीख लो।"

ठीक सात पैंतीसको घूमने निकले। गोपीनाथपुर जानेवाले थे। पैंतालीस मिनट चलने पर भी हम गोपीनाथपुर नही पहुचे, अिसलिअे बापूजीने पूछा, कितनी दूर है? जवाब मिला कि अभी दस-पद्रह मिनट और लगेंगे। अिस प्रकार आते-जाते सहज ही दो घंटे बीत जाते। अिसलिअे अैसा सोचकर कि "अिस तरह चलनेसे यात्रा पूरी नही होगी। हर बातकी सीमा होनी चाहिये।" हम लौट आये। मुकाम पर आये तब ८–५५ हो गये। आकर बापूजीके पैर धोये। मालिशमें बापूजी तीस मिनट सोये। आज मौन-दिवस है, अिसलिअे सुनसान लगता है।

बापूजीने दोपहरके भोजनमें अेक खाखरा, साग, आठ औंस दूध और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। दोपहरको नारियलका पानी लिया। लगभग सारा दिन बापूजीने लिखने-पढ़नेमें ही बिताया।

अेक भाअीने बापूजीसे बात कही कि अेक मुसलमान व्यापारी सच्चा तराजू रखता था और अेक हिन्दू व्यापारी झूठा तराजू रखता था; अिससे क्या यह नहीं लगता कि मुसलमान व्यापारी प्रामाणिक हैं और हिन्दू व्यापारी अप्रामाणिक है?

बापूजीने जवाब दिया, "अिस अधूरे जगतमें कोअी अेक जाति पूरी तरह प्रामाणिक नहीं और न कोअी अेक जाति पूरी तरह अप्रामाणिक है। जो कोअी अपने ग्राहकोंको अिस प्रकार धोखा देता है, वह व्यक्ति अप्रामाणिक है। परन्तु अिस परसे सारी जातिको कैसे बेअीमान कहा जा सकता है, यह मेरी समझमें नहीं आता।

"नोआखाली तो अेक अैसा रमणीय प्रदेश है, जहां अपार प्राकृतिक संपत्ति है। यदि अिसमें हिन्दू-मुसलमानोंकी अपूर्व अेकता और हार्दिक मित्रता हो जाय तो मैं अिसे पृथ्वी पर स्वर्ग कहूंगा। बेचारे हिन्दुओंको अभी तक डर है। जो लौट आये हैं अुनकी स्थिति अच्छी है, अैसा मुझे अफसर कहते हैं। मेरे अनेक मुसलमान मित्रोंने कहा है कि हम चाहते हैं कि वे अपने अपने घर लौट आयें। परन्तु अिस समय अुनके लिअे कोअी खाने-पीनेका बन्दोबस्त है? अभी तक जैसा मैं चाहता हूं वैसा वातावरण पैदा नहीं हुआ है। जैसे खानेका स्वाद मुहमें रखने पर ही मालूम होता है, वैसा ही यह काम है। यह तो तभी हो सकता है जब तमाम अपराधी, जो छिपकर घूम रहे हैं, बाहर आकर अपना अपराध प्रगट करके प्रायश्चित्त करें। तभी डरके मारे जो लोग घबराये हुअे हैं वे भय-मुक्तिकी शांति अनुभव कर सकेंगे।

"मैं तो यहां अपनी अहिंसाकी परीक्षा पास करने आया हूं। अहिंसामें असफलताके लिअे तो स्थान ही नहीं है। मैं यहां करूंगा या मरूंगा। जिसके हृदयमें दोनों जातियोंके बीच या मानव-जातिके बीच अैक्य — मैत्री स्थापित करनेकी लालसा है, अैसे अहिंसकके लिअे दूसरा कोअी रास्ता हो ही नहीं सकता। मेरे लिअे तो है ही नहीं।"

आज शामको भोजनमें केवल अेक औंस गुड़ ही लिया।

दो बहनें (जो स्थानीय कार्यकर्ता हैं) रातको गरम पानीसे जल गअीं। अुनके लिअे मैं वैसलीन लेने जा रही थी। बापूजीने मना कि "देहातमें अैसी दवाका अुपयोग क्यों किया जाय? अुनके पैर पर मिट्टी ...

चूने और तेलका लेप कराओ।" मुझसे कहने लगे, "यदि स्थानीय कार्य-कर्ता अिस प्रकार प्रसिद्ध विदेशी दवाअें काममें लें तो फिर अिन गावोंके लोगो पर क्या असर डालेंगे? अुल्टे देहाती लोग अेक कुटेव सीखेंगे। चाय, बीडी, सिगरेट आदि गावोमें अिसी तरह पहुची है। यह किसका दोष है? देहातियोका नही, परन्तु शहरियोका।" अुन बहनोंको मिट्टीसे आराम भी मिला। रातको दस बजे सोनेसे पहले मैं अुनकी खबर लेने गअी तब वे आराम कर रही थी।

बापूजीके प्रत्येक कार्यमें सूक्ष्म विचारोसे भरे पाठ रहते ही है और वे भी अेकसे नही परन्तु विविधतापूर्ण।

अुन बहनोंके समाचार लेनेके बाद बापूजीके सिरमें तेल मलकर, पैर दबाकर और पत्र लिखकर मैं भी सोने चली गअी।

हैमचंडी,
११-२-'४७, मगलवार

आज सोकर अुठे ही थे कि निर्मलदाने . . . के आये हुअे तार सुनाये। प्रार्थनाके बाद तुरत बापूजीने अुनके अुत्तर तैयार किये। ओसके कारण लकड़िया गीली हो जानेसे चूल्हा नही सुलग रहा था। अिसलिअे गरम पानी करनेमें देर हो गअी। रस भी देरसे पीनेको मिला। अिस कारण रस पीनेके बाद तुरत ही बापूजीने यात्रामें चलना शुरू कर दिया।

विजयनगर छोडनेसे पहले बापूजीने यहाके पाखानोंका निरीक्षण किया कि वे कैसे है और अुनकी सफाअी कैसे होती है। कुछ सूचनायें भी दीं। कुल मिलाकर अुन्हें संतोष हुआ।

रास्तेमें जीवनसिंहजीको पैगबर साहबके कुछ सुन्दर वचनामृत सुनाये। ये वचनामृत केवल मुसलमानो पर ही लागू नही होते, परन्तु मनुष्य-मात्रके मनन करने योग्य है।

१ मुसलमान या किसी भी दूसरी जातिके किसी आदमी पर जुल्म होता हो तो अुसकी मदद पर पहुच जाना चाहिये।

२. जो व्यभिचार करता है, चोरी करता है, शराब पीता है या डाका डालता है अथवा रुपये-पैसेके व्यवहारमें धोखेबाजी करता है, वह न

सच्चा मुसलमान है और न सच्चा अिन्सान है। अिसलिअे हे मानव, तू चेत और सावधान हो जा।

३. जिसका अपने मन पर और अपने आप पर काबू है, अुसकी विजय सबसे बढ़कर है।

४ मनुष्य जब व्यभिचार करता है, तब प्रभु अुसे अपनेसे अलग कर देता है। (अुनके साथ प्रभु नहीं, परन्तु शैतान बसता है।)

५. मनुष्योंमें सबसे बुरा आदमी दुष्ट विद्वान है। भला अपढ़ सबसे अच्छा आदमी है।

६ जिसकी जबान या हाथसे मनुष्य-जातिको या अन्य किसी प्राणीको जरा भी चोट नहीं पहुंचती वह पूरा मुसलमान या अिन्सान है।

७. जो व्यक्ति प्रभुके पैदा किये हुअे प्राणियों पर दयाभाव रखता है अुस पर प्रभु प्रसन्न रहते हैं।

८. जो स्वयं विश्वासघात नहीं करता, बल्कि कोअी दुश्मन भी कभी अुस पर विश्वास रखे तो अुसकी मददके लिअे दौड़ता है और दिये हुअे वचनका पालन करता है, वही सच्चा अिन्सान है।

९. जो झूठ बोलता है, जो वचन भंग करता है, अुसे मैं अपना नहीं मानता।

१०. आदमी जो अपने लिअे चाहता है वही अपने भाअीके लिअे न चाहे तब तक वह सच्चा अिन्सान नहीं, सच्चा मुसलमान नहीं।

११ जो अपने लिअे श्रम नहीं करता अथवा दूसरेके लिअे भी काम नहीं करता, अुसे प्रभु बदला नहीं देता।

१२. अुपवास और संयमसे मेरे अनुयायी ब्रह्मचारी बनेंगे, बन सकते हैं।

१३. मनुष्यका आधा अंग स्त्री है।

१४. साध्वी स्त्री दुनियाकी सबसे कीमती, भव्य और अुम्दा चीज है।

१५. जो जानता है और तदनुसार चलता है वही सच्चा ज्ञानी है।

१६. स्त्रियों पर हाथ न अुठाओ, कुदृष्टि न डालो। अपनी स्त्रीके सिवा सब स्त्रियोंको अपनी माता, बहन या बेटीके समान समझो।

बापू कहने लगे, "सौभाग्यसे धर्मशास्त्रोंमें अैसे बड़े कीमती कानून और प्रत्येक मनुष्यके लिअे सुखी होनेके रास्ते बताये गये हैं। अुनका

आचरण और मनन हम कर सकें, तो आज हम संसारकी 'श्रेष्ठ' मानी जानेवाली जातियोंमें प्रथम पद भोग सकते हैं।"

पैर धोते समय बापूजीने मुझसे कहा, "पैगम्बर साहबके ये वचनामृत कोअी कण्ठस्थ करके रोज सुबह मनन करे और शामको अिनमें से कितने पाले गये या नहीं पाले गये, अिसका मनमें ही हिसाब लगाकर तदनुसार चले तो मुझे विश्वास है कि पन्द्रह दिनमें अुस व्यक्तिका व्यक्तित्व अनोखा बन जाय।"

मालिशकी तैयारी करनेमें मुझे नित्यकी अपेक्षा अधिक विलम्ब हुआ, अिसलिअे बापूजीने बहुतसी डाक (गुजराती) . . . को लिख डाली। यहां आज झोंपड़ीके सिवा और कोअी सुविधा नहीं है, अिसलिअे सब कुछ नये सिरेसे और खुद ही किया। लगभग हफ्तेभरसे मुझे सरदी और बुखार रहता है, अिसलिअे आज निर्मलदाकी दी हुअी कुनैनकी गोलियां मैंने खाअी। निर्मलदाने अपना काम छोड़कर मेरे काममें बड़ी मदद दी। हुनरभाअीने साग काटा। बापूजीके लिअे कूकर रखकर अुनकी मालिश की। सब हाथोंहाथ काम करते हैं। निर्मलदा तो कलकत्ता विश्वविद्यालयके बड़े प्रोफेसर हैं, परन्तु चूल्हा सुलगाने बैठ गये। अिस प्रकार हमारी मंडली या कुटुम्ब मिल-जुलकर काम करनेवाला है। और मैं सबसे छोटी हूं, अिसलिअे मेरे प्रति सबकी अपार सहानुभूति है।

बापूजीको डर है कि मुझे निमोनिया हो जायगा। मुझसे कहने लगे, "यदि आज बुखार चढ़ा तो तुम्हें 'वेटशीट पैक' देना ही पड़ेगा। मणिलालकी तो बचनेकी आशा ही नहीं थी। मैंने अुस पर अुस समय खतरा अुठाकर अिसका प्रयोग किया और वह अच्छा हो गया। शायद सबसे अच्छी तन्दुरुस्ती अिस समय अुसीकी है। अिसलिअे जब सप्ताह भरसे बुखार और जुकाम नहीं जा रहा है तो अिस तरह बैठा नहीं रहा जा सकता।"

मैंने अिनकार किया।

बापूजी बोले, "तुमने मुझे वचन दिया है कि मैं कहूंगा सो तुम करोगी। अिसलिअे जो वचन न पाले अुसकी कीमत तांबेके पैसेके बराबर है।"

बापूजी छोटी-छोटी मानी जानेवाली बातोंमें कहावतोंका सुन्दर अुपयोग करके हंसाकर काम निकाल लेते हैं। और सबसे भव्य पाठ तो

आज बापूजीने पैगम्बर साहबके जिन वचनोंका मनन कराया था अुनमें दिया हुआ अेक कानून है। अुसकी भी बापूजीने याद दिलाअी।

दोपहरके भोजनमें दो खाखरे, शाक और आठ औंस दूध लिया। खिलाकर और कपड़े धोकर बापूजीके पैरोंमें घी मला। मुझे बापूजीने सोनेको कहा। सोनेके पहले देशी अेन्टीफ्लोजिस्टीन — मिट्टीको छनवाकर और गरम करके अुसमें थोड़ा नमक, सूठ और अजवायनका चूर्ण और हल्दी मिलाकर खूब अेकमेक किया और अुसे गरम गरम ही छाती और पसलियों पर लगाकर तथा रूअी रखकर मैं सो गअी। अुसके बाद ही बापूजी सोये। बापूजी बीमारोंकी अैसी प्रेम और चिन्ताभरी देखभाल करते हैं।

शामको बाबा (सतीशबाबू) और हेमप्रभाबहन (अुनकी पत्नी) आये।

शाम तकका काम आज धीरे-धीरे निबटाया। शामको प्रार्थनामें गअी तब बुखारकी तैयारी हो अैसा लग रहा था। परन्तु प्रार्थनासे लौटकर बापूजीको दूधमें खारकका अेक औंस चूर्ण डालकर दिया और तीन संतरे दिये। बादमें सोअी। बुखार बापूजीने ही देखा। १०५° हो गया था। सिर बहुत ज्यादा दुख रहा था। निर्मलदाका खयाल था कि आज १५ ग्रेन कुनैन पेटमें गया है, अिसलिअे शायद बुखार नहीं आयेगा। परन्तु ठीक समय पर आ गया। बाबा और मा (हेमप्रभाबहन) सभी बैठे थे।

"तुम अेक अपराधीकी तरह समझदार बनकर अब सो रही हो न?" बापूजीने हंसते-हंसते कहा और 'बेटशीट पैक' मुझे लेना ही पड़ा। खूब सोअी। ठेठ रातके साढ़े बारह बजे जागी। पसीनेमें तरबतर हो गअी। शैलेनभाअीने बापूजीको अखबार सुनाये। बादमें बापूजी भी सो गये। साढ़े बारह बजे मैं जागी और बापूजीने बुखार नापा। नार्मल हो गया था। अुठकर बापूजीका बिस्तर किया। फिर बापूजीके पैर धोये, पैर दबाये, सिरमें तेल मला और सुबहके लिअे दातुन वगैरा तैयार करके मैं और बापूजी दोनों अेक बजे फिर सोये। अेक नींदमें सुबह हो गअी। जब निर्मलदाने जगाया तब बापूजी जागे और मुझे जगाया।

प्रार्थनाके बाद प्रातःकाल मुझे शरीर-संबंधी कुछ बातें मननीय और प्रेमपूर्ण ढगसे अिस तरह समझाअी, जैसे मां अपनी बेटीको समझाती है। अुनमें से कुछ बातें प्रत्येक स्त्रीके समझने लायक होनेसे यहां देती हूं।

"लडकियोंके शरीर झूठी शरमसे बिगडते हैं। अिसमें भारतका आंकडा सबसे ज्यादा है। स्त्रियां यह भूल जाती हैं अथवा अुन्हें समझाया ही नहीं जाता कि आजकी बाला कल मां बनेगी। अिसलिअे प्रत्येक भारतीय अिसके लिअे जिम्मेदार है। वह देशको महापुरुष भी दे सकती है और संत, चोर, बदमाश या हत्यारे भी दे सकती है। . . . जब अपनी पुत्री तेरह-चौदह वर्षकी होती है तब अुस खेलती-कूदती लड़कीके प्रति, जो समझदार भी नहीं होती और नासमझ भी नहीं होती, माता-पिताको सबसे अधिक प्रेम और ममत्व दिखानेकी जरूरत है। और यह जिम्मेदारी खास तौर पर माताकी है। परन्तु अिसके बजाय हमारे समाजमें अुल्टी बात होती है। वह लडकी बडी होती है, अिसलिअे मानो गरीब गाय-सी लगती है। अुसके साथ अिस तरहका बर्ताव होता है मानो अुसने कोअी सामाजिक अपराध किया हो। बाहर कहीं भी जानेकी अुसे मनाही होती है। अिस करुण स्थितिकी करुणता अुसके कोमल मस्तिष्क पर असर करती है।

"अिसी प्रकार लडकियोंकी आजकलकी पोशाकने अुनका सत्यानाश किया है। वे अितने चुस्त कपडे पहनती हैं या अुन्हें पहनाये जाते हैं कि अुन्हें देखकर मुझे दया आती है। वे पूरा श्वासोच्छ्वास ले पाती होंगी या नहीं, अिसमें मुझे शंका है। फैशनने तो सत्यानाश ही कर दिया है। लडकियां अपने शरीरकी रक्षासे फैशनकी रक्षाको अधिक कीमती समझती हैं। यह हमारी कैसी दयाजनक स्थिति है? और अिन सब बातोंके कारण वे अत्यन्त दुर्बल और अशक्त बनी रहती हैं। यदि स्त्रियां कुछ न करके अपनी मर्यादा रखें, अपने शरीरको नीरोग बनायें और अपने रंगढंगमें, अपनी खुराकमें, अपने व्यवहारमें, अपनी पोशाकमें, अपने वाचनमें, कार्योंमें, पढने-लिखनेमें तथा रहन-सहनमें पूरी सादगी और सात्त्विकताको अपनायें, — और यह स्त्रियोंके लिअे स्वाभाविक वस्तु है — तो मेरा विश्वास है कि हमारी संतानें गामा पहलवान या दयानंद सरस्वती जैसे बहादुर सात्त्विक संतों (ये हमारी ही स्त्रियोंके बालक थे न?) के समान होंगी। परन्तु अैसे बालक आज अंगुलियों पर गिनने लायक हो गये हैं। मुझे असंख्य आदर्श स्त्रियां चाहिये। परन्तु आज तो यह आकाशसे कुसुम तोड़ने जैसी बात है। अिसमें पुरुषोंका अपराध जरा भी कम नहीं है। परन्तु

अेक समझें और दूसरा न समझे, तब भी बात बनती नहीं। अैसी लालसा रखनेवाला मैं तुम्हारी मा बना हूं। यदि अिस दृष्टिसे मैं तुम्हें तालीम न दे सकूं तो मैं अपनेको अैसा विचार करनेका अधिकारी नहीं मानूंगा। अिसलिअे मुझे खुशी हुअी कि तुम निर्भयतापूर्वक यहां रही हो। तुम्हारे अिस साहसकी मैं कीमत और कद्र करता हूं। जब तक तुम मेरे हाथमें रहोगी तब तक मैं तुम्हें तालीम देकर तैयार करनेमें हरगिज नहीं चूकूंगा। अिसमें मेरा समय जरा भी नहीं बिगड़ता। मैं मानता हूं कि करोड़ों स्त्रियोंमें से अेक लड़कीकी मा बनकर अुसीका सही ढंगसे पालन-पोषण करके माका आदर्श दुनियाको मैं बता सकूं, तो भी यह आत्म-संतोष तो प्राप्त करूंगा कि सारे संसारकी लड़कियोंकी मैंने सेवा की!

"पुरुषोंको अेक नया पाठ दूंगा कि वे अपनी बहन-बेटियोंको अुनकी माता बनकर आदर्श शिक्षा देना सीखें। मैं मानता हूं कि मनुष्य आत्म-संतोष प्राप्त करनेके लिअे दूसरोंकी कितनी ही फटकार सहन करके और दुःख अुठाकर जब प्रयत्न करता है, तब अुसमें दूसरोंकी परवाह करनेकी वृत्ति अपने-आप कम हो जाती है। परवाह करनी भी नहीं चाहिये। आत्मा ही परमात्मा है। अतः परमात्माको पानेके लिअे बड़ीसे बड़ी मुसीबत भी आ जाय तो क्या अुसे सहन न किया जाय? और क्या मानवको प्रसन्न करनेके लिअे अुसके अिशारों पर नाचा जाय? हां, अिसमें मर्यादाके लिअे काफी गुंजाअिश है। कोअी यह माने कि अुसे शराब पीने या व्यभिचार करनेमें आत्म-संतोष मिलता है और दूसरेका कहा न करे, तो यह निरा दंभ और असत्य है। यह तो तुम समझती हो न? परन्तु शुद्ध भावनासे — शुद्ध हृदयसे अिस परमात्मारूपी आत्माको संतोष देना ही मनुष्यका प्रथम कर्तव्य है। मैं यही करनेका प्रयत्न कर रहा हूं। जिसे मैं अपने अिस यज्ञका अेक अविभाज्य अंग मानता हूं। यहां मेरी जितनी परीक्षा हो सके अुतनी मुझे करनी है। मुझे अपनी ही परीक्षा देनी है। अिसमें कभी असफल हो जाअूं तो? यह सब अीश्वराधीन है। अीश्वरके सिवा मुझे किसीकी साक्षी नहीं चाहिये। सफलता असफलताकी चिन्ता हम क्यों करें? और अिसमें कहीं दंभ होगा, तुम भी कहीं दंभ करती होगी, भले हम अुसे जानते भी न हों, तो वह संसारको मालूम हो जायगा। यह यज्ञ है। मैं यहां लोगोंको प्रेमसे वशमें करके भाअीचारा पैदा करनेकी

कर रहा हूं। अिसमें कहीं भी दंभकी गुंजाअिश नहीं हो सकती। होगा तो वह अपने-आप बाहर आयेगा। और संसार अुसे जानकर मुझ पर फटकार बरसायेगा। अुसमें भी हमारा भला ही है, जगतका भी भला है। जगतको पाठ मिलेगा कि यह दंभी महात्मा था। दूसरी बार वह किसीको अिस प्रकार महात्मापद नहीं देगा। संसारका तो दोनों दृष्टियोंसे श्रेय है। मैं सच्चा महात्मा होअू या झूठा। यदि सच्चा हू तो संसारका लाभ ही है। मेरे जीवनसे अुसे कुछ सीखना हो तो सीखे। और यदि मैं झूठा हू तो भी संसारका लाभ है; दूसरी बार वह किसीको अितनी आसानीसे महात्मा जैसा पद नहीं देगा। अिसलिअे वह सावधान हो जायगा। यह अेक और अेक दो जैसी स्पष्ट बात समझानेका मैं प्रयत्न कर रहा हूं।"

१२ तारीखको पानी पीते पीते सुबहकी नीरव शांतिमें अिस प्रकार अपने हृदयकी गहराअीसे निकली हुअी बातें अेक सांसमें बापूजीने कह डाली। अुनके अेक अेक शब्द, अेक अेक वाक्यसे अुनका वात्सल्यभाव अुमड़ता दिखाअी देता था। मुझ परसे समस्त स्त्री-जगतका चित्र प्रस्तुत करते समय अुतना ही गांभीर्य अुनके चेहरे पर झलक अुठा, क्योंकि वे जिम्मेदार स्त्री-अुद्धारक हैं।

कफिलातली,
१३-२-४७, बुधवार

सुबहकी प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीकर जो बातें कही थीं, वे कलकी डायरी भी आज लिखनेके कारण अुसमें आ गअी। कलके नोट आज प्रार्थनाके बाद जब बापूजी डाक पढ़ रहे थे तब सुबह-सुबह ही लिख डाले।

साढ़े सात बजे हैमचंडी छोड़ा। रास्तेमें फ्रेण्डस युनिटके स्थान पर रुके थे। ये लोग बड़े सेवाभावसे काम कर रहे हैं। बापूजी अुनका काम देखकर बड़े प्रसन्न हुअे।

आज मैं बिलकुल अच्छी हो गअी हूं। (देशी अेण्टीफ्लोजिस्टीन) गरम मिट्टीके लेपसे। यह लेप अेक ही दिन लगाया। अुसने अच्छा काम किया। कफ बिलकुल बिखर गया। और अेक पाअी भी अिसमें खर्च नहीं हुअी!

यहां आते हुअे रास्तेमें भी सुबहकी बातोंके सिलसिलेमें और मैं अच्छी हो गओी हूं अिस बारेमें बातें करते हुअे बापूजीने मुझे समझाया। वे बोले:

"मैं तुम्हें गढ़ रहा हूं। अिसमें सफलता मिलेगी या असफलता यह मैं नहीं जानता। कुम्हार जब घड़े या हंडिया बनाता है तब अुसे पता थोड़े ही रहता है कि आवेमें डालनेसे यह फट या टूट जायेंगे। वह बेचारा आनन्दसे, अुत्साहसे कच्चे सुन्दर आकार बना बनाकर आवेमें रख देता है। अुनमें से कुछ टूट जाते हैं, कुछ तड़क जाते हैं और कुछ सुन्दर और पक्के बनकर निकलते हैं। अिस प्रकार मैं तो कुम्हार ठहरा। अिस समय कुम्हारकी तरह अच्छे घड़ेकी आशासे मैं तुम्हें तैयार कर रहा हूं। वह टूट जाय या फूट जाय तो मेरी और तुम्हारी तकदीर। तुम या मैं कोओ तो क्या करें? अिसलिअे हमें अिसकी चिन्ता करनी ही नहीं चाहिये। हमें तो कुम्हारकी तरह अितना ही देखना है कि मिट्टी अच्छी अूंचे दर्जेकी हो, कंकरीली न हो और आकार सुंदर और पक्का बने। आवेमें जानेके बादकी चिन्ता करनेवाला तो ओीश्वर है। असी तरह हमारे अिस यज्ञमें सत्यता, शुद्धता और निर्मलता हो, कहीं दंभका नाम न रहे, क्षण क्षण पर सोचकर कदम अुठाया जाय, अपने हृदयसे दस बार पूछा जाय और किसीको अच्छा-बुरा लगनेकी परवाह न करके विवेकपूर्वक जो सच हो वही किया जाय। यदि मैं यह मानता हूं कि अैसी मिट्टी मेरे पास है, तो मुझे आकार गढ़नेमें कोओी बाधा नहीं होगी। यदि मिट्टीमें कंकर हों (अर्थात् तुममें कोओी दोष हो) तो वे आकार गढ़नेमें बाधक ही होंगे। तुम मिट्टी हो और मैं आकार तैयार करनेवाला कुम्हार हूं। मैंने तुम्हारी तारीफ लिखी है। . . . अिसलिअे तुम्हें सचेत करता हूं। तुम मुझसे जो भी पूछना हो निडर होकर पूछ सकती हो। परन्तु सत्यके लिअे लड़ना तो मेरे लिअे अेक खेल है। अैसी लड़ाअियोंमें मैं कभी हारता नहीं। अभी तक ओीश्वरने निभाया है।

"तुम देखोगी कि मैंने अैसा बहुत बनाया है और बहुत तोड़ा है। साबरमती जैसे आश्रमको बिखेर देनेमें मुझे देर नहीं लगी। अिसलिअे अिस काममें भी मुझे जरासी भी कंकरी दिखाओी देगी तो अुस कुम्हारकी हंडियाकी तरह अिसे तोड़ डालनेमें मुझे देर नहीं लगेगी। तुम सतत जाग्रत रहो, अिसीलिअे आज सुबहसे तुम्हें यह सब कह रहा हूं।"

बापूजीकी सुबहकी बातोंमें भी आज अभीकी बातें मुझे अपने लिअे अधिक गंभीर लगीं। क्या बापूजीके पास रहना तेज तलवारकी धार पर चलनेके बराबर नहीं? प्रभु अिस परीक्षामें पास होनेका बल मुझे दे रहा है, यह अुसकी असीम कृपा है।

डॉ० सुशीलाबहन नय्यर रेड क्रॉस केन्द्रमें थीं। वे हमारे साथ ही यहां आओीं। वे कस्तूरबा ट्रस्टकी बैठकमें शरीक होने दिल्ली जा रही हैं। सुशीलाबहनने बापूजीका ब्लड प्रेशर (खूनका दबाव) देखा। १९२/११० था। यहां साढ़े सात बजे पहुंचे। मालिश, स्नान वगैरासे निबटनेमें ग्यारह बज गये। भोजनमें बापूजीने दो खाखरे, दूध, सन्देशका अेक छोटा टुकड़ा और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। भोजन करते हुअे कुछ डाक सुशीलाबहनके साथ दिल्ली भेजनेकी तैयारी की। साढ़े बारहसे अेक तक आराम किया। बादमें काता। कातते कातते पत्र लिखवाये। अढ़ाओी बजे नारियलका पानी लिया। साढ़े तीनसे चार तक मिट्टी ली। आज सिर और पेडू पर दो पट्टियां लीं। मुलाकाती आते ही रहे थे। फिर भी दस मिनट सो लिये। प्रार्थनाके बाद स्टीम किया हुआ अेक सेब और आठ औंस दूध लिया। घूमकर लौटने पर अखबार सुने और डाक सुनी। रातको गरम पानी और शहद लिया।

बापूजीको रातमें काफी थकावट मालूम हुओी। पौने दस बजे बिस्तर पर लेटे।

बापूजीके सो जानेके बाद मैं जरा भी जागती हूं तो अुन्हें अच्छा नहीं लगता। अिसलिअे मैं बापूजीके सोनेके समयसे पहले सब काम कर लेनेकी कोशिश करती हूं।

पूर्व केरवा
१४–२–'४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे साढ़े तीन बजे अुठे। दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका पाठ किया। फिर मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किये। डाकका काम पूरा करके थकावट मालूम होने पर बापूजी सवा छः बजे सो गये। सवा सात बजे अुठे।

बापूजीके आजके पत्रोंमें ये बातें थीं: "जो मनुष्य अनीतिको अपनाता है वह संग करने योग्य नहीं है। . . . अुसका कितना भी मूल्य

लगाया जाता हो, तो भी हमें अुसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। अब तक तो अीश्वरने मेरी लाज रखी है। . . . मनुष्यकी सजाको तो मैं पी गया हूं।"

बापूजी कितने अीश्वरमय हो गये हैं, यह आजके अुनके पत्रोंसे मालूम होता है।

. . के बारेमें कमीशन नियुक्त करनेके संबंधमें बापूजीने अपनी राय प्रगट की। बापूजी मानते हैं कि जिसकी जड़में सत्य है अुस पर कुछ आरोप लगाया जाने पर पंच द्वारा तटस्थ जांच होनेमें किसीको कोअी आपत्ति होनी ही नहीं चाहिये। बल्कि जांचके लिअे पंच नियुक्त करनेका आग्रह रखना चाहिये। सांचको कभी आंच होती ही नहीं।

हमने साढ़े सात बजे काफिलातली छोड़ा और आठ बजकर दस मिनट पर यहां पहुंच गये। गांव बहुत पास ही लगा।

आज ठंड और बादल हैं। यहां आकर बापूजीके पैर धोये। फिर अुन्होंने शैलेनभाअीसे 'शिक्षण' पुस्तककी अंतिम बंगला कविता पढ़ी और अुसका अनुवाद किया। किसी भी बंगला जाननेवालेको बापूजी अपना गुरु बना लेते हैं, भले वह बालक हो या बड़ा।

हवा ज्यादा चलने और बादल होनेके कारण मालिश अन्दर ही की। स्नानके बाद भोजनमें आज खाखरे छोड़ दिये। सिर्फ आठ औंस दूध और जरा-सी खोपरेकी पीसी हुअी गिरी ली।

दो बजे गरम पानी, शहद और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। चार बजे नारियलका पानी पिया। भोजनका यह सारा परिवर्तन बापूजीको खूब काम रहता है, अिसलिअे किया।

शामको दूधका पानी लिया और गोपीनाथ बारडोलाअी, मौलाना साहब, जवाहरलालजी और जयरामदासजीको पत्र लिखवाये।

बापूजी मुहम्मद साहबके वचनामृत पढ़ रहे थे, तब तीनेक मुसलमान भाअी आये। अुन्होंने कहा, "हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारा दिल साफ रहे।" अिस पर बापूजी बोले :

"मुहम्मद साहबने कहा है, अिस दुनियामें रहो, मगर अेक मुसाफिरकी तरह या आकर चले जानेवालेकी तरह रहो। मौत किसी भी वक्त आकर अिन्सानको पकड़ लेगी। सबसे अच्छा आदमी वह है जो अधिक समय जीकर अच्छे काम करता है। मनुष्यकी परीक्षा अुसके बोलने या कहनेसे

नही होती, अुसके काममें होती है। यह अुपदेश सिर्फ मुसलमान भाओी-बहनोंके लिअे ही नहीं है, परन्तु दुनियाके सब स्त्री-पुरुषोंके लिअे है।

"नोआखालीमें कितनी सुन्दर प्रकृति है! परन्तु हमारा दिल असके जैसा सुन्दर नही है। हमारे दिलमें जब तक अछूतपन है, तब तक हमें शान्ति कभी नही मिलेगी। क्या अिन्सानके साथ छुआछूत रखना अच्छी बात है?

"हरिजनोंके प्रति छुआछूत रखना हिन्दूधर्मका सबसे बड़ा कलंक है। ये बेचारे आपका नरक, आपका मैला अुठाते हैं, अिसीलिअे आप अुन्हें अछूत कहते हैं न? असली अछूत तो वह है जो दुराचारी हो, जो भाओीको मारे, जो व्यभिचारी हो, जो दगाबाज हो और व्यसनी हो। यह भेद आप समझिये। ब्रिटिश लोग तो यहासे चले जायगे, परन्तु जब तक हम अस्पृश्यताका कलक नही मिटायेंगे तब तक सच्चा स्वराज्य स्थापित नही होगा।"

प्रेमाबहन कटक यहा आओी हैं, अिसलिअे प्रार्थनाके बादका लगभग सारा समय बापूजीने अुनके साथ बातोंमें बिताया।

अखबार सुने। वैसे कोओी खास बात नही है। साढ़े नौ बजे बाद मैंने बापूजीके पैर धोये और वे सोने चले गये।

पश्चिम केरवा,
१५-२-'४७

आज बापूजी तीन बजे प्रार्थनाके समयसे थोडे जल्दी जाग गये। डाक देखी। प्रार्थनाका वक्त हो जाने पर प्रार्थना हुओी। सारी प्रार्थना प्रेमाबहनने कराओी। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार बगलाका पाठ किया और बादका लगभग सारा समय प्रेमाबहनके साथ बातोंमें गया।

सुशीलाबहन बिदा लेकर दिल्लीके लिअे रवाना हुओी। बाकीका क्रम रोजकी तरह ही चला। साढे सात बजे रायपुराके लिअे निकले।

रायपुरा,
१५-२-'४७

हम ठीक ८-१० पर यहां पहुंचे। यह थाना है। बापूजीने प्रेमाबहनके साथ रास्तेमें बातें कीं। अुन्हें दिल्ली तथा सेवाग्राम जानेकी भी सूचना की। . . .

मालिश और स्नानके बाद भोजनमें तीन गाखरे, छः औंस दूध, शाक और 'यीस्ट' लिया। फलोंमें अेक संतरा और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। खाते खाते जवाहरलालजी और बारडोलाओजीको पत्र लिखाये। . . .

आजके पत्र मुझसे खाते खाते लिखवाये, असलिअे मैं देरसे नहाओी और देरसे भोजन किया।

बापा (ठक्करबापा) का हेमचरसे लिखा हुआ ८–२–'४७ का कार्ड आज मिला। पासके गांवका कार्ड सात दिनमें मिला। अैसा यहाका डाक-विभाग है।

अिस गांवके लोग बापूजीको अभिनदन-पत्र देना चाहते हैं, जिनमें मुसलमान भाओी भी हैं। लकडीका खुदा हुआ सुन्दर कास्केट बनाया है।

बापूजीकी यहा कैसी ज्वलंत विजय हो रही है, अिसका वर्णन करना कठिन है। जहा राम शब्द ही नही लिया जा सकता था, वहा रास्ते भर यात्राके दौरानमें रामधुन और भजन गाये जाते हे। मुसलमान भाओी-बहन यह आग्रह करते है कि बापूजी अुनके यहा ठहरे, और अभिनदन-पत्र देनेका या अैसा ही कोओी सार्वजनिक काम करना हो तो अुसमें गावकी प्रत्येक जातिके लोग मिलकर काम करते हैं। यह कोओी छोटीसी बात नही है। बापूजीने भजनकी 'परथम पहेलु मस्तक मूकी' (सबसे पहले मस्तक रखकर) कड़ीको प्रभावशाली ढगसे आचरणमे अुतारा है। अिसीलिअे अुन्हे अैसी ज्वलंत विजय मिल रही है। फिर भी वे कभी अैसा दावा नहीं करते कि यह सब अुनके द्वारा हुआ है। निष्काम कर्मयोग करनेवाले बापूजीके मुहसे सदा यही निकलता है कि 'भगवान ही सब कुछ करा रहा है।'

यह मानपत्र सार्वजनिक सभामें पढनेके लिअे मना करते हुअे बापूजीने कहा, "मानपत्र मुझे अभी ही दे दीजिये। अैसे समयमें मानपत्र कैसे लिया जाय? प्रेम तो हृदयका होना चाहिये। और हृदयके प्रेमका प्रदर्शन करनेकी जरूरत नही होती। मैंने क्या किया है? जो कुछ आपको अच्छा हुआ लगता है वह तो खुदाकी मेहरबानीसे ही हुआ है। प्रेमको हृदयमें रखकर काम कीजिये। मेरे प्रति आपके दिलमें प्रेम हो तो मेरा काम कीजिये। यही मुझे मानपत्र देनेके बराबर है। न तो लोगोको डराअिये और न लोगोसे डरिये।"

अूपरकी बात बापूजीने चार पाच आदमियोंमे कही, जिनमें हिन्दू, मुसलमान, जुलाहे वगैरा गावके प्रतिनिधि थे और वह कास्केट अुमी समय ले लिया। अिन लोगोंकी अिच्छा प्रार्थना-सभामें मानपत्र देनेकी थी।

यह लकडीका कास्केट मुझे अच्छा लगा। कलाकी दृष्टिसे तो सुन्दर है ही। परन्तु मैंने अुसे अिस अैतिहासिक यात्राके विजय-चिह्न या प्रसादीके रूपमें अपने पास रखनेकी बापूजीसे माग की। बापूजीने फौरन हसते हुअे मंजूर किया, "मैं जानता हूं तुम्हे अैसी चीजें संग्रह करना पसन्द है। परन्तु अिससे प्रेरणा लेती रहोगी तो मुझे अच्छा लगेगा।*

निर्मलदा विजयनगर गये हैं। प्रार्थनामें प्रवचनका अनुवाद बाबाने किया। पहले बापूजीने शैलेनभाअीसे करनेको कहा था। प्रार्थनामें जाते हुअे अबलगर्नीके पुत्र सरहुद्दीनभाअी मिले। अुन्होंने बहुत-सी बातें सुनाअीं। प्रार्थनाके बाद यहाके अेक मदिरमें पाकिस्तान क्लब बनाया गया था, अुसे देखने गये। बाबाके साथ अिस सम्बन्धमें बातें हुअीं। योग्य कार्रवाअी करनेका स्थानीय भाअियोंने आश्वासन दिया।

यहा अिमामसाहब बीमार थे, अुन्हें भी देखने गये।

अिस थानेमें छ. यूनियन हैं। यह चौथा है। आबादी ४५,००० है। अिस यूनियनकी आबादी २२,००० है। अिसमें ९५ फीसदी मुसलमान और ५ प्रतिशत हिन्दू है। हिन्दू जमीदार, व्यापारी या जुलाहे हैं।

बापूजी साढे नौके बाद बिछौने पर लेटे। कातना बाकी था, अिसलिअे कातते समय रातको अखबार सुने।

रायपुरा,
१६–२–'४७

रोजकी भाति प्रार्थनाके लिअे अुठे। अिस गावमें आज दूसरा दिन बिताना है। अिसलिअे सवेरे कोअी विशेष काम नहीं रहा। प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी और शहद देकर कुछ पत्रोंकी नकल की। अपनी डायरी लिखी। और घरके लिअे पत्र लिखा। बहुत दिनोंके बाद घर पत्र लिख

---

* आज वह अैतिहासिक कास्केट सचमुच मेरे पास प्रेरणात्मक प्रसादीके रूपमें सुरक्षित है।

सकी। समय ही नहीं रहता। अब अेक गांवमें दो दिन रहना हो तभी पत्र लिख डालनेका नियम रखनेको बापूजीने कहा। मेरी बड़ी बहनने बापूजीसे शिकायत की थी कि मैंने अुन्हें अेक महीनेमें पत्र नहीं लिखा। अिसलिअे बापूजीने रग पोले समय मुझे डांटा और अपने सामने बैठाकर सबको पत्र लिखनेका आदेश दिया।

ठीक साढ़े सात बजे घूमने निकले। . ने कुछ प्रश्न पुछवाये हैं। अुनके बारेमें बापूजी कहने लगे, "ये प्रश्न मुझीसे पूछने चाहिये थे। भाषा शिथिल है। . . . में कुछ अपलक्षण (दोष) हैं, जो प्रगट हुअे बिना नहीं रहते। परन्तु मनुष्यमें जब अेक तरहका घमंडीपन आ जाता है, तब वह अपने अवगुण नहीं देख सकता। गर्व मनुष्य-जातिका दुश्मन है। परन्तु मुझे दुश्मन, शत्रु आदि शब्द ही अच्छे नहीं लगते। असलमें वह गर्वको अथवा अपनी भूलको समझकर अिस कमजोरीको दूर कर दे तो कितना अूंचा चढ़ सकता है? अिसलिअे अुसके जीवनसे हमें सबक मिलता है। अुसे हम दुश्मन कैसे कह सकते हैं? मैं तुम्हारी भूलें निकालकर तुम्हें बताअू तो तुम्हारा दुश्मन थोड़े ही बन जाता हूं? अिससे तो तुम्हें सीखनेको मिलता है। अिसी तरह यदि हम अपने घमंडीपनको पहचान सकें तो जीवनमें बहुत अूंचे अुठ जायं। परन्तु यह पहचाननेकी शक्ति सबको स्वयं ही प्रगट करनी होती है। जो व्यक्ति अन्न खाता है अुस व्यक्तिको अपनी आंतों द्वारा शरीरकी शक्तिके अनुसार अुस अन्नको पचाना पड़ता है। आंतें शुद्ध होंगी तो पाचक रस अपने-आप पैदा होंगे — अन्नका खून ही बनेगा। और आंतें कमजोर होंगी तो वह व्यक्ति रोगी बनेगा। अिसी तरहका विज्ञान मनुष्यके प्रत्येक कार्य पर लागू होता है।"

घूमकर लौटने पर बापूजीके पैर धोये। मालिश और स्नानके बाद भोजनमें बापूजीने अेक खाखरा, आठ औंस दूध और शाक लिया। बादमें मदालसा बहन और किशोरलाल काकाको पत्र लिखे। दो बजे गांववालोंके प्रीति-भोजमें गये। वहां बड़ा शोरगुल था। बापूजीने कोअी खास बात नहीं कही। साढ़े तीन बजेके करीब लौटे। आकर बापूजीने बची हुअी अेक पूनी काती। कातकर सिर और पेडू पर मिट्टी ली। पैर दबाते समय फिर अन्नकी पाचन-क्रिया परसे मनुष्यके नैतिक व्यवहारकी बात कही और नम्रता बढ़ाने पर जोर दिया तथा अिन बातों पर विचारनेको कहा।

अुठे तब यूनियनके अध्यक्ष मजरुल हक, सैयद अहमद और अख्तर जमान साहब आये। अुन्होंने यह शिकायत की कि हिन्दुओंने झूठे मुकदमे चलाये हैं। बापूजीने कहा, "अगर झूठे केस होंगे तो अुन्हें सजा होगी। नाम-पते वगैराके बिना मैं कैसे विचार कर सकता हूं?"

प्रार्थनाके बाद बिड़लाजीके मुनीम भैरवदासजी आये। बिड़ला कामगारोंकी तरफसे २,५५३ रुपये नोआखाली कष्ट-निवारणके लिअे दे गये।

आजकी प्रार्थनामें बहुतसे मुसलमान भाअी थे। मुख्य मौलवियोंमें श्री मजमलअली चौधरी, फजलुल रहमान, फजलुल हक, काजी अजीजुल्ला रहमान और वलीअुल्ला साहब थे।

अिन सबके मनमें बापूजीके प्रति अच्छा आदर है, अैसा मालूम होता था। मैं प्रार्थनामें कुरानकी जो आयत बोलती हूं अुसके अुच्चारणमें जरासा सुधार करनेकी अेक मौलवी साहबने सूचना की। अिसलिअे बापूजीने अुनके पास आध घंटा बैठकर सही अुच्चारण सीख लेनेको कहा। रातको आठ बजे जब बापूजी अखबार सुन रहे थे तब मौलवी साहबने बड़े प्रेमसे मुझे सही अुच्चारण सिखाया।

शामको बापूजीने अेक केला और छः औंस दूध लिया। और सोते वक्त गरम पानी, शहद व सोडा लिया।

बापूजीके औसत तार अब १०० या कभी कभी १५० भी हो जाते हैं। सात पूनियोंमें अितने तार निकलते हैं।

पौने दस पर सोनेकी तैयारी की। रोजकी भांति बापूजीके पैर दबाकर, सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके मैं भी फौरन सो गअी। मौनके कारण सब कुछ शान्त है।

देवीपुर,
१७–२–'४७, सोमवार

रोजकी तरह प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका ककहरा लिखा। गरम पानी पीते हुअे डायरी सुनी और हस्ताक्षर किये। बादमें डाकका काम शुरू हुआ।

अेक पत्रमें बापूजीने लिखा, "पिछले पत्रका जवाब बाकी ही था कि आज दूसरा आ गया। पहले पत्रका अुत्तर तुरत देने लायक नहीं था। मुझ पर आजकल काम और विचारका खासा भार रहता है। यहांका काम

दिन-दिन सरल नहीं, बल्कि कठिन होता जा रहा है। क्योंकि हमले बढ़ते जा रहे हैं। फिर भी मेरा विश्वास बढ़ रहा है। साथ ही हिम्मत भी। अन्तमें तो करना या मरना ही है न? बीचमें कुछ है ही नहीं। . . . मेरी तीसरी यात्रा कब शुरू होगी, यह निश्चित नहीं है। हैमचर २५ तारीखको पहुंचना है। . . . आगेका आधार तो मेरी थकावट पर रहेगा। २५ तारीख तककी यात्रा ओश्वर पूरी करा दे तब भी अच्छा ही समझूंगा।"

अेक लड़कीने मेरी तरह बापूजीके साथ रहनेकी मांग की। अुसके अुत्तरमें लिखा: "तुम मेरे पास आना चाहती हो, यह विचार मुझे पसन्द है। परन्तु जब मैं रोज अेक नये गांवकी यात्रा करता हूं तब सभी प्रकारकी परेशानियां और मुसीबतें होती हैं। गांवोंमें घूमते हैं तब चीजें बहुत नहीं मिलतीं, जगहकी तंगी रहती है, और पानी तो बहुत ही खराब होता है। अैसी स्थितिमें तुम्हें बुलानेका साहस नहीं होता। अिसलिअे मेरी अिच्छा यह है कि तुम थोड़ा धीरज रखो। प्रभुकी अिच्छा होगी तो अैसा समय आ जायगा जब तुम मेरे साथ रह सकोगी। तुम्हारे लिखे अनुसार तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है। तुम वहीं प्रगति करती रहो। बुननेके काममें खूब कुशल हो जाओ, और कातनेके काममें भी पहला नम्बर रखो तो अमूल्य साबित हो सकती हो। क्योंकि तभी सब जगह तुम्हारी अुपयोगिता सिद्ध होगी। मराठी तो अच्छी सीख ही ली होगी। न सीखी हो तो सीख लेना। नैसर्गिक अुपचारके बारेमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लेना। अुर्दू लिपि और भाषाका बढ़िया ज्ञान प्राप्त कर लो। संस्कृत भी सीख लो। यह सब विनोदमें ही कर लेना चाहिये। अैसा करोगी तो समय कहां चला जाता है, अिसका पता भी नहीं चलेगा। पत्रों द्वारा मुझसे मिलती रहना। . . . का बुखार अभी मिटा नहीं, यह अच्छा नहीं लगता। तुम नैसर्गिक अुपचारका अच्छा अध्ययन कर लो; यह सरल है। फिर तो तुम ही . . का बुखार मिटा सकती हो। अुसके खानेकी संभाल रखनी चाहिये। मैं मानता हूं कि कटिस्नान, घर्षण-स्नान और मिट्टीकी पट्टियां देनी चाहिये। अुसका मस्तिष्क शान्त होना चाहिये। और राम-रटन करना चाहिये। . . "

अेक और पत्रमें: "यहांके डाक-विभागका काम ढीला है। डाककी दृष्टिमें मैं बहुत दूर हूं।"

आजके विविध पत्रोंसे बापूजीकी मानसिक दशाका और यहांकी स्थितिका खयाल होता है।

६-५० तक काम किया। बादमें पंद्रह मिनट आराम किया। मैंने सामान बांधा। कुछ सामान आगे भेज दिया। ७-३५ को रोजके समय यात्रा आरंभ हुअी। ८-५५ को रायपुरासे यहां पहुंचे।

यहांका स्वागत भव्य था। लोगोंने बड़े प्रेम और श्रद्धासे तैयारियां की थीं। ध्वज, तोरण, पताका वगैरासे सजावट की गअी थी। यह सब बापूजीकी हिम्मत पर ही हुआ।

बापूजीका आज मौनवार है। अिसलिअे कुछ गंभीर विचारोंमें लीन मालूम होते हैं।

पैर धोकर शैलेनभाअीके पास थोडासा बंगलाका पाठ पढा। अितनेमें मैंने मालिशकी तैयारी की। मालिश और स्नानके बाद भोजन: शाक छानकर अुसमें पिसे हुअे पांच बादाम और पांच काजू डाले। गरम दूधमें अेक नीबू निचोया और वह फटा हुआ दूध आठ औंस लिया। भोजनके बाद अेक घंटा आराम किया। मैंने पैरोंमें घी मलकर बहुतसे कपड़े धोने थे सो धोये। बापूजीका सूत दुबटा किया। कागज जमाये। बहनोंके पास गअी। भोजन किया। अितनेमें बापूजी अुठे और अेक नारियलका पानी पिया। बादमें काता। कातते समय मैंने पत्र सुनाये। तीन बजे मिट्टी ली। बापूजी आध घंटे सोये। शामको ग्रेपफ्रूट और आठ औंस दूध लिया।

दूध पीते पीते वक्त हो जानेसे बापूजीका मौन खुला। सुबहकी अितनी आकर्षक सजावटकी तरफ दिनभर मेरा ध्यान नहीं गया। अिसलिअे बापूजीने मुझसे कहा, "तुम्हें यह जानना चाहिये कि ये सब चीजें अिन लोगोंने कहांसे जुटाअी और यहांके मुख्य कार्यकर्ता कौन हैं, अित्यादि।"

अब मेरी समझमें आया कि आज बापूजी जरा गंभीर क्यों थे। मैं सारी बात समझ गअी। मैं तुरन्त दौडी और मैंने सारी जांच की। अिस गांवमें तीन सौ हिन्दू और पंद्रह सौ मुसलमान हैं। हिन्दुओंमें ब्राह्मण, कायस्थ और शूद्र हैं। सजावट लाल-पीले कागजों, तेल और घीके दीयों, और जरी तथा पताकाओंसे की गअी थी। देहातमें तो अैसी वस्तुअें

हरगिज नही मिलती। अिसलिअे कार्यकर्ताको बुलाकर बापूजीने पूछा, "आप ये सब चीजें कहासे लाये?"

अुस भाअीने कहा, "बापू, आपके चरण हमारे यहां कब पड़ते! आप आनेवाले थे, अिसलिअे हम सबने आठ आठ आने देकर तीन सौ रुपये अिकट्ठे किये थे। अुमीमें से हमने यह खर्च किया है।"

अिससे बापूजी बडे दुःखी हुअे. "ये फूल और जाहोजलाली तो क्षण भरमें मुरझा जायगी। अिसमें मुझे यही लगता है कि आप सब मुझे धोखा दे रहे हैं। मेरी हिम्मत पर यह ठाटबाट रचकर साम्प्रदायिक भावनाको आप अधिक अुत्तेजित कर रहे हैं। आपको पता है कि मैं अिस समय अग्निकी ज्वालाओंमें जल रहा हूं। अितनी अधिक फूलमालाअें सजाअी गअी है, अिनके बजाय सूतके हार सजाये जाते तो मुझे अितना न खटकता। क्योंकि वे हार शोभा बढाते हैं और अुनसे कपडा भी बनता है। अिसलिअे कुछ भी बेकार नही जाता। मेरे खयालसे अिस गांवमें रुपया बहुत है। नहीं तो अिस कठिन समयमें आपको अैसी सजावट करनेकी बात न सूझती। आपके मनमें मेरे लिअे जो प्रेम है, अुसे साबित करनेको यदि यह सारी सजावट की हो तो यह बिलकुल अनुचित है। अिससे प्रेम जरा भी प्रगट नही होता। आपको मेरे प्रति प्रेम हो तो मेरे कहने पर अमल करें। अुतना मेरे लिअे काफी है। अितने कत्लेआमके बाद अिन फूलो पर रुपया खर्च करना आपको कैसे सूझा होगा, यही मैं समझ नही सकता। और फिर आप तो कांग्रेसके कार्यकर्ता हैं, सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। आप कहते हैं कि आपने मेरी पुस्तकें पढी हैं। आप अेम० अे० तक पढे हैं। फिर अिस सजावटमें विलायती और देशी मिलका कपडा, रेशम और रिबन वगैरा काममें लिये गये हैं। यह सब मेरी दृष्टिसे दुःखद है, अितना ही कहना चाहता हूं।

"आपके अुदाहरण परसे मैं अपने समस्त साथी कार्यकर्ताओंका विचार करता हूं, तो शका अुठने लगती है कि जो लोग अेक दिन देशसेवकके रूपमें जनताके सेवक माने जाते थे, वे ही कार्यकर्ता कोअी पद या सत्ता मिलने पर अिसी तरह तो फूलहार पहनाने या पहननेके लालचमें नही फस जायंगे। मैं देखता हूं कि आज भी मैं छाती ठोक कर यह नहीं कह सकता कि मेरे कार्यकर्ताओंमें से किसीकी भी परीक्षा ली जाय तो वह

सादगीका जीवन बितानेवाला ही मिलेगा, किनने ही मोटर-बंगले हों तो भी यह अपना ध्येय नहीं छोड़ेगा। आज यह बात नहीं है। ठीक है, आजकी अिस घटनाने मुझे अधिक जाग्रत बना दिया है। अिसमें मैं आपका दोष नहीं देखता। आप तो जैसे थे वैसे दिखाअी दिये। परन्तु अिससे अीश्वर मुझे अिस बातका भान करा रहा है कि मैं कहां हूं। पता नहीं अभी तकदीरमें और क्या क्या देखना लिखा है?"

बापूजी अपने हृदयकी तीव्र व्यथाको धाराप्रवाह रूपमें प्रकट कर रहे थे। बेचारे कार्यकर्ता भाअी शर्मिन्दा हो गये। अुन्हें क्या पता था कि सजावटका परिणाम यह आयेगा? बापूजीने हारों और पताकाओंमें जितना धागा काममें लिया गया था अुसका गोला बनानेकी सूचना की। बीस छोटी-छोटी आंटियां हुअीं। प्रार्थनाके बाद रातको आंटियां लेकर वे भाअी आये। बापूने मुझसे कहा, "तुमने देख लिया? अिन बीस आंटियोंसे कितने कपड़ोंको जोड़ लग सकते हैं? यह सब देखना तुम्हें सिखाना चाहता हूं। तुम जहां देखो कि अमुक काम मेरे स्वभावके विरुद्ध हुआ है, वहां तुम्हें जाग्रत होकर पूछताछ कर लेनी चाहिये। वैसे निर्मलबाबू करते तो हैं। तुम्हें अपने भीतर व्यावहारिक दृष्टि पैदा करनी चाहिये। अीश्वर करेगा तो वह भी हो जायगी। परन्तु तुम अितना जान लो कि अिस समय तुम्हें जिस ढंगसे मैं शिक्षा दे रहा हूं अुस ढंगसे मैंने किसीको नहीं दी है। प्रभावतीको जरूर कुछ दी थी। परन्तु अिस तरह बिलकुल अकेलीको नहीं दी। आगाखां महलमें तुम्हें अैसे पाठ नहीं मिलते थे। वहां तो बा लाड लड़ाती थी न? परन्तु वहां भी कुछ तालीम तो मिली ही है। अुसमें ये सब पाठ पूरक बन रहे हैं।"

रातको जब बापू लेटे हुअे थे और मैं अुनके पैर दबा रही थी तब अुन्होंने मुझसे यह बात कही।

अैसा ही दूसरा प्रसंग कहती हूं, जिसमें मुझे पाठ मिला।

शामसे मेरा पेट बहुत दुःख रहा था, अिसलिअे रातको गरम पानीकी सेक करनेको बापूजीने कहा था। परन्तु मैं गरम पानी करना भूल गअी।

सोते वक्त मुझे पूछा, क्यों सेक की थी? मैंने अिनकार किया और पानी गरम करना रह गया, वगैरा बातें कहीं। बापूजीको यह अच्छा न लगा। वे बोले, "जो आदमी अपने काममें आलस्य करे वह कभी न कभी दूसरेके

काममें भी आलस्य करेगा। तुम्हारा शरीर तुम्हारा नहीं, ओीश्वरका है। जैसे किसी मकान-मालिकका मकान हम किराये पर लेते हैं तो अुसे साफ रखते हैं, किसी समय मकानको नुकसान पहुंचा हो तो अुसकी मरम्मत कराते हैं और अैसा करनेसे ही मकानकी सुघड़ता बनी रहती है तथा रहनेवालेकी प्रतिष्ठाकी रक्षा होती है, वैसे ही हमारा शरीर ओीश्वररूपी गृहस्वामीका है। अिसमें कभी कोओी टूट-फूट हो तो अुसकी मरम्मत करना अपना फर्ज समझकर अुसे अदा करना चाहिये। नहीं तो ओीश्वर नाराज होगा ही। ओीश्वरका फरमान आयेगा तब अिस शरीररूपी घरको हमें छोड़ना पड़ेगा। परन्तु यदि अिस शरीरको हमने संभालकर रखा होगा और अिसके द्वारा लोगोंकी सेवा की होगी, तो ही अिसका जीना सार्थक होगा। तो ही ओीश्वर प्रसन्न होगा। वर्ना अिस पृथ्वी पर जो असंख्य कीड़े-मकोड़े रेंगते हैं अुन्हीमें से हम भी माने जायंगे। सोना, बैठना, खाना, पीना सब नियमित हो तो बीमार पड़नेकी नौबत ही न आये। परन्तु कभी शरीरके कलपुर्जे चलते चलते अटक जायं, तो वह ओीश्वररूपी महान गृहस्वामीका है, अैसा मान कर अुसकी सेवा करनी ही चाहिये।"

फिर दस बजे बाद गरम पानी कर देनेको कहा। अिसलिअे मुझे सोनेमें देर हो गओी।

वैसे तो सब कुछ नियमित ढंगसे हो रहा है। दिनभर मौन रहा, अिसलिअे वातावरण शान्त था। परन्तु मौनके बाद हम सबको समझानेमें बापूजीको बड़ा श्रम हुआ। हमारा मुकाम राजकुमारश्रीके यहां है, जो कायस्थ हैं और खेती करते हैं। बस्तीमें ३०० हिन्दू और १,५०० मुसलमान हैं।

आजकी डायरीमें बापूजीने हस्ताक्षर करके अिस प्रकार लिखा है :

आलूनिया,
१८-२-'४७

आज मुझे क्रोध आ गया। यह है मेरी अनासक्ति। अिससे अपने आप पर अरुचि पैदा हुओी। अहिंसाकी शायद सच्ची परीक्षा होगी, यह भी विचारणीय मालूम होता है। ओीश्वरकी महान कृपा है कि वह मुझे निभा लेता है। तुम पूरी तरह जाग्रत हो जाओ। — बापू

आलूनिया,
१८-२-'४७, मंगलवार

रोजकी भांति प्रार्थनाके समय अुठे। बादमें गरम पानी और शहद लेते हुअे मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किये। बापूजीने अपना जो असह्य दुःख कल प्रगट किया, अुसे मैंने नहीं देखा था। अुन्होंने मुझसे पूछा, "तुम्हारी डायरीमें मैंने जो लिखा है वह तुमने देखा?"

मैंने कहा: "मैं आपको डायरी देकर गरम पानीका गिलास धोने चली गअी थी, अिसलिअे मैंने नहीं देखा।" बापूजी बोले, "कोअी भी चीज हो, यदि हमने अुसे दूसरेको सौंपी हो और वह हमारे लिअे ही हो तो हमें फिरसे देख लेना चाहिये। तुम जानती हो कि मैं अेक कार्ड भी लिखता हूं तो अुसे दुबारा पढ़े बिना डाकमें नहीं जाने देता। मेरी यह आदत पहलेसे ही है।"

मैंने अुनकी नोंध देखी। बापूजीके अुद्वेगका पार नहीं था।

फिर (बंगालके भूतपूर्व मुख्यमंत्री) प्रफुल्लबाबूको और मेरे बारेमें मेरे पिताजीको पत्र लिखे। प्रफुल्लबाबूने बापूजीको अभय आश्रममें जानेके बारेमें लिखा था। अुसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा, "यदि कुमिल्ला जाअूंगा तो अभय आश्रम जरूर जाअूंगा। . . . मेरी यात्रा जारी है। अैसा लग रहा है कि हैमचर पहुंच कर मुझे थोड़ा आराम लेना ही पड़ेगा।"

साढ़े सात बजे हमने देवीपुर छोड़ा। नौ बजकर पांच मिनट पर हम यहां पहुंचे। पैर धोते समय बापूजीने बंगलाका पाठ समझाया। बादमें मालिश, स्नानादि। भोजनमें दो खाखरे, शाक और खोपरेकी थोड़ी छूछ ली। दो ग्रेपफ्रूट लिये।

आज शाक बड़ा विचित्र था: भिंडी, पत्तो, करेले और थोड़ीसी लौकी थी। बापूजीने सबको अेकसाथ अुबाल डालनेको कहा। अुसमें भिंडी डाल देनेसे शाक खूब चिकना हो गया। और अुसी शाकमें खाते समय दूध डलवाया। मिश्रणको चम्मचसे हिलाने लगे। यह देखकर मुझे लग रहा था कि बापूजी अिसे गलेमें कैसे अुतारेंगे? मैंने हंसते-हंसते अुनसे अपने मनकी बात कही। बापूजी बोले, "अरे, भूख हो तो सब कुछ गलेमें अुतर जाता है।"

मेरे लिअे अपने हाथसे अिसी शाकमें से दो चम्मच अलग रखा और मुझसे खानेको कहा। (बापूजी बिलकुल अुबला हुआ शाक मिर्च-मसाला

डाले बिना स्थायी रूपमें वर्षोंसे लेते रहे हैं। और वह ठीक लगता है। परन्तु अैसा पचमेल शाक भी, जिसमें अूपरसे दूध मिलाया गया था, बापूजी पी गये।) मुझे जो शाक खानेको दिया अुसे खाना जरूरी था। लेकिन अुसे खानेमें मुझे कोअी दवा खानेसे भी ज्यादा कठिनाअी हुअी।

खाते समय 'हिन्दू' पत्रके प्रतिनिधि रंगस्वामीजीसे कुछ पत्र लिखवाये

दोपहरको आराम लेते समय बंगलाका पाठ किया। दो बजे सुचेता बहन आअीं। खाकसार भाअी भी मिलने आये थे। अुन्होंने बापूजीसे विनती की कि "आप अिस आशयका पत्र लिखें कि अंतरिम सरकार खाकसारोंको छोड़ दे।"

बापूजी बोले, "अिस तरह जबानी बात मैं नहीं जानता। आप अपनी सारी सामग्री मेरे पास भेजें तो मैं अुस पर विचार कर सकता हूं।"

आज बापूजी कुछ ज्यादा थके हुअे लगते हैं। कह रहे थे, "आंखें जला करती हैं।" आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखी। हैमचर जाकर आराम लेनेवाले हैं। मुझसे कहने लगे, "अब अधिक दिन कहां हैं? . . . भले ही मेरी मृत्यु तक . . . न समझें। फिर भी मुझ पर अुसके शोक या मोहकी भावनाका असर जरा भी क्यों हो? परन्तु मैंने तुमसे कहा न कि मेरी अनासक्ति बहुत थोड़ी है; यह मैंने परसों ही लिखा है। यदि मैं 'स्थितप्रज्ञ' हो जाअूं और अपना काम जारी रखूं तो कुछ भी हो सब मेरे लिअे अेकसा बन जाय। 'सुख दुख दोनों समकर जाने।' हां, अुस ओर जानेका मेरा प्रयत्न चलता है। मुझे आशा तथा दृढ़ विश्वास है कि जितने दिन अिस प्रयत्नमें लगे अुतने अिस दिशाकी सफलता प्राप्त करनेमें नहीं लगेंगे। अिसीलिअे तो मैंने . को साहस बैंक छोड़नेकी अिजाजत दे दी। अिसलिअे यदि मेरे हृदयमें रामनाम अंकित हो जायगा तो मैं खुशीसे नाचूंगा। तुम मेरे प्रत्येक कार्यमें जितनी सजग रहोगी अुतनी ही तुम्हारी मदद मुझे मिलेगी और अुतनी ही मेरी शक्ति बढ़ेगी। वैसे तुमने बहुत सीखा है।"

दोपहरके बाद बिहारसे अेक भाअी आये हैं। वे खास तौर पर रामायण सुनाने आये हैं। वे यहां तक आ गये हैं, अिसलिअे अुन्हें संतोष देनेके लिअे बापूजीने रामायण सुनी और कहा, "आप कल बिहार चले जाअिये। केवल रामायणके स्वर सुननेके लिअे आपको ठहराना मुझे अच्छा नहीं

घूमकर लौटने पर अेक कार्यकर्त्री बहनमे अुसके सवालके जवाबमें बापूने कहा, "कार्यकर्ताओंको देहातमें जाकर लोगोंको अीश्वर पर भरोसा रखना और हिम्मत रखना सिखाना चाहिये। कार्यकर्ताओंके चले जानेके बाद गांववालोंको अैसा लगे कि अब हमारा कौन बेली है, तो यह ठीक नहीं है। गांववालोंमें अैसी भावना कभी भी पैदा न होने दी जाय। काम करने-वाले सब भाअी-बहनोंको देहातके स्त्री-पुरुषोंको साफ-साफ बता देना चाहिये कि हम लोग यहां स्थायी रूपसे नहीं रहेंगे, कामके लिअे ही आये हैं; अिसलिअे आप सबको अपने पर आधार रखना सीखना चाहिये। अपने अपने धर्म और शीलके खातिर मरनेकी कला आपको हस्तगत करनी चाहिये।"

कुछ दूसरी बातोंके सिलसिलेमें बापूजीने कहा, "जब मैंने अस्पृश्यताका आन्दोलन छेड़ा था तब भी अैसी ही मगर कुछ भिन्न स्थिति थी। अर्थात् समाज और साथियोंको वह पसन्द नहीं था, परन्तु मेरी आत्माको पसन्द था। आत्माकी आवाज सुनकर मैंने बहुतेरी बातें की हैं। और अुनमें अेक हद तक मैंने सफलता भी प्राप्त की है। यद्यपि सफलता-असफलताकी चिन्ता करनेका हमें अधिकार नहीं है। अिसकी चिन्ता करनेका अीश्वरके सिवा किसीको भी अधिकार नहीं है। चिन्ता करना भी अेक प्रकारसे अभिमान करनेके समान है और वह मिथ्या अभिमान है।"

बादमें बापूजीके पास नृपेनदा आये। अिस समय रातके आठ बजे हैं। मैंने आजकी डायरी लिखी। अभी तक बापूजीने आजके अखबार नहीं देखे हैं। अखबार सुनते समय आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखनेवाले हैं। मुझे अभी बिस्तर करना है, कपड़ोंकी तह करनी है और थोड़ासा पैकिंग करना है।

यह मकान राजकुमार दासका है। गांवमें कुल ६४६ घर हैं। अुनमें ४,६२१ मुसलमान हैं। हिन्दू केवल १,००० हैं। आज बापूजीके ९० तार हुअे।

रातको बापूजीने मिट्टी लेकर अखबार सुने। थोड़ासा लिखवाया। बादमें सोये। दस बज गये। मैंने बापूजीके सिरमें तेल मला, पैर दबाये, और अुन्हें प्रणाम करके तुरन्त सो गअी।

लगता। वे स्वर भी यह लडकी अच्छी तरह सुना सकती है। परन्तु अिसका स्वर वैसा नहीं है जैसा मैंने बहुत वर्षो पहले सुना था। फिर, बिहारकी स्थिति तो अिस समय सेवाके अेक क्षेत्रके समान हो गअी है। वहां रहकर, रामायणके प्रचारसे यदि ग्रामीणोको लाभ पहुचाया जा सके तो पहुंचाना चाहिये। नही तो यह समय सेवाकार्यमें जुट जानेका है। यदि आपको केवल स्वर सुननेके लिअे ही यहा रोकू तो यह मेरा निरा मोह और स्वार्थ होगा और अुससे होनेवाला पाप आपको और मुझे दोनोको लगेगा। अत अिस पापसे मैं भी बचू और आप भी बचें। यह लड़की जैसा भी गायेगी अुसीसे मैं सतोष मानूगा। अिसका कण्ठ अच्छा है और यह अच्छा गा सकती है। नया स्वर तुरत ग्रहण कर लेगी। अिसलिअे आज दिन भरमें यदि अिसे समय मिले तो सिखा दीजिये। परन्तु सिखानेके लिअे ही खास तौर पर न ठहरिये।"

बापूजी जब मुलाकातियोके साथ थे तब मैंने वह स्वर सीख लिया।

शामको प्रार्थनाके बाद हम डाकरिया नदीके अुस पार रहनेवाले अेक बहुत बूढे पुरुषसे मिलने गये। नावमें बैठे। दोनो किनारे पानीसे भरपूर थे। दोनो किनारो पर आदमी भी बहुत थे। (यह वृद्ध बापूजीके दर्शनोकी अिच्छा रखते थे, लेकिन आनेमें असमर्थ थे। अिसलिअे बापूजीसे अुनके पास जानेकी प्रार्थना की गअी। साधारण आदमी थे। कोअी बडे नेता या प्रमुख व्यक्ति नही थे।)

घनी हरियालीके बीचसे सुन्दर नदी बह रही थी। आकाश स्वच्छ था। न बहुत धूप थी, न बहुत ठंड थी। नावमें पाच सात मिनटका रास्ता था। अिन पाच सात मिनटोमें बापूजी मेरी गोदमें सिर रखकर आंखें बन्द करके लेट गये और अुन्होंने अेक नीद ले ली। अूपर आकाश, नीचे पानी। दोनो किनारो पर मानव-समूहके साथ ही प्रकृतिके हरेहरे पेड-पौधोंकी भी भीड़ थी। मन्द मन्द हवा चल रही थी। अिस कुदरती दृश्यके बीच संसारका यह महापुरुष मेरी गोदमें सो रहा था और नाव-वाला नाव चला रहा था। मेरा हाथ बापूजीके कपाल पर था। मेरे जीवनके ये क्षण धन्य हो गये।

अितने दिनोकी यात्रामें आजका प्रसंग अनमोल अवसर बनकर रह गया।

घूमकर लौटने पर अेक कार्यकर्त्री बहनके अुनके सवालके जवाबमें बापूने कहा, "कार्यकर्ताओंको देहातमें जाकर लोगोंको अीश्वर पर भरोसा रखना और हिम्मत रखना सिखाना चाहिये। कार्यकर्ताओंके चले जानेके बाद गांववालोंको अैसा लगे कि अब हमारा कौन बेली है, तो यह ठीक नहीं है। गांववालोंमें अैसी भावना कभी भी पैदा न होने दी जाय। काम करने-वाले सब भाअी-बहनोंको देहातके स्त्री-पुरुषोंको साफ-साफ बता देना चाहिये कि हम लोग यहां स्थायी रूपसे नहीं रहेंगे, कामके लिअे ही आये हैं; अिसलिअे आप सबको अपने पर आधार रखना सीखना चाहिये। अपने अपने धर्म और शीलके खातिर मरनेकी कला आपको हस्तगत करनी चाहिये।"

कुछ दूसरी बातोंके सिलसिलेमें बापूजीने कहा, "जब मैंने अस्पृश्यताका आन्दोलन छेड़ा था तब भी अैसी ही मगर कुछ भिन्न स्थिति थी। अर्थात् समाज और साथियोंको वह पसन्द नहीं था, परन्तु मेरी आत्माको पसन्द था। आत्माकी आवाज सुनकर मैंने बहुतेरी बातें की हैं। और अुनमें अेक हद तक मैंने सफलता भी प्राप्त की है। यद्यपि सफलता-असफलताकी चिन्ता करनेका हमें अधिकार नहीं है। अिसकी चिन्ता करनेका अीश्वरके सिवा किसीको भी अधिकार नहीं है। चिन्ता करना भी अेक प्रकारसे अभिमान करनेके समान है और वह मिथ्या अभिमान है।"

बादमें बापूजीके पास नृपेनदा आये। अिस समय रातके आठ बजे हैं। मैंने आजकी डायरी लिखी। अभी तक बापूजीने आजके अखबार नहीं देखे हैं। अखबार सुनते समय आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखनेवाले हैं। मुझे अभी बिस्तर करना है, कपड़ोंकी तह करनी है और थोड़ासा पैकिंग करना है।

यह मकान राजकुमार दासका है। गांवमें कुल ६४६ घर हैं। अुनमें ४,६२१ मुसलमान हैं। हिन्दू केवल १,००० हैं। आज बापूजीके ९० तार हुअे।

रातको बापूजीने मिट्टी लेकर अखबार सुने। थोड़ासा लिखवाया। बादमें सोये। दस बज गये। मैंने बापूजीके सिरमें तेल मला, पैर दबाये, और अुन्हें प्रणाम करके तुरन्त सो गअी।

विरामपुर,
१९–२–'४७

आज महाशिवरात्रि है। पू० बाकी श्राद्धतिथि होनेके कारण मैंने बापूजीसे पूछा, पू० बाका जिस समय अवसान हुआ अुस समय अर्थात् शामको सात पैंतीस पर हम गीतापाठ शुरू करें तो कैसा रहे? बापूजी कहने लगे, "तुम्हारी अिच्छा सात पैंतीस पर गीता-पारायण करनेकी हो तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं। आज भोजन तो नहीं किया जा सकता। मुझे कहना चाहिये कि बा न होती तो मैं अितना अूंचा नहीं अुठा होता। बाने मुझे खूब अच्छी तरह पहचान लिया था। और बाका परिचय मेरे सिवा दूसरा कौन अधिक दे सकता है? वह मेरे प्रति कितनी वफ़ादार थी? और अंतिम समय जब मैं सोच रहा था कि बा किसकी गोदमें जायगी, अुस समय तुम तो थीं ही। अन्तमें अुसने मुझीको बुलाया और मेरी गोदमें आखिरी सांस ली। अैसी थी बा। आज अिस यज्ञमें अुसे याद करके और अुसके सद्‌गुणोंकी स्तुति करके अुन गुणोंको हम अपनायें। यही बाका सच्चा श्राद्ध है। मेरी सेवा अुसने निर्दोष भावसे की थी। मेरे प्रत्येक कार्यमें, शादी हुअी तबसे लेकर अन्त तक, तन, मन और धनसे बाने लगातार मेरी अतुलनीय सेवा की।"

सवेरे प्रार्थनाके समय बापूजीने मुझे अुठाया, तब दातुन करते-करते पू० कस्तूरबाके लिअे बापूजीने ये अुद्‌गार प्रकट किये।

आज कदाचित् हिन्दुस्तानमें अनेक स्थानों पर पू० बाको श्रद्धांजलि दी जायगी। परन्तु यह अंजलि बापूजीने मुझे प्रातः चार बजे ही सुनाअी। मैंने बापूजीके ही मुखसे अितने भावनामय शब्द सुननेके लिअे अपनेको भाग्यशालिनी माना।

सवेरेकी प्रार्थना रोजकी तरह आलूनियामें हुअी। प्रार्थनाके बाद देव-भाअीके साथ बातें कीं। बादमें गरम पानी और शहद लिया। आध घंटे बाद अनन्नासका रस लिया। कुछ पत्रों पर हस्ताक्षर किये। दस मिनट आराम किया। सात पचीस पर रोजकी भांति यात्रा आरंभ हुअी। यहां पहुंचनेमें ७२ मिनट लगे। रास्तेभर भजन-मंडलीने सुन्दर भजन गाये। अिसलिअे मेरे हिस्सेमें गानेका काम थोड़ा ही था। मैंने आज अेक ही भजन गाया। रास्तेभर भजन-मंडली ही गाती रही। आकर बापूजीके पैर

सोये। वे बंगलाका पाठ करते रहे, अितनेमें मैंने मालिशके लिअे तम्बू वगैरा तैयार कर लिया।

आज बापूजी खूब थक गये थे। मालिशमें काफी सोये। स्नानके बाद जाजूजी, जवाहरलालजी, ऋाअिट हान्स, कुलकर्णीजी, रुक्मिणीदेवी, हरिसिंह घोष और अब्दुल्ला साहबको पत्र लिखवाये और हस्ताक्षर किये।

आर्यनायकम्‌जी आये हैं, अिसलिअे अुनके साथ बहुत बातें कीं। साढे बारह बजे बापूजी आराम करनेके लिअे लेटे। मैंने पैरोंमें घी मलकर अपना काम किया। सूत दुबटा करना, कपडोंके पैवन्द लगाना, डायरी लिखना वगैरा। आर्यनायकम्‌जीके साथ अमलप्रभाबहन और पुर्णेन्दुबाबू भी आये हैं। अमियबाबू (अमिय चक्रवर्ती) भी हैं। अिसलिअे आजका दिन भरा भरा लगता है।

अुठकर नारियलका पानी लिया और डाक देखी। दो बजे कातते समय आर्यनायकम्‌जीके साथ बातें कीं। बापूजी कातते-कातते बातें करते रहे। सिरके बाल बढ गये थे, अिसलिअे मुझसे बोले, "मशीनसे काट डालो।" मैंने बाल काटे। अिस प्रकार बापूके पास समयकी बड़ी तंगी रहती है। आर्यनायकम्‌जीके साथ बापूजीने मेरे विषयमें बहुतसी बातें कीं। वे भी खुश हुअे। तीन बजे मिट्टी लेते समय भी अुन्हींकी मंडली थी। नअी तालीमके बारेमें चर्चा थी।

सिलहटसे बहुत संतरे आये हैं। पू० बाकी श्राद्ध-तिथिके निमित्तसे बच्चोंको बाट दिये। बापूजी बोले, "तुम जानती हो न, बा खाकर प्रसन्न नहीं होती थी, परन्तु खिलाकर प्रसन्न होती थी।"

शामको दूध और आठ खजूर लिये। बादमें प्रार्थनामें गये।

प्रार्थना-सभामें अेक यह सवाल पूछा गया कि "अमुक स्थापित स्वार्थ रखनेवाले लोग किसी हिन्दू कार्यकर्ताके विरुद्ध जान-बूझकर झूठी बातें फैलावें और अुसकी निन्दा करें तो क्या किया जाय?"

बापूजी — "मैं तो यह कहूंगा कि अहिंसाकी दृष्टिसे देखते हुअे मनुष्यके कार्योंसे अुसका जो परिचय मिले वही सच्चा परिचय है। कभी कोअी गलतफहमी हो गअी हो तो व्यर्थकी बातोंसे या अुत्तेजनासे अुसे दूर करनेकी झझटमें नहीं पड़ना चाहिये। परन्तु कुछ अवसर अैसे भी आते हैं जब बोलकर सफाअी देना धर्म हो जाता है और चुप्पी साधनेसे हम लगभग असत्य ठहरते हैं। अिसलिअे ठीक रास्ता यह है कि कार्यके साथ वाणीसे स्पष्टीकरण करनेके अवसर कौनसे होते हैं, अिसका विवेक

रखकर काम किया जाय। और अैसे प्रसंगों पर अच्छी भाषामें अपने बारेमें अवश्य स्पष्टीकरण किया जाय।"

ठीक सात पैंतीस पर गीता-पारायण शुरू किया। मेरे पास पू० बाका अेक फोटो था। अुसे सामने रखकर फूलमाला अर्पण करके मैंने प्रणाम किया और पारायण आरंभ किया। प्रार्थनामें आर्यनायकम्‌जीके साथ आओी हुओी महिलाअें और दूसरे मेहमान तथा स्थानीय लोग शरीक हुअे। मुसलमान भाओी भी थे। पारायण तो मैंने अकेले ही किया। दूसरे सब सुन रहे थे। सवा घंटा लगा। बहुत शांति और गांभीर्य था। पारायण पूरा होते ही बापूजीने मेरी बहनको लिखा:

"अिस दिन और अिस समय सात पैंतीस पर बाने देह छोडी थी। पारायणके समय नये आये हुअे अतिथि मौजूद थे। आज अिस यज्ञमें बाके अवसानका दृश्य आंखोंमें तैरने लगा। कारण, मनुडी भी थी। वह तेज गतिसे गीता-पारायण कर सकी और वह भी अकेले। आगाखां महलमें भी तो अकेले ही थे न? अिसलिअे जब मैं छठे अध्यायके बाद लेट गया और नींदका अेक झोंका आ गया, तब कुछ अैसा आभास हुआ मानो बाका सिर मेरी गोदमें रखा है।" *

मैंने अुपवास रखा था। अिसलिअे प्रार्थनाके बाद फलाहार किया और दूसरा काम किया। बापूजी आज पौने ग्यारह बजे तक मेहमानोंके साथ बातें करते रहे।

यह मकान तारिणीचरणदास माछीका है। यहां १०० हिन्दू लौट आये हैं। ६,००० मुसलमानोंकी आबादी है और ३५० हिन्दुओंकी।

बीराकाथली,
२०-२-'४७

आज रातमें असह्य ठंड थी। रातके बारह बजे बापूजीने मुझे जगाया। मैंने अुन्हें ओढाया और दबाकर गरम किया। अुनके पैर खूब ठंडे हो गये थे। झोंपड़ेमें तेज हवा सनसन करती बहती रहती थी। परंतु अुसे रोकनेका कोओी अुपाय नहीं था। आजकल बापूजी अैसा कष्ट भोग रहे हैं।

---

* छः अध्याय तक बापूजी अच्छी तरह बैठे-बैठे आंखें बंद करके सुन रहे थे। परन्तु बादमें थक जानेसे लेट गये थे।

रातको साढ़े बारह बजे मुझसे कहा, "मेरे पैरोंके तलुओं बहुत ठंडे हो गये हैं।" मैंने देखा कि हाथ और पैर अेकदम ठंडे पड़ गये हैं। अैसा लगा कि बापूजी कांप रहे हैं। पामलेट बचानेको रातमें बापूजी लालटेन भी बुझवा देते हैं। अिसलिअे अमावस्या जैसी घोर अंधेरी रात थी। चारों ओर सन्नाटा छाया था। नारियल और सुपारीके वृक्षोंकी सांय-सांयकी आवाज बड़ी भयानक लग रही थी। वे ही अकेले अिसके साक्षी थे कि लोगोंमें मानवता पैदा करनेके लिअे यह तपस्वी कैसा कठोर तप कर रहा है। छप्परके छेदोंमें से घुसनेवाली हवा और ठंडको रोकूं भी कैसे? अिस कोठरीमें मैं और बापूजी दो ही थे। मनमें कितने ही विचार आ गये। सोचा साथमें गरम पानीकी थैली तो है, परन्तु गरम पानी कहां किया जाय? किसीको अुठाना तो संभव हो नहीं था। बापूजीका डर भी था। जो लालटेन नहीं जलाने देते वे प्राअिमसके लिअे तो पामलेट देने ही क्यों लगे? अिसलिअे सभी विचार व्यर्थ थे। जितना ओढ़नेको था सब मैंने बापूजीको ओढ़ा दिया। सिर पर भी ओढ़ा दिया और मेरे हाथोंमें जितना जोर था अुतना अुनका शरीर दबाया। तब कहीं आधे घंटेमें बापूजीको कुछ राहत मिली और वे सो गये।

प्रार्थनाके बाद नित्यकी भांति सब कुछ हुआ। रातको आज थर्मासमें गरम पानी भर कर रखनेके लिअे थर्मास मंगानेकी अिच्छा हुओ और बहुत डरते-डरते बापूजीकी स्वीकृति ली। बापूजीने कहा, "काजीरखिलमें अतिरिक्त थर्मास हो और अुन लोगोंके अुपयोगमें न आता हो तो भेज दें। नया तो खरीदा ही नहीं जा सकता। रुपया कहां है?"

आज बंगलाका ककहरा लिखनेको अेक कापीमें खाने बनाये। (हमारे यहां गुरूमें बच्चोंको बारहखड़ी सिखानेको जैसे खाने बनाये जाते हैं ठीक अुसी तरहके।) मुझे यह देखकर बड़ी हंसी आओी। मैंने कहा, आपने अैसी लकीरें खींची हैं मानो बालवर्गमें पढ़ते हो।

बापूजी कहने लगे, "सच है। मनुष्य जब तक जिये तब तक विद्यार्थी ही है। ककहरा पक्का करने और अक्षर अच्छे बनानेका यह सुन्दर ढंग है। मुझे तो अपने शिक्षक अिसी तरह अंक और ककहरा आदि सिखाते थे। यह तरीका बहुत अच्छा है।"

बादमें रस पिया। बंगलाकी बालपोथी पढ़ते-पढ़ते दस मिनट सो लिये। सात पद्रह पर अुठे। सात पचीसको हमने विरामपुर छोड़ा। आठ पचीस

पर हम यहां पहुंचे। यहां आनेमें पूरा अेक घंटा लग गया। रोजकी भांति यहां आकर बंगलाका पाठ किया। मालिशमें बापूजी पौन घंटे सोये। भोजनमें तीन खाखरे, साग, दस औंस दूध और तीन संतरे लिये।

दोपहरको आराम करके अेक नारियलका पानी पिया। शामको दूध और संतरेका रस मिलाकर दिया। दोपहरको सेवाग्राम आश्रमकी कुछ डाक आओी। वह मैंने पढ़कर सुनाओी। कताओी और मुलाकातें नियमानुसार हुओीं। रातको आठ बजे रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाते लिखवाते झपकी आने लगी, अिसलिओे सो गये। आज बापूजी कुछ अधिक थके हुओे लगते हैं, क्योंकि दिनमें तीन चार बार अिसी तरह सो गये थे। पैरोंमें बिवाओीं फटनेकी शिकायत कर रहे थे। आजकल यात्रामें रोजकी अपेक्षा कुछ ज्यादा चलना होता है और ठंड भी बहुत है, अिसीलिओे अैसा हुआ होगा। अंगूठेमें फिर चीरा पड़ गया है। अिसलिओे अुसका भी दर्द रहता है। ठंडका असर, अुस पर नंगे पैरों चलना। और बापूजीके पैर तो अितने अधिक कोमल हैं कि जरा भी फटने पर चीरा पड़ जाता है। जो हो जाय सो सही। अीश्वरकी क्या अिच्छा है, अिसे कौन जान सकता है?

कोमल्लापुर,
२१–२–'४७

सदाकी भांति प्रार्थना। बादका सारा समय आर्यनायकम्‌जीने ले लिया। मौलाना साहब और जाकिर हुसेन साहबके शिक्षा-संबंधी विचारोंकी चर्चा की। साढ़े पांचके बाद रस पिया और थकावटके मारे लेट गये। मैंने पैर दबाये। बापूजी ५–५५ तक सोये। मृदुलाबहनको पत्र लिखवाया और सारी डाक बिड़लाजीके आदमी भैंरवदासजीके साथ भेजी। मुन्नालालभाओीको पत्र लिखवाना शुरू किया, परन्तु पूरा न हो सका। . . . लावण्यलता बहनने थकावट होनेके कारण बापूजीको कोओी दवा लेनेका सुझाव दिया। बापूजी कहने लगे, "मेरी दवा तो रामनाम है। मैं कब तक टिकता हूं, यह दूसरी बात है। अिसलिओे अिस दवासे या तो मैं कभी बीमार नहीं पड़ूंगा और बीमार पड़ूंगा तो हृदयगत रामनामके बल पर चौबीस घंटेमें अच्छा हो जाअूंगा।"

साढ़े सात बजे बीराकाथली छोड़ा। सवा नौ बजे हम यहां पहुंचे। रास्तेभर आर्यनायकम्‌जीसे बातें कीं। बीचमें दो जगह ठहरे थे, अिसलिओे

देर हुआी। पैर धोते समय बापूजीने कलकी रिपोर्ट सुधारी। मालिशमें भी यही काम किया।

बापूजीने आज भोजनमें थोड़ा फेरबदल किया। अेक खाखरा और अेक चम्मच बकरीका घी शाकमें लिया।

बापूजीको कमजोरी और थकान होनेके कारण थोड़ा थोड़ा मक्खन निकालकर और अुसका घी बनाकर मैंने थोडीसी गुड़-पपडी बनाआी थी। बनानेके बाद ही बापूजीके पास ले गआी। मैंने कहा, "आप गुड़ लेते हैं, गेहूं लेते हैं और बकरीका घी तो लिया ही जा सकता है। अिसलिअे पपड़ी बनाआी है।" मुझे डर था कि शायद न लें। परन्तु सौभाग्यसे अेक छोटीसी डली ले ली। फल नहीं लिये।

मुझसे बोले: "तुम पपडी बनाकर लाओी, अिसलिअे तुम्हारा अुत्साह भंग करके तुम्हें दुःखी न करनेके खयालसे अिच्छा न होते हुअे भी पपडीका अेक टुकडा ले लिया। परन्तु अिससे थकान या दुर्बलता चली थोड़े ही जायगी? वह तो रामनामकी दवासे ही मिटेगी। यह श्रद्धा तुम्हें भी अपनेमें पैदा करनी चाहिये, क्योंकि अिस समय मेरी तमाम बाहरी देखभाल तुम्हारे हाथोंमें है। यह पपडी तुमने अपने मनमें चिन्ता रखकर मेरे लिअे बनाओी, परन्तु मुझे तो बनाकर लाओी तभी पता चला। मैं नहीं जानता कि तुम दूध लेकर मक्खन निकालती हो, क्योंकि रसोओीमें जब तुम काम करती हो तब मैं मान लेता हूं कि खाखरे बनाती होगी या अैसा ही और कुछ काम करती होगी। मुझमें शक्ति आवे, अिस अुद्देश्यसे तुम मुझे पपड़ी खिलाती हो। परन्तु अितनी ही श्रद्धासे तुम रामनामको रामबाण दवाको जानकर हृदयसे अुसका रटन करो, तो अुससे मुझे अिस पपडीकी अपेक्षा कओी गुना फायदा हो और हमारी शक्ति आजसे कओी गुनी बढ़ जाय।"

बापूकी रामनामकी श्रद्धा अत्यन्त प्रबल होती जा रही है।

काकासाहबको पत्र लिखा। अुसमें काफी समय लगा। निर्मलदा और देवभाओीने हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और अुर्दू डाक पढकर सुनाओी। अंग्रेजी और बंगला पत्रव्यवहार ज्यादातर निर्मलदा संभालते हैं। देवप्रकाशभाओी और हुनरभाओी हिन्दी, अुर्दू और कुछ अंग्रेजी डाक। मेरे हिस्सेमें आज-कल डाकका काम बहुत कम हो गया है। गुजराती और कभी-कभी मराठी डाक रहती है। अलबत्ता, खानगी हिन्दी-गुजराती पत्र बापूजी अधिकांश

मुझीसे लिखवाते हैं और अुनकी नकलें मुझे ही करनी होती हैं। अुनमें से अुपयोगी पत्रोंकी तारीखवार फाअिल भी रखनी पड़ती है।

शामको बाबा (सतीशचन्द्र दासगुप्ता) आये। निरंजनसिंह गिल भी अुनके साथ थे। बिहारकी रिपोर्ट आ गअी। अैसा लगता है कि शायद बिहार जाना पड़े। रिपोर्ट बड़ी दुखद है।

गिलके साथ बातें कीं। अुन्होंने सिक्ख भाअियोंका सारा चार्ज आजसे कर्नल जीवनसिंहजीको सौंप देनेकी स्वीकृति दे दी है।

स्टेनली जोन्सको भी पत्र लिखवाया। बाकीका क्रम नियमानुसार रहा। बापूजीकी तबीयत कुछ ठीक है। पैरका घाव अभी तक भरा नहीं, परन्तु भर रहा है। मौसमका असर है। अिसलिअे ठीक हो जायगा।

दूसरे पत्रोंमें लिखा : "गिलके बयान परसे बिहारके बारेमें मेरा धर्म कदाचित् वहां जानेका हो जाय। यहांके मुसलमानोंका बरताव देखते हुअे यहां अहिंसाकी सच्ची परीक्षा होगी।"

"ब्रिटिश प्रधानमंत्रीने भाषण दिया अुस परसे लगता है कि शायद अभी युद्ध बाकी हो!"

अिस गांवकी आबादी ६,३८७ है। २,३८७ हिन्दू और ४,००० मुसलमान हैं।

आज बापूजीने ९६ तार काते। साढ़े दसके बाद सो सके।

(चरप्रदेश) चरकृष्णपुर,
२२-२-'४७

आज रातको २-२० होने पर बापूजीने समझ लिया कि ४-१० हो गये। मुझे अुठाया। मैंने भी नींदमें ही आंखें मलते हुअे बापूजीको दातुन और मंजन दिया। परन्तु आंखोंमें से नींद अुड़ती ही नहीं थी। अिसलिअे मैंने घड़ीमें देखा तो अभी ढाअी ही बजे थे। बापूजीको घड़ी दिखाअी। मुझे बहुत नींद आ रही थी, अुस पर यह भूल निकली। अिसलिअे बड़ा मजा आया। दोनों फिर सो गये। चार बजे सरदार जीवनसिंहजी नियमानुसार जगाने आये। अुस समय जागे। दातुन करके प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी दिया। मैं फलोंका रस निकालकर लाअी, अिस बीच बापूजीने बंगलाका पाठ किया। परतु अधूरा रहा। सुबहका वक्त गुजराती पत्रोत्तरके लिअे रखा।

सात पैंतालीस पर कोमलापुर छोड़ा। आठ पैंतालीस पर यहां पहुंचे। रोजकी तरह बंगलाका पाठ पूरा किया, जो सुबह मेरे साथ बातें करनेमें वक्त चला जानेसे अधूरा रह गया था। मैंने मालिश व स्नानकी तैयारी की, अितनेमें बापूजीने पूरा लिख लिया।

भोजनमें अेक खाखरा, पपडीका अेक टुकडा, शाक और छः औंस दूध लिया।

भोजनके समय रेणुकाबहन रायके साथ बातें की। फिर आराम लेते वक्त मैंने पैरोंमें घी मला और बापूजीने रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाये — सुहरावर्दी साहबको, श्रीकृष्ण सिंह (बिहारके मुख्यमंत्री) को और मौलाना साहबको। सवासे डेढ़ तक सोये। यहां भीड बहुत है। मैं बापूजीके लिअे कुछ भी तैयार करने जाती हूं कि पीछे पीछे स्त्रियां और बच्चे आ जाते हैं। पानी बहुत गन्दा होनेके कारण कपडे धोने दूर जाना पड़ा। दो बजे कपड़े धोने गअी। बापूजीके भोजनके बरतन भी तभी साफ किये। अिस बीच बापूजीने देवप्रकाशभाअीके साथ डाकका काम निबटाया और चरखा काता। स्त्री और पुरुष कार्यकर्ताओंमें अमूल्यभाअी चक्रवर्ती, आभाबहन वर्धन, सुधाबहन सेन और बेनरजी मिले।

मैं आअी तब ठक्करबापा और शरदेशानदजी (रामकृष्ण मठके स्वामीजी) बैठे थे। स्वामीजीने मठमें आनेका निमंत्रण दिया था। बापा थके हुअे लगते थे। थोडी देर बातें करके चले गये। साढे बारह बजे बापूजीने आठ औंस दूध और अंगूर लिये। रेणुकाबहनने मुझे बड़ी मदद की। स्वभावकी बहुत मिलनसार हैं।

प्रार्थना नियमानुसार हुअी। प्रार्थनामें बापूजीने फरिश्तोंकी अेक सुन्दर कहानी कही:

"कहा जाता है कि खुदाने यह पृथ्वी बनाअी अुस समय वह अिधर-अुधर हिला करती थी। अिसलिअे खुदाने बडे बड़े पहाड बैठा दिये। अिस पर फरिश्ते खुदासे पूछने लगे, हे मालिक, तेरी बनाअी हुअी वस्तुओंमें अिन पर्वतोंसे कोअी अधिक बलवान भी है? खुदाने कहा, हां, लोहा अिन पहाडोंको तोड सकता है, अिसलिअे वह ज्यादा ताकतवर है। फरिश्तोंने पूछा, तब लोहेसे भी कोअी ज्यादा ताकतवाली चीज है? खुदाने कहा, हां, आग फौलादसे ताकतवर है, क्योंकि वह लोहेको गला देती

है। फरिश्ते : अुससे भी कोअी बलवान है? खुदाने कहा, हां, पानी है, क्योंकि पानी आगको बुझा देता है। फरिश्ते कहने लगे, पानीसे भी बढ़कर कुछ है? खुदा बोले, हां हवा है, क्योंकि हवा पानीको हिलाती है। तब फरिश्ते पूछने लगे, हे खुदा, हवासे भी कोअी ताकतवर है? खुदाने कहा, दान है। दान देनेवाला भला आदमी अपने दायें हाथसे देकर बायें हाथसे भी गुप्त रखे तो वह सभीको जीत लेनेमें समर्थ होता है।

"प्रत्येक अच्छा काम दान है। आप अपने भाअीको हंसकर बुलायें, रास्ता भूले हुअेको रास्ता दिखायें, प्यासेको पानी पिलायें, यह सब दान है। मनुष्य जीते-जी अपने जैसे मनुष्योंके प्रति या अपने जैसे प्राणियोंके प्रति जो भलाअी करता है, वही अुसकी सच्ची पूंजी है। वह मर जायगा तब लोग पूछेंगे कि यह मरनेवाला अपने पीछे क्या छोड़ गया है? परन्तु फरिश्ते पूछेंगे कि मरनेवालेने पहलेसे कितने भलाअीके काम करके यहां भेजे हैं?"

अिसके बाद यह प्रदेश नमोशूद्रों (हरिजनोंकी अेक जाति) का होनेके कारण अुन लोगोंके संबंधमें कहा, "मैं भविष्यवाणी कर रहा हूं कि भारत परसे ब्रिटिश हुकूमतका हमारे देशमें निश्चित रूपसे नाश हो जायगा। ब्रिटिश लोगोंका जैसे भारतसे नामोनिशान मिट जायगा, अुसी प्रकार यदि अस्पृश्यताको जड़से नष्ट नहीं किया गया तो हिन्दूधर्म सर्वथा नष्ट हो जायगा।"

समान अधिकार पर बोलते हुअे बापूजीने कहा, "हिन्दुस्तानमें हमें दुनियाकी दूसरी प्रजाओंको आश्चर्यमें डालनेवाला स्वतंत्रताका आदर्श जीवन बिताना हो, तो भंगियों, डॉक्टरों, वकीलों, शिक्षकों, व्यापारियों और अन्य लोगोंको दिनभरकी प्रामाणिक मेहनतके बदलेमें समान वेतन, मज-दूरी या खुराक मिलनी चाहिये। अिस बारेमें मेरे मनमें जरा भी शंका नहीं है। यह हो सकता है कि भारतवासी अिस ध्येयको पूरी तरह सिद्ध न कर सकें। परन्तु यदि हमारे देशको सब तरहसे सुख-संतोषकी भूमि बनाना हो, तो सबको अिस ध्येयकी ओर दृष्टि रखकर चलना होगा।"

अिस प्रकार बापूजीके प्रत्येक विचारकी खूबी देखनेको मिलती ही रहती है।

प्रार्थनाके बाद वीणाबहन बसु, बेलाबहन, लावण्यलता बहन, रेणुका-बहन वगैरा स्त्री-कार्यकर्ताओंके साथ बातें कीं।

आजका हमारा मुकाम अेक नमोशूद्रके घर है। घरके मालिकका नाम महानंद वैद्य है। अत्यन्त गरीब होने पर भी अुन्होंने प्रेमपूर्वक हमारी सुविधाओंका ख्याल रखा है।

भगवान रामने भीलनीके घर पर कैसे प्रेमसे निवास किया था? अुस आतिथ्यका आनंद लूटते समय अुन्हें अयोध्याके राजमहलोंसे भी कअी गुना अधिक आनंद होता था। अन्तमें जूठे बेर तक किसी मनचाहे मिष्टान्नसे भी अधिक स्वादसे खाये थे। रामायणका वह चित्र आज हूबहू देखनेको मिलता है। बापूजी अिस गृहस्वामीके आतिथ्यका आनंद बड़ी प्रसन्नतासे लूट रहे हैं।

अिस गांवकी आबादी २,५०० है। अुसमें ३०० मुसलमान हैं। अिस गांवके सब लोग लौट आये हैं।

रातको बापूजीने घरवालोंसे बातें करनेके बाद अखबार सुने। बच्चोंके साथ खेले। दस बजे बिछौने पर लेटे। मैं भी नियमानुसार बापूजीके सिरमें तेल मल कर, पैर दबाकर और फुटकर कामकाज निबटा कर साढ़े दसके बाद सोअी।

चरशलादी,
२३-२-'४७, रविवार

आज प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाके अंकों पर हाथ घुमाया। २ का अंक सीखनेमें काफी देर लगी। शैलेनभाअीने २ लिखवाया और अुस पर भी दस बार हाथ घुमाया। बादमें अलगसे २ लिखा। मुझे तो यह देखकर बहुत मजा आया। बापूजीने लड़कोंकी तरह बहुत रसपूर्वक बंगलाके अंकों पर हाथ घुमाया।

यह मुश्किलसे पूरा हुआ कि बालपोथी पढ़ते-पढ़ते व्याकरणकी दृष्टिसे अेक शब्द बापूजीकी समझमें नहीं आया।

मुझे भी अच्छी तरह समझमें नहीं आया। 'निओ' और 'नाओ'—अिन शब्दोंमें क्या फर्क है, यह जानना था। दस मिनट मैंने और बापूजीने सिरपच्ची की। अितनेमें निर्मलदा आ गये। वे भी थोड़ी देर परेशान हुअे, परन्तु बादमें अुन्होंने समझाया। मुझसे कहने लगे, बापूजी यह बालपोथी कितनी कुशलतासे पढ़ते हैं? अिस प्रकार बापूजीने बालपोथीके शब्दोंमें निर्मलदा जैसे प्रोफेसरको भी कुछ क्षण तक परेशान किया।

फिर देवप्रकाशभाअीके साथ बातें कीं। आज जरा भी आराम नहीं लिया। अुनसे बापूजीने कहा कि नअी तालीमकी दृष्टिसे ही आपको यहां काम करना है।

साढे सात बजे चरकृष्णपुर छोडा। यहा हम साड़े आठ बजे पहुंच गये। मालिश, स्नानादिसे निबटनेमे साढे दस बज गये। रंगस्वामीजीके साथ ब्रिटिश सरकारके वक्तव्यके सिलसिलेमें बातें कीं।

भोजनमें गेहूंका दलिया और शाक खाया। मैंने आधा औंस तक मक्खन निकाला था, वह भी खाया। खाते खाते डाक सुनी। मैं नहाने गअी। कपड़े ज्यादा थे अिसलिअे धोनेमें देर लगी। आकर देखती हूं तो बापूजी गहरी नीदमें सो रहे हैं। अिसलिअे मैंने पैरोंमें घी मला। सवा बारह बजे बापूजी जागे। मुझसे कहा, "मैं सो रहा होअूं तब भी तुम्हें पैरोंमें घी मलनेकी छूट देता हू।" फिर जब बापूजी तीन बजे पेडू पर मिट्टी रखकर सोये तब मैंने पैरोंमें मालिश की। आर्यनायकम्‌जी राजकुमारीबहन तथा मौलाना साहबके पत्र लाये थे। अुन्हें पढा और मुझसे पत्र लिखवाये। कुछ नकलें करनेका काम सौंपा।

* * *

पू० बा और महादेवकाकाको अिन दिनों बापूजी रोज याद करते हैं।

आजकी लिखी लगभग सारी ही बातें सबके पत्रोंके अुत्तरमें बहुत स्पष्ट थीं।

बापूजीकी दाढ़ी पर छोटासा मसा हो गया है, जिसे नृपेनदाने घोड़ेके बालसे बांध दिया। साढे चार बजे बापूजीने अेक खाखरा, चार बादाम और चार काजू और थोडे मुरमुरे खाये। बादमें काता। प्रार्थनाका समय होने पर प्रार्थनामें गये।

प्रार्थनामें कुछ प्रश्न पूछे गये थे। अुनमें अेक प्रश्न बाल-विवाह और विधवा-विवाहके बारेमें था। अुसका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा :

"अिस मामलेमें मेरी राय स्पष्ट है। यदि बाल-विवाह न हो तो बाल-विधवा होनेकी बात ही नहीं रह जाती। नमोशूद्र (हरिजन वर्ग) में कन्या-विक्रयकी जो प्रथा है वह बिलकुल मिटनी चाहिये। मैं यह मानता हूं कि प्रत्येक व्यक्तिको जीवनमें अेक ही विवाह करना चाहिये। 'मिविल

मैरेज' का रिवाज मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। जहां हृदयोंकी अेकता है, परस्पर सम्मति है, वहां 'सिविल मैरेज' क्यों किया जाय? परन्तु अिसमें गहरा नहीं जाअूंगा। धार्मिक क्रियाकी बात अलग है। अुसका अर्थ जीवनका नवनिर्माण हो रहा हो अुस समय अीश्वरसे प्रार्थना करनेके लिअे की गअी अेक विधि है। वह मुझे बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि अुसमें अनेक बुरे रिवाज घुस गये हैं। परन्तु अिस चर्चामें मैं अभी नहीं जाअूंगा।

"हमारी यह यात्रा हैमचरमें पूरी हो जायगी और अुसके बाद नया विभाग शुरू होगा। अितनी यात्राके अिस सुखद अंतके लिअे अीश्वरका अुपकार मानता हूं। ठक्करबापा तो हरिजनोंके सेवक और पुरोहितकी तरह हैं। अुन्होंने यह जिला अपनी मरजीसे पसद किया है। अेक कहावत है कि 'बदअोंका मन बबूलमें'। अुसी तरह ठक्करबापाने अपने-आप आपके बीचमें बसनेका काम ढूंढ़ लिया।

"आप अपनेको हलके या अस्पृश्य मत मानिये। आपका अुद्धार धारासभा या कोअी और संस्थाअें नहीं कर सकेंगी। अिसके लिअे आपको स्वयं ही परिश्रम करना पड़ेगा। बापाने मुझे यहां जो बरबादी हुअी वह बताअी। मुझे बहुत दु:ख हुआ। परन्तु अिसके लिअे न तो आप रोअिये और न कायर बनिये। हिम्मत रखकर अपनी मेहनत पर पूरा भरोसा कीजिये। जो लोग अपने अुद्धारके लिअे स्वयं सच्चाअीसे मेहनत करते हैं अुन्हें अीश्वर अवश्य सहायता देता है।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीने पत्र लिखे। मौन शुरू हो जानेसे सारा वातावरण शान्त है।

यह घर अेक मिस्त्रीका है। जातिसे नमोशूद्र हैं। अिस गांवकी आबादी ७,६६८ है, जिसमें हिन्दू केवल ५० हैं। आज बापूजीके ९० तार हुअे। सवा नौ बजते बजते बापूजी बिस्तरमें लेट गये।

हैमचर,
२४–२–'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीते पीते बापूजीने मेरी डायरी सुनी।

सात चालीस पर चरशलादी छोड़ा। रास्तेमें मालतीदीदी (मालती-देवी चौधरी) और अुनके साथ काम करनेवाली बहनें बापूजीको मिलने

आओ। बहनोंने रास्ते भर मधुर कण्ठसे मंगल प्रभातिया गाया। ठक्कर बापा भी बापूजीको लेने आये। बापूजी ठक्करबापासे विनोदमें कहने लगे "क्यों, आज तो आपका मेहमान बननेवाला हूं न? हम दोनों बूढ़े मिल गये हैं। दोनोंकी ठीक जमेगी।" और खूब हंसे।

रास्तेमें रामकृष्ण मिशनके आश्रममें गये। बापा और विमल भाओीने सुन्दर सुविधाओं कर रखी थीं। दरवाजे पर ही बहनोंने आकर्षक चौक पूरा था। शान्तिनिकेतनमें शिक्षा पाओी हुआी बहनोंके हाथों चौक पूरा जाय तो कमी कैसे रह सकती है? फिर मालतीदीदीने बापूजीके माथे पर तिलक करके अक्षत लगाये, शकुन-गीत गाया और शंख बजाया। जाते ही बापूजीने पैर धुलवा कर जवाहरलालजीका पत्र पूरा किया। बंगलाका पाठ किया। यहां बढ़िया तैयारी थी, अिसलिअे मुझे खास तौर पर मालिश और बाथरूमकी तैयारी नहीं करनी पड़ी। बापूजीके लिअे कूकरमें शाक रखकर सीधी मालिश की। अजितभाओी वगैरा कार्यकर्ताओंने भी खूब काम किया। नहाकर बापूजीने भोजनमें शाक, दूध और अेक सेब लिया।

बापूजीके कपड़े धोनेमें सौभाग्य माननेवाले अजितभाओीने आग्रहपूर्वक बापूजीके कपड़े धोये। बड़े-बड़े सुशिक्षित आदमी बापूजीके कपड़े धोने और खाये हुअे बरतन मांजनेमें जीवनका अमूल्य लाभ समझकर यह काम करते हैं। बरतन अेक ग्रेज्युअेट सुसंस्कारी बहनने मले। मालतीदीदी मुझसे कहने लगी, "हमें तुमसे ओीर्षा होती है। अिसलिअे बापूजी जितने दिन यहां रहें अुतने दिन तुम्हें बापूजीका हमारे लायक काम हमें देना ही पड़ेगा।" बड़ी प्रेमी है। अपनी लड़की बब्रुबहनको दिनभर याद करके मुझे प्यारसे खिलाती हैं। मेरे लिअे याद रखकर दही जुटाती हैं। जबरन दूध पिलाती हैं। अुन्होंने बंगला भजन भी मुझे सिखाये। बापाने अपने रसोड़ेमें मेरे लिअे खाना बनवाया था। खानेमें दाल, चावल, शाक, रोटी और पापड़ था। बापाके लिअे बिड़लाजीकी तरफसे रसोअिया भेजा गया है।

यहां (नोआखाली) आनेके बाद अर्थात् लगभग तीन महीनेमें आज अिस तरह घरकी भांति मैंने खाना खाया।

खाकर लौटने पर बापूजीको साढ़े बारह बजे नारियलका पानी दिया। कातते समय मैंने पत्र सुनाये। साढ़े तीन बजे बापूजीने दो खाखरे, मुरमुरे और काजू खाये। सवा चार बजे मिट्टी ली। पौने पांच बजे प्रार्थनामें गये।

यहा जो जले हुअे और लुटे हुअे मकान थे अुन्हें प्रार्थनाके बाद देखा। भयंकर दृश्य था। मकानोंकी जगह राख और जला हुआ मलबा तथा टीन वगैरा पड़े हुअे थे। सब्जीमंडीकी दुकानें भस्मीभूत हो गअी थी। बहुत कुछ मलबा अुठा ले गये थे। फिर भी काफी पड़ा था। फिर सुरेशभाअी यहा जो रात्रिशाला चलाते हैं अुसे देखने गये।

निर्मलदाने यहा तम्बू तानकर ही सारी व्यवस्था की है। दो घर हैं। अेकमें बापा रहते हैं और दूसरेमें बापूजी रहते हैं। प्रेम-प्रतिनिधियोंने भी तंबू ही ताने हैं।

नौ बजे बापूजीने अखबार सुने। थोड़ा लिखा। पौने दस बजे सोनेकी तैयारी।

यहा हफ्तेभर रहना होगा और दूसरे सहायक हैं, अिसलिअे मेरे जिम्मे तो मुख्य मुख्य काम ही करना रहता है। बापूजीका कुछ भी काम करके कृतार्थ होनेकी भक्तिपूर्ण भावना यहाके भाअी-बहनोंमें है।

हैमचर,
२५–२–'४७

रोजकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद देकर मैं थोड़ी देर सो गअी। बीस मिनट बाद बापूजीको रस दिया।

साढ़े सात बजे यात्रा पर निकलनेके समय घूमने गये। आअी० अेन० अे० वाले श्री देवनाथभाअी दासके साथ छोटी छोटी बालिकाओंने बापूजीको सलामी देकर जयहिन्द किया। ओस और ठंड होनेसे मालिश थोड़ी देरसे की। साढ़े नौ बजे मालिशके लिअे गये।

भोजनमें दूध, फल, शाक और अेक केला लिया। बाबा (सतीशबाबू) आये।

दोपहरको आअी हुअी डाक मैंने पढ़कर सुनाअी। साढ़े बारह बजे बापूजीने यह काम करके मालतीबहन और रेणुकाबहनसे बातें की।

तीन बजे यहाके रिलीफ-अफसरने अेक सभा रखी थी अुसमें गये। अफसरका नाम नूरुन्नबी है। सभा अेक घंटेसे अधिक चली। चेयरमैन और दूसरे वक्ताओंने अपने भाषणोंको अितना लम्बाया कि हम लोग अूब गये। बापूजीने जो समझना था सो समझ लिया। परन्तु सभासे अुठ कर जाते तो अच्छा न लगता। अिसलिअे समयका सदुपयोग करनेके लिअे अितने शोर-गुलमें भी थोड़ी नींद ले ली। सूनीमें देख लिया था कि बापूजीको किसके बाद

बोलना है। अुस भाअीका भाषण पूरा होनेको आया तब मैंने सोचा कि बापूजीको जगा दू। लेकिन अितनेमें बापूजी खुद ही जाग गये। नींद पर बापूजीका अैसा जबरदस्त काबू है। बापूजीने अपने भाषणमें कहा :

"मेरे पास न तो बंगला भाषा है, न बुलन्द आवाज। आपने देखा होगा कि जो भाषण हुअे वे मैंने सुने, परन्तु साथ ही सो भी लिया।

"यहां जो कुछ कहा गया सो तो हवाअी बातें है। अिसका किसीको पता नहीं कि विमानमें अुडकर हम कहा जा सकेंगे। मैं नम्रतापूर्वक अितना ही कहूगा कि जिस ढगसे तुरन्त राहत मिल सके वही कीजिये। योजनायें कागज पर धरी रहे, तो अुनका कोअी अर्थ नहीं। हममें अेक बुरी आदत यह है कि हम करते थोड़ा है और विज्ञापन बहुत करते हैं। अिसलिअे अैसी बड़ी बड़ी योजनाओंका विचार करनेके बाद अन्तमें वे कागज पर ही रह जाती हैं। नुकसान यह होता है कि अिससे हम लोगोंका, आम जनताका, विश्वास खो बैठते हैं।

"हम जो काम करें वह अपने दिलसे पूछकर करें; हर काममें हम अपने दिलसे पूछें, मैं पाप तो नहीं कर रहा हू ? अगर दिल हा कहे तो पापका प्रायश्चित्त करना चाहिये। जैसे, रास्तेमें थूकना नहीं चाहिये। थूका हो तो अपने दिलसे पूछें कि मैंने यहा थूका यह पाप तो नहीं हुआ ? अगर दिल कहे कि पाप हुआ तो प्रायश्चित्तके रूपमें वहा सफाअी कर दें। अिससे दूसरी बार वैसा न करनेकी सावधानी अपने-आप आ जायगी।

"दूसरे क्या करेंगे या कहेंगे, अिसकी राह देखते बैठे नहीं रहना चाहिये। हमें यदि रामराज्य स्थापित करना है, तो हमारे प्रत्येक कार्यमें यह सोचा ही नहीं जा सकता कि दूसरे क्या कहेंगे। खराब समझा जानेवाला काम हमें खटकेगा तो ही हमारी अुन्नति होगी।"

सवा चार बजे वापस आये। आकर बापूजीने अेक औंस गुड और दूध लिया।

प्रार्थना-सभामें अेक प्रश्न पूछा गया: "यदि परदेके रिवाज पर कडाअीसे अमल किया जाय, तो क्या अैसा नहीं लगता कि अुससे स्त्रियोंकी पवित्रताकी अधिक रक्षा होगी?"

बापूजी — सही बात यह है कि परदेका रिवाज मर्यादा पालन करनेके लिअे है। कोअी स्त्री दिखावेके लिअे बाहरसे मुंह पर कपड़ा रख ले, परन्तु

भीतरसे किसी पर-पुरुषकी तरफ बुरी नजरसे देखती हो, तो यह निरा ढोंग है, पाखंड है। अिसीलिअे मैं परदेका विरोधी हूं। और अैसे परदेसे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे तो नुकसान होता ही है। स्त्रियोंको हवा और रोशनी काफी नहीं मिलती। अिसलिअे वे बीमार रहती हैं। परन्तु परदेकी जो मूल भावना है वह समझकी है। यह संयमरूपी परदा ही सच्चा परदा है।

प्रश्न — आप लोगोंको मजदूर बनकर पेट भरनेको कहते हैं। तब व्यापार और शिक्षाका काम कौन करेगा? अिससे हमारी संस्कृतिका नाश नहीं हो जायगा?

बापूजी — यह सवाल पूछनेवाले मेरे कहनेका अर्थ भलीभांति नहीं समझे हैं। शब्दोंके पीछे रही भावनाका अध्ययन करना चाहिये। केवल शब्दोंको नहीं पकड़ रखना चाहिये। हाथीके मुंहवाले गणपतिको देखें तो वह विचित्र प्राणी माना जायगा। परन्तु प्रतीकके रूपमें वह कल्पना मनुष्यको अूंचा अुठाती है।

दस सिरवाला रावण अेक बेवकूफ आदमी लगता है, परन्तु अुसका अर्थ यह है कि जिस मनुष्यको सारासारका भान नहीं, जो मनुष्य अेक वचन पर टिका नहीं रहता, क्षण क्षणमें बदला करता है और आवेगमें अिधर-अुधर भटकता रहता है, वह कभी सिरवाले राक्षसके समान है। मतलब यह है कि जो अेक बात पर कायम नहीं रहता, वह अेक सिरवाला नहीं है। मेरी दृष्टिमें रामायणमें बताये गये दस सिरवाले राक्षस रावणका यही अर्थ है।

दंतकथाओंमें अैसे गूढ़ अर्थ भरे हैं। मजदूरकी मजदूरीमें शारीरिक श्रमका विभाग तो है ही। मेरे कहनेका अर्थ यह है कि हर प्रकारके काम करनेवाले सब लोगोंको बराबर वेतन मिले। वकील, डॉक्टर, शिक्षक, भंगी — सब अपना-अपना काम तो जरूर करें, मगर अुनका वेतन समान हो। अैसा न हो कि अेक डॉक्टरको आठ सौ रुपये मिलें और भंगीको आठ आने मिलें। यदि हम समझ लें कि दोनोंकी सेवा अुत्तम है, अेकसी है, तो फिर दोनोंका रहन-सहन क्यों अेकसा नहीं होना चाहिये? यदि सब लोग यह सिद्धान्त स्वीकार करके अिस पर दिलसे अमल करें तो राष्ट्रका ही नहीं, बल्कि दुनियाका अुद्धार हो जाय और समाज-व्यवस्था सुखदायी बन जाय।

विलायतमें गन्दे भंगीका पेशा करनेवाले बड़े बड़े नामांकित अिंजी-नियर और सफाअी-शास्त्रके निष्णात होते हैं। परन्तु हमारे यहां जब तक आलस्य और जड़ता नहीं मिटती, तब तक कुछ भी होना कठिन है।

प्रार्थनासे लौटने पर बापूजीकी नअी यात्राका जो नकशा बाबा लाये हैं अुस पर चर्चा हुअी। मैंने सामान अलग निकाला। सारा फालतू सामान बाबाको सौंप दिया।

साढ़े नौ बजे बापूजीने मेरी पूरी डायरी लेटे लेटे सुनी। मैं जो पढ़ रही थी अुसमें रिलीफ-अफसरका नाम नूरुन्नबी लिखा था। अिस पर बापूजीने ध्यान दिलाया कि "या तो नूरुन्नबी साहब लिखना चाहिये या नूरुन्नबीजी या नूरुन्नबीभाअी। लिखी हुअी भाषा दुबारा पढ लेना चाहिये, ताकि पता चल जाय कि कहीं कोअी अनुचित अथवा असभ्य बात तो लिखनेमें नहीं आयी।"

रात हो गअी थी, अिसलिअे मैं जल्दी जल्दी डायरी सुना रही थी। तो भी अैसा सोचकर यह पंक्ति बापूने दुबारा पढवाअी कि कहीं सुननेमें भूल तो नहीं हो रही है; और जब यह पक्का कर लिया कि मैंने केवल 'नूरुन्नबी' लिखा है तब यह भूल मुझे समझाअी। बापू अैसे महान गुरु हैं।

हैमचर,
२६–२–'४७

रोजकी भांति प्रार्थना हुअी। गीतापाठ बिसेनभाअीने किया।... की ओरसे अेक छोटी-सी पुस्तिकाके रूपमें पत्र मिला है। वह पत्र बापूजीने प्रार्थनाके बाद मुझसे पढवाया। बापूजी कहने लगे, "अेक पंथ दो काज हो जायंगे। तुम पढ़ लोगी और मैं सुन लूंगा। और तुम्हारी समझमें न आये वहां समझा भी सकूंगा।"

साढे सात बजे घूमनेके लिअे रवाना हुअे। लौटकर स्थानीय कार्यकर्ता भाअियोंसे वार्तालाप। अम्तुस्सलाम बहन तथा कनुभाअी आये हैं। साढे नौ बजे मालिश। मालिशमें बापूजी आध घंटा सोये। स्नानादिसे निवटनेमें अेक घंटा लगा। भोजनमें अेक खाखरा, साक और आठ औंस दूध लिया। अधिकांश समय अम्तुस्सलाम बहन और कनुभाअीसे बातें करनेमें ही गया। बीचमें रिलीफ-अफसर नूरुन्नबीभाअी आ गये।

दो बजे यहाके बाजारमें रखी गअी अेक आम सभामे गये। वहासे आकर बापूजीने मिट्टी ली। मिट्टी लेकर थोडा सोये। पौने चार बजेसे प्रार्थनामें जाने तक ठक्करबापाके साथ बातें की। साड़े चार बजे प्रार्थनामें गये। प्रार्थना-सभामें कहा .

"हममें मनुष्यता हो तो हमें छोटी-छोटी बातोंके लिअे सरकार पर निर्भर नही रहना चाहिये। अुदाहरणार्थ, कोअी रास्ता साफ रखना हो, मुझे अपना गाव प्यारा हो और गावकी सुघड़ता अच्छी लगती हो, तो मुझे स्वयं वह रास्ता साफ रखना चाहिये। जहां-तहा अनजाने भी थूकना नही चाहिये। कूड़ा-कर्कट अुसकी जगह पर ही डाला जाना चाहिये। अैसे अनेक काम सेवाके पडे है। अिसमें जवाहरलालजी, सरदार या जिन्ना साहबको पूछने जानेकी बात थोडे ही हो सकती है? देहातको यदि सुखी बनाना है तो ग्राम-पंचायतें स्थापित करके शान्ति और सहकारसे अपने भले-बुरेकी जिम्मेदारी हमें सभाल लेनी चाहिये।

"जिस मनुष्यकी स्वार्थत्यागकी अिच्छा अपनी जातिसे आगे नही बढती, वह अपने आपको और अपनी जातिको स्वार्थी बना देता है। परन्तु सच पूछा जाय तो स्वार्थत्यागकी अिच्छाका परिणाम यह होना चाहिये कि व्यक्ति अपनी जातिके लिअे सर्वस्वका त्याग करे, जिलेकी सेवाके लिअे जातिका त्याग करे, प्रान्तकी सेवाके लिअे जिलेका त्याग करे और प्रांतसे आगे बढकर राष्ट्रकी सेवा करे। समुद्रके अथाह पानीसे अेक बूद अलग हो जाती है, तो वह किसी काममें नही आती और सूख जाती है। परन्तु जब वह बूंद महासागरका अेक अग बनती है तब अुस पर बडे बड़े जहाज तैरते हैं।

"सच्ची स्वतत्रतासे बना हुआ हिन्दुस्तान अुसका पड़ौसी राज्य अगर संकटमें आ फंसे तो अवश्य अुसकी मदद देगा। अफगानिस्तान, लका और बर्माका ही अुदाहरण लीजिये। पड़ौसीकी मदद करनेका नियम अिन तीनों पर भी लागू होगा। जिस प्रकार ये देश जिन जिन देशोंकी सहायता करेंगे वे सब हिन्दुस्तानके पडौसी बनेंगे। अिस तरह, जैसा मैंने कहा, व्यक्ति अगर समझके साथ त्याग करेगा तो वह समस्त मानव-जातिको अपनी सेवाके क्षेत्रमें अवश्य समा लेगा।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी घूमे। शामको अेक औंस गुड, आठ औंस दूध और फल लिये। आज बापूजीके ९० तार हुअे। घूमकर रोजकी भांति

अखबार सुने। अरुणाभुभाअी, विमेनभाअी और अम्तुस्सलाम बहनके साथ बातें कीं। मैं पैर दबा रही थी तब . . की बात परसे बापूजीने मुझे अेक सैद्धान्तिक बात कही।

"जब . . . अपना दोष जैसे-तैसे हटानेका प्रयत्न करती है तब अुसकी गिनती झूठमें होती है। परन्तु सब कुछ शुरू अुसीने कराया है। वह सेवाभावी है, परन्तु अुसे सच-झूठकी समझ नहीं है। अैसी हालतमें मनुष्यका कोअी भी काम चमकता नहीं। अिसीलिअे . . के अुपवास मेरी दृष्टिसे नहीं चमके। यह अिन अवगुणोंका निश्चित परिणाम है। मनुष्यको हमेशा स्पष्ट रहना चाहिये। अपनी भूलको सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देखना सीखना चाहिये और दूसरेकी भूलको पहाड़ परसे देखना चाहिये। यदि यह नियम अपना लें तो हम हजारों पापोंसे बच जायं। . जो अपने प्रति सच्चा हो अुसे किसका डर हो सकता है? मनुष्यको सबसे पहले अपने प्रति सच्चा बनना चाहिये।

"भयसे या बहुत बार किसी लाभके लोभसे या दोष छिपानेकी वृत्तिसे झूठ बोलनेके अवसर आते हैं। परन्तु जो दोष करना ही न चाहता हो अुसके लिअे छिपानेको होगा ही क्या? और जो अैसे मनुष्य होते हैं वे कभी कोअी भूल हो जाय तो अुसके निवारणके लिअे अपनी भूलको प्रगट कर देनेकी वीरता दिखाते हैं और अुससे मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। अिसीलिअे तो मैंने कल लिखा कि . . . यदि कोअी दोष दिखाअी देता हो तो अुसे जाहिर कर दो। अिसका परिणाम दोनों पक्षोंके लिअे लाभदायक ही होता है। अिससे दोषका मैल धुल जाता है और हम साफ हो जाते हैं। और हमारी आत्मा, हृदय और चेहरेका तेज पहले जैसा ही चमकता है।

"प्रामाणिक और शुद्ध हेतुसे अपने अन्तःकरणको साक्षी रखकर काम करते रहनेवालेकी प्रभु अवश्य सहायता करता है। अिसका मैं यहां अनुभव कर रहा हूं। बड़ेसे बड़े तूफान भी जैसे निष्ठावानको स्पर्श नहीं कर सकते। सच्चे और दृढ़ व्यक्तिका हृदय-बल कैसे भी तूफानोंके सामने कभी ढीला नहीं पड़ता। अैसे समय दिखनेवाली असफलता भी सफलता ही होती है। अिससे असफलता या सफलता दोनों स्थितियोंमें संसार पर आशीर्वाद ही अुतरता है। यह मैं अनुभव करता हूं, अिसीलिअे कहता हूं कि प्रभु यहां मेरी मदद कर रहा है, अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं है।"

बिहार जानेकी बात साफ नहीं हो पाती, अिसलिअे टलती रहती है। रातको मैं बापाके पास बैठी। अुन्हें कुछ पत्र पढ़कर सुनाये। कुछ पत्र सुननेके बाद वे कहने लगे : ". . . कुछ बातें रूबरू मिलनेसे जितनी समझमें आती हैं अुतनी पत्रोंसे समझमें नहीं आती। बापूजीके साथ मैंने जो बातें आज कीं अुनके अनुभवसे यह कहता हूं। पत्र-व्यवहारमें कितनी ही गलतफहमियां बढ़ जाती हैं। आज बापूजीके साथ हुआी आध घंटेकी वार्तासे और तुम्हारे यहांके निवाससे जो कुछ प्रत्यक्ष देख रहा हूं, अुस परसे मेरा मन बहुत हलका हो गया है। बापूको कभी कभी पत्र-व्यवहारसे समझना बड़ा कठिन होता है।"

बापाके पाससे आअी तब बापूजी सो गये थे। मैं भी तुरन्त सो गअी।

हैमचर,
२७-२-'४७

नियमानुसार प्रार्थना हुआी। प्रार्थनाके बाद . . . बात करने आअी। परन्तु बापूजीने बंगला पाठके बीचमें बातें करनेसे अिनकार कर दिया। घूमते हुअे . . . के साथ बातें कीं। . . बापूजीने साफ कह दिया कि ". . तुम अिस समय बिलकुल बदल गअी हो और झूठ बोल रही हो।" यह बात नोट कर लेनेको बापूजीने मुझसे कहा। . . बापूजी पर बड़ी नाराज हुआी। बापूजी बोले, "अिसकी कोअी परवाह नहीं। जो सच मालूम हो वह मैं न कहूं तो कौन कहेगा? सच बात कहनेका मेरा धर्म हो जाता है।"

साढ़े आठसे ग्यारह तक मालिश, स्नानादिका क्रम चला। भोजनमें दूध, शाक और अेक केला लिया। आज बापूजी अेक बजे सो सके। फिर अस्सलामुलम बहनने खादी-सम्बन्धी जो लेख लिखा था अुसे देखा। दो बजे नारियलका पानी पिया। साढ़े तीन बजे सुधावहन सेन आअीं। अुन्होंने अपनी अहिंसाकी परेशानी बताअी तो बापूजीने सुन्दर अुत्तर दिया : "रामनाम-रूपी तलवार लोहेकी तलवारसे कहीं ज्यादा मजबूत है।" फिर काता। आजके ७५ तार हुअे।

साढ़े तीन बजकर दस मिनट पर फजलुलहक साहब आये। किसीने अुन्हें कनेरके फूलोंका हार पहनाया और फोटोग्राफरने अुन्हें खड़ा रखकर पहले अुनका फोटो लिया। तेज धूप और गरमी थी। अुनका शरीर बहुत मोटा था और बैठना तो बापूजीकी झोंपड़ीमें ही था। मैं बापूजी पर पंखा झल रही थी। बापूजीने मुझे सूचना की कि अुनको भी पंखेकी हवा मिल सके अैसा

घुमाओ। अुस मुरझाये हुअे हारके कारण निकलनेवाले पसीनेकी तरफ अितनी गंभीर बातोंमें भी बापूजीका ध्यान गया। हार अुतार देनेकी सूचना की तभी हक साहबने अुतारा।

सवा चार बजे तक मुलाकात चली। अुनके साथ प्रो० महमूद अजीमुद्दीन, मुहम्मद सिराजुल अिस्लाम और नूरेजमान मियां थे। बापूजीने खरी खरी सुनाअीं। . . . अिन लोगोंके जानेके बाद थोड़े मुरमुरे और अेक औंसके लगभग गुड़-पपड़ीका टुकड़ा लिया।

आजकी हमारी प्रार्थना दंगेके दिनोंमें बरबाद हुअे अेक मंदिरके मकानमें हुअी। आजका प्रार्थना-प्रवचन कलके प्रवचनके आधार पर ही था।

"मनुष्य अपने पड़ौसियोंकी और मानव-जातिकी सेवा अेकसाथ कर सकता है, अिस सत्यको मैं निश्चित रूपसे मानता हूं। परन्तु शर्त यह है कि पड़ौसीकी सेवा निजी स्वार्थ साधनेके हेतुसे न की जाय। अर्थात् सेवक जो सेवा करे अुसमें किसीने अनुचित लाभ न अुठाये, अपने सेवाकार्यमें किसीका भी शोषण न करे। अैसी सेवा होती देखकर लोग अवश्य अुसकी ओर आकर्षित होंगे और अुसकी छूत अुन्हें जरूर लगेगी। अैसा हो तो वह सेवाकार्य फैलते फैलते सारी दुनियाको अपने क्षत्रमें समा लेगा। अिससे यह सिद्धान्त निकल सकता है कि दूसरोंकी बात छोड़कर अपने घरकी कुटुम्बकी और सबसे नजदीक रहनेवाले पड़ौसियोंकी सेवा की जाय। स्वदेशीकी भावनाका यही अर्थ है।

"मेरा मिशन तो लोगोंमें सच्ची हिम्मत पैदा करके अुन्हें बहादुर बनाना है। आप लोग यदि अपने मनमें रहनेवाले डरको निकाल डालेंगे, तो आपको कोअी डरा नहीं सकेगा। मुसलमान जब देखेंगे कि आप निडर और साहसी बन गये हैं, तो वे खुद आपके मित्र बन जायेंगे। सच्ची बहादुरी तलवार हाथमें लेकर सामनेवालेको मारनेकी कुशलतामें नहीं है, परन्तु मानव मानवका दुश्मन किसलिअे हो सकता है, यह हकीकत जाननेमें सच्ची बहादुरी है।"

अुद्योगीकरण पर बापूजीने कहा : "अमरीका अिस वक्त अुद्योगोंमें दुनियाका सबसे आगे बढ़ा हुआ देश माना जाता है। फिर भी, अुस देशमें गरीबीका, मनुष्यको भ्रष्ट करनेवाली बुरी आदतोंका और बुराअियोंका नाश नहीं हो पाया है। अिसका कारण यह है कि मनुष्यमात्रमें रहनेवाली शक्तिका

उपयोग करनेके बजाय वहां अपार धन कमा लेनेवाले बहुत थोड़े व्यक्तियोंके हाथोंमें सत्ता अेकत्रित हो गअी है। अिसका परिणाम यह हुआ कि अमरीकाका अुद्योगीकरण वहांकी गरीब जनताके लिअे और संसारके शेष भागके लिअे भी बहुत खतरनाक हो गया है।

"परन्तु हिन्दुस्तानको यदि अिससे बचना हो तो अुसे पश्चिमके देशोंमें जो कुछ अच्छे तत्त्व हों अुन्हें अपनाना होगा और आकर्षक होते हुअे भी पश्चिमकी नाश करनेवाली आर्थिक नीतिसे दूर रहना होगा। देशके कच्चे मालका निकास करके बादमें तैयार होनेवाली चीजें हम बेहद रुपया देकर खरीदते हैं। अिनके स्थान पर भारतके ४० करोड़ लोगोंकी शक्तिको संगठित करके अुनका अच्छेसे अच्छा अुपयोग किया जाय और व्यवस्थित रूपमें गांव गांवमें कच्चा माल बांटकर अुसका पक्का माल वहीं तैयार किया जाय, तो देशका धन देशमें रहे और किसीको अैसे दंगे-फसाद करनेकी फुरसत न मिले। मेरी रायमें अिसीमें सच्चा आर्थिक नियोजन समाया हुआ है।"

प्रार्थनाके बाद लगभग डेढ़ दो घंटे लगातार डाक लिखवाअी। नौ बजकर पच्चीस मिनटके बाद अखबार सुने। बातें करते करते आज बापूजी दस बजे सोये।

हैमचर,
२८-२-'४७

रोजकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद . . . के साथ बातें की। अैसा लगता है कि . . . की भूलसे बापूजीको दुःख हुआ है। . . . ने बापूजीके पास जाकर अपनी भूल जाननी चाही। अिस पर बापूजीने अपने विचार प्रगट किये और कहा, ". . . ने यह जानना चाहा कि अुसकी भूल कहां है। मुझे आश्चर्य हुआ। दुःख हुआ। दुःख अपने पर होना चाहिये था। मुझे सन्देह हुआ। अगर मैंने भूल की है तो अुसका प्रारंभ अुसकी प्रेरणासे हुआ। यह सदेह मैंने अुसके सामने रखा और दो किस्से सुनाये। और अब . . . यह भूल लगती हो तो यह स्पष्ट दिखाअी देता है कि अिसमें . . . का ही दोष है।"

बापूजीका हृदय अितना विशाल है कि प्रत्येक कार्यमें दूसरोंकी भूलें स्पष्ट दिखाअी देते हुअे भी वे अपनी ही भूल मानते हैं।

निर्मलदा तो यह देखकर बहुत नाराज हो गये। मुझसे कहने लगे, "ये लोग देखते हैं कि गांधीजी अिस समय जलती हुअी भट्ठीमें पड़े हैं, फिर भी ये

विचार क्यों नहीं करते?" मगर बादमें हंसते हंसते बोले, "अिस बूढ़ेकी यही खूबी है कि अुसकी दृष्टिमें कोअी बात या कोअी चीज बेकार नहीं, छोटी नहीं है। अिसीलिअे वे देशके अद्वितीय नेता हैं। वैसे तो गांधीजीके बराबर पढ़े-लिखे आदमी देशमें बहुत हैं; गांधीजीसे दीखनेमें बहुत रूपवान मनुष्य भी हैं। परन्तु गांधीजीमें जो विशालताकी शक्ति है वह अनुपम है।"

अैसा लगता है कि बिहार जानेका अेक-दो दिनमें ही तय हो जायगा। सुधीरदा (सुधीरबाबू घोष)को घूमने जानेसे पहले शुभेच्छाका तार किया।

बापूजीका सुबहका क्रम हमेशा बंगलाका पाठ करनेका होता है। वह आज . . . के साथ बातें करनेमें बदल गया। यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा। घूम कर लौटने पर सबसे पहले बीस मिनट तक बंगला लिखी।

बादमें मालिश, स्नान वगैरा हुआ। दोपहरके भोजनमें शाक, दूध और स्टीम किया हुआ अेक सेब लिया। और सब छोड़ दिया। बिहारकी बातोंसे और आजके . . . प्रसंगमें बापूजी कुछ गंभीर विचारोंमें डूब गये हैं। मुझे तो यह डर लगता है कि बापूजी कहीं अुपवासका या कोअी और कड़ा कदम न अुठा लें। सुशीलाबहन पै और सतीशबाबू आये हैं। अुन्होंने नअी यात्राका नकशा बताया।

कातते समय बिहारसे डॉ० सैयद महमूद साहबके निजी मंत्री मुस्तफा साहब आये। अुन्होंने बिहारकी करुण और भयंकर रिपोर्ट पढ़कर सुनाअी। अुस रिपोर्टमें स्त्रियों पर जो अत्याचार हुआ है अुसे पढ़ते पढ़ते मुस्तफा साहब रो पड़े। बापूजीका चेहरा गंभीर था, परन्तु हृदयमें जो वेदना हो रही थी अुसका प्रतिबिंब चेहरे पर स्पष्ट दिखाअी देता था। अिसमें कांग्रेसी भी शरीक थे। खूब मारकाट हुअी। लड़कियों पर हुअे अत्याचारका पार ही नहीं था।

हिन्दुओंने बिहारमें ये काली करतूतें की, अिससे बापूजीके हृदयमें असह्य वेदना हो रही थी। बापूजीने अेस० डी० ओ० साहबके मारफत बिहारके मुख्यमंत्रीको तार किया कि मैं आ सकता हूं या नहीं? क्योंकि ये सारी बातें वे आंखों देखना चाहते थे। बापूजीकी सभ्यता भी निराली ही है। यद्यपि बिहारके मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह अुनके परम भक्त और पुराने साथी हैं, तो भी बापूजी कहने लगे, "बिना अिजाजत लिये मैं बिहार नहीं जा सकता। यदि यहां आनेके लिअे सुहरावर्दी साहबकी अिजाजत लेना जरूरी

था, तो वहा जानेके लिअे भी वहांके मुख्यमंत्रीकी अनुमति मुझे अवश्य लेनी चाहिये। जो नियम साधारण लोगों पर लागू होता है, वह मुझ पर भी लागू होना चाहिये न?"

मैंने कहा, परन्तु हर बातमें तो वे लोग आपकी सलाह लेते हैं, आप ही को पूज्य मानते हैं, अपना बुजुर्ग समझते हैं।

बापूजी बोले, "असिसे क्या? परन्तु आज अुनके पदके कारण यह सभ्यता हमें अवश्य दिखानी चाहिये। निजी व्यवहार चाहे जैसा रखें, परन्तु कानून तो सबके लिअे अेकसा ही होता है।" अैसा है बापूजीका न्याय।

लगभग तीन बजे बापूजी स्थानीय कार्यकर्ताओंकी सभामें गये। वही मिट्टी ली। चार बजे नारियलका पानी पिया। आज अन्न बिलकुल नही खाया।

प्रार्थना-सभामें यहांके नमोशूद्रोंसे बापूजीने शिक्षाके बारेमें कहा, "आप लोगोंमें पढाअीके लिअे जो बेपरवाही पाअी जाती हैं, असके लिअे अूचे वर्गके हिन्दू ही कसूरवार हैं। हिन्दू समाजने जान-बूझकर आपको अुठने नहीं दया। परन्तु अब आपको खुद ही यह खयाल मिटा देना चाहिये कि आपकी जाति नीची है। तभी आप अूचे अुठेंगे।

"आज दूसरी बात जो कहनी है वह बिहारके विषयमें है। मुझे समाचार मिले हैं कि बिहारके हिन्दुओंने अैसे अत्याचार किये हैं, जो त्रिपुरा और नोआखालीके अत्याचारोंको भुला देते हैं। मेरा यह खयाल था कि यहां बैठे बैठे मैं बिहारका काम कर सकूंगा। परन्तु डॉ॰ सैयद महमूदके मंत्री मुस्तफा साहब अभी मेरे पास अुनका पत्र लेकर आये थे। अुनके पत्रमें लिखा है कि 'अगर आप आयेंगे तो आपकी अुपस्थितिमें यहांकी स्थिति बहुत सुधरेगी और मुसलमानोंको विश्वास हो जायगा कि आपको जितना दर्द हिन्दुओंके लिअे है अुतना ही मुसलमानोंके लिअे भी है।' असिलिअे आज मैंने जरूरी तार देकर पुछवाया है। नोआखाली और त्रिपुराकी पैदल यात्रा थोडे समयके लिअे मुलतवी करनी पडेगी। आप सबसे विनती करता हू कि मेरी गैर-हाजिरीमें आप सब भाअी-भाअीकी तरह रहें। मैं बाहर जाअूगा, मगर मेरा दिल तो आपके पास ही होगा।

"असिमें जरा भी शक नहीं कि अब अंग्रेज भारत छोडकर चले जायेंगे। अब भारतवासियोंके (भारतमें रहनेवाले सभी जातियोंके लोगोंके

—तमाम दलोंके लोगोंके) मेलजोलसे रहनेका निश्चय करनेका समय आ गया है। अैसा नहीं होगा तो भारत आपसकी भयंकर लड़ाअीकी आफतमें फस जायगा, और हम अखंड भारतके टुकडे टुकडे कर डालेंगे। अिससे किसीको भी लाभ नहीं होगा। ससारमें हम हसीके पात्र न बनें, अिसका गभीरतापूर्वक विचार करना प्रत्येक भारतीयका धर्म है। आप सब अिस पर विचार कीजिये।"

बापूजीने घूमते घूमते कहा, "दोपहर तक तो त्रिपुराका कार्यक्रम तैयार हुआ था। परन्तु रातमें जैसे रामजीके राज्याभिषेककी तैयारिया हो रही थीं और सवेरे अुन्हें अेकाअेक वनमें जाना पडा वैसा ही मेरे सबंधमें भी हो गया है।"

घूमते समय रास्तेमें जले हुअे घर देखे। आकर कुछ भी नहीं खाया। मुस्तफा साहब कहा सोयेंगे, अुन्होने क्या खाया वगैराके बारेमें बापूजीने स्वय पूछताछ की और सारी व्यवस्था कराअी। प्रार्थना-प्रवचन देखा। रग-स्वामीजीसे पत्र लिखवाये। रातको साढे ग्यारह बजे सोनेसे पहले बापूजीने कहा, "तुम अपनी तैयारीमें रहना। सामान जहा तक हो सके अेकदम कम कर देना और याद रखकर सतीशबाबूको दे देना।"

हैमचर,
१–३–'४७, शनिवार

बापूजी आज पौने चार बजे अुठ गये। माला जपी। बादमें . . . को जगाकर अुनके साथ बातें कीं। बापूजीने . . दोनोंको अपना अपना धर्म समझाते हुअे कहा, "यदि मुझमें विश्वास हो तो यहा (नोआखालीमें) स्थिरता रखकर काम करो। फिर जडता नहीं आनी चाहिये, मनकी चचलता भी नहीं होनी चाहिये। यदि अैसा न कर सको, मुझमें दोष पाते हो, तो मेरा त्याग कर दो। मेरी बात करनेकी शक्ति अब खतम हो गअी है।"

सवेरेकी प्रार्थनाके बाद शहद और गरम पानी लिया। बादमें अन-न्नासका रस पिया। हुनरभाअीसे रजाअुर्रहमान अन्सारी साहबको और दूसरोंको अुर्दूमें जो पत्र लिखवाये अुन पर अुर्दूमें दस्तखत किये।

घूमते वक्त अेक अनाथाश्रम देखने गये। आते-जाते डेढ घटा लगा। पौने नौ बजे लौटे। मालिशमें थोड़ी देर बापूजी सो गये। अच्छा हुआ, क्योंकि आज बहुत जल्दी अुठे थे। बिहारकी स्थिति बिगड़ रही है। अभी तक पटनासे

कोओ समाचार नहीं आये। स्नानघरमें बापूजी बोले, "जवाब आये या न आये, तुम तैयार रहना। कल तो निकलना ही पड़ेगा।" चौबीस घंटे हो जाने पर भी विहारसे कोओ अुत्तर नहीं मिला, यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा।

दोपहरको बापूजीके लिअे और हमारी मंडलीके लिअे रास्तेका खाना बनाया। बापूजीके लिअे खाखरे और गुड़-पपड़ी बनाओ। हमारे लिअे नारियलके तेलका मोन डालकर अलग खाखरे बनाये। दोपहरका लगभग सारा समय अिसीमें चला गया। आज भी बापूजीने शाक, दूध और फल ही लिये। बापाके साथ बातें कीं। दो बजे रामकृष्ण मिशनवाले आये थे। साढ़े तीनसे चार तक कातना। बादमें मिट्टी ली।

प्रार्थना-सभामें जा रहे थे कि सामनेसे मृदुलाबहनको आते देखा। अुनके साथ विदेशोंसे चार विद्यार्थी आये हैं।

मृदुलाबहन पंडितजीका, खानसाहबका और दिल्लीके दूसरे बहुतसे पत्र लाओ हैं। वहांकी बहुतसी नओ नओ बातें भी जाननेको मिलीं। प्रार्थनाके बाद लगभग सारे समय अुन्हींके साथ बातें कीं।

मनुभाओ अपने गांव गये। शामको बापूजीने अेक केला और दूध लिया। रातको तो मुलाकाती अेकके बाद अेक आते ही रहे। विसेनभाओने और मैंने रातको देर तक सामान बांधा। अुन्होंने और अजितभाओने बेहद मदद दी। निर्मलदा भी अपने काममें मशगूल थे। अुन्हें तो अितना काम रहता है कि रात और दिनका फर्क ही नहीं रह जाता।

बापूजीका पौन भागका काम वे ही निबटा देते हैं। रातको साढ़े ग्यारह तक मुलाकातियोंकी भीड़में बैठे रहे। अब आयेंगे प्रेस-रिपोर्टर। मैं अपनी यह डायरी अुन्हींके तम्बूमें बैठकर लिख रही हूं। सामान भी ज्यादातर तम्बूमें ही बांधा, जिससे बापूजीको आवाज न सुनाओ दे।

अब बारह बजे हैं। सोने जाती हूं।

हैमचर,
२-३-'४७

कल रातको बाबा (सतीशबाबू) आये थे। मैं और बापूजी तो हमारे कमरेमें लालटेन बुझाकर गहरी नींदमें सो गये थे। लगभग साढ़े बारह हुअे होंगे। मैं भी थक गओ थी। मुझे सोये कोओ आध घंटा ही हुआ होगा, परन्तु आधी रात जैसा लगता था। बाबाने बापूजीकी मच्छरदानी खोलकर

अुन्हें जगाया। दोनों बातें करते थे, अिसलिअे मैं अेकाअेक अुठ बैठी। मुझे डर लगा कि रातको मेरा देरसे सोना बापूजीको अच्छा न लगा हो, अिसलिअे स्वयं अुठकर दातुन-पानी कर लिया होगा और प्रार्थना भी कर ली होगी। अिसलिअे अेकदम खड़ी हो गअी। दातुन लेने गअी तो बापूजी हंसकर कहने लगे कि "अभी समय नहीं हुआ। दातुनमें देर है। तुम सो जाओ।" मैं नींदमें थी अिसलिअे और किसी बातमें न लग कर सो गअी। बाबा कब गये, अिसका मुझे पता नहीं। परन्तु रात तक बिहारसे कोअी समाचार नहीं आये, अिसलिअे कल क्या करना होगा, यह जाननेके लिअे बाबा आये थे।

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। बादमें बगलाका पाठ। बापाके रसोअियेको हस्ताक्षर करके दिये और अुससे पांच रुपये लिये। प्यारेलालजीके नाम पत्र लिखा। आज दोपहरको दो बजे जाना तय हुआ। मालिश और स्नानके बाद मृदुलाबहन तथा बापाके साथ बातें कीं। बापाके साथ भोजन करते समय भी बहुत बातें कीं। भोजनमें अेक खाखरा, शाक और दूध लिया।

आज बापूजीका मन कुछ हलका मालूम होता है, क्योंकि बिहारके बारेमें कुछ तय कर सके और सबको . . . स्पष्ट सुना सके। अिस प्रकार हृदयमें जो भरा था सो खाली कर दिया। बापूजीके दर्शन करने आनेवाले लोगोंसे सब जगह भर गअी थी। अजितभाअीकी बिहार चलनेकी बड़ी अिच्छा है। परन्तु बापूजीने यहीं रहकर काम करनेका आदेश दिया।

मैंने साढ़े बारह बजे सारा सामान गिनकर कर्नल जीवनसिंहजीको सौंपा। छोटे बड़े सब मिलकर बीस नग हुअे। मेरे साथ जो सामान है अुसमें से बापूजीके कागजोंका बस्ता, पानीकी बोतल, थूकदानी वगैरा चीजें थैलेमें ही रखी हैं। नोआखालीका टोप, चरखा, खानेके बरतनोंवाली बेंतकी छोटीसी पेटी, अेक छोटासा बिस्तर और लाठीके सिवा बाकी सब कुछ आगे रवाना कर दिया।

[चांदपुर पहुंचनेके बाद]

जानेसे पहले मैं बापासे अिजाजत लेने गअी।

अुन्होंने मुझसे अेक पत्र लिखवाया। प्रणाम किया तो मुझे मीठा आशीर्वाद दिया, "तुम बापूजीकी जिस ढंगसे सेवा कर रही हो अुससे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूं। तुमने बड़ा पुण्य कार्य किया है। अीश्वर तुम्हें सुखी रखे। तुम्हारे दादा अमृतलालभाअी तो बड़े बढ़िया आदमी थे। मेरे और

दुनके बीच बड़ा मीठा संबंध था, जब हम नवी बंदरमें साथ रहते थे। जमुनालाल अुस समय बहुत छोटे थे। तुम्हारे दादा अितने पवित्र मनुष्य थे कि अुन्हें याद करके हम पावन हो सकते हैं।"

बापा आगेसे अच्छी तरह काम नहीं कर सकते, अिसलिअे मुझसे कहने लगे, समय हो तो मुझे तुमसे अेक पत्र लिखवाना है। . . . रवाना होनेमें दस ही मिनट बाकी थे। परन्तु जरूरी पत्र था, अिसलिअे जल्दी जल्दीमें लिखवाया। अुसकी नकल मुझे दी।

फिर मैं और टक्करबापा बापूजीके पास गये। बापा और बापूजीके मिलनका और बिदाअीका दृश्य बड़ा पवित्र मालूम होता था। बापाको यह कल्पना ही नहीं थी कि बापूजीको अिस प्रकार अचानक बिदा देनी पड़ेगी। परन्तु हमारे अेक सप्ताह यहां रहनेसे बापा बहुत खुश हुअे और दोनों अेक-दूसरेके अनेक कामोंको समझ सके। अन्तमें सभीको अिससे संतोष हुआ।

बापूजीने हैमचरमें ही कात लिया था। मिट्टी तैयार करके साथ ले ली।

ठीक दो बजकर दस मिनट पर हम जीप गाड़ीमें चांदपुरके लिअे रवाना हुअे। बहनोंने बापूको तिलक लगाया और शकुन किया। हमें दही-चीनी खिलाअी। हमारी जीपमें अितने आदमी थे — बापूजी, मृदुलाबहन, चारुदा, देवभाअी और मैं। बापूजी आध घंटा जीपमें बैठे बैठे सो लिये। रास्तेमें अेक नदी पार करनेके लिअे नावमें बैठना पड़ा। जीपगाड़ी भी पार अुतारी गअी।

यहां हम ठीक ३–४० पर पहुंचे। गांवोंकी शांतिसे शहरकी अशांतिमें आ गये। थोड़ा पैदल चलकर बाबू हरदयाल नागके यहां गये। यहां बापूजी अिसी घरमें आजसे बीस वर्ष पहले भी आये थे। बापूजी कहने लगे, "अब तो घरमें कुछ परिवर्तन मालूम होता है।" अपार भीड़ थी। भीड़में से चलकर घर तक पहुंचनेमें दस मिनट लगे। आकर हाथ-मुंह धोकर नारियलका पानी पिया। सरदार जीवनसिंहजी लोगोंको भीड़को काफी संभाल रहे थे; चिल्ला-चिल्लाकर अुन्होंने अपना गला बैठा लिया था।

मृदुलाबहन तो अपने स्वभावके अनुसार खूब मदद करनेमें लग गअी। मुझसे बोली, "किसी भी प्रकारसे बापूजीको तकलीफ नहीं होनी चाहिये। किसी भी चीजकी जरूरत हो तो मुझे कह देना।" बापूजीने अुनसे

खान साहब और दूसरे लोगोंको पत्र लिखवाये। आगे और सिर पर मिट्टीकी पट्टी ली। यहाकी व्यवस्था सुन्दर है। आज रातको नौ बजे गोआलंदो जानेवाले स्टीमरमें बैठना है।

नोआखालीमें लगभग पचाससे अधिक गांवोमें पैदल यात्रा की। अब सवारीमें यात्रा शुरू हुअी।

बापूजी साढे चार बजे अुठे। प्रार्थनामें जानेको रवाना हुअे। मोटरमें न जाकर बापूजीने पैदल ही जाना पसन्द किया, जिससे लोगोंको भी सतोष हो। दोनों तरफ कॉर्डन किया गया था। अेक तरफ मृदुलाबहनका सहारा था और दूसरी तरफ मैं थी। स्त्रिया अपने घरोकी छत परसे अच्छे अच्छे कपडे पहनकर फूल और चावलकी वर्षा कर रही थी। कही कही शखका शंखनाद हो रहा था। सारी सडक फूलोसे छा गअी थी।

सभामें बहुत शोरगुल था। पहले बापूजीने रामधुन शुरू करनेको कहा। अिसके बाद कुछ शान्ति हुअी और सारी प्रार्थना कराअी। चिल्ला-चिल्लाकर शैलेनभाअीकी आवाज भी बैठ गअी थी। अिसलिअे मुझे अकेले ही प्रार्थना करानी पड़ी। शैलेनभाअी अे० पी० आअी० के रिपोर्टर हैं, परन्तु हमारी मडलीके सदस्य हो गये हैं। वैसे सारे प्रेस-रिपोर्टर और हम सब कुटुम्बी जैसे हो गये हैं। परन्तु शैलेनभाअी प्रार्थनामें बडी मदद देते हैं।

प्रार्थनामें शांति रखनेका अनुरोध करनेके बाद बापूजीने कहा, "मैं अिससे भी बड़ी सभाओमें गया हू और वहा मैंने संपूर्ण शान्ति पाअी है। मैं बंगला नही बोल सकता, अिसका मुझे दुख है। परन्तु लौटूगा तब आशा रखता हूं कि बंगला बोल सकूंगा।

"चादपुर मेरे लिअे नअी जगह नही है। जब अलीभाअी और बाबू हरदयाल नाग जिन्दा थे, तब मैं पहले-पहल आया था। अेक ओर यहा दुबारा आनेसे हर्ष होता है, दूसरी ओर दुख होता है। जब मैं देहातमें यात्रा कर रहा था तब लोग रो रहे थे, बडे दुःखी थे। परन्तु रोनेसे कुछ नही होगा। सबको अुस मार्गसे ही जाना है। यह बाबू हरदयाल नागकी भूमि है। वे जो काम कर गये अुससे प्रेरणा लेकर हम वैसा ही काम करें तभी हमारा जीना सार्थक है। मैं चादपुर क्यों आया? मेरी यात्राके दो हिस्से पूरे हो चुके थे। तीसरा हिस्सा शुरू होनेको था कि डॉ० सैयद

महमूद साहबके मंत्री आये और अुन्होंने मुझे बिहार जानेका आदेश दिया। अिसलिअे आज वहां जा रहा हूं।

"जैसे किसी हिन्दूके मरने पर मुझे सगे भाअीके मरनेका दुःख होता है, वैसे ही किसी मुसलमानके मरने पर भी मुझे अुतना ही दुःख होता है। हम सब अेक अीश्वरके बालक हैं। अिसलिअे मैं नोआखाली और टिपरा जिलोंमें घूमा। जब तक शान्ति कायम नहीं हो जायगी, तब तक न तो मैं चैन लूंगा और न दूसरोंको लेने दूंगा। भले मैं अकेला ही रह जाअूं तो भी चिल्लाता रहूंगा।

"बिहारमें मेरी कुछ चलती है। अिसलिअे आशा रखता हूं कि वहांका काम जल्दी पूरा करके यहां आ जाअूंगा। परन्तु अिस बीच आप अिकबालकी अिस कविताको सच साबित करके दिखा दीजिये : 'मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर करना। हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा।'"

प्रार्थनासे लौटकर बापूजीके लिअे घरकी बहनोंने बकरीके दूधका जो सन्देश आग्रहपूर्वक बनाया था वह लिया। अिन बहनोंकी अिच्छा थी कि बापूजीके खानेकी थाली वे ले जायं। अिसलिअे अेक छोटी लड़कीको मैंने तैयार करके दे दी। वही आठ औंस दूध, अंगूर और यह सन्देश ले आअी। बहनोंकी अिच्छा थी कि बापूजी अुनके बरतनोंमें खायं। बापूजीने वैसा ही किया।

बापूजी बहुत ही थक गये थे।

अचानक अेक स्पेशल स्टीमर आ पहुंचा, अिसलिअे मृदुलाबहनने अुसीमें जानेका प्रबंध किया। यह बड़ा अच्छा हुआ, नहीं तो पैसेंजर स्टीमरमें जाना पड़ता। अुस हालतमें बापूजीको सोनेकी सुविधा नहीं मिलती।

बापूजीका मौन शुरू हो गया। रातको आठ बजे बापूजीकी अंतिम वस्तुअें मृदुलाबहनको सौंपी। बापूजीको मच्छरोंका मरहम मल कर सारे सामानके साथ मैं स्टीमर पर गअी। कैबिनमें बापूजीका बिस्तर करके रातकी दातुन वगैरा अुपयोगी चीजें रखीं।

बापूजी मृदुलाबहनके साथ दस बजे स्टीमर पर आये। कैबिनमें थोड़ा लिखकर कर्नल जीवनसिंहजीके साथ खूब बातें कीं। विदा करने आनेवालोंमें

बार पुकारा और हाथमें गिलास दिया तब हंसकर पिया। फिर अपना काम शुरू कर दिया। . . . और पत्र लिखते लिखते ही सो गये।

बापूजी लेटे हैं। मैं अपनी डायरी लिख रही हूं। रात अच्छी बीती। यात्रा शान्त है। सामने सुन्दर किनारा दिखाओ दे रहा है। सवेरेके सवा सात बजे हैं।

बापूजी साढ़े सात बजे अुठे। घूमने निकले। मैं और बापूजी डेक पर चक्कर काट रहे थे। बापूजीका मौन था। बहुत तेज चल रहे थे। थोड़ी देरमें प्रेम-प्रतिनिधि, जो हमारे साथ सफर कर रहे हैं, शैलेनभाओ और दूसरे लोग आये। निर्मलदा भी देख गये। सामनेसे अेक स्टीमर 'महात्मा गांधीकी जय' के नारे लगाता हुआ हमारे साथ हो गया। अेक बड़ी नदीमें अिस प्रकार दो स्टीमर चल रहे थे। हमारे स्टीमरके कप्तानने मुझसे कहा कि अुसके मुसाफिर खास तौर पर बापूजीके दर्शन करनेको ही यात्रा कर रहे हैं। बापूजीने वहां खड़े रहकर सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड़कर प्रणाम किया। सूर्यदेव अुग रहे थे और अुनकी सुनहरी किरणें सीधी बापूजीके तेजस्वी चेहरे पर पड़ रही थीं। किनारा अत्यन्त रमणीय था। और नदी शान्तिसे कल-कल करती हुअी बह रही थी। अैसे वातावरणमें बापूजी सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड कर खड़े रहे और अुन मुसाफिरोंने स्टीमरको जयनादोंसे गूंजा दिया। मुसाफिरोंने कृतज्ञतापूर्वक बापूजीको प्रणाम किया।

आज पैर नहीं धोने थे। बापूजीने . . . का पत्र पूरा किया, अितनी देरमें मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की। दस बजे नहा-धोकर निवृत्त हुअे। बापूजीने भोजनमें शाक, अेक खाखरा और बकरीके दूधके बजाय कल बनाकर रखा हुआ संदेश लिया। दूध यहां नहीं मिलता। ग्यारह बजे मृदुलाबहन बातें करने आओीं। मैं बापूजीके कपड़े वगैरा जमाने और धोने चली गओी। फिर जो सामान निकाला था अुसे ठीक किया। अिसमें अेक बज गया। अेक बजे बापूजीके पेड़ू पर मिट्टी रखी। पैरोंमें घी मला। बापूजीने आराम लेते हुअे बंगला बालपोथी पूरी की। दो बजे अुठकर नारियलका पानी पिया।

हम ठीक अढ़ाओी बजे गोआलंदो पहुंचे।

स्टीमर पर बहुत आदमी आये थे। बारीक रेत खूब तप रही थी और गरमी भी लग रही थी। ट्रेनमें आये तो वहां डिब्बेमें काकासाहब बैठे हुअे थे। बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीकी बैठकका बन्दोबस्त करके हम हाथोंहाथ सामान ले आये। तीन बजे गाड़ी चली। बापूजी और काका-साहब बातोंमें लगे। आज मौन-दिन था। अिसलिअे लिखकर बातें करते

शारदा और कर्नल जीवनसिंहजीके साथ करीब डेढ़ महीनेके साथ होनेके कारण हम सबका कुटुम्ब जैसा प्रेम हो गया था। सब गद्गद हो गये। ग्यारह बजे सब गये। स्टीमर चला। साढ़े ग्यारह बजे बापू सो गये। खूब थक गये थे। सिरमें तेल मला, पैर दबाये और प्रणाम किया। बहुत दिनों बाद बापूजीने आज खूब जोरकी थप लगाओ। चिट्ठीमें लिखा :

> "हैमचरमें बाबा तुम पर बड़े खुश हुअे। मुझसे कह रहे थे। परन्तु संतोषकी बात यह हुआी कि हलभर अुनके साथ रहनेसे मैं बाबाको काफी समझा सका और अुन्होंने अपनी कुछ मान्यतायें छोड़ दीं। वे तो महात्यागी हैं। अति नम्र मनुष्य हैं। तुमने देखा कि अुन्होंने अितने दिनोंमें केवल अेक ही दिन मेरा थोड़ा समय लिया। आम तौर पर वे मेरा समय लेने आते ही नहीं थे। अुनका अैसा काम है। अुनकी जोड़का दूसरा आदमी नहीं है। भूल मालूम हो जाय तो तुरंत सुधार लेते हैं, अुसमें अुन्हें देर ही नहीं लगती। तुम अुनकी कुछ सेवा कर सकी, यह मुझे अच्छा लगा। अिसीलिअे मैंने तुम्हें प्रोत्साहन दिया था। तुम्हारी दो दिनकी डायरी देखना रह गअी है। अुसे यहीं रख देना। प्रार्थनाके बाद सुबह पढ़ लूंगा।"

आजकी यह डायरी स्टीमरमें साढ़े बारह बजे पूरी कर रही हूं। बापूजीके पैर दबाकर मच्छरदानी बंद की। बत्ती और कैबिन बंद करके बाहर बैठकर अपनी दिन भरकी डायरी पूरी की। साढ़े चार बजे तककी चांदपुरमें लिखी थी। बादकी चांदपुरसे गोआलंदो आते हुअे स्टीमरमें पूरी की। आज बापूजीके ८८ तार हुअे।

चांदपुरसे गोआलंदो जानेवाले स्टीमरमें,
३–३–'४७

अभी-अभी दातुन-पानीसे निबटकर रोजकी भांति प्रार्थना की। बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। मैं रस निकालने गअी अुस बीच बापूजीने बंगलाका पाठ किया और फिर अपना डाकका काम शुरू किया। बापूजी पत्र लिखनेमें अितने मशगूल थे कि मैं रस हाथमें लेकर दस मिनट खड़ी रही परन्तु अुनका ध्यान नहीं गया। आज मौन भी है। अन्तमें मैंने दो

यार पुकारा और हाथमें गिलास दिया तब हंसकर पिया। फिर अपना काम शुरू कर दिया। . . . और पत्र लिखते लिखते ही सो गये।

बापूजी लेटे हैं। मैं अपनी डायरी लिख रही हूं। रात अच्छी बीती। यात्रा शान्त है। सामने सुन्दर किनारा दिखाअी दे रहा है। सवेरेके सवा सात बजे हैं।

बापूजी साढ़े सात बजे अुठे। घूमने निकले। मैं और बापूजी डेक पर चक्कर काट रहे थे। बापूजीका मौन था। बहुत तेज चल रहे थे। थोड़ी देरमें प्रेम-प्रतिनिधि, जो हमारे साथ सफर कर रहे हैं, शैलेनभाअी और दूसरे लोग आये। निर्मलदा भी देख गये। सामनेसे अेक स्टीमर *'महात्मा गांधीकी जय' के नारे लगाता हुआ हमारे साथ हो गया।* अेक बड़ी नदीमें अिस प्रकार दो स्टीमर चल रहे थे। हमारे स्टीमरके कप्तानने मुझसे कहा कि अुसके मुसाफिर खास तौर पर बापूजीके दर्शन करनेको ही यात्रा कर रहे हैं। बापूजीने वहां खड़े रहकर सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड़कर प्रणाम किया। सूर्यदेव अुग रहे थे और अुनकी सुनहरी किरणें सीधी बापूजीके तेजस्वी चेहरे पर पड़ रही थीं। किनारा अत्यन्त रमणीय था। और नदी शान्तिसे कल-कल करती हुअी बह रही थी। अैसे वातावरणमें बापूजी सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड़ कर खड़े रहे और अुन मुसाफिरोंने स्टीमरको जयनादोंसे गूंजा दिया। मुसाफिरोंने कृतज्ञतापूर्वक बापूजीको प्रणाम किया।

आज पैर नहीं धोने थे। बापूजीने . . का पत्र पूरा किया, अितनी देरमें मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की। दस बजे नहा-धोकर निवृत्त हुअे। बापूजीने भोजनमें शाक, अेक खाखरा और बकरीके दूधके बजाय कल बनाकर रखा हुआ संदेश लिया। दूध यहां नहीं मिलता। ग्यारह बजे मृदुलाबहन बातें करने आअीं। मैं बापूजीके कपड़े वगैरा जमाने और धोने चली गअी। फिर जो सामान निकाला था अुसे ठीक किया। अिसमें अेक बज गया। अेक बजे बापूजीके पेडू पर मिट्टी रखी। पैरोंमें घी मला। बापूजीने आराम लेते हुअे बंगला बालपोथी पूरी की। दो बजे अुठकर नारियलका पानी पिया।

हम ठीक अढ़ाअी बजे गोआलंदो पहुंचे।

स्टीमर पर बहुत आदमी आये थे। बारीक रेत खूब तप रही थी और गरमी भी लग रही थी। ट्रेनमें आये तो वहां डिब्बेमें काकासाहब बैठे हुअे थे। बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीकी बैठकका बन्दोबस्त करके हम हाथोहाथ सामान ले आये। तीन बजे गाड़ी चली। बापूजी और काकासाहब बातोंमें लगे। आज मौन-दिन था। अिसलिअे लिखकर बातें करते

थे। साढ़े चार बजे दो काजू, दो बादाम और दो सासरे गाये। बापूजीने बातें अधूरी रखीं और आकर आंखोंमें बहुत जलन होनेके कारण मिट्टीकी पट्टी रखकर सो गये। मैं तो सामान निकालने और रखनेमें ही लगी रही।

सात बजे मौन खुला। पुराने सारे प्रेस-प्रतिनिधि बापूजीसे मिलने आये। क्योंकि अिस नअी स्थितिमें नोआखालीमें जो प्रेस-प्रतिनिधि बापूजीके साथ यात्रा करते थे अुन्हें कदाचित् अुनके अधिकारी बापूजीके साथ अब न भी रखें। प्रार्थनाके बाद सब प्रेस-प्रतिनिधियोंने अंतिम बार गद्‌गद कंठसे 'अेकला चलो रे' भजन गया। सबकी आंखोंमें पानी भर आया। प्रार्थनाके बाद बापूजीने फिर काकासाहबके साथ बातें की। आराम किया। नौ पचास पर हम सोदपुर आये। आकर बापूजीका बिस्तर किया। वे हाथ-मुंह धोकर स्वस्थ हुअे, सबसे मिले और लगभग साढ़े ग्यारहके बाद सोये।

मैं खूब थक गअी थी। अिसलिअे बापूजीके सोनेके बाद अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर नहाअी। सामान मिलाया। सुबहकी तैयारी की। बापूजीके लिअे दातुनकी कूची बनाअी। यह फुटकर काम निबटाकर डायरी पूरी की। थक गअी थी, अिसलिअे भोजन नहीं किया। अब अेक बजनेमें दस मिनट बाकी हैं। सोने जाती हूं। निर्मलदा अभी तक जाग रहे हैं। अुनका काम तो रातको देर तक चलता रहता है।

खादी प्रतिष्ठान,
सोदपुर, (कलकत्ता)
४–३–'४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे अुठे। मैं कब सोअी आदि पूछताछ करके बापूजी कहने लगे, "हमने नोआखाली छोड़ तो नहीं दिया, परन्तु अब यात्रायें दूसरी तरहकी होंगी। शायद काम बढ़ेगा। परन्तु जो नियम नोआखालीमें पालन किये जाते थे, अुनमें फर्क नहीं पड़ना चाहिये। यह यज्ञ अब नोआखाली तक ही सीमित नहीं रहेगा। अब तो जब तक दोनों जातियोंमें पूरा भाअीचारा पैदा न हो जाय, हममें मानवता न आ जाय, तब तक मुझे निरंतर करना है या मरना है। अत. मेरा और तुम्हारा तप जितना शुद्ध होगा अुतना असर अिस कार्य पर अुसका अवश्य होगा। बिहारका काम नोआखालीसे ज्यादा कठिन साबित हो तो मुझे अचरज नहीं होगा, क्योंकि कभी-कभी जब अपने आदमी भूल कर बैठते हैं तब अुसे सुधारना बहुत कठिन हो जाता है। बिहारकी रिपोर्ट देखते हुअे मुझे लगता है कि नोआखालीकी अपेक्षा बिहारका मेरा काम ज्यादा मुश्किल होगा, ज्यादा बढ़ जायगा। अिसलिअे तुम्हें बहुत सावधानी रखनी है। तुम अपना खाना-पीना, आराम, नियमानुसार घूमना सभी कुछ नोआखाली जैसा नियमित रखोगी तो ही मुझे संतोष होगा।"

कल रात देरसे सोओी, अिसलिअे प्रात:काल पौने चार बजे ही चेतावनी दी, ताकि अिस नये परिवर्तनसे मैं अनियमित न बन जाअू।

प्रार्थनाके बाद मेरी डायरी देखी। बापूजीको गरम पानी और शहद देकर रस निकालने गअी। अिस बीच अुन्होंने अपना बंगला पाठ लिखा। आज तो वे बंगला बोलना सीख रहे थे। मैं रस लेकर आअी तो मुझसे बंगलामें पूछा, "तोमार नाम की ?" (तुम्हारा नाम क्या है ?) और खूब हंसे। बापूजीको दस तक अंक लिखना अच्छी तरह आ गया है।

साढ़े सात बजे नित्यकी भांति घूमने गये। दूसरी बहनें 'लाठी' बनने-वाली थीं, अिसलिअे मैं घूमने नहीं गअी। मुझे काम भी था। परन्तु यह बापूजीको बिलकुल अच्छा नहीं लगा। पैर धोते समय अुलाहना दिया, "भले तुम मेरी लाठी न बनती। लेकिन अिससे क्या ? तुम्हें घूमना न छोड़ना चाहिये। तुम्हारा घूमना भी मेरी दूसरी सेवाका अेक भाग है। अिसलिअे आज तुम नहीं घूमी, अिसका मुझे दु:ख है। मैं खुश होअूंगा यदि आज तुम मालिशसे छुट्टी ले लो और अुतनी देर घूम लो।"

मैंने कहा, "मालिशमें छुट्टी लेना तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

बापूजी कहने लगे, "तो मैं कमोड पर जाअूं तब अेक बार दौड़ लेना। अुससे भी पूरा तो नहीं, कुछ संतोष हो जायगा। परन्तु बिलकुल न घूमना तो पाप है।"

मैंने बापूजीके कहे अनुसार दौड़ लगा ली। बापूजी नियमितता पर अितना ध्यान देते हैं।

पौने नौ बजे शहीद सुहरावर्दी साहब — यहांके मुख्यमंत्री — आये। लगभग सवा दस बजे गये। अिससे मालिशमें बहुत देर हो गअी और मालिश अच्छी तरह नहीं हो पाअी। सुहरावर्दी साहब अपनी ही बातें करते रहे। बापूजीको बोलने ही नहीं देते थे। जबरदस्त आदमी हैं। बापूजीको भी लगा कि वे गोलगोल बातें कर रहे हैं, मुद्देकी बात नहीं करते। बापूजी कहने लगे, "अीश्वरने सोचा होगा वही होगा।"

बारह बजे स्नान वगैरा पूरा हुआ। भोजनमें शाक, दूध और फलोंमें थोड़े अंगूर लिये। और कुछ नहीं लिया। भोजन करते हुअे काकासाहबसे बातें कीं।

दर्शनार्थियोंकी अपार भीड़ थी। मेरा नहाना-धोना ठेठ दो बजे पूरा हुआ। अढाअी बजे डॉ॰ कुलरंजन बाबू (प्राकृतिक चिकित्सक) आये। बापूजीके कानमें कुछ बहरापन-सा लगता है। अुसे मिटानेके लिअे अेक विशेष प्रकारका स्पंज करनेका तरीका अुन्होंने मुझे बताया।

फिर बापूजीने थोड़े पत्र लिखे, अपनी डायरी लिखी। कल रात मैं देरसे सोअी थी, अिस पर बापूजीने लिखा :

"... मनुड़ीके बारेमें। .. अभी तक अुसकी बालबुद्धि नहीं गअी। प्रौढ़ बननेकी बहुत जरूरत है। मुझे तो आशा है कि थोड़े ही समयमें प्रौढ हो जायगी। बहुत भोली है। मेरी खूब सेवा करती है। अुसमें तल्लीन हो गअी है। परन्तु खाने-पीने और सोनेका ध्यान नहीं रखती। अुसका शरीर बिगड़ता है, यह मुझे खटकता है। ... वैसे मुझे काफी संतोष दे रही है।"

मैंने जब यह नोंध देखी तब यह सोचकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बापूजी कितना याद रखते हैं! मैंने अुनसे कहा, अिस डायरीमें आपने मेरे विषयमें जो लिखा है वह मुझे पसन्द नहीं। क्योंकि आपकी डायरी तो सब लोग पढ़ेंगे।

बापूजी बोले, "अिसमें क्या हो गया? हम जैसे हों वैसे ही दिखाअी दें, तो ही जीवनमें आगे बढ़ सकते हैं। 'खानगी' नामका शब्द ही तुम्हें मनसे निकाल देना चाहिये। हमने कोअी चोरी थोडे ही की है कि खानगी रखें?" मैं चुप हो गअी।

शामको प्रार्थनासे पहले दूध और फल लिये। प्रार्थनामें जानेसे पहले मैंने सारा सामान गिनकर ट्रंकोंमें हावड़ा स्टेशन पर रवाना कराया।

शामको प्रार्थनामें भारी भीड थी। प्रार्थना-सभामें बापूजीने समझाया कि वे बिहार क्यों जा रहे हैं और लोगोंसे भाअीचारा बढ़ानेका अनुरोध किया। प्रार्थनाके बाद दसेक मिनट घूमे।

ठीक साढ़े सात बजे हम सोदपुरसे रवाना हुअे। हावड़ा स्टेशन पर बापूजीके दर्शनोंके लिअे जो अपार भीड आअी थी अुसके बारेमें तो क्या लिखूं? मानव-समुद्र अुमड आया था। और फोटोग्राफरोंका तो टिड्डीदल ही निकल आया था। प्रकाशसे आंखें चौंधिया जाती थीं। परन्तु अुन लोगोंके प्रेमके कारण यह कठिनाअी सहली ही पडी। अिस बीच बापूजीने अपना धंधा — हरिजन फंड अिकट्ठा करनेका — शुरू कर दिया। बापूजीके हाथमें पैसे, रुपये, आने, दो आने, चार आने और नोटोंका खासा ढेर हो गया। सब लोग बापूजीके हाथमें ही देते थे। हममें से कोअी हाथ फैलाता तो शायद ही कोअी देते थे। खूब रेजगारी गिननेको हो गअी है। कल पटनामें गिन लूगी। अिस समय (रातके दस बजे) यह डायरी बर्दवान स्टेशन पर पूरी कर रही हूं। बापूजी सो रहे हैं। लोग निर्मलदाके समझानेसे शांतिपूर्वक बापूजीका दर्शन कर रहे हैं।

गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा

[दूसरी बार]

संक्षेपकार : मथुरादास त्रिकमजी

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

गांधीजीकी 'आत्मकथा' अेक अैसा ग्रंथ है, जो अुन्हें समझनेमें बड़ा सहायक होता है। अिसका संक्षिप्त संस्करण अिस अभिलाषासे तैयार किया गया है कि यह नअी पीढ़ीको गांधीजीका अध्ययन करनेके लिअे प्रेरित करेगा। देशके विद्यार्थियों और नौजवानोंके लिअे यह पुस्तक बड़ी अुपयोगी और प्रेरक सिद्ध होगी।

की० ०–१२–०   डाकखर्च ०–७–०

दिल्ली-डायरी

गांधीजी

हिंदुस्तानकी राजधानीमें अपने जीवनके आखिरी दिनोंमें शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीजीने हृदयकी गहरी वेदनाको बतानेवाले जो प्रवचन किये थे, अुनमें से ता० १०–९–'४७ से ३०–१–'४८ तकके प्रवचनोंका अिस पुस्तकमें संग्रह किया गया है। यही अुनका राष्ट्रको आखिरी संदेश कहा जा सकता है।

की० ३–०–०   डाकखर्च १–३–०

बापूकी झांकियां

[तीसरी बार]

लेखक : काका कालेलकर

"बापूका संपूर्ण चरित्र लिखनेवालोंको अिनमें से अुपयोगी मसाला मिलेगा। ये सब बयान प्रामाणिक हैं।" — लेखक

की० १–०–०   डाकखर्च ०–५–०